राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थानराज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यतः अखिलभारतीय तथा विशेषतः राजस्थानदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, राजस्थानी आदि भाषानिबद्ध
विविधवाङ्मयप्रकाशिनी विशिष्ट-ग्रन्थावली

प्रधान सम्पादक

फतहसिंह, एम. ए., डी. लिट्
निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

ग्रन्थाङ्क ३९

आचार्यचन्द्रगोमिप्रणीतं

चान्द्रव्याकरणम्

प्रकाशक

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

१९६७ ई०

आचार्यचन्द्रगोमिप्रणीतं

चान्द्रव्याकरणम्

सम्पादक

पं० श्रीबेचरदास जीवराज दोशी

प्रकाशनकर्त्ता

राजस्थानराज्यसंस्थापित

निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

विक्रमाब्द २०२४ | भारतराष्ट्रियशकाब्द १८८९ | खिस्ताब्द १९६७

प्रथमावृत्ति ७५० | | मूल्य ७.००

मुद्रक – नवजीवन कार्यालय, अहमदाबाद तथा साधना प्रेस, जोधपुर

विषयानुक्रमः



संचालकीय वक्तव्य

प्रस्तुत चान्द्र-व्याकरण आचार्य चन्द्रगोमि की कृति माना जाता है। प्रो० क्षितीशचन्द्र चटर्जी के शब्दों में, चान्द्र-व्याकरण वस्तुतः पाणिनीय व्याकरण का ही एक संशोधित संस्करण है जिसमें कात्यायन और पतञ्जलि के समस्त सुझावों तथा सुधारों का समावेश किया गया है। यों तो इस व्याकरण का उल्लेख अनेक प्राचीन ग्रंथों में पाया जाता रहा है, परन्तु स्वयं यह ग्रंथ अप्राप्य ही था। तारा-नाथ से अवश्य इस ग्रंथ के तिब्बती संस्करण का पता चला था, परन्तु सर्वप्रथम इसको प्रकाशित करने का श्रेय प्रोफेसर लिबिश को है जिन्होंने इसे रोमन-लिपि में मुद्रित करवा कर दो संस्करणों में निकाला था। ये दोनों संस्करण भी बहुत दिनों से अप्राप्य थे; इसीलिए इस प्रतिष्ठान के भूतपूर्व संचालक, आचार्य जिन-विजयजी ने, सुप्रसिद्ध विद्वान् पं० बेचरदासजी द्वारा संपादित करवा कर, इस ग्रंथ को देवनागरी-लिपि में पुनः प्रकाशित करने का संकल्प किया, और तदनुसार १९५२ ई० में यह कार्य प्रारम्भ भी कर दिया गया, परन्तु खेद है कि कुछ कारणों से इसका प्रकाशन पिछले पंद्रह वर्षों से अटका पड़ा हुआ है। अत्यधिक विलंब के लिए क्षमा चाहते हुये, अब यह पुस्तक विद्वानों की सेवा में प्रस्तुत की जा रही है।

यद्यपि इस पुस्तक का मुद्रण-कार्य प्रारम्भ होने के पश्चात् डेकन कालेज, पूना से प्रोफेसर क्षितीशचन्द्र चटर्जी के संपादन में इस ग्रंथ का एक देवनागरी-संस्करण १९५३ ई० में प्रकाशित भी हो गया है, परन्तु फिर भी इस ग्रंथ की अपनी निजी विशेषता है। प्रस्तुत संस्करण अपनी लघुता में ही महत्ता छिपाये हुये है; लगभग सवा सौ पृष्ठों में न केवल चान्द्र-व्याकरण के सभी सूत्र हैं, अपितु उनमें उणादि सूत्रों तथा धातुपाठ का भी समावेश कर दिया गया है और साथ में, तुलनात्मक अध्ययन की सुविधा के लिए, चान्द्रसूत्रों के साथ ही पाणिनि-सूत्रों का भी संदर्भ-निर्देश दे दिया है। परिशिष्ट में, अकारादिक्रम से सूत्रों, शब्दों और धातुओं की सूचियां देकर, ग्रंथ को शोधकर्त्ताओं के लिए और भी अधिक उपयोगी बनाया गया है। अन्त में उस विचार-सामग्री को भी इस संस्करण की ही विशेषता के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है जो सम्पादक तथा प्रधान सम्पादक की ओर से प्रस्तावना में उपस्थित की गई है।

—फतहसिंह

प्रस्तावना

चान्द्र-व्याकरण के प्रणेता चन्द्रगोमि ने अपने व्याकरण-सूत्रों पर स्वयं ही वृत्ति भी लिखी है जिसको लीबिश ने चान्द्र-व्याकरण के दूसरे संस्करण में सर्व-प्रथम मुद्रित कराया था। वृत्ति को 'नमो वागीश्वराय' के साथ प्रारम्भ करते हुये, लेखक ने अपने व्याकरण को 'शब्दलक्षण' की संज्ञा दी है और उसकी विशेषता तीन शब्दों में बतलाई हैं; ये शब्द हैं—लघु, विस्पष्ट तथा सम्पूर्ण[1]। श्रीयुधिष्ठिर[2] मीमांसक ने इन तीनों विशेषणों पर विचार करते हुये लिखा है कि "कातन्त्र-व्याकरण लघु और विस्पष्ट है, परन्तु सम्पूर्ण नहीं है। इस के मूलग्रंथ में कृत्प्रकरण का समावेश नहीं है, अन्यत्र भी कई आवश्यक बातें छोड़ दी हैं। पाणिनीय व्याकरण सम्पूर्ण तो है, परन्तु महान् है, लघु नहीं।" अतः उनके अनुसार संभवतः इन्हीं दोनों प्रचलित व्याकरणों के गुणों को ग्रहण करके, यह व्याकरण रचा गया प्रतीत होता है। परन्तु आश्चर्य की बात यह है कि देश के जिस भाग (बंगाल) में चान्द्र-व्याकरण दो-तीन सौ वर्ष पहले तक लोकप्रिय[3] रहा, उसमें भी इसकी कोई हस्तलिखित प्रति न मिली, अपितु उसको नष्ट होने से बचाने का श्रेय तिब्बत[4] को प्राप्त हुआ। इस आश्चर्य की वृद्धि तब और भी हो जाती है, जब तिब्बत में कलापसूत्र, कलाप-सूत्रवृत्ति तथा कलापसूत्रलघुवृत्ति के तिब्बती अनुवादों के रूप में कातंत्र-व्याकरण[5] का ही प्रचार अधिक हुआ बताया जाता[6] है।

उक्त दोनों व्याकरणों के तिब्बती सहास्तित्व में एक अन्य विस्मयकारी बात यह है कि चान्द्र-व्याकरण के सूत्र पाणिनि के सूत्रों से इतने अधिक मिलते हैं कि प्रथम को द्वितीय का ही संशोधित तथा वर्धित संस्करण[7] कहा जाता है, जब कि

---

१. सिद्धं प्रणम्य सर्वज्ञं सर्वीयं जगतो गुरुम्।
लघुविस्पष्टसंपूर्णमुच्यते शब्दलक्षणम्॥

२. संस्कृत-व्याकरणशास्त्र का इतिहास, पृ० ५०६।

३. प्रो० क्षि. चं. चटर्जी, चान्द्रव्याकरण आव चन्द्रगोमिन की भूमिका।

४. देखिये शीफनेर का लेख, बुलेटिन आव हिस्टारिकल साइंसेज आव द इंपीरियल अकेडमी आव साइंसिज् एट सेंट-पीटर्सबर्ग ४, २६४ संख्या २६०४।

५. देखिये युधिष्ठिर मीमांसक, सं० या० इति०, पृ० ५०२।

६. ए. सी. बर्नेल—दि ऐन्द्रस्कूल आव संस्कृत ग्रामर, पृ० ५९।

७. क्षि० चं० चटर्जी, भूमिका चांद्र-व्याकरण आव चंद्रगोमिन।

कातंत्र को ऐन्द्र-व्याकरण का ग्रंथ[1] कहा जाता है जिसको विनाश करने का भागी पाणिनि बताया जाता है। कथासरित्सागर[2] के अनुसार ऐन्द्र-व्याकरण कात्यायन का था और इसको नष्ट करने वाला पाणिनि था। कुछ हेर-फेर के साथ यही बात बृहत्कथामंजरी में भी मिलती है; कथा संक्षेप में यह है— आचार्य वर्ष के अनेक शिष्यों में दो शिष्य थे कात्यायन और पाणिनि। पाणिनि जडबुद्धि था और गुरुजनों की सेवा-शुश्रूषा में भी कमी करता था। गुरुपत्नी से निकाले जाने पर वह खिन्न होकर हिमालय चला गया जहाँ उसके घोर तप से प्रसन्न होकर शिव ने उसे 'नवव्याकरण' दिया जिसको प्राप्त करके उसने कात्यायन को शास्त्रार्थ के लिए ललकारा। जब कात्यायन ने पाणिनि को शास्त्रार्थ में परास्त कर दिया, तो नभ में स्थित शंभु ने घोर हुंकार किया जिसके फलस्वरूप कात्यायन का सारा ऐन्द्र-व्याकरण भूतल से नष्ट हो गया। लगभग इसी से मिलती-जुलती कथा हुयेन-सांग ने भी सातवीं शताब्दी में आकर भारतवर्ष में सुनी[3]। कात्यायन-सूत्रम् अथवा पूर्वपाणिनीयम् नाम से एक २४ सूत्रों वाली पुस्तक बड़ौदा में पं० जीवाराम कालिदास के संपादन में प्रकाशित हुई; इसमें और कातन्त्र में एक समानता यह है कि यह भी 'ओम् नमः सिद्धम्' से प्रारंभ होता है। परन्तु दोनों के आकार में आकाश-पाताल का अन्तर है। फिर भी 'ओम् नमः सिद्धम्' की समानता दोनों ग्रंथों की एक ही परंपरा सिद्ध करती है। क्या बर्नेल के अनुसार कातंत्र की भाँति इसे भी 'ऐन्द्र' परंपरा में माना जा

---

१. बर्नेल, दि ऐन्द्र स्कूल आव संस्कृत ग्रामर, पृ० ४५–५३।

२. अथ कालेन वर्षस्य शिष्यवर्गो महानभूत्।
तत्रैकः पाणिनिर्नामा जडबुद्धितरोऽभवत्॥
स शुश्रूषापरिक्लिष्टः प्रेषितो वर्षभार्यया।
अगच्छत् तपसे खिन्नो विद्याकामो हिमालयम्॥
तत्र तीव्रेण तपसा तोषितात् इन्दुशेखरात्।
सर्वविद्यामुखं तेन प्राप्तं व्याकरणं नवम्॥
ततश्चाऽगत्य मामेव वादायाह्वयते स्म सः।
प्रवृत्ते चावयोर्वादे प्रयाताः सप्त वासराः॥
अष्टमेऽहनि मया तस्मिन् तत्समनन्तरम्।
नभस्थेन महाघोरो हुंकारः शंभुना कृतः॥
तेन प्रनष्टमैन्द्रं तदस्मद्व्याकरणं भुवि।
जिताः पाणिनिना सर्वे मूर्खीभूता वयम् पुनः॥ (त० ४, २० - २५)

३. बर्नेल, पृ० ४.

सकता है ? इसके उत्तर के लिए उक्त २४ सूत्रों पर विचार करना आवश्यक है।

पूर्वपाणिनीयम् या कात्यायनसूत्रम् के सूत्रों को इस प्रकार दिया गया है:—

ओम् नमः सिद्धम्।

(१) अथ शब्दानुशासनम् ।
(२) शब्दो धर्मः ।
(३) धर्मादर्थकामापवर्गाः ।
(४) शब्दार्थयोः ।
(५) सिद्धः ।
(६) सम्बन्धः ।
(७) ज्ञानं छन्दसि ।
(८) ततो न्यत्र ।
(९) सर्वमार्षम् ।
(१०) छन्दोविरुद्धमन्यत् ।
(११) अदृष्टं वा ।
(१२) ज्ञानाधारः ।
(१३) सर्वः शब्दः ।
(१४) सर्वार्थः ।
(१५) नित्यः ।
(१६) तंत्रः ।
(१७) भाषास्वेकादशी ।
(१८) अनित्यः ।
(१९) लौकिकोऽत्र विशेषेण ।
(२०) व्याकरणात् ।
(२१) तज्ज्ञाने धर्मः ।
(२२) अक्षराणि वर्णाः ।
(२३) पदानि वर्णेभ्यः ।
(२४) ते प्राक् ।

उक्त २४ सूत्रों का विषय निस्संदेह 'शब्दानुशासन' है और इस प्रसंग में शब्द से अभिप्राय पद से नहीं धर्म[1] से है। धर्म को अर्थ, काम एवं अपवर्ग का स्रोत[2] बताया गया है; इनमें से अर्थ क्रियाशक्तिमूलक, काम इच्छाशक्तिमूलक, तथा अपवर्ग ज्ञानशक्तिमूलक माना जा सकता है। आगमों में क्रिया, इच्छा तथा ज्ञान-शक्तियों को पराशक्ति द्वारा 'मयूराण्डरसवत्' बीजरूप में धारण किया जाना माना जाता है; अतः इसी पराशक्ति को धर्म की संज्ञा दी जा सकती है और फलतः इसी धर्म से उत्पन्न होने के कारण क्रिया, ज्ञान तथा इच्छा-शक्तियों के पूर्वरूप को पुरुषसूक्त[3] में 'तानि धर्माणि प्रथमानि' कहा गया है। पराशक्तिरूप धर्म का धर्मी आत्मा या पुरुष है जिसे कई बार इन्द्र की भी संज्ञा[4] दी जाती है। यह इन्द्र या पुरुषरूप धर्मी अपने धर्म द्वारा ही अपने को व्यक्त करता है; इसीलिए इस धर्म को ऊपर 'शब्द' कहा गया है और अन्यत्र इसे वाक्-नाम भी दिया जाता है, क्योंकि शब्द या वाक् द्वारा ही मनुष्य अपने को व्यक्त करता

---

१. शब्दो धर्मः।
२. धर्मात् अर्थकामापवर्गाः।
३. भारतीय सौन्दर्यशास्त्र की भूमिका, पृ॰ ५९-६५।
४. देखिये—वैदिकदर्शन, पृ॰ १४–१५।

है। यह वाक् उक्त 'परा'[1] रूप में अव्यक्ता है और पराची भी कहलाती है; यही उक्त अद्वैतधर्मस्वरूप शब्द है जो व्याकृत होकर क्रमशः अर्थमूलक क्रिया, काममूलक इच्छा तथा अपवर्गमूलक ज्ञान-शक्ति के रूप में एक से अनेक होता है; यही अव्याकृता पराची वाक् का इन्द्र[2] के द्वारा व्याकृता किया जाना कहलाता है। इंद्र की यह व्याकृता वाक् केवल उक्त तीन रूपों में ही नहीं, अपितु अनेक रूपों में व्याकृत होकर विविध इंद्रिय-शक्तियों के रूप में प्रकट होती है।

अव्याकृता पराची वाक् (शब्द) जब व्याकृता-रूप ग्रहण करना प्रारम्भ करती है तब अर्थबीजा क्रिया (विविधीकरण की क्रिया) चल पड़ती है; अतः इसके प्रथम रूप में शब्द (परा) और अर्थ (क्रिया) का सम्बन्ध 'सिद्ध'[3] होता है, परन्तु दूसरे रूप में अर्थ (क्रिया) के साथ काम (इच्छाशक्ति) का संयोग विशेष होने से दोनों का सम्बन्ध 'साध्य' हो जाता है। शब्दार्थ के सिद्ध सम्बन्ध का ज्ञान हमें बाह्यतः प्रकट नहीं, अपितु आभ्यंतरिक छादन में अप्रकट रूप से होता है; 'ज्ञानं छन्दसि' कहने का यही अभिप्राय है और 'छन्द' शब्द की विचित्र व्युत्पत्ति[4] इसी तथ्य का समर्थन करने के लिए बनी है। शब्दार्थ के साध्य सम्बन्ध का ज्ञान हमें बाह्यतः प्रकट रूप में होता है और इस ज्ञान का आधार सारी बाह्य शब्द-समष्टि (सर्वः शब्दः) तथा उसकी सारी अर्थ-समष्टि (सर्वः शब्दार्थः) है। शब्दार्थ का सिद्ध संबन्ध 'नित्य' है और 'तंत्र' रूप है, परन्तु साध्य सम्बन्ध मनसहित दशेन्द्रियों की भाषाओं में 'एकादशी अनित्य' बन कर नानारूप में प्रकट होता है। प्रथम अवस्था में 'छान्दस' सम्बन्ध है, दूसरी में 'लौकिक' जिसमें[5] विविधीकरण विशेष रूप से होता है। छान्दस सम्बन्ध का ज्ञान 'आर्ष' (सर्वमार्षम्) साक्षात् दर्शन से प्राप्त होता[6] है, और इस अवस्था में आत्मा को 'पश्य' तथा उसकी वाक् को 'पश्यन्ती' कहा[7] जाता है। छान्दस के विपरीत एक ओर तो 'लौकिक' शब्दार्थ-सम्बन्ध है जो अनेक वर्णों तथा उनसे विरचित अनेक पदों

---

१. वैदिकदर्शन पृ० २२–३०।

२. वाग्वै पराची अव्याकृतावदत्। ते देवा इन्द्रमब्रुवन्, इमां नो वाचं व्याकुर्विति······ तमिन्द्रो मध्यतोऽवक्रम्य व्याकरोत्।
(तै० सं० ६, ४, ७; मै० सं० ४, ५८; का० सं० २७, ३; कपि० सं० ४२,३)

३. सू० ५–६।

४. देखिये—'वैदिक एटिमॉलॉजी' में 'छन्दस्'।

५. लौकिकोऽत्र विशेषेण व्याकरणात्, १९-२०।

६. साक्षात्कृतधर्माणः ऋषयो बभूव, या० नि० १. १।

७. वै० द० (२००६ वि०) पृ० ३७।

के संबंधों में 'वैखरी' वाक् बन कर प्रकट होता है और दूसरी ओर वह अदृष्ट ज्ञान (अदृष्टं वा) वाला शब्दार्थ है जिसे ऊपर पराची या परा अव्याकृता वाक् कहा गया है। एक में स्वयं शब्द ही धर्मस्वरूप (शब्दो धर्मः) है जब कि दूसरे (लौकिक) के ज्ञान में धर्म (तज्ज्ञाने धर्मः) रहता है, क्योंकि पहले में शब्द नित्य तथा सूक्ष्म होने से वह शक्तिमान् आत्मा का 'धर्म' हो सकता है, परन्तु दूसरे में शब्द अनित्य एवं स्थूल (भाषण-ध्वनियों के रूप में) होने से वह स्वयं 'धर्म' नहीं हो सकता ; अतः वहाँ उसके ज्ञान में वह सूक्ष्मरूपेण निहित माना जा सकता है।

ऐन्द्र-व्याकरण का पूर्वपाणिनीयत्व

उपर्युक्त विवेचन से प्रतीत होता है कि पूर्वपाणिनीयम् में जिस व्याकरण का उल्लेख है वह इंद्र द्वारा अव्याकृता पराची वाक् को व्याकृता किए जाने की आध्यात्मिक कथा है; यह शब्दानुशासन उस शब्द की दार्शनिक व्याख्या प्रस्तुत करता है जो वाक्यपदीय[1] के अनुसार 'अनादिनिधनं ब्रह्म' के रूप में नित्य होकर भी अनेक अनित्य वर्ण-ध्वनियों में व्यक्त होता है और जिसे अन्यत्र[2] 'वाक् ब्रह्म' भी कहा जाता है। इसी शब्द या वाक्[3] के कभी कभी सुब्रह्म और ब्रह्म दो रूप स्मृत किये जाते हैं ; इनमें से पहला आत्मा है तथा दूसरा उसकी वह शक्ति जिसके द्वारा वह स्वयं अवर्ण होता हुआ भी अनेक वर्णों के रूप में अभिव्यक्त होता[4] है। पहला धर्मी है, दूसरा[5] उसका धर्म; पहला शक्तिमान् है, दूसरा शक्तिरूप। विष्णुसंहिता के शब्दों में ये दोनों ही पुरुष (आत्मा) ज्योति के दो रूप हैं, एक परदेवता और दूसरा अपरदेवता। एक मायी और दूसरी माया, और पहला दूसरे के सहारे ही लोक में 'बहुधा' भिन्न[6] होता है। अहिर्बुध्न्य-संहिता[7] में यही माया पारमात्मिका अहंता तद्धर्म-

---

१. १, १।

२. गो० ब्रा० १, २, १०; वाग्घि ब्रह्म, ऐ० ब्रा० २, १५; ४, २१, वाग्वै ब्रह्म ऐ० ब्रा०- ६, ३; श० ब्रा० २, १, ४, १०; १४, ४, १, २३; १४, ६. १०, ५; वागिति तद् ब्रह्म-जै० ३०,२,६, ६; २, १३, २, तै० ब्रा० ३,९,५,५;ऐ०ब्रा०-६, ३ इत्यादि।

३. वाग्वै ब्रह्म च सुब्रह्म चेति ऐ० ब्रा० ६, ३।

४. एकोऽवर्णः बहुधा शक्तियोगात्, श्वे० उ०, ३०।

५. शब्दो धर्मः, पू० पा० १।

६. देवतेऽपरं ज्योतिरेक एव परः पुमान्।
स एव बहुधा लोके मायया भिद्यते स्वया॥

७. सर्वभावात्मिका लक्ष्मीरहंता पारमात्मिका।
तद्धर्मधर्मिणी देवी भूत्वा सर्वमिदं जगत्।।

धर्मिणी देवी होकर 'सर्वजगत्' के नानात्व में प्रकट होती हुई बतलाई गई है। यही वह पराशक्ति है जो इच्छा, ज्ञान, क्रिया-शक्तियों के रूप में प्रकट होती[1] है और इसी को महार्थमञ्जरीकार ने 'सूक्ष्मा' तथा इसके भेदों को पश्यन्ती, मध्यमा तथा वैखरी कहा है।

स्फोटवाद[2] के अनुसार प्रणव या शब्दब्रह्म के दो रूप हैं, एक पर और दूसरा अपर। स्फोट या आत्मारूप में यह परब्रह्मशब्द 'वाच्य' है और उसकी 'वाचक' शक्ति को नाद या प्राकृता[3] ध्वनि कहते हैं जो अनेक 'वैकृत' ध्वनियों में व्यक्त होकर व्याकृता बनती है, परन्तु यह केवल 'वृत्तिभेद' है, स्फोटात्मा स्वयं फिर भी 'अभिन्न'[4] रहता है। आत्मा पहले नाद या प्राकृता ध्वनि के रूप में व्यक्त होता है (वा० प० १, २, ३०-३१; १, ७६), फिर वही शक्ति बुद्धि तथा प्राण आदि के सहारे नानारूप धारण कर लेती है (वा० प० १, ७७) ये। विकार वस्तुतः नाद या ध्वनि में ही होते हैं, जो 'वाच्य' रूप आत्मा का 'वाचक' है, परन्तु फिर भी 'वाच्य' ओंकार या आत्मा (पर शब्द ब्रह्म प्रणव) में इनको प्रतीति समझी (वा० प० १, ४८-४९) जाती है। कोई कोई आगमग्रंथ सच्चिदानन्द निर्विकार ओंकार से शक्ति, शक्ति से नाद और नाद से बिन्दु की उत्पत्ति बतलाते हैं (आसीच्छक्तिस्ततो नादो नादाद्बिन्दुसमुद्भवः); शक्ति से सर्वप्रथम उत्पन्न होने वाला यह नाद महानाद कहलाता है। अष्टप्रकरणकार के अनुसार उक्त बिन्दु का नाम अनाहत नाद भी है (बिन्दुरेव समाख्यातो व्योमानाहतमित्यपि); इसी अनाहत नाद या परबिन्दु से नाद उत्पन्न होता है (भिद्यमानात् परात् बिन्दोर्व्यक्तात्मा रवोऽभवत्); यह अव्याकृत नाद व्याकृत

---

१. वा० प०, ७१–७३।

२. परः परतरं ब्रह्म ज्ञानानन्दादिलक्षणम्।
प्रकर्षेण प्रणवः यस्मात् परं ब्रह्म स्वभावतः॥

अपरः प्रणवः साक्षाच्छब्दस्य सुनिर्मलः।
प्रकर्षेण नवत्वस्य हेतुत्वात् प्रणवः स्मृतः॥ (सूतसंहिता-१, २)

३. स्फोटस्याभिन्नकालस्य ध्वनिकालानुपातिनः
ग्रहणोपाधिभेदेन वृत्तिभेदं प्रकाशते।
स्वभावभेदो नित्यत्वे ह्रस्वदीर्घप्लुतादिषु
प्राकृतस्य ध्वनेः कालः शब्दस्येत्युपचर्यतः (वा० प०, १, ३०–३१)

४. शब्दस्योर्ध्वमभिव्यक्तं वृत्तिभेदे तु वैकृताः।
ध्वनयः समुपोहन्ते स्फोटात्मा तैर्न भिद्यते। (व० प०, १, ७७)

होकर नानावर्णों को जन्म देता है जो 'कार्य-नाद' कहलाते हैं (वर्णात्मना-विर्भवति गद्यपद्यादिभेदशः)।

कुछ शैवागमों में आत्मा से उत्पन्न होने वाली वर्णादि की इस बहुमुखी सृष्टि को एक दूसरे ढंग से भी बतलाया गया है। आत्मा शिव है, उसकी शक्ति का नाम ज्ञान-शक्ति है जो सारी सृष्टि का निमित्त कारण है। शिव और शक्ति मिलकर एक संयुक्त शिव-शक्ति-तत्त्व बनता है जिससे परमेश्वर की परिग्रह-शक्ति या क्रिया-शक्ति का जन्म होता है। परिग्रह-शक्ति बिन्दु कहलाती है और सृष्टि का उपादान कारण है। यह बिन्दु शुद्ध तथा अशुद्ध दो प्रकार का है। शुद्ध बिन्दु के अपर नाम महाबिन्दु तथा महामाया और अशुद्धबिन्दु के बिन्दु एवं माया भी हैं। शक्ति तथा बिन्दु के सम्बन्ध को 'भेदज्ञान' या विकल्प कहते हैं। इसी विकल्प का आश्रय लेकर शिव (आत्मा) शुद्धबिन्दु में क्षोभ उत्पन्न करता है जिसके फलस्वरूप उससे शब्द और अर्थ की दो धारायें चलती हैं। इन दोनों की पृथक्-पृथक् चार अवस्थायें परा, पश्यन्ती, मध्यमा तथा वैखरी होती हैं। शुद्ध-बिन्दु से होने वाली यह सृष्टि 'शुद्ध सृष्टि' कहलाती है। अशुद्ध बिन्दु भी, इसी प्रकार शिव (आत्मा) द्वारा क्षुब्ध किये जाने पर, अशुद्ध सृष्टि को जन्म देता है और उससे उद्भूत शब्द एवं अर्थ की धारायें भी परा, पश्यन्ती, मध्यमा तथा वैखरी, इन चार अवस्थाओं में व्यक्त होती हैं। ये दोनों प्रकार की सृष्टियाँ जिसे बिन्दु से उत्पन्न हुईं वह 'अचित्' है। अतः इन दोनों को पार करके ही 'चित्' स्वरूप शिव (आत्मा) का साक्षात्कार होता है; ओंकार प्रत्यक्ष हो जाता है।

वेद का व्याकरण

यह आत्मा अथवा प्रणव (ओंकार) की शक्ति वाक् के अव्याकृता से व्याकृता होने की कथा कही गई है। इसी को एक दूसरे रूप में भी कहा जाता है। आत्मा या ओंकार देव है जो अपने को वेद द्वारा व्यक्त करता है; इसीलिए 'वेदेन देवोऽसि' का मंत्र प्रचलित हुआ। अतः वेद भी वाक् का पर्यायवाची हुआ और जिस प्रकार वाक् के नानारूप ओंकार (अपरप्रणव) से प्रसूत होते हैं (ओंकार एव सर्वा वाक्.........सैषा पूज्यमाना बह्वी भवति), उसी प्रकार 'सभी वाक्' वेद में अनुप्रविष्ट बताई जाती हैं (सर्वाः वाचः वेदमनुप्रविष्टाः) वेद के द्वारा जब आत्मा (पुरुष) व्यक्त होता है, तो सबसे पहले वह 'छन्दस्य' पुरुष होता है; फिर ऋङ्मय, यजुर्मय तथा साममय-नाम से 'त्रिवृत' होता (एष वै छन्दस्यः प्रथमो पुरुषः.........स उ एव एष ऋङ्मयः यजुर्मयः साममयः

वैराजः पुरुषः) जब प्रसिद्ध पुरुषसूक्त[1] में पुरुष से छन्दस, ऋक्, यजु और साम की सृष्टि हुई बताई जाती है अथवा जब बृहदारण्यक[2] उपनिषद् में आत्मा को 'वाक्' द्वारा छन्द, ऋक्, यजु और साम की सृष्टि (स तया वाचा तेनात्मनेदं सर्वमसृजत यदिदं किं चर्चो यजूंषि सामानि छन्दांसि) हुई कही जाती है, तो यही बात अभिप्रेत समझी जानी चाहिए। यहां यह कहने की आवश्यकता नहीं कि उक्त उद्धरणों में 'छन्द' शब्द 'अथर्ववेद' के लिए ही प्रयुक्त हुआ है, क्योंकि सृष्टि-प्रसंग[3] में ऋक् आदि के साथ अथर्ववेद का ही प्रयोग मिलता है, और इसीलिए हरिवंशपुराण में अथर्णवेद को निश्चित रूप से छन्द कहा गया है:—

ऋचो यजूंषि सामानि छन्दस्याथर्वणानि च।
चत्वारस्त्वखिला वेदाः सरहस्याः सविस्तराः॥

इस प्रकार वेद की यह चतुर्धा व्याकृति होती है। स्फोटवाद की एक दृष्टि से स्फोटात्मा (पर शब्दब्रह्म) अपनी वाक् (शक्ति) का स्फुरण करके अपर शब्दब्रह्म अथवा 'वेदबीज, ओंकार को ब्रह्म परमात्मन् के साक्षात् वाचक के रूप में प्रकट करता है जिसके अ, उ, म् तीन वर्ण (जो क्रमशः ऋक्, यजु, साम के प्रतीक हैं) सत्व, रजस्, तमस् नामक गुणों की अर्थवृत्तियों (ज्ञान, क्रिया, इच्छा) तथा अन्तस्थ, ऊष्म, स्वर, स्पर्श, दीर्घ, ह्रस्व आदि लक्षण से युक्त समस्त वर्ण-समूह में परिणत हो जाते हैं:—

शृणोति य इमं स्फोटं सुप्ते श्रोत्रे च शून्यदृक्।
येन वाग् व्यज्यते यस्य व्यक्तिराकाश आत्मनः॥
स्वधाम्नो ब्रह्मणः साक्षाद्वाचकः परमात्मनः।
स सर्वमन्त्रोपनिषद्वेदबीजं सनातनम्॥
तस्य ह्यासन् त्रयो वर्णा अकाराद्या भृगूद्वहाः।
धार्यन्ते यैस्त्रयो गुणानामर्थवृत्तयः॥
ततोऽक्षरसमाम्नायमसृजद् भगवान् स्वयम्।
अन्तस्थोष्मस्वरस्पर्शदीर्घह्रस्वादिलक्षणम्॥

वेद की इस व्याकृति की तुलना ऊपर उल्लिखित पूर्वपाणिनीयम् के शब्दार्थसम्बन्ध से वर्ण-पदादिरूप में होने वाले नानारूपात्मक व्याकरण से भलीभांति की जा सकती है। सनत्सुजातीय में 'यज्ञसंतति' के लिये एक वेद को

१. ऋ० १०, ९०, ९
२. १, २, २
३. तु० क० यस्मादृचो अपातक्षन् यजुर्यस्मादपाकषन्।
सामानि यस्य लोमानि अथर्वाङ्गिरसो मुखम्॥ (अ० वे० १०, ७, २०)

चतुर्विध व्याकृति (व्यदधात् यज्ञसंतत्यै वेदमेकं चतुर्विधम्) तथा वायुपुराण में एक वेद का चतुर्धा विभाजन (वेदमेकं चतुष्पादं चतुर्धा व्यभजत् प्रभुः) इसी वेद-व्याकरण के अन्य संस्करण हैं जिसका रूपांतर वाक् के चतुर्धा व्याकृत होकर परा, पश्यन्ती, मध्यमा और वैखरी अथवा पराशक्ति, क्रियाशक्ति, ज्ञानशक्ति और इच्छाशक्ति के रूप में ऊपर प्रस्तुत किया जा चुका है। जिस प्रकार क्रिया, ज्ञान और इच्छा का संयुक्तसूक्ष्मत्रयी रूप परा में है उसी प्रकार ऋक्, यजु और साम की त्रयी का संयुक्त रूप अथर्ववेद में माना जा सकता है; संभवतः इसीलिए अथर्ववेद का प्रतिनिधि ब्रह्मा अन्य तीनों वेदों के ऋत्विजों की अपेक्षा यज्ञ में अधिक गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त करता है। उक्त त्रयी के संयुक्त सूक्ष्म-रूप का प्रतीक होने से, उसमें क्रिया (ऋक्) यजु (ज्ञान) तथा साम (इच्छा)-रूप से हमारे अंगों की सारी सारभूत शक्तियाँ आ जाती हैं; इसीलिये उसे 'आंगिरस' अर्थात् 'अंगों का रस' कहा जाता है और उसी संयुक्त सूक्ष्मरूप से समस्त निम्नगामिनी (अर्वाक्) नानात्वमयी सृष्टि का प्रारंभ (अथ) होता है, इसलिए उसे 'अथर्वा'[1] (अथ+अर्वाक्) की संज्ञा भी दी जा सकती है। अतः त्रयी के संयुक्त रूप को अथर्वांगिरस[2] भी कहा जाता है और चारों वेदों में त्रयी की ही स्थिति स्वीकार की जाती[3] है, परन्तु यह स्थूलत्रयी तो 'अपरा विद्या' है जो ब्रह्म की प्राप्ति कराने वाली सूक्ष्म 'परा विद्या' से निष्कृष्ट मानी[4] गई है। प्रश्नोपनिषद्[5] का कथन है कि 'शांत, अजर, अमृत, अभय, पर' लोक की प्राप्ति तो ओंकार से होती है, ऋक्, यजु, तथा साम से नहीं। छान्दोग्य[6] उपनिषद् में कहा गया है कि जैसे कोई जल में देख ले, वैसे ही मृत्यु ने देवताओं को ऋक्, यजु तथा साम में देख लिया; देवतालोग यह जानकर ऋक्, यजु तथा साम से ऊपर उठकर 'स्वर' (ओंकार) में चले गये, तो वे मृत्यु की पहुँच के परे पहुंच गये। जो ऋक्, यजु साम अथवा क्रिया, ज्ञान, इच्छा को ही साध्य मान लेता है वह केवल क्षणिक सुख का ही भागी होता है; अतः श्रीमद्भगवद्-

---

१. देखिये—वैदिक एटिमॉलॉजी में 'अथर्वा'

२. तु० क० यस्मादृचः अपातक्षन् यजुर्यस्मादपाकषन्,
सामानि यस्य लोमानि अथर्वांगिरसो मुखम् ॥ १०, ७, २० ॥

३. मु० उ० १, १, ४।

४. त्रयीं विद्यामवेक्षेत वेदे सूक्तमथाङ्गतः।
ऋक्सामवर्णाक्षरता यजुषोऽथर्वणस्तथा। (म० भा० शा० प० २३५)

५. प्र० उ० ५, ५।

६. छां० उ० १, ४, २।

गीता में केवल इन्हीं को सर्वसाध्य समझनेवाले 'वेदवादरत' लोगों की कड़े शब्दों में आलोचना की गई है और ब्रह्म-ज्ञानी के लिए इन वेदों (क्रिया आदि के प्रतीक ऋक् आदि) को निरर्थक कहा गया है:—

यावानर्थ उदपाने सर्वतः संप्लुतोदके।
तावान्सर्वेषु वेदेषु ब्राह्मणस्य विजानतः॥

पूर्वपाणिनीयम् का रहस्य

अतः स्पष्ट है कि जिस शब्दानुशासन को पूर्वपाणिनीयम् की संज्ञा दी गई है उसी का रूपांतर इन्द्र द्वारा वाक् की व्याकृति किये जाने की कथा में है और उसी को वेद-विभाजन अथवा व्याकरण भी कहा जा सकता है। इसका सारांश है—अव्यक्त आत्मा की प्राकृता वाक् का व्याकृता होना, नित्य और एक शब्द का अनित्य वर्णों और पदों की एकादशी-अनेकता में विभक्त होना। ऐतरेय उपनिषद्[1] में इसी बात को प्रकारान्तर से इस प्रकार व्यक्त किया गया है:—

कोऽयमात्मेति वयमुपास्महे, कतरः स आत्मा ? येन वा पश्यति, येन वा शृणोति, येन वा गंधानाजिघ्रति, येन वा वाच्यं व्याकरोति, येन वा स्वादु चाऽस्वादु च विजानाति, यदेतद् हृदयं मनश्चैतत् संज्ञानम्, आज्ञानं, विज्ञानं, प्रज्ञानं, मेधा, दृष्टिः, धृतिः, मतिः, मनीषा, जूतिः, स्मृतिः, संकल्पः, क्रतुः, असुः, कामः, वशः इति सर्वाणि एतानि प्रज्ञानस्य नामधेयानि भवन्ति।

एष ब्रह्म एष इन्द्र एष प्रजापतिः

इस उद्धरण से स्पष्ट है कि प्रज्ञानस्वरूप आत्मा ही पांचों ज्ञानेन्द्रियों, हृदय, मन तथा वाक् द्वारा अपने 'वाच्य' को 'व्याकृत' करने वाला ब्रह्म, इन्द्र अथवा प्रजापति कहलाता है और संभवतः ऋक्तंत्रोक्त[2] ब्राह्म, ऐन्द्र तथा प्राजापत्य व्याकरण इसी वाक् या प्रज्ञान व्याकृति की ओर संकेत करते हैं। ब्राह्मणों और उपनिषदों में बृहस्पति[3] की व्युत्पत्ति करते हुये भी उसे वाक् का पति तथा

---

१. ऐ० उ० २, २।

२. ब्राह्मैशानमैन्द्रं च प्राजापत्यं बृहस्पतिम्।
त्वाष्ट्रमापिशलं चेति पाणिनीयमथाष्टमम्॥

३. वाग्वै त्वष्टा वाग्घीदं सर्वं त्वाष्टीव (ऐ ब्रा० २, ४); त० क० इन्द्रो वै त्वष्टा (ऐ० ब्रा० ६, १०,; ऋ. १, १२, ६)

ब्रह्म[1] बताया जाता है और त्वष्टा[2] को तो स्वयं वाक् या इंद्र ही कहा जाता है; ऐसी स्थिति में ऋक्तंत्रोक्त आठ व्याकरणों में से बार्हस्पत्य एवं त्वाष्ट्र व्याकरण का तात्पर्य भी उक्त 'वाक्-व्याकृति' ही प्रतीत होता है। जैसा कि उक्त उद्धरण से प्रकट है, यह सारी वाक्-व्याकृति अक्षरों या वर्णों की उत्पत्ति से आगे नहीं बढ़ती, क्योंकि यही 'प्रज्ञान' की अभिव्यक्ति है; इसके आगे वर्णों से पदों (पदानि वर्णेभ्यः) की सृष्टि हो जाती है, जो प्रज्ञान की परिधि से बाहर स्थूल ध्वनि के क्षेत्र की घटना है। आपिशलि का 'अक्षरतंत्र' और ईशान या महेश्वर के प्रसिद्ध माहेश्वरसूत्र भी अक्षरों या वर्णों की व्याकृति की ओर ही संकेत करते प्रतीत होते हैं; अतः ऋक्तन्त्र के आपिशलि एवं ऐशान व्याकरण भी उक्त उसी प्रज्ञान अथवा वाक् की व्याकृति के क्षेत्र में आते हैं, जिसका संबन्ध ब्रह्म, इन्द्र, बृहस्पति तथा प्रजापति से बतलाया गया है; इस प्रकार ऋक्तंत्रोक्त आठ व्याकरणों में से सात केवल उक्त उसी वाक्-व्याकृति के आध्यात्मिक तथ्यों को सूचित करते हैं, जिसे 'पूर्वपाणिनीयम्' में शब्दानुशासन कहा गया है। अब केवल आठवाँ व्याकरण जिसे ऋक्तंत्र में 'पाणिनीयं' कहा गया अवशिष्ट रहता है:—

ब्राह्मैशानमैन्द्रं च प्राजापत्यं बृहस्पतिम्।
त्वाष्ट्रमापिशलं चेति पाणिनीयमथाष्टमम्॥

पाणिनीयम् का पाणिनीयत्व

इस अष्टम व्याकरण को पूर्वपाणिनीयम् से बाहर मानने का कारण संभवतः यह है कि पूर्वपाणिनीयम् के अन्तर्गत केवल वर्ण-पर्यन्त वाक्-व्याकृति मानी जाती थी और वर्णों से उद्भूत पदों और वाक्यों की मीमांसा को पाणिनीय व्याकरण माना जाता था। इसका संकेत पूर्वपाणिनीयम् के अन्तिम दो सूत्रों में स्पष्ट है, जब कि 'पदानि[3] वर्णेभ्यः' कहते ही तुरंत 'ते प्राक्[4]' कह कर वर्णों को पूर्वपाणिनीय नित्यक्षेत्र का स्वीकार कर 'पदानि' को उस क्षेत्र से बाहर

---

१. वाग्वै बृहती बृहत्यै पतिस्तस्माद् बृहस्पतिः (श० ब्रा० १४, ४, १, २३, जै० उ०- २, २।

२. ब्रह्म वै बृहस्पतिः ऐ० ब्रा० १, १३, १, १६; २, ३८; ४, ११; कौ० ब्रा० ७, १०; १२, ८; १८, २; श० ब्रा० ३, १, ४, १५; ३, ९, १, ११ इत्यादि।

३. पू० पा० २३।

४. वही २४।

अनित्य[1] एवं लौकिक[2] 'व्याकरण'[3] का विषय माना गया है।

यहाँ पाणिनि-शब्द की व्युत्पत्ति की ओर एक स्वाभाविक संकेत दिखाई पड़ता है। श्रीयुधिष्ठिर[4] मीमांसक ने पाणिनि-शब्द पर विचार करते हुये, पाणिनीय-शिक्षा के याजुष पाठ में उपलब्ध 'पाणिनेय' नाम का उल्लेख किया है। पूर्वपाणिनीयम् के क्षेत्र की उपर्युक्त आभ्यंतरिकता के विपरीत, पदादि की मीमांसा में स्वतः प्राप्त बाह्यता को देखते हुये पाणिनेय शब्द सार्थक प्रतीत होता है। संस्कृत में पाणि का अर्थ प्रायः हाथ होता है, और दूसरा अर्थ (जो प्रयोग में प्रायः नहीं मिलता) 'बाज़ार' है। जो हाथ से किया जाता है वह मनुष्यकृत है, कृत्रिम है; अतः पदों आदि की मीमांसा मनुष्यकृत या कृत्रिम होने से पाणिनेय (हस्तकार्य) कहला ही सकती है, जबकि परा, पश्यन्ती तथा मध्यमा के रूप में व्याकृत होती हुई प्राण से संयुक्त होकर स्थानप्रयत्न के संयोग से वर्णोत्पत्ति तक की व्याकृति को स्वभाव-नेय कहा जा सकता है। यदि पाणि को बाज़ार के अर्थ में ग्रहण करें, तो पाणि को एक 'व्यवहारभूमि' मानना पड़ेगा जहाँ विविध लोगों के बीच सम्पर्क होने से भाषा के व्याकरण की आवश्यकता पड़ती है; अतः व्याकरण को पाणि (बाज़ार) द्वारा जन्य माना जा सकता है। पाणिनेय (पाणिनीय) व्याकरण वह व्याकरण है जो स्वभावजन्य के विपरीत मनुष्यजन्य अथवा जन-सम्पर्कजन्य है। इसका अभिप्राय यह नहीं कि पाणिनि नाम का कोई वैयाकरण नहीं, परन्तु यह सम्भव है कि उसका अपना नाम कुछ और ही हो, परन्तु 'पाणिनेय' व्याकरण का सफल आचार्य होने के कारण उसको 'पाणिनेय' उपाधि मिली हो, जो कालान्तर में पाणिनि-रूप में बदल गई हो।

पूर्वपाणिनीयता

अस्तु, इसमें कोई संदेह नहीं कि पाणिनीय-व्याकरण के आठ अध्यायों में सुबन्त और तिङन्त पदों की जो विस्तृत रचनाविधि दी गई है वह मनुष्य के कृतित्व का महान् चमत्कार है, लेकिन वर्ण-ध्वनियों द्वारा पदों के अस्तित्व में आने से पूर्व मन, प्राण तथा उच्चारण के स्थान और प्रयत्न के माध्यम से आत्मा की शक्ति (वाक्[5]), जिन वर्णों के रूप में व्याकृत होती है, वह मनुष्य के आभ्यं-

---

१. पू०पा०—१७–१८।

२. वही १९।

३. वही २०।

४. संस्कृत व्याकरणशास्त्र का इतिहास, पृ० १७५–१७६।

५. जिसे पूर्व-पाणिनीयम् में 'शब्दो धर्मः' कहा है (पू० पा० २)।

तरिक व्यक्तित्व का महत्तर चमत्कार है। इस आभ्यंतरिक वाक्-व्याकृति से वाह्य व्याकृति तक की मीमांसा हमें सर्वप्रथम ऋग्वेद में प्राप्त होती है, जहाँ व्याकृति विविध अवस्थाओं की दृष्टि से वाक् को कद्रीची, पराची, सध्रीची एवं विषूची संज्ञा[1] दी गई है और एक सुन्दर रूप द्वारा उसे एकपदी से नवपदी तथा एकाक्षरा से सहस्राक्षरा-रूप में व्याकृत होता हुआ दिखाया गया[2] है। उपनिषदों और ब्राह्मणों में इसी के संयोग से अवर्ण आत्मा बहुवर्ण[3] अथवा 'सर्व' रूप में वाङ्-मय[4] होने वाला है।

सर्व और सर्वज्ञ

आत्मा का उक्त बहुवर्ण अथवा सर्वरूप वाङ्मय और व्याकृत होते हुए भी 'अनिरुक्त'[5] और अक्षय्य[6] होता है। इस वाङ्मय-रूप का वाचक 'सर्वम्' नपुंसकलिंगी है, जबकि इसमें व्याप्त आत्मा का अवाङ्मय-रूप 'सर्वः'[7] पुंलिंगी है और सर्वज्योति[8] परमयज्ञ[9] कहलाता है। इसी सर्वः सर्वज्योति को अन्यत्र सर्वजित[10] की संज्ञा दी गई है और इसी को संभवतः चन्द्रगोमि ने सर्वज्ञ सिद्ध तथा उक्त सर्वं को सर्वीयं गुरुं कह कर नमस्कार किया है—

सिद्धं प्रणम्य सर्वज्ञं सर्वीयं जगतो गुरुम्।

इस प्रसंग में यह भी उल्लेखनीय है कि पूर्वोक्त पूर्वपाणिनीयम् में भी 'सिद्ध'[11] और 'सर्वं'[12] नाम से शब्द को पृथक्-पृथक् दो रूपों में देखा है। जब चन्द्रगोमि ने

१. ऋ० वे० १, १६४, १७ इत्यादि तु० क० वें० द०, पृष्ठ ५१–६८।
२. ऋ० वे० १, १६४, ३६–४१।
३. एकोऽवर्णः बहुधा शक्तियोगात् (श्वे० उ० ४, १)।
४. तत्सर्व आत्मा वाचमप्येति वाङ्मयो भवति कौ० ब्रा० २, ७ तु० क० श० ब्रा० ८, ७, २, ११।
५. सर्वं वा अनिरुक्तम् (श० ब्रा० १, ३, ५, १०; १, ४, १, २१; २, २, १, ३,; ७, २, २, १४; १०, १, ३, ११; १२, ४, २, १)।
६. सर्वं वाऽअक्षय्यम् (श० ब्रा० १, ६, १, १९; ११, १, २, १२)।
७. श० ब्रा० (६, १, ३, १८; ६, १, ३, ११)।
८. तां० ब्रा० (१६, ६, १)।
९. वही (१६, ९, २)।
१०. वही (१६, ७, २; २२, ८, ४)।
११. सर्वो धर्मः······सिद्धः।
१२. सर्वः शब्दः नित्यः।

सिद्ध और सर्वीय को नमस्कार करने से पूर्व नमः वागीश्वराय लिखा, तो संभवतः शब्द-ब्रह्म का कोई तृतीय रूप भी अभिप्रेत था जिसमें उक्त दोनों रूपों का समावेश होता हो। इसकी तुलना श्वे० उ० के उस अग्र्य पुरुष से कर सकते हैं जो सब का वेत्ता है परन्तु उसका वेत्ता कोई नहीं है (स वेत्ति वेद्यं न च तस्यास्ति वेत्ता); वही सर्वात्मा तथा सर्वगत होकर भी नित्य है—

वेदाहमेतमजरं पुराणं सर्वात्मानं सर्वगतं विभुत्वात्।
जन्मनिरोधं प्रवदन्ति यस्य ब्रह्मवादिनो हि प्रवदन्ति नित्यम्॥

कात्यायनसूत्र

आत्मा अपने चरम सत् रूप में अनिर्वचनीय होने से वेद में कः (पुंलिंग) अथवा कत् (नपुंसकलिंग) कहलाता है; इस अवस्था में उसकी शक्ति अथवा वाक् उसी में लीन होने से कद्रीची कही जाती है, क्योंकि इस रूप में यह कह सकना कठिन है कि वाक् कहाँ गई (सा कद्रीची कंस्विदर्धं परागात्, ऋ० वे० १, १६४,१७); उक्त कत् के प्रथम (कारण) व्यक्त रूप को कात्य तथा द्वितीय (सूक्ष्म) व्यक्त रूप को कात्यायन कहा जा सकता है। कारणशरीर एवं सूक्ष्मशरीर में व्यक्त होने वाले वाक्-संयुक्त आत्मा की अभिव्यक्ति को ही अवर्ण से नानावर्ण में रूपांतरित होने वाला कहा गया है और यही उक्त पूर्वपाणिनीयम् का विषय है। अतः इसी विषय को कात्यायन तथा पूर्वपाणिनीयम् के सूत्रों को कात्यायनसूत्र कहना सर्वथा युक्तियुक्त है।

कात्यायन और पाणिनेय

इस दृष्टि से पूर्वोक्त कात्यायन एवं पाणिनि का संघर्ष एक प्रतीक आख्यान के रूप में ही लिया जा सकता है। मनुष्य के अभिव्यक्तिशील व्यक्तित्व को वेद में प्रायः वृषभ या वृषन् इन्द्र के रूप में देखा गया है और इस अभिव्यक्ति की आधारभूता वाक् के व्यापार को वर्षा के रूपक[1] द्वारा चित्रित किया गया है। अत एव इस रूप में मानव को वर्ष ऋषि तथा उसकी सूक्ष्म एवं स्थूल अभिव्यक्तियों को क्रमशः कात्यायन एवं पाणिनेय कहा जा सकता है। स्थूल अभिव्यक्ति में जब सुबन्तों और तिङन्तों की सृष्टि होने लगती है, तो स्वतः सूक्ष्म अभिव्यक्ति का पर्यवसान ही तो स्थूल पदादि की अभिव्यक्ति में होता है। अत एव कात्यायन एवं पूर्वपाणिनेय शब्दों द्वारा एक ही मानवशक्ति की क्रमशः सूक्ष्म एवं स्थूल

---

१. ऋ० १, १६४।

अभिव्यक्तियों का विवेचन उसी प्रकार अभिप्रेत है जिस प्रकार दूसरी दृष्टि से क्रमशः पूर्वमीमांसा एवं उत्तरमीमांसा में। अतः काशिका ६, २, १०४ में उल्लिखित पूर्वपाणिनीयं शास्त्रम् तथा हरदत्त द्वारा उसे 'पाणिनीयशास्त्रं पूर्वं-चिरन्तनम्' कहा जाना इसी सूक्ष्म अभिव्यक्ति की ओर संकेत करता प्रतीत होता है।

पूर्वसूत्र - परम्परा

उक्त पूर्वपाणिनेय अथवा कात्यायन की सूक्ष्म व्याकृति की एक निश्चित परम्परा रही प्रतीत होती है, जिसके पारिभाषिक शब्द पाणिनेय-परम्परा से कुछ भिन्न माने जाते थे। पतंजलि के महाभाष्य में भी जहाँ-जहाँ पूर्वसूत्र का उल्लेख है वहाँ-वहाँ इसी प्रकार की भिन्नता के दर्शन होते हैं। उदाहरण के लिये उसके अनुसार पूर्वसूत्र-परम्परा में वर्ण की अक्षर[1], तथा गोत्र[2] की वृद्ध-संज्ञा होती है। पतंजलि द्वारा प्रयुक्त 'पूर्वसूत्र' शब्द के निम्नलिखित प्रयोग भी सम्भवतः इसी दृष्टि से समझे जा सकते हैं—

पूर्वसूत्रनिर्देशो वापिशलमधीत इति। पूर्वसूत्रनिर्देशो पुनरयं द्रष्टव्यः। सूत्रेऽप्रधानस्योपसर्जनमिति संज्ञा क्रियते (४, ४, १४)

पूर्वसूत्रनिर्देशश्च। चित्वान् चित इति (६, १, १६३)

अथवा पूर्वसूत्रनिर्देशोऽयं पूर्वसूत्रेषु च येऽनुबन्धा न तैरिहेतत्कार्याणि क्रियन्ते (७, १, १८)

पूर्वसूत्रनिर्देशश्च (८, ४, ७)

निर्देशोऽयं पूर्वसूत्रेण वा स्यात् (७, १, १८)

शिक्षा, प्रातिशाख्य तथा निरुक्त

प्रारंभ में उक्त पूर्वपाणिनीयसूत्र-परंपरा का क्षेत्र सूक्ष्मवाक् की वर्णों या अक्षरों में व्याकृति तथा उनकी ध्वनियों तक ही सीमित रहा प्रतीत होता है। अतः शिक्षा एवं प्रातिशाख्यों की छन्दोबद्ध रचनाएँ इसी परंपरा में मानी जा सकती हैं। जैसा कि पूर्वपाणिनीयम् के "वर्णेभ्यः पदानि" तथा 'ते प्राक' सूत्रों से पता चलता है, वर्णों की व्याकृतिमात्र ही इस परंपरा का क्षेत्र होते हुये भी, किसी सीमा तक पदों को भी इसके क्षेत्र में घसीटने का प्रयत्न किया जाता था।

---

१. म० भा० १, १, २।

२. म० भा० १, २, ६८।

संभवतः यह अतिक्रमण प्रारंभ में पदों के संकलन तथा वर्गीकरण तक ही सीमित रहा हो और निघंटु, पुष्पसूत्र, फिट्सूत्र आदि की रचना इसी परंपरा में हुई हो। जैसा कि पहले निर्देश हो चुका है, सूक्ष्मवाक् की व्याकृति ही इंद्र का व्याकरण है, अतः कोई आश्चर्य नहीं कि परंपरा में ऐन्द्रव्याकरण वर्णसमूह[1] और अधिक से अधिक पदसमष्टि[2] से संबद्ध माना जाय। परन्तु पदसमूह के संकलन तथा वर्गीकरण के साथ ही उनके निर्वचन के प्रति जिज्ञासा होना स्वाभाविक है; अतः निरुक्त का आविर्भाव हुआ और उसके परिणामस्वरूप हुई शब्द की धातु-जिज्ञासा।

काशकृत्स्न - व्याकरण

अतः अब प्राचीन सूक्ष्मवाक् की वर्णों में व्याकृतिमात्र को अथवा कुछ आगे बढ़ कर वर्णसमूह से बने पदों के संकलनमात्र को व्याकरण मानना पर्याप्त नहीं था। वर्ण और पदों की अभिव्यक्ति तो वाक् की आंशिक अभिव्यक्ति (काश, प्रकाश) है; उसके आगे पदों के मूल में स्थित धातु और प्रत्यय की व्याकृति को व्याकरण के क्षेत्र में लिए बिना वाक् की अभिव्यक्ति (काश) में कृत्स्नता सम्भव नहीं थी। अतः वर्ण, पद एवं धातु-प्रत्यय के समावेश से ही व्याकरण को संभवतः त्रिकं काशकृत्स्नम्[3] या काशकृत्स्नीयम्[4] की संज्ञा प्राप्त हुई। पं० युधिष्ठिर मीमांसक[5] का मत है कि काशकृत्स्न-व्याकरण को पहले काशकृत्स्न-तंत्र कहते थे और उसी का संक्षिप्त नाम 'कातंत्र' है जो मूलतः[6] तीन अध्यायों वाला ही था।

काशकृत्स्नं गुरुलाघवम्

अस्तु व्याकरण के काशकृत्स्न होने पर उसके विकास का क्षेत्र खुल गया। अब उसमें व्याकरण की लघुता और गुरुता, सूक्ष्मता और स्थूलता दोनों का

---

१. पं० युधिष्ठिर मीमांसक द्वारा उद्धृत चरकव्याख्या—
शास्त्रेष्वपि अथ वर्णसमूह इति ऐन्द्रव्याकरणस्य। (सं० व्या० इ० पृ० ८६)

२. तु० क०—नैकं पदजातम् यथा अर्थः पदम् इत्यैन्द्राणाम्।
(दुर्गः-निरुक्तवृत्ति, पृ० १०; सं० व्या० इ०, पृ० ८६)

३. काशिका ५, १, ५८।

४. शाकटायन, अमोघावृत्ति ३, २, १६१।

५. सं० व्या० इ० (द्वि० सं०) पृ० ५०४-५०५।

६. वही, पृ० ११७।

समावेश हो सकता था। इंद्र द्वारा सूक्ष्मवाक् की व्याकृति का उल्लेख हो चुका है; इसी के एक लघुरूप का उल्लेख वा० सं० १६, ७७ में है जहाँ प्रजापति[1] को सत्य एवं अनृत का व्याकरण करने वाला कहा गया है और इसी के अन्य रूप का निरूपण वाक् के एकपदी से नवपदी अथवा एकाक्षरा से सहस्राक्षरा होने में देखा[2] जा सकता है। शिक्षा, प्रातिशाख्य और निरुक्त में इसी लघुरूप की स्थूलतम अवस्था मानी जा सकती है, परन्तु जब धातु, प्रातिपदिक, नामाख्यात के साथ-साथ लिङ्ग, वचन, विभक्ति, प्रत्यय, उपसर्ग, निपात, विकार आदि पारिभाषिक[3] शब्दों का उल्लेख होने लगा तो निस्संदेह व्याकरण की उक्त लघुता पूर्णतया गुरुता में बदल गई और उसका विषय वर्णों की उत्पत्ति अथवा पदों की साधारण व्युत्पत्ति तक सीमित न रहकर वाक्य में विभिन्न शब्दों के पारस्परिक सम्बन्ध पर आधारित अनेक नियमों की सृष्टि होने लगी। अतः कोई भी ग्रंथकार यदि सम्पूर्ण (कृत्स्न) व्याकरण को लिखने का दावा करे, तो उसे विषय के लघु और गुरु, सूक्ष्म एवं स्थूल दोनों पहलुओं को लेना पड़ेगा। अतः काशकृत्स्न-व्याकरण के गुरुलाघवम् का यही रहस्य प्रतीत होता है।

चान्द्र-व्याकरण की लघुता और सम्पूर्णता

चान्द्र-व्याकरण के रचयिता ने भी अपने 'शब्दलक्षण' को लघु एवं संपूर्ण कह कर सम्भवतः इसी अभिप्राय को व्यक्त किया है। यद्यपि पूर्वोल्लिखित मीमांसकजी का अनुमान भी पूर्णतया युक्तियुक्त है, परन्तु शिवसूत्र, वर्णसूत्र, धातुपाठ तथा उणादि के द्वारा यदि चन्द्रगोमि ने व्याकरण के लाघव को साधा है, तो शुद्ध व्याकरण के छः अध्यायों में उसके गौरव का भी निर्वाह हुआ है। इस दृष्टि से पाणिनि की अष्टाध्यायी में भी किसी सीमा तक 'गुरुलाघवम्' का समावेश है, परन्तु उसमें जिन नई संज्ञाओं और पारिभाषिक शब्दों का प्रवेश हुआ है और जिस नई वैज्ञानिक पद्धति को अपनाया गया है उसके व्याख्यास्वरूप निर्मित विशाल व्याकरण-साहित्य ने उक्त 'लघु' पक्ष को गौण ही नहीं, विस्मृत ही कर दिया। अष्टाध्यायी के 'गुरु' पक्ष में प्रविष्ट उक्त वैज्ञानिकता ने जहाँ उसे यथार्थतः पाणिनेय (पाणिसाध्य अथवा कृत्रिम) बना दिया, वहाँ अपने 'लघु' पक्ष को पाणिनेय से विपरीत 'अनुमेय' बनाकर वैयाकरण दर्शन की गोद

१. दृष्ट्वा रूपे सत्यानृते व्याकरोत् प्रजापतिः।
२. ऋ० वे०—१, १६४।
३. गो० ब्रा०—१, २४।

में जा बिठाया। यह होना विकास की दृष्टि से स्वाभाविक ही नहीं, आवश्यक था।

पाणिनि की ऐतिहासिकता

उक्त विवेचन से यह कदापि अभिप्रेत नहीं कि पाणिनि-नाम का कोई व्यक्ति ही नहीं हुआ। यद्यपि अष्टाध्यायी के कर्त्ता को पाणिन, पाणिनि, दाक्षीपुत्र, शालङ्कि, शालातुरीय, आहिक तथा पणिपुत्र कहा गया है, परन्तु इसमें कोई संदेह नहीं कि उसका लोक-प्रचलित नाम 'पाणिनि' ही था और संभवतः जब पाणिनीय-साहित्य की विशालता और गुरुता में व्याकरण के 'लघु' पक्ष को तिरोहित-सा होता हुआ पाया गया, तो उसे 'पूर्वपाणिनीय' नाम दे कर पृथक् विषय बनाने का प्रयत्न किया गया और पाणिनीय-साहित्य की नवीनता, वैज्ञानिकता एवं कृत्रिमता को ध्यान में रख कर उक्त 'पूर्वपाणिनीय' के विपरीत उसे विनोद के लिये पाणिनीय के स्थान पर पाणिनेय कहा गया हो।

चन्द्रगोमि और बौद्धधर्म

चन्द्रगोमि को विद्वानों ने प्रायः बौद्धमतावलम्बी माना है। इसका प्रथम आधार चान्द्रव्याकरण के प्रारम्भ में उपलब्ध श्लोक है जिसमें सिद्ध और सर्वीय गुरु को नमस्कार किया गया है। जैसा ऊपर लिखा जा चुका है, सिद्ध और सर्व-शब्दों का प्रयोग वैदिक परंपरा में भी प्राप्त है और उनको 'नमः वागीश्वराय' के संदर्भ में वैदिक ही समझना चाहिए। दूसरा आधार[1] यह है कि चान्द्रव्याकरण में स्वर और वैदिक व्याकरण का अभाव है। इस प्रसंग में पं० युधिष्ठिर मीमांसक ने प्रमाण दे कर बताया है कि चान्द्रव्याकरण में उक्त दोनों विषयों का भी समावेश अवश्य था, क्यों कि चान्द्रवृत्ति १, १, १०८ में 'स्वरं वक्ष्यामः' तथा सूत्र ३, ४, ६८ में 'स्वरं तु वक्ष्यामः' आदि कई स्थानों पर वैदिक स्वरविधान करने की प्रतिज्ञा प्राप्त होती है और इसकी आवश्यकता तभी पड़ती जब वैदिक शब्दों की रचना का भी समावेश होता। इससे स्पष्ट है कि चान्द्रव्याकरण में किसी समय वैदिक व्याकरण का भी समावेश अवश्य था।

चन्द्रगोमि के बौद्ध होने का एक अन्य प्रमाण चान्द्रव्याकरण के अन्त में उपलब्ध 'शुभमस्तु सर्वजगताम्' आशीर्वाद वाक्य भी है, परन्तु इस प्रकार की

---

१. डॉ० वेल्वेल्कर—सिस्टम आव संस्कृत ग्रॉमर, पृ० ५९; ए० के० दे० इंडि० हि० क्वा० जून १९३८, पृ० २५८।

मंगल कामना पर एकमात्र बौद्ध-धर्म का ही आधिपत्य मानने के लिए कोई ठोस प्रमाण नहीं है। किसी ग्रंथ के अंत में 'शुभमस्तु' लिखने की परिपाटी तो अब तक चली आती है और प्रायः धर्मनिरपेक्ष ही मानी जा सकती है। उदाहरण के लिए आत्रेय-संहिता आदि अनेक ग्रंथों का उल्लेख किया जा सकता है।

—फतहसिंह

एम०ए०, डी०लिट्०

प्रास्ताविक

इस छोटे से प्रास्ताविक में दो-तीन मुद्दों पर लिखने का विचार है।

(१) मुख्य व्याकरणों का संक्षिप्त परिचय और चान्द्रव्याकरण के सम्पादन का वृत्तान्त।

(२) प्रकाशित चान्द्रव्याकरण की सम्पादन-शैली का परिचय।

(३) चान्द्रव्याकरण के कर्त्ता का परिचय।

महाभाष्यकार श्रीपतंजलिमुनि ने जिस भाषा को 'लौकिक-भाषा' का नाम दिया है, ऐसी संस्कृत-भाषा के अनेकानेक छोटे-मोटे व्याकरण हमारे देश में और विदेशों में भी पूर्व में बने हैं और आज भी बनते जारहे हैं। इन सब में निम्न आठ व्याकरण प्रधान गिने जाते हैं।

"इन्द्रश्चन्द्रः काशकृत्स्नापिशली शाकटायनः ॥
पाणिन्यमरजैनेन्द्रा जयन्त्यष्ट दिशाब्दिकाः ॥"

अर्थात् इन्द्र, चन्द्र, काशकृत्स्न, अपिशलि, शाकटायन, पाणिनि, अमर और जैनेन्द्र ये आठ आदिशाब्दिक माने जाते हैं।

इस श्लोक में बताए हुए आदिशाब्दिकों के निर्देश में किसी प्रकार का कालक्रम या छोटे बड़े की कल्पना नहीं रखी गई है, परन्तु मात्र गणना करने का ही आशय रहा है।

आदिशाब्दिक— सर्वप्रथम व्याकरण की रचना करने वाले आद्यवैयाकरणों में प्रथम स्थान 'इन्द्र' का आता है। इन्द्र-नाम के उस महापण्डित द्वारा बनाया गया व्याकरण 'ऐन्द्र' नाम से प्रसिद्ध हुआ। आज यह व्याकरण उपलब्ध नहीं है, पर प्राचीनतम पाणिनीय व्याकरण के महाभाष्य में इसका नाम-निर्देशमात्र पाया जाता है। 'ऐन्द्र' व्याकरण इतना प्राचीन है कि इसके सम्बन्ध में अनेक किंवदन्तियाँ चल पड़ी हैं। जैन-सम्प्रदाय के अनुयायी प्राचीन पण्डित कहते हैं कि जब भगवान् महावीर लेखशाला (पाठशाला) में प्रथम पढ़ने बैठे तब स्वर्ग में से 'इन्द्र' भगवान् के पास आया और उनके साथ शब्दशास्त्र के सम्बन्ध में जो चर्चा भगवान् ने की उसका नाम ऐन्द्र व्याकरण हुआ। ऐसी दंतकथा श्वेताम्बर-जैनपरम्परा में बहुत समय से चली आती है।

वास्तव में 'इन्द्र' नाम का कोई विद्वान् इस व्याकरण का कर्ता था। स्वर्ग

में बसने वाले वज्रपाणि पुरन्दर शक्र का भी एक नाम 'इन्द्र' है, नामसाम्य पर उपर्युक्त किंवदन्ती प्रचलित होगई हो, यह स्वाभाविक है।

'चन्द्रगोमी' नाम के बौद्ध महापण्डित ने जो व्याकरण लिखा वह 'चान्द्र-व्याकरण' कहलाता है। प्रस्तुत प्रकाश्यमान यही व्याकरण है।

'काशकृत्स्न' और 'अपिशलि' इन दो नामों का निर्देशमात्र पाणिनीय-व्याकरण के मूलसूत्रों में कहीं-कहीं मिलता है तथा अन्य व्याकरणकारों ने भी नामस्मरण करके इनके मत का उल्लेख किया है। इससे मालूम होता है कि ये महानुभाव अवश्य ही कोई विशिष्ट वैयाकरण हो गये हैं, बाकी वर्तमान में इनके व्याकरणों की उपलब्धि आज तक तो नहीं हुई है।

शाकटायन-नाम का निर्देश भी पाणिनि के सूत्रों में मिलता है। ये कोई वेदानुयायी प्राचीन वैयाकरण हैं। एक जैन शाकटायन भी हुए हैं, परन्तु वे तो अर्वाचीन हैं। नामसाम्य से जैन-धर्म की प्राचीनता सिद्ध करने के लिये 'शाकटायन' का नाम लिया जाता है, पर यह भ्रम है और इतिहास ने इस भ्रम का परिमार्जन भी कर दिया है।

पाणिनिकृत अष्टाध्यायी-सूत्रपाठ प्रसिद्ध व्याकरण है। इसके ऊपर पातञ्जलमहाभाष्य, वाक्यपदीय, काशिका, शब्देन्दुशेखर, सिद्धांतकौमुदी, मंजूषा तथा वैयाकरणभूषण इत्यादि अनेकानेक विवेचनात्मक ग्रंथ बने हुए हैं।

अमरसिंह-नामक बौद्धपण्डित का बनाया हुआ कोशों में सबसे प्राचीन 'अमरकोश' तो आज भी प्राप्त है। इस पर भी अनेकानेक संस्कृत-टीकायें बनी हुई हैं तथा देश-भाषा में भी इसकी टीकायें प्राप्त हैं। सारे भारत में इस कोश का अच्छा प्रचार है। कोश भी व्याकरण का एक अंग ही है। बाकी, इनका बनाया हुआ कोई व्याकरण उपलब्ध नहीं है।

जैनेन्द्र-आचार्य देवनन्दिमुनि अथवा पूज्यपादस्वामी के बनाये हुये व्याकरण का नाम जैनेन्द्र-व्याकरण है। जैन-परम्परा में इससे पूर्व का कोई संस्कृत-व्याकरण उपलब्ध नहीं है। जैन-परम्परा की अपेक्षा ये आदिशाब्दिक ही हैं। इनकी रचना पाणिनीय व्याकरण की पद्धति पर की गई है और इसकी संज्ञायें बड़ी अटपटी हैं।

इन आठों व्याकरणों का निर्देश कालक्रम से इस प्रकार हो सकता है—

ऐन्द्र, काशकृत्स्न, अपिशलि, शाकटायन, पाणिनीय, चान्द्र, जैनेन्द्र, अमर।

प्रस्तुत चान्द्र व्याकरण भारत देश में ही बना है पर कहाँ बना, इसका पता नहीं। भारतीय होने पर भी चान्द्रव्याकरण का प्रथम प्रकाशन भारत में न

होकर जर्मनी में हुआ, यह हमारी विद्योपासना या विद्याप्रियता कितनी है, इसके मापदण्ड का सूचक है । जर्मनी में महापण्डित ब्राउनो लाइबिश (Bruno Liebich) ने लिपज़िग शहर से चान्द्रव्याकरण को सर्वप्रथम प्रकाशित किया । सूत्र और वृत्तिसहित संपूर्णरूप से रोमनलिपि में यह व्याकरण उपलब्ध कराने का श्रेय महापण्डित ब्राउनों को ही मिला है । मेरे इस सम्पादन का मुख्य आधार वही रोमनलिपि में मुद्रित जर्मन-आवृत्ति है । अतः इस कार्य के लिये महापण्डित ब्राउनो का मैं बहुत-बहुत आभारी हूँ ।

हमारे स्नेहास्पद एवं श्रद्धेय आचार्य श्रीजिनविजयजी पुरातत्व के तो प्रकाण्ड पण्डित हैं ही, तदुपरांत उसके अनुसन्धान में पुरातत्वविद्या की अनेकानेक उपयोगी पुस्तकों के प्रकाशन के भी उत्कट प्रेमी हैं और दुर्लभ, अलभ्य प्राचीन ग्रन्थों को प्रकाश में लाने का भी उनका अत्युत्कट प्रयत्न रहता है । उनका सम्पूर्ण जीवन ही इसी प्रवृत्ति में व्यतीत हुआ है । उमर लगभग अस्सी के आसपास है, आँखें भी बहुत कमजोर हैं, शरीर भी काम देने से इन्कार कर रहा है तो भी दृढसंकल्पी आचार्यश्री अपने प्रियकार्य से रुकते नहीं हैं । मेरा और उनका परिचय १६२० ई. से पहले का है । तबसे मैं आजतक देख रहा हूं कि लगातार अविरत भाव से उनकी प्रवृत्ति में पूर्णविराम तो नहीं ही है, पर अर्द्धविराम और अल्पविराम तक मैंने नहीं देखा । उनकी यह प्रवृत्ति भारत ही नहीं भारत से बाहर भी सुविश्रुत है । उन्होंने आज तक 'सिंघी-जैन-ग्रन्थमाला' में और 'राजस्थान-पुरातन-ग्रन्थमाला' में सैंकड़ों ग्रन्थ प्रकाशित कर दिये हैं । और आज भी यह कार्य चल ही रहा है । वे खुद ग्रन्थों का संशोधन-संपादन करते हैं तथा तत्तद्विषय के साक्षरों द्वारा भी यह कार्य कराते हैं । उनके मन में खयाल हुआ कि चान्द्रव्याकरण भारतीय ग्रन्थ है, उसके विधाता भी भारतीय ही हैं, फिर भी यह ग्रन्थ रोमनलिपि में सर्वप्रथम जर्मनी में प्रकाशित हो गया । भारत में इसका नाम केवल "इन्द्रश्चन्द्रः" वाले श्लोक में ही देखा जाता है, पर इस ग्रन्थ का न किसी ने संशोधन-सम्पादन किया और न प्रकाशन ही किया । यह भारी लज्जा की बात है । इस शर्म को दूर करने के लिये उन्होंने निश्चय किया कि 'राजस्थान-पुरातन-ग्रन्थमाला' में इसको स्थान दिया जाय और प्रारंभ में इसके मूल सूत्रपाठ को ही प्रकाशित किया जाय ।

मेरी रुचि व्युत्पत्तिविद्या में होने से वे जानते थे कि व्याकरणशास्त्र के सम्पादन और संशोधन में भी मेरी विशेष प्रीति है, अतः यह कार्य उन्होंने मुझे सौंपा । मैंने बड़े रस के साथ इसका संशोधन और सम्पादन कर दिया और अब यह पाठकों के सामने आ रहा है ।

हमारे देश में इस प्रवृत्ति का सर्वप्रथम प्रारम्भ करने वाले तो आचार्यश्री ही हैं, परन्तु कई एक कारणों से इसका प्रकाशन विलम्ब से हुआ अतः। इस बीच में डेक्कन कॉलेज, पूना से भी इसका प्रकाशन हो गया।

इस प्रकाशन 'चान्द्रमूलसूत्रपाठ' के संशोधन— सम्पादन की शैली का परिचय इस प्रकार है:—

यह सारा व्याकरण छह अध्यायों में विभक्त है, जब कि पाणिनीय व्याकरण आठ अध्यायों में है। ग्रन्थकार चन्द्रगोमी महामुनि ने अपनी इस कृति के प्रारम्भ में ही सूचित किया है कि 'लघु-विस्पष्ट-सम्पूर्णमुच्यते शब्दलक्षणम्' अर्थात् "पाणिनीय की अपेक्षा लघु, विशेषरूप से स्पष्ट और सम्पूर्ण ऐसा शब्द-लक्षण कहता हूँ"। ग्रन्थकार अपनी इस सूचना को बराबर सार्थक करता हुआ "एकमात्रालाघवमपि पुत्रोत्सवम्मन्यन्ते वैयाकरणाः" इस न्याय को अक्षरशः सफल कर दिखाया है।

प्रस्तुत प्रकाशन में सर्वप्रथम चान्द्र का मूलसूत्रपाठ दिया गया है तथा साथ में पाणिनीय-अष्टाध्यायी के समान सूत्रों के साथ तुलना बताने के लिये उसके अध्याय, पाद और सूत्रांक दिये हैं तथा कई स्थानों पर वार्तिक के अंक तथा महाभाष्य, काशिकावृत्ति, और सिद्धान्तकौमुदी का भी उपयोग किया गया है।

इस प्रकार प्रस्तुत संस्करण में मूलसूत्रपाठ ७५ पृष्ठों में पूरा होता है।

इसके पश्चात् ८०वें पृष्ठ तक चान्द्र में आये हुए गणों के केवल नामों की ही अकारादिक्रम से सूची दी गई है और साथ में जिस सूत्र में जिस गण का उपयोग हुआ है उस सूत्र के अध्याय, पाद, और अंक का निर्देश कर दिया गया है।

८१ वें पृष्ठ में चन्द्रगोमिकृत वर्णसूत्र दिया गया है, जिसमें स्वरों तथा व्यञ्जनों के स्थान-प्रयत्न और भेद दिखाये गये हैं।

१०४ वें पृष्ठ तक आचार्यचन्द्रगोमिकृत तीन पादों में सम्पूर्ण उणादिसूत्र दिया गया है। इसके अन्त में आचार्य ने 'शुभमस्तु सर्वजगताम्' का शुभाशीर्वाद देते हुए भगवान् बुद्ध की परमकारुणिकता को प्रतिध्वनि कर दी है।

१२६ वें पृष्ठ तक चन्द्रगोमिकृत सम्पूर्ण धातुपाठ दिया है, साथ में पणिनीय-धातुओं के तत्तद्गण के अंक देकर तुलना भी बताई है। धातुपाठ के अन्त में आचार्य ने लिखा है कि यद्यपि प्रत्येक धातु का एक ही अर्थ दिखाया है, परन्तु वास्तव में "अनेकार्था हि धातवः" अर्थात् प्रयोगानुसार एक-एक धातु के अनेक अर्थ हैं।

१८८ वें पृष्ठ तक चान्द्र के सब सूत्रों का अकारादिक्रम से तथा इसी प्रकार उणादिसूत्रों का भी अनुक्रम निर्देश किया है।

२०५ वें पृष्ठ तक उणादि द्वारा साधित शब्दों की अकारादिक क्रम से पूरी सूची दी है। उणादिसाधितशब्दों से उनकी ठीक व्युत्पत्ति का पता नहीं चल सकता, क्योंकि धातुओं से शब्दों की साधना विशेषतः कल्पना पर ही निर्भर है। वैयाकरणों ने 'कूप' शब्द की व्युत्पत्ति करते हुए भिन्न-भिन्न शैली का आश्रय लिया; किसी ने कूपशब्द की साधना 'कु' धातु से बताई है, तब निरुक्तकार यास्कने 'कूप' शब्द का सम्बन्ध 'कुप' धातु से भी लगाया है, अथवा 'कु+आप' से 'कूप' शब्द की साधना की है। अमरकोश के प्राचीन वृत्तिकार क्षीरस्वामी ने भी 'कु+आप से 'कूप' शब्द को साधित किया है। इस प्रकार उणादिशब्दों की व्युत्पत्ति कल्पना पर निर्भर होने से पूरी तरह विश्वस्त नहीं मानी जा सकती। उक्त व्युत्पत्तियों के आधार पर 'कूप' शब्द के ये अर्थ होते हैं—

'कु' धातु से कूप—प्रतिध्वनि द्वारा शब्द करने वाला।

'कु+आप' से कूप—जिसमें पानी अल्प है वा कुत्सित—अच्छा नहीं है।

'कुप' धातु से कूप—जहाँ कोप होता है अर्थात् पानी भरने वालियाँ अनेक होने से जहाँ स्त्रियाँ परस्पर कुपित होती रहती हैं।

'सिंह' शब्द की साधना उणादि में एक प्रकार की नहीं है—

चान्द्र 'सिच्' धातु से 'सिंह' की व्युत्पत्ति दिखाता है;
दूसरे वैयाकरण 'हिंस्' धातु का विपर्यय करने से 'सिंह' शब्द की साधना दिखाते हैं।

इस प्रकार उणादिसूत्रदर्शित साधना ठीक व्युत्पत्ति के लिये प्रामाणिक आधार नहीं बन सकती। इतना प्रासंगिक सूचन बीच में कर दिया है इससे किसी पाठक को अरुचि हो तो क्षमा करने की कृपा करें।

करीब २३२ वें पृष्ठ तक धातुपाठ के सब धातुओं की अकारादि-अनुक्रमणिका का निर्देश किया है और साथ में गण तथा धातु के अंक भी दे दिये हैं।

इस प्रकार करीब २३२ पृष्ठों में यह संस्करण समाप्त होता है।

सर्वत्र जहां उपयुक्तता मालूम हुई वहां आवश्यक टिप्पण भी दिये गये हैं। टिप्पणों में चान्द्रसूत्रों की तुलना तथा मतान्तर-सम्बन्धी सूचन किया गया है।

ला. द. आर्ट्स कॉलेज तथा विद्यासभा, अहमदाबाद के पुस्तकालयों से

पुस्तकें ला-ला कर यह काम कर सका हूँ, अतः इन सब संस्थाओं का ऋण मैं अवश्य स्वीकारता हूँ।

चान्द्र-व्याकरण के कर्त्ता का समय—

इस व्याकरण के कर्त्ता का नाम आचार्य चन्द्र है, उनका दूसरा नाम चन्द्र-गोमी भी है। 'गोमी' शब्द पूज्यता-सूचक है। महान् वैयाकरण भर्तृहरि ने अपने वाक्यपदीय में द्वितीय काण्ड, श्लोक ४८५ से ४९० तक के उल्लेख में व्याकरण-महाभाष्य के विच्छेद का वृत्तान्त और विच्छेद पाए हुए महाभाष्य को चन्द्र आचार्य ने सुरक्षित रखा और उसके पठन-पाठन का फिर प्रचार किया, ऐसा भी निर्देश किया है। उससे मालूम होता है कि भर्तृहरिनिर्दिष्ट चन्द्र आचार्य यही हैं, जिन्होंने प्रस्तुत चान्द्रव्याकरण का निर्माण किया। अतः जब तक अन्य कोई बाधक प्रमाण न हो तब तक यह मानना अबाधित है कि वाक्यपदीय-निर्दिष्ट चन्द्र आचार्य यही चन्द्रगोमी हैं और भर्तृहरि के ये पूर्ववर्ती रहे हैं।

अन्त में इस कार्य के प्रेरक आचार्य श्रीजिनविजयजी का बारम्बार अभि-नन्दन करता हुआ इस छोटे से प्रास्ताविक को यहीं पूरा कर रहा हूँ और सुज्ञ पाठकों से नम्र सूचना भी करता हूँ कि इस संस्करण में जहां कहीं अशुद्धि रह गई हो तो शुद्ध कर लेने की कृपा करें और हो सके तो मुझे भी सूचन करने की मेहरबानी करें।

१२/ब भारती निवास सोसायटी
अहमदाबाद ६

बेचरदास दोशी

चान्द्र - व्याकरणम्

चन्द्रगोमि-नाम-आचार्यविरचितं

चान्द्रव्याकरणम्

नमो वागीश्वराय

सिद्धं प्रणम्य सर्वज्ञं सर्वीयं[1] जगतो गुरुम्।
लघुविस्पष्टसंपूर्णमुच्यते शब्दलक्षणम् ॥

[प्रथमः अध्यायः, प्रथमः पादः]

१ अइउण् ॥ शिवसूत्र[2] १॥
२ ऋलृक् ॥२॥
३ एओङ् ॥३॥
४ ऐऔच् ॥४॥
५ हयवरलण् ॥५॥
६ ञमङणनम् ॥६॥
७ झभञ् ॥७॥
८ घढधष् ॥८॥
९ जबगडदश् ॥९॥
१० खफछठथचटतव् ॥१०॥
११ कपय् ॥११॥
१२ शषसर् ॥१२॥
१३ हल् ॥१३॥
१ आदिरिता समध्यः।[3] पा० १।१।७१।
२ उता सवर्गः। पा० १।१।६९।
३ ता तत्कालः। पा० १।१।७०।
४ दोऽपः। पा० १।१।२०।
५ अनंशचिह्नमित्। पा० १।३।२-९।
६ विधिर्विशेषणान्तस्य। पा० १।१।७२।
७ सप्तम्यां पूर्वस्य। पा० १।१।६६।
८ पञ्चम्यां परस्य। पा० १।१।६७।
९ आदेः। पा० १।१।५४।
१० षष्ठ्याऽन्त्यस्य। पा० १।१।५२।
११ ङित्। पा० १।१।५३।
१२ शिदनेकाल् सर्वस्य। पा० १।१।५५।
१३ टकितावाद्यन्तौ। पा० १।१।४६।
१४ मिदचोऽन्त्यात् परः। पा० १।१।४७।
१५ ऋकोऽणो रलौ। पा० १।१।५१।
१६ विप्रतिषेधे। पा० १।४।२।
१७ तिजः क्षान्तौ सन्। पा० ३।१।५।
१८ कितः संशय-चिकित्सयोः। पा० ३।१।५।
१९ गुपो निन्दायाम्। पा० ३।१।५।
२० वध एः ई च। पा० ३।१।६।
२१ शान्-दान्-मानः। पा० ३।१।६।
२२ तुमो लुक् च इच्छायाम्। पा० ३।१।७।
२३ व्याप्यात् काम्यच्। पा० ३।१।९,७।
२४ ससंख्यादमः क्यच् वा। पा० ३।१।८+[4]वा० १।

---

१ सर्वेभ्यः प्राणिभ्यो हितः सर्वीयः "सर्वाण्णो वा"। ४-१-१३ इति चान्द्रं सूत्रम्।

२ "नृत्तावसाने नटराजराजो ननाद ढक्कां नव-पञ्चवारम्।
उद्धर्तुकामः सनकादिसिद्धान् एतद् विमर्शे शिवसूत्रजालम्"॥ इति शिवसूत्रविषये किंवदन्ती।

३ 'पा०' इत्यनेन पाणिनीयं व्याकरणम्। ४ वा० इति वार्तिकम्।

२५ उपमानादाचारे । पा०३।१।१०।

२६ आधारात् । पा०३।१।१०+वा०१।

२७ कर्तुर्विप् । पा०३।१।११,भा०[1]।

२८ गल्भ-क्लीव-होडेभ्यो ङित् । पा०३।१।११+वा०३।

२९ क्यङ । पा०३।१।११।

३० च्व्यर्थे भृशादिभ्यः स्तलोपश्च । पा०३।१।१२।

३१ डाच् लोहितादिभ्यः क्यष् । पा०।३।१।१३।

३२ कष्ट-कक्ष-सत्र-गहनाय पापे क्रमणे । पा०३।१।१४+वा०१।

३३ रोमन्थं वर्तयति हनुचाले । पा०३।१।१५+भा०।

३४ वाष्प-उष्म-फेनमुद्वमति । पा०३।१।१६+भा०।

३५ सुखादीनि वेदयते । पा०३।१।१८।

३६ शब्दादीन् करोति । पा०३।१।१७।

३७ नमस्-तपस्-वरिवसः क्यच् । पा०३।१।१९,१५+वा०१।

३८ चित्रङः आश्चर्ये । पा०३।१।१९+वा०३+भा०।

३९ कण्ड्वादिभ्यो यक् । पा०३।१।२७।

४० एकाचो हलादेः क्रियार्थाद् भृशाभीक्ष्ण्ये यङ । पा०३।१।२२।

४१ ऋ-सूत्रि-मूत्रि-सूचि-अट-अश-ऊर्णुभ्यः । पा०३।१।२२, भा० ।

४२ गत्यर्थात् कौटिल्य एव । पा०३।१।२३।

४३ लुप-सद-चर-गृ-जप-जभ-दह-दशो गर्ह्यात् । पा०३।१।२४।

४४ न शुभ-रुचः । पा०३।१।२२, भा०।

४५ चुरादिभ्यो णिच् । पा०३।१।२५।

४६ प्रयोजकव्यापारे । पा०३।१।२६। पा०१।४।५५।

४७ गुपू-धूप-विछ-पण-पनः आयो वा । पा०३।१।२८,३१।

४८ ऋत ईयङ । पा०३।१।२९।

४९ कमो णिङ । पा०३।१।३०।

५० शिति आयादयः । पा०३।१।३१।

५१ अनेकाचो लिटः आम् कृ-भू-अस्तिलिट् चानु । पा०३।१।३५+भा०।पा०३।१।४०+वा०३,८,९।

५२ इजादेर्गुरुमतोऽनृछ-ऊर्णोः । पा०३।१।३६+वा०६।

५३ कास्-अय-दय-आसः । पा०३।१।३५,३७।

५४ जागृ-उषो वा । पा०३।१।३८।

५५ भी-ह्री-हूनां द्वे च । पा०३।१।३९।

५६ विभराम् । पा०३।१।३९।

५७ विदाम् । पा०३।१।३८+वा०१।

५८ लोटः कृलोट् । पा०३।१।४१।

५९ स्य-तासौ लृ-लुटोः । पा०३।१।३३।

६० लुङि सिच् । पा०३।२।४३,४४।

६१ स्पृश-मृश-कृष-तृप-दृपो वा । पा०३।१।४४।वा०७।

६२ दा-धा-गाति-स्था-भू-पोऽतङि लुक् । पा०२।४।७७।

६३ घ्रा-धे-शा-च्छा-सो वा । पा०२।४।७८।

६४ तनादिभ्यः त-थासोः । पा०२।४।७९।

६५ शलः इगुपान्तात् अदृशोऽनिटः क्सः । पा०३।१।४५,४७।

६६ श्लिषः । पा०३।१।४६।

---

१ भा० इति व्याकरणमहाभाष्यं पतञ्जलिप्रणीतम् ।

६७ सत्त्वाश्लेषे । पा०३।१।४६+वा०४।

६८ णि-श्रि-द्रु-स्रु-कमः कर्तरि चङ् । पा०३।१।४८+वा०१।

६९ धे-श्वेर्वा । पा०३।१।४९।

७० ऋ-सृ-शास्-असु-ख्या-वचः अङ् । पा०३।१।५२,५६।

७१ ह्वा-लिप्-सिचः । पा०३।१।५३।

७२ तङि वा । पा०३।१।५४।

७३ लृदिद्-द्युतादि-पुष्यत्यादिभ्योऽतङि । पा०३।१।५५। तथा काशिका ।

७४ इरितो वा । पा०३।१।५७।

७५ जॄ-श्वि-स्तम्भु-म्रुचु-म्लुचु-ग्लुचः । पा०३।१।५८।

७६ चिण् ते पदः । पा०३।१।६०।

७७ दीप-जन-बुध-पूरि-तायि-प्यायो वा । पा०३।१।६१।

७८ भाव-आप्ययोः । पा०३।१।६६।

७९ न अनोस्तपः । पा०३।१।६५।

८० तिङ्शिति यक् अलिङाशीर्लिङि । पा०३।१।६७। पा०३।४। ११३,११५,११६।

८१ तपः तपआप्यात् । पा०३।१।८८।

८२ कर्तरि शप् । पा०३।१।६८।

८३ अदादिभ्यो लुक् । पा०२।४।७२। पा०२।४।५८।

८४ हूनां द्वे च । पा०२।४।७५। पा०६।१।१०।

८५ चिणः । पा०६।४।१०४।

८६ यङो बहुलम् । पा०२।४।७४।

८७ दिवादिभ्यः श्यन् । पा०३।१।६९।

८८ भ्राश-म्लाश-भ्रमु-क्रमु-क्लमु-त्रसि-त्रुटि-लषो वा । पा०३।१।७०।

८९ यसः । पा०३।१।७१।

९० समः । पा०३।१।७२।

९१ कुषि-रजः आप्ये । पा०३।१।९०।

९२ तुदादिभ्यः शः । पा०३।१।७७।

९३ रुधादीनां श्नम् । पा०३।१।७८।

९४ तनादिभ्यः उः । पा०३।१।७९।

९५ स्वादिभ्यः श्नुः । पा०३।१।७३।

९६ श्रु-कृव्-धिवां शृ-कृ-धि च । पा०३।१।७४,८०।

९७ अक्षो वा । पा०३।१।७५।

९८ तनूकृतौ तक्षः । पा०३।१।७६।

९९ स्तम्भु-स्तुम्भु-स्कम्भु-स्कुम्भु-स्कुभ्यः । पा०३।१।८२।

१०० श्नाः । पा०३।१।८२।

१०१ क्र्यादिभ्यः । पा०३।१।८१।

१०२ हलो हौ शानच् । पा०३।१।८३।

१०३ बहुलम् । पा०३।३।११३।

१०४ भाव-आप्ययोः । पा०३।४।७०।

१०५ तव्य-अनीयर्-केलिमरः । पा०३।१।९६।+वा०१।

१०६ वास्तव्यः ।पा०३।१।९६वा०२।

१०७ यत् । पा०३।१।९७।

१०८ पु-शकि-तकि-चति-यति-शसि-सहि-यजः । पा०३।१।९८,९९,९७भा०।

१०९ गद-मद-यमोऽप्रादेः । पा०३।१।१००।

११० चरः । पा०३।१।१००।

१११ अगुरौ आङः । पा०३।१।१००वा०१।

११२ अवद्य-पण्य-वर्याः गर्ह्य-विक्रेय-अनिरोधेषु । पा०३।१।१०१।

११३ वह्यं करणम् । पा०३।१।१०२।

११४ अर्यः स्वामि-वैश्ययोः । पा०३।१।१०३।

११५ ऋतुमती उपसर्या । पा०३।१।१०४।

११६ अजर्यं संगतम् । पा०३।१।१०५।

११७ वदः सुपः क्यप् च। पा०३।१।१०६।
११८ भुवः। पा०३।१।१०७।
११९ भावे हनस्त च। पा०३।१।१०८,१०७।
१२० इण्-स्तु-शासु-वृञ्-दृ-जुषः। पा०३।१।१०९+वा०१।
१२१ ऋदुपान्ताद् अक्लृपि-चृतः। पा०३।१।११०।
१२२ खेयम्। पा०३।१।१११।
१२३ भृञः असंज्ञायाम्। पा०३।१।११२।
१२४ समो वा। पा०३।१।११२वा०४।
१२५ कृ-वृषि-मृजि-शंसि-दुहि-गुहः। पा०३।१।१२०,११३। तथा काशिका ३।१।१०९।
१२६ राजसूय-रुच्य-कृष्टपच्य-अव्यथ्याः पा०३।१।११४।
१२७ कुप्य-आज्य-भिद्य-उद्ध्य-सिध्य-युग्यानि नाम्नि। पा०३।१।११४,१०९। वा०२। पा०३।१।११५,११६,१२१।
१२८ जित्या-विपूय-विनीया हलि-मुञ्ज-कल्केषु। पा०३।१।११७।
१२९ पद-अस्वैरि-पक्ष्य-बाह्यासु ग्रहः। पा०३।१।११९।
१३० ऋद्-हलो ण्यत्। पा०३।१।१२४।
१३१ पाणि-समवाभ्यां सृजः। पा०३।१।१२४वा०१,२।
१३२ ओःआवश्यके। पा०३।१।१२५।
१३३ आसु-यु-वपि-रपि-लपि-त्रपि-चमि-दभः। पा०३।१।१२६,१२४वा०३।
१३४ अमावसो वा। पा०३।१।१२२।
१३५ प्रणाय्योऽसंमते। पा०३।१।१२८।
१३६ धाय्या-पाय्य-आनाय्य-सांनाय्य-निकाय्या नाम्नि। पा०३।१।१२९,१२७।
१३७ क्रतौ कुण्डपाय्य-संचाय्यौ। पा०३।१।१३०।
१३८ अग्नौ चित्या-उपचाय्य-परिचाय्याः। पा०३।१।१३१,१३२।
१३९ कर्तरि ण्वुल्-तृच्-अचः। पा०३।१।१३३,१३४वा०१। पा०३।४।६७।
१४० नन्दि-ग्रहादिभ्यो ल्यु-णिनी। पा०३।१।१३४।
१४१ ज्ञा-कॄ-प्री-इगुपान्तात् कः। पा०३।१।१३५।
१४२ आतः प्रादिभ्यः। पा०३।१।१३६।
१४३ पा-घ्रा-ध्मा-धेट्-दृशः शः। पा०३।१।१३७।
१४४ धारि-पारि-वेदि-उदेजि-चेति-साति-साहि-विन्दः अप्रादेः। पा०३।१।१३८+वा०२+भा०।
१४५ लिपो नेश्च। पा०३।१।१३८+वा०१।
१४६ ज्वलादिभ्यो णो वा। पा०३।१।१४०,१३९।
१४७ श्या-आत्-इण्-व्यध-स्रुस-तनः। पा०३।१।१४१,१४०वा०१।
१४८ आ-समः स्नोः। पा०३।१।१४१।
१४९ हृ-सः अवात्। पा०३।१।१४१।
१५० दु-न्यः अप्रादेः। पा०३।१।१४२।
१५१ भुवो वा। [1]काशिका३।१।१४३।
१५२ ग्रहः। पा०३।१।१४३।

---

१ अत्र काशिकायाम् अस्मिन् सूत्रे "भवतेश्च इति वक्तव्यम्" इत्येवं निर्दिश्य भुवः ग्रहणम्।

१५३ गेहे कः । पा०३।१।१४४।

१५४ गः थकन् । पा०३।१।१४६।

१५५ ण्युट् । ३।१।१४७।

१५६ हः व्रीहि-कालयोः। पा०३।१।१४८।

१५७ नृति-खनि-रजः शिल्पिनि ष्वुन् । पा०३।१।१४५+भा०।

१५८ प्रु-सृ-ल्वः वुन् । पा०३।१।१४९।

१५९ आशिषि । पा०३।१।१५०।

[प्रथमस्य अध्यायस्य प्रथमः पादः समाप्तः]

[द्वितीयः पादः]

१ व्याप्याद् अण् । पा०३।२।१।

२ आतः अप्रादेः कः । पा०३।२।३।

३ सुपः । पा०३।२।४+वा०२+भा०।

४ चरेः टः । पा०३।२।१६।

५ पुरस्-अग्रतस्-अग्रेभ्यः सर्तेः । पा०३।२।१८।

६ पूर्वात् कर्तुः । पा०३।२।१९।

७ कृञः हेतु-शील-अनुलोमेषु । पा०३।२।२०।

८ स्तम्ब-शकृद्भ्यां व्रीहि-वत्सयोः इन् । पा०३।२।२४+वा०१।

९ हृञः दृति-नाथात् पशौ । पा०३।२।२५।

१० फलेग्रहिः आत्मंभरिः कुक्षिंभरिः । पा०३।२।२६+वा०१।

११ एजेः खश् । पा०३।२।२८।

१२ शुनी-स्तनात् धेटः । पा०३।२।२८। वा०१। पा०३।२।२९।

१३ नासिका-नाडी-मुष्टि-घटी-खरीभ्यः । पा०३।२।२९,३०,२९भा०।

१४ ध्मः पाण्यादिभ्यश्च । पा०३।२।२९,३०,३७।

१५ कूलाद् उदो रुजि-वहः । पा०३।२।३१।

१६ वह-अभ्राद् लिहः । पा०३।२।३२।

१७ परिमाणात् पचः । पा०३।२।३३।

१८ मित-नखात् । पा०३।२।३४।

१९ विधु-अरुस्-तिलात् तुदः । पा०३।२।३५।पा०३।२।२८वा०१।

२० वातमज-शर्धंजह-इरंमद-परंतप-द्विषंतप-भगंदर-पुरंदराः । पा०३।२।२८वा०१।पा०३।२।३७,३९,४१। काशिका ३।२।४१।

२१ उग्र-असूर्याद् दृशः । पा०३।२।३७,३६।

२२ ललाटात् तपः । पा०३।२।३६।

२३ प्रिय-वशाद् वदः । पा०३।२।३८।

२४ वाचंयमो व्रते । पा०३।२।४०।

२५ सर्वात् सहः । पा३।२।४१।

२६ कूल-अभ्र-करीषाच्च कषः । पा०३।२।४२।

२७ मेघ-ऋति-भयात् कृञः खः । पा०३।२।४३।

२८ क्षेम-प्रिय-मद्राद् अण् च । पा०३।२।४४।

२९ आशिताद् भुवः भाव-करणयोः । पा०३।२।४५।

३० भृ-वृ-तृ-जि-सहि-तपि-दमो नाम्नि । पा०३।२।४६।

३१ धारेर्धर् च । पा०३।२।४६।

३२ गमः । पा०३।२।४७।

३३ विहायसो विह च । पा०३।२।३८ वा०२।

३४ खड् । पा०३।२।३८वा०३।

३५ डः । पा०३।२।३८वा०४।

३६ उरगः । पा०३।२।४८वा०२।

३७ हनः । पा०३।२।४६,५०।

३८ शीर्ष-कुमाराद् णिनिः । पा०३।२।५१।

३६ टक् । पा०३।२।५२,५३।

४० शक्तौ हस्ति-कपाटात् । पा०३।२।५४।

४१ नगराद् अहस्तिनि । पा०३।२।५३ भा०।

४२ पाणिघ-ताडघौ शिल्पिनि । पा०३।२।५५।

४३ राजघः । पा०३।२।५५वा०१।

४४ गः । पा०३।२।८।

४५ सीधु-सुरात् पिबः । पा०३।२।८वा०१।

४६ सुभग-आढ्य-स्थूल-पलित-नग्न-अन्ध-प्रियाद् अच्वेर्भुवः खिष्णुच्-खुकञौ । पा०३।२।५७,५६।

४७ कृञः करणे ख्युन् । पा०३।२।५६।

४८ स्पृशः अनुदकात् क्विन् । पा०३।२।५८।

४६ दधृग्-उष्णिक्-ऋुञ्चः । पा०३।२।५६।

५० अञ्चु-युजः । पा०३।२।५६।

५१ समान-अन्य-त्यदादेः उपमानाद् व्याप्ये दृशः क्स-कञौ च । पा०३।२।६०+वा०१। काशिका ३।२।६०।

५२ भजो ण्विः । पा०३।२।६२।

५३ क्विप्-विच्-मनिन्-क्वनिप्-वनिपः । पा०३।२।७४,७६।

५४ दुहो दुघः । पा०३।२।७०।

५५ आवश्यके णिनिः । पा०३।३।१७०।

५६ अजातेः शील-आभीक्ष्ण्ययोः । पा०३।२।७८,८१।

५७ साधोः । पा०३।२।७८वा०१।

५८ कर्तुः उपमानात् । पा०३।२।७६।

५६ व्रते । पा०३।२।८०।

६० मनः । पा०३।२।८२।

६१ आत्मनि खश्च । पा०३।२।८३।

६२ भूते । पा०३।२।८४।

६३ यजः । पा०३।२।८५।

६४ हनः कुत्सायाम् । पा०३।२।८६। काशिका ३।२।८६।

६५ डः । पा०३।२।६७।

६६ क्तवतुः । पा०३।२।१०२। पा०१।१।२६।

६७ भाव-आप्ययोः क्तः । पा०३।२।१०२। पा०३।४।७०।

६८ कर्तरि च आरम्भे । पा०३।४।७१।

६६ श्लिष-शीङ-स्था-आस-वस-जन-रुह-जृभ्यः । पा०३।४।७२।

७० गत्यर्थाऽनाप्याद् आधारे च । पा०३।४।७२,७६।

७१ आहारार्थात् । पा०३।४।७६।

७२ जृषः अतृन् । पा०३।२।१०४।

७३ श्रु-सद्-वसो लिट् वा । पा०३।२।१०८।

७४ लिटः क्वसुः । पा०३।२।१०७।

७५ ईयिवान्-अनाश्वान्-अनूचानः । पा०३।२।१०६।

७६ लुङ । पा०३।२।११०।

७७ अनद्यतने लङ् । पा०३।२।१११।
७८ स्मृत्युक्तौ लृट् । पा०३।२।११२।
७९ न यदि । पा०३।२।११३।
८० वा आकाङ्क्षायाम् । पा०३।२।११४।
८१ परोक्षे लिट् । पा०३।२।११५।
८२ वर्तमाने लट् । पा०३।२।१२३।
८३ विदेः श्वसुः । पा०७।१।३६।
८४ शतृ । पा०३।२।१२४।
८५ इङः शक्तौ । पा०३।२।१३०।
८६ शानच् । पा०३।२।१२४।
८७ शक्ति-वयः-शीलेषु । पा०३।२।१२९।
८८ तौ लृटः । पा०३।२।१२७।
पा०३।३।१४।
८९ शील-साधु-धर्मेषु तृन् ।
पा०३।२।१३४,१३५।
९० निरा-अलंभ्यां कुः इष्णुच् ।
पा०३।२।१३६।
९१ उदः पच-पत-मदः । पा०३।२।१३६।
९२ प्रजन-रुचि-अपत्रप-वृतु-वृधु-
सह-चर-भ्राजः । पा०३।२।१३६।
तथा काशिका३।२।१३८।
९३ भुवः । पा०३।२।१३८।
९४ जि-ग्लश्च क्स्नुः । पा०३।२।१३९।
९५ स्थास्नुः । पा०३।२।१३९।
९६ त्रसि-गृधि-धृषि-क्षिपेः क्नुः ।
पा०३।२।१४०।
९७ चाल-शब्दार्थाद् अनाप्याद् युच् ।
पा०३।२।१४८।
९८ तङ्वतो हलादेरङः । पा०३।२।१४९।
९९ जु-चङ्क्रम्य-दन्द्रम्य-सृ-गृधि-ज्वल-
शुच-लष-पत-पदः । पा०३।२।१५०।
१०० क्रुध-भूषार्थात् । पा०३।२।१५१।
१०१ न य-दीक्षः । पा०३।२।१५२,१५३।
१०२ लष-पत-पद-स्था-भू-शॄ-वृष-हन-कम-
गमः उकञ् । पा०३।२।१५४।
१०३ जल्प-भिक्ष-कुट्ट-लुण्ट-वृङः षाकन् ।
पा०३।२।१५५।
१०४ स्पृहि-गृहि-पति-शीङः आलुच् ।
पा०३।२।१५८+वा०१।
१०५ धे-सि-शद-सदो रुः ।
पा०३।२।१५९।
१०६ सृ-घस्-अदः क्मरच् ।
पा०३।२।१६०।
१०७ भञ्जि-भास-मिदो घुरच् ।
पा०३।२।१६१।
१०८ विदि-भिदि-च्छिदेः कुरच् ।
पा०३।२।१६२।
१०९ इण्-जि-सृ-नशः क्वरप् ।
पा०३।२।१६३।
११० गत्वरः । पा०३।२।१६४।
१११ जागुः ऊकः । पा०३।२।१६५।
११२ यज-जप-दह-दशो यङः ।
पा०३।२।१६६।
११३ सहि-चलि-वहः कि-किनौ ।
पा०३।२।१७१भा०।
११४ पापतिः । पा०३।२।१७१वा०४।
११५ चक्रि-सस्रि-जज्ञयः ।
पा०३।२।१७१वा०३।
११६ स्मि-अजस-हिंस-दीप-नम-कम-
कम्पो रः । पा०३।२।१६७।
११७ सन्-आशंस उः । पा०३।२।१६८।
११८ विन्दुः इच्छुः । पा०३।२।१६९।

११९ स्वप्नक्-तृष्णक् । पा०३।२।१७२।
१२० शॄ-वन्देः आरुः । पा०३।२।१७३।
१२१ भियः क्रुः । पा०३।२।१७४।
१२२ स्था-भास-पिस-कसो वरच् । पा०३।२।१७५।
१२३ यो यङः । पा०३।२।१७६।

[प्रथमस्य अध्यायस्य द्वितीयः पादः समाप्तः]

[तृतीयः पादः]

१ उणादयः । पा०३।३।१।
२ भविष्यति लृट् । पा०३।३।१३,३।
३ अनद्यतने लुट् । पा०३।३।१५।
४ माङि लुङ । पा०३।३।१७५।
५ स्मपरे लङ च । पा०३।३।१७६।
६ तुमुन् भावे क्रियायां तदर्थायाम् । पा०३।३।१०+भा०।
७ घञ् कारके च । पा०३।३।१६,१८,१९।
८ संख्यातात् । पा०३।३।२०।
९ इङः पिद् वा । पा०३।३।२१+वा०१।
१० शॄ वायु-वर्ण-निवृतेषु । पा०३।३।२१वा०२।
११ प्रादिभ्यो रुवः । पा०३।३।२२।
१२ समो यु-द्रु-दुवः । पा०३।३।२३।
१३ वेः क्षु-श्रुवः । पा०३।३।२५।
१४ श्रि-भुवः अप्रादेः । पा०३।३।२४।
१५ नियः । पा०३।३।२४।
१६ अव-उदः । पा०३।३।२६।
१७ परेर्द्यूते । पा०३।३।३७।
१८ प्रात् स्तु-द्रु-स्तुवः । पा०३।३।२७।
१९ निर्-अभेः पू-ल्वः । पा०३।३।२८।
२० नि-उदो ग्रः । पा०३।३।२९।
२१ कॄ धान्ये । पा०३।३।३०।
२२ नीवाराः । पा०३।३।४८।
२३ यज्ञे संस्तावः । पा०३।३।३१।
२४ प्रस्त्रोऽन्यत्र । पा०३।३।३२।
२५ प्रथने वेः अशब्दे । पा०३।३।३३।
२६ छन्दोनाम्नि । पा०३।३।३४।
२७ अवात् त्रश्च । पा०३।३।१२०।
२८ न्यायो नये । पा०३।३।३७।
२९ पर्यायः क्रमे । पा०३।३।३८।
३० वि-उपात् शीङः । पा०३।३।३९।
३१ हस्तप्राप्ये चेः अस्तेये । पा०३।३।४०।
३२ चिति-राशि-वास-देहेषु चः कः । पा०३।३।४१।
३३ संघे अनुत्तराऽधरे । पा०३।३।४२।
३४ उदः श्रि-यु-पू-द्रुवः । पा०३।३।४९।
३५ आक्रोशे नि-अवाद् ग्रहः । पा०३।३।४५।
३६ समः मुष्टौ । पा०३।३।३६।
३७ परेः यज्ञे । पा०३।३।४७।
३८ प्रात् लिप्सायाम् । पा०३।३।४६।
३९ वा वणिजाम् । पा०३।३।५२,५०।
४० रश्मौ । पा०३।३।५३।
४१ अवाद् वर्षप्रतिबन्धे । पा०३।३।५१।
४२ आङो रु-प्लोः । पा३।३।५०।

४३ वृञः आच्छादे । पा०३।३।५४।
४४ परेर्भुवः अवज्ञाने । पा०३।३।५५।
४५ एः अच् । पा०३।३।५६।
४६ स्था-स्ना-पा-व्यधि-हनि-युधः कः । पा०३।३।५८वा०४।
४७ ऋत्-ओः अप् । पा०३।३।५७।
४८ ग्रह-वृ-दृ-निश्चि-गम-वश-रणः । पा०३।३।५८+वा०३।
४९ प्रादिभ्यः अदः । पा०३।३।५९।
५० नेर्ण च । पा०३।३।६०।
५१ व्यध-जपः अप्रादेः । पा०३।३।६१।
५२ स्वन-हसो वा । पा०३।३।६२।
५३ यमः सं-वि-उपाच्च । पा०३।३।६३।
५४ नेः । पा०३।३।६३।
५५ गद-नद-पठ-स्वनः । पा०३।३।६४।
५६ क्वणो वीणायाश्च । पा०३।३।६५।
५७ पणः परिमाणे । पा०३।३।६६।
५८ मदः अप्रादेः । पा०३।३।६७।
५९ प्र-संभ्यां हर्षे । पा०३।३।६८।
६० सम्-उद्भ्याम् अजः पशुषु । पा०३।३।६९।
६१ प्रजने सर्तेः । पा०३।३।७१।
६२ ह्वः । पा०३।३।७५।
६३ निपानम् आहावः । पा०३।३।७४।
६४ वधः घातः । पा०३।३।७६।
६५ मूर्तौ घनः । पा०३।३।७७।
६६ गृहांशे प्रघाणः । पा०३।३।७९।
६७ परिघ-उद्घ-निघाः । पा०३।३।८४,८६,८७।
६८ ड्वितः क्त्रिः । पा०३।३।८८।
६९ ट्वितः अथुच् । पा०३।३।८९।
७० विछ-रक्षो नङः । पा०३।३।९०।
७१ प्रादिभ्यः दा-धः किः । पा०३।३।९२।
७२ व्याप्याद् आधारे । पा०३।३।९३।
७३ अभिविधौ इनुण् । पा०३।३।४४।
७४ स्त्रियां क्तिन् । पा०३।३।९४।
७५ ऊति-यूति-जूति-साति-हेति-कीर्तयः । पा०३।३।९७।
७६ व्यतिहारे णच् । पा०३।३।४३।
७७ नाम्नि क्तिच् । पा०३।३।१७४।
७८ समज-मन-विद-सु-शी-भृञ्-इणः भावे क्यप् । पा०३।३।९९।
७९ नेः सत्-पतः । पा०३।३।९९ ।
८० कृ-व्रज-यजः । पा०३।३।१००,९८।
८१ मृगया-अटाट्ये । पा०३।३।१०१भा०।
८२ परेः सृ-चरो यः । पा०३।३।१०१भा०।
८३ जागुः । पा०३।३।१०१भा०।
८४ अः सनाद्यन्ताच्च । पा०३।३।१०१भा०।१०२।
८५ गुरोर्हलः । पा०३।३।१०३।
८६ भिदादिषितोऽङः । पा०३।३।१०४।
८७ आतः अन्तः-प्रादिभ्यः । पा०३।३।१०६ तथा काशिका ३।३।१०६।
८८ कुम्बि-चर्चिभ्याम् । पा०३।३।१०५।
८९ णि-श्रन्थ-ग्रन्थ-विद-आस-घट्ट-वन्दो युच् । पा०।३।३।१०७+वा०१।
९० इषः अनिच्छायाम् । पा०३।३।१०७ वा०२।
९१ ण्वुच् । पा०३।३।१११।
९२ प्रश्न-आख्यानयोः इञ् च । पा०३।३।११०।
९३ संपदादिभ्यः क्विप् । पा०३।३।१०८ वा०६।

९४ आक्रोशे नञः अनिः । पा०३।३।११२।

९५ ग्ला-हा-ज्यः। पा०३।३।९५ वा०४।

९६ इ-क्ति-श्तिपः स्वरूपे । पा०३।३।१०८ वा०२।

९७ ल्युट् । पा०३।३।११५।

९८ ष्ठिवु-सिवो दीर्घश्च ।

९९ कृञः कर्तरि ।

१०० घः । पा०३।३।११८।

१०१ व्रज-व्यजौ। पा०३।३।११९।

१०२ खनः डर-इकौ च । पा०३।३।१२५+भा०।

१०३ ईषद्-दुः-सुभ्यः खल् । पा०३।३।१२६।

१०४ कर्तृ-आप्याभ्यां च भू-कृञः । पा०३।३।१२७।

१०५ आतः युच् । पा०३।३।१२८।

१०६ शासि-युधि-दृशि-धृषि-मृषः । पा०३।३।१३० वा०१+भा०।

१०७ लिङि अतिपत्तौ लृङ । पा०३।३।१३९।

१०८ आ शेषाद् भूते वा । पा०३।३।१४०,१४१।

१०९ गर्हायां कथमि लिङ । पा०३।३।१४३,१४२।

११० किमि लृट् च । पा०३।३।१४४।

१११ क्रोध-अश्रद्धयोः। पा०३।३।१४५।

११२ किंकिल-अस्त्यर्थयोः लृट्। पा०३।३।१४६।

११३ यद्-यदि-यदा-जातुषु लिङ । पा०३।३।१४७+वा०१।

११४ यच्च-यत्रयोर्गर्हायां च । पा०३।३।१४८,१४९।

११५ आश्चर्ये । पा०३।३।१५०।

११६ शेषे लृट् । पा०३।३।१५१।

११७ उत-अप्योः वाढार्थे लिङ । पा०३।३।१५२।
तथा काशिका३।३।१५२।

११८ संभावने अलमर्थे तदर्थाप्रयोगे । पा०३।३।१५४।

११९ धातूक्तौ अयदि वा । पा०३।३।१५५।

१२० हेतु-फलयोः । पा०३।३।१५६।

१२१ विधि-संप्रश्न-प्रार्थनेषु । पा०३।३।१६१।

१२२ लोट् । पा०३।३।१६२।

१२३ प्रैष-अनुज्ञा-प्राप्तकालेषु । पा०३।३।१६३।

१२४ लिङ च ऊर्ध्वमौहूर्तिके । पा०३।३।१६४।

१२५ स्मे लोट् । पा०३।३।१६५।

१२६ अधीष्टौ । पा०३।३।१६६।

१२७ काल-समय-वेलासु लिङ यदि । पा०३।३।१६७,१६८।

१२८ अर्ह-शक्त्योः । पा०३।३।१६९,१७२।

१२९ अलं-खल्वोः प्रतिषेधे क्त्वा वा । पा०३।४।१८।

१३० मेङः । पा०३।४।१९।

१३१ एककर्तृकयोः पूर्वात् । पा०३।४।२१।

१३२ आभीक्ष्ण्ये णमुल् च । पा०३।४।२२।

१३३ पूर्व-अग्रे-प्रथमेषु । पा०३।४।२४।

१३४ व्याप्याद् आक्रोशे कृञः खमुञ् । पा०३।४।२५।

१३५ स्वाद्वर्थात् अदीर्घात् ।
पा०३।४।२६+वा०१।
१३६ जीवाद् ग्रहो णमुलू स चानु ।
पा०३।४।३६,४६।
१३७ हस्तेन । पा०३।४।३९।
१३८ उपमानात् कर्तुश्च ।
पा०३।४।४५,४३।
१३९ उपदंशस्तृतीयायाम् । पा०३।४।४७।
१४० हिंसार्थात् एकाप्यात् । पा०३।४।४८।
१४१ सप्तम्यां च उपात् पीड-रुध-कर्षः ।
पा०३।४।४९।
१४२ आसत्तौ । पा० ३।४।५०।
१४३ प्रमाणे । पा०३।४।५१।
१४४ पञ्चम्यां त्वरायाम् । पा०३।४।५२।
१४५ द्वितीयायाम् । पा०३।४।५३।
१४६ अध्रुवे स्वाङ्गे । पा०३।४।५४।
१४७ पीडायाम् । पा ०३।४।५५।
१४८ विशि-पति-पदि-स्कन्दां वीप्सा-
आभीक्ष्ण्ययोः । पा०३।४।५६।
१४९ असु-तृषः कालेषु विच्छेदे ।
पा०३।४।५७।
१५० नाम्नि ग्रह-आदिशः ।
पा०३।४।५८।

[प्रथमस्य अध्यायस्य तृतीयः पादः समाप्तः]

[चतुर्थः पादः]

१ लः तिप्-तस्-झि-सिप्-थस्-थ-मिप्-
वस्-मस्-ता-तां-झ-थास्-आथां-ध्वम्-
इट्-वहिं-महिङः । पा०।३।४।७७,७८।
२ अतः आतः इत् ।
पा०७।२।८१,८०। पा०६।१।९६।
३ झः अन्तः । पा०७।१।३।
४ द्विरुक्ताद् अत् । पा०७।१।४।
५ जक्षादिभ्यः पञ्चभ्यः । पा०६।१।६,५।
६ तङि अनतः । पा०७।१।५।
७ शीङो रत् । पा०७।१।६।
८ वेत्तेर्वा । पा ७।१।७।
९ लिटः इरच् । पा०३।४।८१।
१० तस्य एश् । पा०३।४।८१।
११ अतङां णल्-अतुस्-उस्-
थल्-अथुस्-अण्-अल्-व-माः ।
पा०३।४।८२।
१२ विदो लटो वा । पा०३।४।८३।
१३ ब्रुवः पञ्चानामादित आह च ।
पा०३।४।८४।
१४ आतो णल औः । पा०७।१।३४।
१५ टित् तङाम् एत् । पा०३।४।७९।
१६ आमः । पा०३।४।७९।
१७ थासः से । पा०३।४।८०।
१८ लुट आद्यानां डा-रौ-रसः ।
पा०२।४।८५।
१९ तङाम् । पा०२।४।८५।
२० लोट एः उः । पा०३।४।८६,८५।
२१ सेः हिङ । पा०३।४।८७।
२२ आशिषि तु-ह्योः तातङ वा ।
पा०७।१।३५।
२३ मेः आनिः । पा०३।४।८९।
२४ आम् एतः । पा०३।४।९०।

२५ स्-वो वा-ऽमौ । पा०३।४।९१।
२६ इडादीनाम् ऐप् । पा०३।४।९३।
२७ व्-मोः टाप् । पा०३।४।९२।
२८ त-स्थ-स्थानां तां-तं-ता ङितश्च ।
पा०३।४।१०१।
२९ वस्-मसोर्लोपः ।
पा०३।४।९९,९८,९७।
३० इतः अतङि । पा०३।४।१००,९७।
३१ मिपः अम् । पा०३।४।१०१।
३२ लिङः सीयुट् । पा०३।४।१०२।
३३ यासुट् अतङः कित् ।
पा०३।४।१०४,१०३।
३४ ङित् अनाशिषि । पा०३।४।१०३।
३५ अत् इय् । पा०७।२।८०।
३६ सो लोपः अनन्त्यस्य । पा०७।२।७९।
३७ झस्य रन् । पा०३।४।१०५ ।
३८ इटः अत् । पा०३।४।१०६।
३९ सुट् त-थोः । पा०३।४।१०७।
४० झेः जुस् । पा०३।४।१०८।
४१ सिचः । पा०३।४।१०९।
४२ आतः । पा०३।४।११०।
४३ लङो द्विषश्च वा ।
पा०३।४।१११,११२।
४४ विदः । पा०३।४।१०९।
४५ अति । पा०३।४।१०९।
४६ तङाना यथापाठम् । पा०१।३।१२।
४७ भाव-आप्ययोः । पा०१।३।१३।
४८ ङितः । पा०१।३।१२।
४९ विनिमये । पा०१।३।१४।
५० न गति-हिंसा-शब्दार्थहसः ।
पा०१।३।१५+वा०१।
५१ नेर्विशः । पा०१।३।१७।
५२ परि-वि-अवात् क्रियः । पा०१।३।१८।
५३ वि-पराभ्यां जेः । पा०१।३।१९।
५४ आङः दः । पा०१।३।२०।
५५ न स्वप्रसारणे ।
पा०१।३।२०+वा०१,२।
५६ गमेः क्षान्तौ । पा०१।३।२१ वा०२।
५७ नु-प्रच्छः । पा०१।३।२१ वा०६।
५८ क्रीडः अनु-परिभ्यां च ।
पा०१।३।२१।
५९ समः अकूजने । पा०१।३।२१ वा०१।
६० अपस्किरः । पा०१।३।२१ वा०४।
६१ ह्वः गतिशीले । पा०१।३।२१ वा०५।
६२ आशिषि नाथः । पा०१।३।२१ वा०७।
६३ शपः शपथे । पा०१।३।२१ वा०८।
६४ स्थः प्रतिज्ञा-निर्णय-प्रकाशनेषु ।
पा०१।३।२२ वा०१। पा०१।३।२३।
६५ सं-वि-प्र-अवात् । पा०१।३।२२।
६६ उदः अनूर्ध्वेहायाम् ।
पा०१।३।२४+वा०१।
६७ उपात् मन्त्रेण । पा०१।३।२५।
६८ पथि-आराधनयोः ।
पा०१।३।२५ भा०।
६९ वा लिप्सायाम् । पा०१।३।२५ वा०२।
७० अव्याप्यात् । पा०१।३।२६।
७१ समः गम्-ऋछि-प्रछि-स्वृ-श्रु-वेत्ति-
अर्ति-दृशः । पा०१।३।२९+वा०१,२।
७२ प्रादिभ्यः असु-ऊहो वा ।
पा०१।३।२९ वा०३।
७३ आङः यम-हनः स्वाङ्गाप्याच्च ।
पा०१।३।२८+वा०१।
७४ व्युदस्तपः । पा०१।३।२७।
७५ तपआप्यात् । पा०३।१।८८।

७६ नि-सं-वि-उपेभ्यः ह्वः । पा०१।३।३०।
७७ स्पर्धायाम् आङः । पा०१।३।३१।
७८ सूचन-अवक्षेपण-सेवा-साहस-
यत्न-कथा-उपयोगेषु कृञः ।
पा १।३।३२।
७९ अधेः शक्तौ । पा०१।३।३३।
८० वेः शब्दाप्यात् । पा०१।३।३४।
८१ अव्याप्यात् । पा०१।३।३५।
८२ पूजा-उत्सङ्ग-उपनयन-ज्ञान-भृति-
व्यय-विगणनेषु नियः । पा०१।३।३६।
८३ कर्तृस्थामूर्ताप्यात् । पा०१।३।३७।
८४ वृत्ति-उत्साह-तायनेषु क्रमः ।
पा०१।३।३८।
८५ परा-उपात् । पा०१।३।३९।
८६ आङो ज्योतिरुद्गतौ ।
पा०१।३।४०+वा०१।
८७ वेः पादाभ्याम् । पा०१।३।४१।
८८ प्र-उपाद् आरम्भे । पा०१।३।४२।
८९ अप्रादेः वा । पा०१।३।४३।
९० निह्नवे ज्ञः । पा०१।३।४४।
९१ अव्याप्यात् । पा०१।३।४५।
९२ सं-प्रतेः अस्मृतौ । पा०१।३।४६।
९३ ज्ञान-यत्न-उपच्छन्दनेषु वदः ।
पा०१।३।४७।
९४ अनोः अव्याप्यात् । पा०१।३।४९।
९५ विमतौ । पा०१।३।५०।
९६ व्यक्तं सहोक्तौ । पा०१।३।४८।
९७ तयोर्वा । पा०१।३।५०।
पा०१।३।४८ भा०।
९८ अवाद् गिरः । पा०१।३।५१।
९९ समः प्रतिज्ञायाम् । पा०१।३।५२।
१०० किरादि-श्रन्थ-ग्रन्थ-सनाम् आप्ये ।
पा०३।१।८७ वा०१८।
पा०३।१।८९ भा०।
१०१ लुङि अचः । पा०३।१।६२।
पा०३।१।४३।
१०२ स्नु-नमः स्वयम् ।
पा०३।१।८९। पा०३।१।८७।
१०३ सृजः श्राद्धे ।
पा०३।१।८७ वा०१५+भा०।
१०४ शे श्यन् ।
पा०३।१।८७ वा०१५+भा०।
१०५ लुङि ते चिण् ।
१०६ उदश्चरः साप्यात् ।
पा०१।३।५३।
१०७ समस्तृतीयायुक्तात् । पा०१।३।५४।
१०८ दाणः सा चेत् चतुर्थ्यर्थे ।
पा०१।३।५५।
१०९ उपयम उद्वाहे ।
पा०१।३।५६ तथा काशिका १।३।५६।
११० आमः कृञः प्राग्वत् ।
पा०१।३।६३। पा०१।३।६२।
१११ सनः । पा०१।३।६२।
११२ स्मृ-दृशः । पा०१।३।५७।
११३ अननोर्ज्ञः । पा०१।३।५८।
११४ श्रुवः अनाङ-प्रतेः । पा०१।३।५९।
११५ शदेः शिति । पा०१।३।६०।
११६ मृङो लुङ-लिङोश्च । पा० १।३।६१।
११७ प्रादेः अजाद्यन्ताद् युजेः अयज्ञपात्रेषु।
पा०१।३।६४+भा०।
११८ समः क्ष्णुवः । पा०।१।३।६५।
११९ भुजः अपालने । पा०१।३।६६।
१२० प्रयोजकाद् भी-स्मेर्णेः ।
पा०१।३।६८। पा०१।३।६७।

१२१ गृधि-वञ्च्वेः प्रलम्भने । पा०१।३।६९।
१२२ लियः पूजा-अभिभवयोश्च । पा०१।३।७०।
१२३ मिथ्यायोगे कृञः अभ्यासे । पा०१।३।७१।
१२४ फलवति । पा०१।३।७२।
१२५ पाठे विभाषितात् । पा०१।३।७२।
१२६ ञितः । पा०१।३।७२।
१२७ अपवदः । पा०१।३।७३।
१२८ सम्-उद्-आङ्भ्यो यमेः अग्रन्थे । पा०१।३।७५।
१२९ अप्रादेर्ज्ञः । पा०१।३।७६।
१३० शब्दान्तरगतौ वा । पा०१।३।७७।
१३१ न अनु-पराभ्यां कृञः । पा०१।३।७९,७८।
१३२ प्रति-अति-अभीनां क्षिपः । पा०१।३।८०।
१३३ प्राद् वहः । पा०१।३।८१।
१३४ परेर्मृषश्च । पा०१।३।८२ तथा काशिका १।३।८२।
१३५ रमो वि-आङोश्च । पा०१।३।८३।
१३६ उपात् । पा०१।३।८४।
१३७ अव्याप्याद् वा । पा०१।३।८५।
१३८ अणौ चित्तवत्कर्तृकाद् णेः । पा०१।३।८८,८६।
१३९ चलन-आहारार्थात् । पा०१।३।८७।
१४० प्रु-द्रु-स्रु-बुध-युध-इङ-नश-जनः । पा०१।३।८६।
१४१ न पा-दम-आयम-आयस-परिमुह-अत्ति-रुचि-नृति-धेट्-वद-वसः । पा०१।३।८९+वा०१ तथा काशिका १।३।८७।
१४२ वा क्यषः । पा०१।३।९०।
१४३ द्युद्भ्यो लुङि । पा०१।३।९१।
१४४ वृद्भ्यः स्य-सनोः । पा०१।३।९२।
१४५ लुटि क्लृपः । पा०१।३।९३।
१४६ युष्मदि मध्यमत्रयम् । पा०१।४।१०५,१०१।
१४७ अस्मदि उत्तमम् । पा०१।४।१०७।
१४८ एक-द्वि-बहुषु । पा०१।४।१०२। पा०१।४।२१,२२।

[प्रथमस्य अध्यायस्य चतुर्थः पादः समाप्तः]

[चान्द्रे व्याकरणे प्रथमः अध्यायः समाप्तः]

[द्वितीयः अध्यायः प्रथमः पादः]

१ सु-औ-जस्–अम्-औट्-शस्–
टा-भ्यां-भिस्–ङे-भ्यां-भ्यस्–
ङसि-भ्यां-भ्यस्–ङस्-ओस्-आम्–
ङि-ओस्-सुप् । पा०४।१।२।

२ अतो भिस ऐस् । पा०७।१।६।

३ इदम्-अदसोः कात् । पा०७।१।११।

४ टा-ङसोः इन-स्यौ । पा०७।१।१२।

५ ङे-ङस्योः य-आतौ ।
पा०७।१।१३,१२।

६ सर्वादिभ्यः स्मै-स्मातौ ।
पा०७।१।१४,१५।

७ ङेः स्मिन् । पा०७।१।१५।

८ जसः शीः । पा०७।१।१७।

९ आत् आमः साम् । पा०७।१।५२,५०।

१० न अन्यच्च नामा-ऽप्रधानात् ।
पा०१।१।२७ वा०२।

११ तृतीयार्थयोगे । पा०१।१।३०+भा०।

१२ चार्थसमासे । पा०१।१।३१।

१३ शी वा । पा०१।१।३२।

१४ प्रथम-चरम-तय-अय-अल्प-अर्ध-नेम-
कतिपयात् । पा०१।१।३३।

१५ पूर्वादिभ्यो नवभ्यः स्मात्-स्मिनौ च ।
पा०७।१।१६। पा०१।१।३४-३६।

१६ स्मै च तीयात् । पा०१।१।३६ वा०३।

१७ आपः औतः शीः । पा०७।१।१८,१७।

१८ नपुंसकात् । पा०७।१।१९।

१९ जस्-शसोः शिः । पा० ७।१।२०।

२० अष्टाभ्यः औश् । पा ७।१।२१।

२१ ष्-णः संख्याया लुक् ।
पा०७।१।२२। पा०१।१।२४,२३।

२२ कतेः । पा०१।१।२५।

२३ सु-अमोः नपुंसकात् । पा०७।१।२३।

२४ अतः अम् । पा०७।१।२४।

२५ डतरादिभ्यः पञ्चभ्यः अनेकतरात् तः।
पा०७।१।२५,२६ वा०१।

२६ युष्मद्-अस्मद्भ्यां ङसः अश् ।
पा०७।१।२७।

२७ ङे-सुटः अम् । पा०७।१।२८।

२८ शसः नः । पा०७।१।२९।

२९ भ्यसः अभ्यम् । पा०७।१।३०।

३० ङसेश्च अत् । पा०७।१।३१,३२।

३१ आमः आकम् । पा०७।१।३३।

३२ ह्रस्व-आपो नुट् । पा०७।१।५४।

३३ संख्याया अनतः । पा०७।१।५५।

३४ त्रयाणाम् । पा०७।१।५३।

३५ स्त्री-यूभ्याम् । पा०७।१।५४।
पा०१।४।३।

३६ सेयुवो वा । पा०१।४।५।

३७ स्त्रीणाम् । पा०१।४।४।

३८ सुपः असंख्याद् लुक् ।
पा०२।४।८२,५८।

३९ ऐकार्थ्ये । पा०२।४।७१।
पा०१।२।४५,४६।

४० ततः प्राक् कारकात् ।
पा०१।१।४१,३७।

४१ न अतः अम् अपञ्चम्याः ।
पा०२।४।८३।

४२ तृतीया-सप्तम्योर्वा । पा०२।४।८४।

४३ क्रियाप्ये द्वितीया । पा०२।३।२।
पा०१।४।४९-५१।

४४ गति-बोध-आहार-शब्दार्थ-
अनाप्यानां प्रयोज्ये । पा०१।४।५२।
४५ हृ-क्रोर्वा । पा०१।४।५३।
४६ दृश्-अभिवाद्योः तङाने ।
पा०१।४।५३ वा०१।
४७ न नी-खादि-अदि-ह्वा-शब्दाय-क्रन्दः ।
पा०१।४।५२ वा०५,१भा०।
४८ वहेः अनियन्तृके ।
पा०१।४।५२ वा०६।
४९ भक्षेः अहिंसायाम् ।
पा०१।४।५२ वा०७।
५० समया-निकषा-हा-धिग्-अन्तरा-
अन्तरेणयुक्तात् पा०२।३।२
वा०१+भा०।पा०२।३।४।
५१ द्वित्वे अध्यादिभिः ।
पा०२।३।२ भा०।
५२ सर्व-अभि-परि-उभयात् तसा ।
पा०२।३।२ भा०।
५३ एनपा । पा०२।३।३१।
५४ लक्षण-वीप्सा-इत्थंभूतेषु अभिना ।
पा०१।४।९१,९०,८३। पा०२।३।८।
५५ प्रति-परिभ्यां भागे च।पा०१।४।९०।
५६ अनुना । पा०१।४।९०।
५७ सहार्थे । पा०१।४।८५।
५८ हीने । पा०१।४।८६।
५९ उपेन । पा०१।४।८७।
६० सप्तमी आधिक्ये । पा०२।३।९।
६१ स्वाम्ये अधिना । पा०२।३।९।
पा०१।४।९७।
६२ कर्तरि तृतीया । पा०२।३।१८।
६३ करणे । पा०२।३।१८।
६४ परिक्रियश्चतुर्थी च । पा०१।४।४४।
६५ सहार्थेन । पा०२।३।१९।
६६ लक्षणे । पा०२।३।२१।
६७ संज्ञः व्याप्ये वा । पा०२।३।२२।
६८ हेतौ । पा०२।३।२३।
६९ ऋणे पञ्चमी । पा०२।३।२४।
७० गुणे वा । पा०२।३।२५।
७१ षष्ठी हेतुना । पा०२।३।२६।
७२ सर्वाः सर्वादिभ्यः हेत्वर्थैः ।
पा०२।३।२७+भा०।
७३ संप्रदाने चतुर्थी । पा०२।३।१३।
७४ रुचिमति । पा०१।४।३३।
७५ धारेः उत्तमर्णे । पा०१।४।३५।
७६ कोपस्थाने अनाप्ये ।
पा०१।४।३७,३८।
७७ प्रति-अनुभ्यां गृणः व्याप्ये ।
पा०१।४।४१।
७८ नमः-स्वस्ति-स्वाहा-स्वधा-वषट्-
शक्तार्थैः । पा०२।३।१६+वा०२।
७९ तादर्थ्ये । पा०२।३।१३ वा०१।
८० मन्याप्ये कुत्सायाम् अनावादौ वा ।
पा०२।३।१७+भा०।
८१ अवधेः पञ्चमी ।
पा०२।३।२८।पा०१।४।२४।
८२ परि-अपाभ्यां वर्जने ।
पा०२।३।१०।पा०१।४।८८।
८३ प्रतिना प्रतिनिधि-प्रतिदानयोः ।
पा०२।३।११। पा०१।४।९२।
८४ ऋते द्वितीया च । पा०२।३।२९।
८५ विना तृतीया च । पा०२।३।३२।
तथा काशिका २।३।३२।
८६ पृथग्-नानाभ्याम् । पा०२।३।३२।
८७ स्तोक-अल्प-कृच्छ्र-कतिपयाद्
असत्त्वार्थात् करणे । पा०२।३।३३।

८८ सप्तमी आधारे । पा०२।३।३६। पा०१।४।४५।
८९ निमित्ताद् व्याप्येन । पा०२।३।३६। वा०६।
९० यत्क्रिया क्रियाचिह्नम् । पा०२।३।३७।
९१ षष्ठी च अनादरे । पा०२।३।३८।
९२ यतः निर्धारणम् । पा०२।३।४१।
९३ अर्थमात्रे प्रथमा । पा०२।३।४६।
९४ संबोधने । पा०२।३।४७।
९५ षष्ठी संबन्धे । पा०२।३।५०। तथा काशिका २।३।५०।
९६ तुल्यार्थैस्तृतीया वा । पा०२।३।७२।
९७ हित-सुखाभ्यां चतुर्थी च । पा०२।३।७३।
९८ आशिषि आयुष्य-भद्रार्थ-कुशलार्थैश्च । पा०२।३।७३। तथा काशिका २।३।७३।

[द्वितीयस्य अध्यायस्य प्रथमः पादः समाप्तः]

[द्वितीयः पादः]

१ सुप् सुपा एकार्थम् । पा०२।१।४।
२ असंख्यं विभक्ति-समीप-अभाव-ख्याति-पश्चात्-यथा-युगपत्-संपत्-साकल्यार्थे । पा०२।१।६।
३ यथा न तुल्ये । पा०२।१।७।
४ यावद् इयत्त्वे । पा०२।१।८।
५ प्रतिना मात्रार्थे । पा०२।१।९।
६ संख्या-अक्ष-शलाकाः परिणा द्यूते अन्यथावृत्तौ । पा०२।१।१०+भा०।
७ परि-अप-आङ्-बहिर्-अञ्चः पञ्चम्या वा । पा०२।१।११–१३।
८ लक्षणेन अभि-प्रती । पा०२।१।१४।
९ अनुः सामीप्य-आयामयोः । पा०२।१।१५,१६।
१० तिष्ठद्गु-आदीनि । पा०२।१।१७।
११ पारे मध्ये षष्ठ्या वा । पा०२।१।१८।
१२ संख्या वंश्येन । पा०२।१।१९।
१३ नदीभिः । पा०२।१।२०।
१४ अन्यार्थे नाम्नि । पा०२।१।२१।
१५ तन्नपुंसकम् । पा०२।४।१८।
१६ कारकं बहुलम् । पा०२।१।२४–४८।
१७ चतुर्थी प्रकृत्या । पा०२।१।३६ भा०।
१८ विशेषणम् एकार्थेन । पा०२।१।५७।
१९ प्राप्त-आपन्नौ द्वितीयया अत्वं च । पा०२।२।४+भा०।
२० नञ् । पा०२।२।६।
२१ ईषद् गुणेन । पा०२।२।७+वा०१।
२२ षष्ठी । पा०२।२।८।
२३ न ल-निर्धार्य-पूरण-भाव-तृप्तार्थैः । पा०२।२।११,१०।
२४ कु-प्रादयः असुप्विधौ नित्यम् । पा०२।२।१८+वा०१।
२५ ऊर्यादिकारिकाच्विडाचः क्रियार्थैः । पा०१।४।६१,६० वा०१।
२६ अनुकरणम् । पा०१।४।६२।
२७ भूषण-आदर-अनादरेषु अलं-सत्-असतः । पा०१।४।६३,६४।
२८ अग्रहे अन्तः । पा०१।४।६५।
२९ कणे-मनसी तृप्तौ । पा०१।४।६६।

३० पुरस्-अस्तम् असंख्यम् । पा० १।४।६७,६८।
३१ अच्छ गत्यर्थ-वदिभिः । पा० १।४।६९।
३२ अदः अनुपदेशे । पा० १।४।७०।
३३ तिरः अन्तर्धौ । पा० १।४।७१।
३४ कृत्वा वा । पा० १।४।७२।
३५ उपाजे-अन्वाजे । पा० १।४।७३।
३६ साक्षात्-आदीनि । पा० १।४।७४।
३७ अनत्याधाने उरसि-मनसि-मध्ये-पदे-निवचने । पा० १।४।७५,७६।
३८ नित्यं हस्ते-पाणौ उद्वाहे । पा० १।४।७७।
३९ प्राध्वं बन्धे । पा० १।४।७८।
४० जीविका-उपनिषदौ औपम्ये । पा० १।४।७९।
४१ असंख्यं वा अनभिप्रेताख्याने क्त्वा । पा० ३।४।५९।
४२ तिर्यक् समाप्तौ । पा० ३।४।६०।
४३ स्वाङ्गात् तस्-ना-धार्थं भुवा च । पा० ३।४।६१,६२।
४४ तूष्णीम् । पा० ३।४।६३।
४५ अन्वग् आनुकूल्ये । पा० ३।४।६४।
४६ अनेकम् अन्यार्थे । पा० २।२।२४।
४७ तत्र गृहीत्वा तेन प्रहृत्य युद्धे सरूपम् । पा० २।२।२७।
४८ चार्थे । पा० २।२।२९।
४९ समाहारे नपुंसकम् । पा० २।४।१७।
५० अनुवादे चरणानां स्था-इणोर्लुङि । पा० २।४।३+वा० १,२।
५१ अध्वर्यु-क्रतूनामनपुंसकानाम् । पा० २।४।४।
५२ संनिकृष्टपाठानाम् । पा० २।४।५।
५३ अप्राणिजातीनाम् । पा० २।४।६।
५४ नदी-देश-नगराणां भिन्नलिङ्गानाम् । पा० २।४।७।
५५ नित्यवैरिणाम् । पा० २।४।९।
५६ कारूणाम् । पा० २।४।१०।
५७ गवाश्व-आदीनाम् । पा० २।४।११।
५८ प्राणि-तूर्याङ्गाणाम् । पा० २।४।२।
५९ सेनाङ्गानां बहुत्वे । पा० २।४।२+१२वा० १।
६० क्षुद्रजन्तूनाम् । पा० २।४।८।
६१ फलानाम् । पा० २।४।१२ वा० १।
६२ वा वृक्ष-तृण-धान्य-मृग-शकुनि-विशेषाणाम् । पा० २।४।१२।
६३ व्यञ्जनानाम् । पा० २।४।१२।
६४ अश्वबडवौ । पा० २।४।१२,२७।
६५ विरोधिनाम्-अद्रव्याणाम् । पा० २।४।१३।
६६ न दधिपय-आदीनाम् । पा० २।४।१४।
६७ नाम्नि षष्ठ्याः कन्था उशीनरेषु । पा० २।४।२०।
६८ उपज्ञा-उपक्रमं तदादित्वे । पा० २।४।२१।
६९ ईश्वरार्थात् अराज्ञः सभा । पा० २।४।२३। काशिका २।४।२३।
७० अमनुष्यात् । पा० २।४।२३।
७१ अशाला । पा० २।४।२४।
७२ सेना-सुरा-शाला-निशा वा । पा० २।४।२५।
७३ छाया । पा० २।४।२५।
७४ बाहुल्ये । पा० २।४।२२।
७५ पथः असंख्यात् । पा० २।४।३०वा० १।

७६ संख्यादिः समाहारे । पा०२।४।३० वा०२।

७७ अः स्त्री । पा०२।४।३० भा०।

७८ वा आप् । पा०२।४।३० वा०३।

७९ अनो लोपः । पा०२।४।३० भा०।

८० न पात्रादयः । पा०२।४।३० भा०।

८१ रात्र-अह्न-वाकाः पुंसि । पा०२।४।२९+वा०१।

८२ अहः असुदिन-पुण्यात् । पा०२।४।२९,३० भा०।

८३ नपुंसके च अर्धर्च-आदयः। पा०२।४।३१।

८४ सुपि ह्रस्वः । पा०१।२।४७।

८५ गोः अप्रधानस्य अन्त्यस्य । पा०१।२।४८।

८६ ङ्यादीनाम् । पा०१।२।४८।

८७ लुक् अणादिलुकि अगोण्यादीनाम् । पा०१।२।४९,५०+भा०।

[द्वितीयस्य अध्यायस्य द्वितीयः पादः समाप्तः]

[तृतीयः पादः]

१ स्त्रियाम् । पा०४।१।३।

२ ऋ-नो ङीप् । पा०४।१।५।

३ उगितः । पा०४।१।६।

४ अञ्चः । पा०४।१।६ वा०२।

५ अहशो वनो र च । पा०४।१।७+वा०१।

६ अन्यार्थे वा । पा०४।१।७ वा०२।

७ पादः । पा०४।१।८।

८ अनः । पा०४।१।२८।

९ ऊधसो नश्च । पा०४।१।२५। तथा पा०५।४।१३१।

१० दाम्नः संख्यादेः । पा०४।१।२७।

११ हायनाद् वयसि । पा०४।१।२७+भा०।

१२ नोपान्तवतः । पा०४।१।१२।

१३ मनः । पा०४।१।११।

१४ ताभ्यां डाप् । पा०४।१।१३।

१५ अजाद्यतः । पा०।४।१।४।

१६ स्वार्थे । पा०४।१।१४।

१७ टित्-ढ-अण्-अञ्-ठक्-ठञ्-नञ्-स्नञ्-कञ्-क्वरप्-ख्युनः । पा०४।१।१५+वा०६+भा०।

१८ यञोऽषावटात् । पा०४।१।१६,७४ वा०१।पा०४।१।७५।

१९ ष्फो वा । पा०४।१।१७।

२० लोहितादिभ्यः शकलान्तेभ्यः । पा०४।१।१८+वा०१।

२१ कौरव्य-आसुरि-माण्डूकात् । पा०४।१।१९+वा०१।

२२ वयसि अचरमे । पा०४।१।२० भा०।

२३ संख्यादेः । पा०४।१।२१।

२४ परिमाणाल्लुकि असंख्या-काल-विस्ता-आचित-कम्बल्यात् । पा०४।१।२२+भा०।

२५ काण्डाद् अक्षेत्रे । पा०४।१।२३।

२६ पुरुषाद् वा । पा०४।१।२४।

२७ केवल-मामक-भागधेय-पाप-अवर-समान-आर्यकृत-सुमङ्गल-भेषजाद् नाम्नि । पा०४।१।३०।

२८ अन्तर्वत्नी गर्भिण्याम् । पा०४।१।३२+वा०१।

२९ पतिवत्नी भार्यायाम् । पा०४।१।३२+वा०१।

३० पत्युर्न ऊढायाम् । पा०४।१।३३।

३१ सपूर्वस्य वा । पा०४।१।३४।

३२ अन्यार्थे । पा०४।१।३४ वा०१।

३३ समानादिभ्यः । पा०४।१।३५।

३४ श्येत-एत-हरित-रोहितात् तो नः । पा०४।१।३९।

३५ क्नः असित-पलिताल् । काशिका ४।१।३९[१]।

३६ षितः ङीष् । पा०४।१।४१।

३७ गौरादिभ्यः । पा०४।१।४१।

३८ भाज-गोण-नाग-स्थल-कुण्ड-काल-कुश-कामुक-कवरात् पक्व-आवपन-स्थूल-अकृत्रिम-अमत्र-कृष्ण-आयसी-रिरंसु-केशवेशेषु । पा०४।१।४२।

३९ नीलात् प्राणि-ओषध्योः । पा०४।१।४२ वा०१,२।

४० वा नाम्नि । पा०४।१।४२ वा०३।

४१ शोणादिभ्यः । पा०४।१।४३,४५।

४२ एः अक्तिनः । काशिका ४।१।४५[२]। पा०४।१।४५।

४३ ओः गुणाद् अखरु-संयोगोपान्तात् । पा०४।१।४४+वा०२।

४४ पुंनाम्नो योगाद् अपालकान्तात् । पा०४।१।४८+भा०।

४५ पूतक्रतु-वृषाकपि-अग्नि-कुसित-कुसीदानाम् ऐ च । पा०४।१।३६,३७।

४६ मनोः औ वा । पा०४।१।३८।

४७ सूर्या देवी । पा०४।१।४८ भा०।

४८ इन्द्र-वरुण-भव-शर्व-रुद्र-मृडानाम् आनुक् च । पा०४।१।४९।

४९ आचार्यानी । पा०४।१।४९ वा०६।

५० मातुल-उपाध्यायाद् वा । पा०४।१।४९ वा०४।

५१ आर्य-क्षत्रियाच्च पा०४।१।४९।वा०७।

५२ हिम-अरण्याद् महत्त्वे । पा०४।१।४९ वा०१।

५३ यवाद् दोषे । पा०४।१।४९ वा०२।

५४ यवनात् लिप्याम् । पा०४।१।४९ वा०३।

५५ क्रीतात् करणादेः । पा०४।१।५०।

५६ क्ताद् अल्पोक्तौ । पा०४।१।५१।

५७ स्वाङ्गात् अक्त-मित-जात-प्रतिपन्नात् अन्यार्थे । पा०४।१।५४। पा०६।२।१७०।पा०४।१।५२ वा०१।

५८ पाणिगृहीती ऊढा । पा०।४।१।५२ वा०२।

५९ जातेः अनाच्छादाद् वा । पा०४।१।५३। पा०६।२।१७०।

६० संज्ञायाम् । पा०४।१।५२। वा०३,४।

६१ स्वाङ्गाद् अप्रधानात् ।पा०४।१।५४।

६२ नासिका-उदर-ओष्ठ-जङ्घा-दन्त-कर्ण-शृङ्ग-अङ्ग-गात्र-कण्ठात् । पा० ४।१।५५। काशिका ४।१।५४।

---

१ अस्य सूत्रस्य वृत्तौ "भाषायामपीष्यते" इति निर्दिश्य 'असिक्नी-पलिक्नी' रूपसिद्धिर्दर्शिता ।

२ अत्रापि काशिकायाम् अस्मिन् सूत्रे 'कृदिकारात् अक्तिनः' इति वार्तिकम् ।

६३ पुच्छात् । पा०४।१।५५ वा०१।
६४ कवर-मणि-विष-शरात् । पा०४।१।५५ वा०२।
६५ उपमानादेः । पा०४।१।५५ वा०३।
६६ पक्षात् । पा०४।१।५५ वा०३।
६७ न क्रोडादिभ्यः । पा०४।१।५६।
६८ सह-नञ्-विद्यमानादेः । पा०४।१।५७।
६९ नख-मुखाद् नाम्नि । पा०४।१।५८।
७० सखी अशिश्वी । पा०४।१।६२।
७१ जातेः अस्त्रीविषयाद् अयोपान्तात् । पा०४।१।६३।
७२ पाक-कर्ण-पर्ण-पुष्प-फल-मूल-वालान्तात् । पा०४।१।६४।
७३ इतः नृजातेः । पा०४।१।६५।
७४ इञः । पा०४।१।६५ वा०१।
७५ ऊङ् उतः । पा०४।१।६६।
७६ अप्राणिनाम् अरज्ज्वादिभ्यः । पा०४।१।६६ वा०१।
७७ बाह्वन्त-कद्रु-कमण्डलुभ्यो नाम्नि । पा०४।१।६७,७२।
७८ पङ्गूः श्वश्रूः । पा०४।१।६८। काशिका ४।१।६८।
७९ ऊरोः उपमा-संहित-सहित-सह-शफ-वाम-लक्ष्मणादेः । पा०४।१।६९,७०। ७० भा०।
८० यङश्चाप् । पा०४।१।७४।
८१ यूनस्तिः । पा०४।१।७७।
८२ अनृषेर्गुरूपोत्तमाद् गोत्रे अणिञोः ष्यङ् । पा०४।१।७८।
८३ कुलनाम्नः । पा०४।१।७९।
८४ क्रौड्यादीनाम् । पा०४।१।८०।
८५ दैवयज्ञि-शौचिवृक्षि-सात्यमुग्रि-काण्ठेविद्धीनां वा । पा०४।१।८१।

[द्वितीयस्य अध्यायस्य तृतीयः पादः समाप्तः]

[चतुर्थः पादः]

१ प्राग्जिताद् अण् । पा०४।१।८३।
२ दिति-अदिति-आदित्य-यमाद् ण्यः । पा०४।१।८५। काशिका ४।१।८५।
३ पत्युरनश्वाद्यादेः । पा०४।१।८५,८४।
४ अः स्थाम्नः । पा०४।१।८५ वा०७।
५ लोम्नः अपत्येषु । पा०४।१।८५ वा०८।
६ पृथिव्या ञः । पा०४।१।८५ वा०२।
७ उत्सादिभ्यः अञ् । पा०४।१।८६।
८ देवात् । पा०४।१।८५ वा०३।
९ यञ् । पा०४।१।८५। वा०३।
१० बहिषः टीकक् च । पा०४।१।८५ वा०५,४।
११ संख्यादेः संख्येयाद् अनपत्ये अजादेर्लुग् अद्विः । पा०४।१।८८+भा०।
१२ प्राग् वतेः अग्नि-कलिभ्यां ढक् । पा०४।२।७ भा०।
१३ स्त्री-पुंसाभ्यां नञ्-स्नञौ । पा०४।१।८७+वा०१।
१४ भावे वा । पा०४।१।८७ वा०२।
१५ गोः अचि यत् । पा०४।१।८५ वा०९।
१६ तस्य अपत्यम् । पा०४।१।९२।

१७ आद्यात् । पा०४।१।६३।
१८ पौत्रादेः अस्त्रियां गुर्वयित्ते । पा०४।१।६४।
१९ अतः इञ् । पा०४।१।६५।
२० वाह्वादिभ्यो गोत्रादिभ्यः । पा०४।१।६६ वा०१।
२१ व्यासादीनाम् अकङ् च । पा०४।१।६७ भा०।
२२ विदादिभ्यः अञ् । पा०४।१।१०४।
२३ ऋषेः पौत्रादौ । पा०४।१।१०४।
२४ गर्गादिभ्यो यञ् । पा०४।१।१०५।
२५ मधोर्ब्राह्मणे । पा०४।१।१०६।
२६ बभ्रोः कौशिके । पा०४।१।१०६।
२७ कपेः आङ्गिरसे । पा०४।१।१०७।
२८ वोधात् । पा०४।१।१०७।
२९ वतण्डात् । पा०४।१।१०८।
३० स्त्रियां लुक् । पा०४।१।१०९।
३१ अश्वादिभ्यः फञ् । पा०४।१।११०।
३२ भर्गात् त्रैगर्ते । पा०४।१।१११।
३३ कुञ्जादिभ्यः फ्यञ् । पा०४।१।१८ भा०।
३४ स्त्रीबहुषु फक् । पा०५।३।११३। पा०४।१।६८ भा०।
३५ नडादिभ्यः । पा०४।१।९९।
३६ हरितादिभ्यः अञः । पा०४।१।१००।
३७ यञिञः । पा०४।१।१०१।
३८ शरद्वत्-शुनक-दर्भाद् भार्गव-वात्स्य-आग्रायणेषु । पा०४।१।१०२।
३९ पर्यत-जीवन्ताद् वा । पा०४।१।१०३।
४० द्रोणात् । पा०४।१।१०३।
४१ शिवादिभ्यः अण् । पा०४।१।११२।
४२ नदी-मानुषीनाम्नः अनादैजाद्यचः । पा०४।१।११३।
४३ कुब्जा-कोकिलाभ्याम् । पा०४।१।१२० भा०।
४४ ऋषि-कुरु-वृष्णि-अन्धकात् । पा०४।१।११४।
४५ मातुः उत् संख्या-सं-भद्रादेः । पा०४।१।११५।
४६ कन्यायाः कनीन च । पा०४।१।११६।
४७ शुङ्ग-च्छगल-विकर्णाद् भारद्वाज-वात्स्य-आत्रेयेषु । पा०४।१।११७।
४८ पीला-मण्डूकाद् वा । पा०४।१।११८,११९।
४९ ढक् । पा०४।१।११९।
५० ङी-आप्-ति-ऊङः । पा०४।१।१२०।
५१ द्व्यचः । पा०४।१।१२१।
५२ इतोऽनिञः । पा०४।१।१२२।
५३ शुभ्रादिभ्यः । पा०४।१।१२३।
५४ विकर्ण-कुषीतकात् काश्यपे । पा०४।१।१२४।
५५ भ्रौवेयः । पा०४।१।१२५।
५६ कल्याण्यादीनाम् इनङ् । पा०४।१।१२६।
५७ कुलटाया वा । पा०४।१।१२७।
५८ चटकात् ऐरक् । पा०४।१।१२८+वा०१।
५९ लुक् स्त्रियाम् । पा०४।१।१२८ वा०२।
६० जाण्ड-पाण्डाद् आरक् । पा०४।१।१३० भा०।
६१ गोधायाः । पा०४।१।१३०।
६२ एरक् । पा०४।१।१२९।
६३ क्षुद्राभ्यो वा । पा०४।१।१३१।

६४ भ्रातुर्व्यत् । पा०४।१।१४४।
६५ छः । पा०४।१।१४४।
६६ स्वसुः । पा०४।१।१४३।
६७ पितृ-मात्रादेः छण् ।
पा०४।१।१३२,१३४।
६८ ढकि लोपः । पा०४।१।१३३।
६९ क्षत्रात् जातौ घः । पा०४।१।१३८।
काशिका ४।१।१३८।
७० राज्ञो यत् । पा०४।१।१३७+वा०१।
७१ श्वशुरात् । पा०४।१।१३७।
७२ कुलात् ढकञ् च । पा०४।१।१४०।
७३ खः पदान्ताच्च । पा०४।१।१३९ ।
७४ दुरः ढक् वा । पा०४।१।१४२।
७५ महाकुलाद् अञ्-खञौ ।
पा०४।१।१४१।
७६ चतुष्पाद्भ्यो ढञ् । पा०४।१।१३५।
७७ गृष्ट्यादिभ्यः । पा०४।१।१३६।
७८ रेवत्यादिभ्यः ठक् । पा०४।१।१४६।
७९ पौत्रादेः स्त्रियाः कुत्सिते ण च ।
पा०४।१।१४७।
८० सौवीरेषु वा । पा०४।१।१४८।
८१ फेश्छ च । पा०४।१।१४९।
८२ फाण्टाहृतेःण-फिञौ।पा०४।१।१५०।
८३ मिमतात् । पा०४।१।१५०।
८४ कुर्वादिभ्यो ण्यः । पा०४।१।१५१।
८५ सेनान्त-कारु-लक्ष्मणाद् इञ् च ।
पा०४।१।१५२,१५३।
८६ तिकादिभ्यः फिञ् । पा०४।१।१५४।
८७ दगु-कोशल-कर्मार-च्छाग-वृषाद्
युट् च । पा०४।१।१५५ वा०१।
८८ द्व्यचोऽणः । पा०४।१।१५६।
८९ त्यदादिभ्यो वा ।
काशिका ४।१।१५६[1]।
९० अगोत्रादादैजाद्यचः। पा०४।१।१५७।
९१ वाकिनादीनां कुक् च ।
पा०४।१।१५८।
९२ पुत्रान्ताद् वा । पा०४।१।१५९।
९३ फिन् बहुलम् । पा०४।१।१६०।
९४ मनोर्जातौ यत् सुक् च ।
पा०४।१।१६१।
९५ अञ् । पा०४।१।१६१।
९६ जनपदनाम्नः क्षत्रियाद् राज्ञि च ।
पा०४।१।१६८+वा०३।
९७ गान्धारि-शाल्वेयात् ।
पा०४।१।१६९।
९८ आदैजाद्यचो ञ्यङ । पा०४।१।१७१।
९९ इत् कोशल-आजादात् ।
पा०४।१।१७१।
१०० द्व्यच्-मगध-कलिङ्ग-शूरमसाद्[2]
अण् । पा०४।१।१७०।
१०१ कुरु-नादिभ्यः ण्यः ।
पा०४।१।१७२।
१०२ पाण्डोर्ड्यण् । पा०४।१।१६८ भा०।
१०३ शाल्वाङ्ग-प्रत्यग्रथ-कलकूट-
अश्मकात् इञ् । पा०४।१।१७३।
१०४ कम्बोजादिभ्यो लुक् ।
पा०४।१।१७५+वा०१।
१०५ स्त्रियां कुरु-कुन्ति-अवन्तिभ्यः ।
पा०४।१।१७६।
१०६ अतः अप्राच्य-भर्गादिभ्यः ।
पा०४।१।१७७,१७८।

---

१. अत्र सूत्रे "त्यदादीनां वा फिञ् वक्तव्यः" इति वार्तिकम् ।
२. अत्र सवृत्तिके चान्द्रव्याकरणे 'सूरमसाद्' इति पाठः।

१०७ यञ्-अञोः बहुषु अस्त्रियाम् ।
पा०२।४।६४,६२।

१०८ कुण्डिनाः । पा०२।४।७०।

१०९ त्र्यादीनाम् । पा०४।१।१७४।
पा०२।४।६२।

११० यस्कादिभ्यः । पा०२।४।६३।

१११ अत्रि-भृगु-कुत्स-वसिष्ठ-अङ्गिरस्-
गोतमात् । पा०२।४।६५।

११२ अगस्तयः । पा०२।४।७०।

११३ बह्वचः प्राच्याद् इञः ।
पा०२।४।६६।

११४ उपकादिभ्यो वा । पा०२।४।६९।

११५ तिक-कितवादिभ्यश्च अर्थैकार्थ्ये ।
पा०२।४।६८।

११६ न गोपवनादिभ्यः अष्टभ्यः ।
पा०२।४।६७+वा०१।

११७ प्राग्जितीये अचि । पा०४।१।८९।

११८ गोत्राद् लुक् । पा०४।१।९०।

११९ फक्-फिञोर्वा । पा०४।१।९१।

१२० अब्राह्मणात् । पा०२।४ ५८ भा०।

१२१ पैलादिभ्यः । पा०२।४।५९।

१२२ प्राच्याद् इञः अतौल्वलिभ्यः ।
पा०२।४।६०,६१।

१२३ ञिद्-आर्षण्याद् अणिञोः ।
पा०२।४।५८।

[द्वितीयस्य अध्यायस्य चतुर्थः पादः समाप्तः]

[चान्द्रे व्याकरणे द्वितीयः अध्यायः समाप्तः]

[तृतीयः अध्यायः, प्रथमः पादः]

१ तेन रक्तं रागात् । पा०४।२।१।

२ लाक्षा-रोचनात् ठक् । पा०४।२।२।

३ शकल-कर्दमाद् वा । पा०४।२।२ वा०१।

४ नील-पीताद् अन्-कनौ । पा०४।२।२ वा०२,३।

५ नक्षत्रैरिन्दुयुक्तैः कालः । पा०४।२।३+वा०१।

६ चार्थात् छः । पा०४।२।६।

७ दृष्टं साम डित् वा । पा०४।२।७+भा०।

८ गोत्रात् अङ्कवत् । पा०४।२।७ भा०।

९ वामदेव्यम् । पा०४।२।९।

१० परिवृतो रथः । पा०४।२।१०।

११ कौमारी प्राथम्ये । पा०४।२।१३।

१२ तत्र उद्धृतं पात्रेभ्यः । पा०४।२।१४।

१३ स्थण्डिले शेते व्रती । पा०४।२।१५।

१४ संस्कृतं भक्ष्यम् । पा०४।२।१६।

१५ शूल-उखात् यत् । पा०४।२।१७।

१६ दध्नः ठक् । पा०४।२।१८।

१७ क्षीरात् ढञ् । पा०४।२।२०।

१८ साऽस्य पौर्णमासी । पा०४।२।२१।

१९ आग्रहायणी-अश्वत्थात् ठक् । पा०४।२।२२।

२० फाल्गुनी-श्रवणा-कार्तिकी-चैत्रीभ्यो वा । पा०४।२।२३।

२१ देवता । पा०४।२।२४।

२२ कस्य इत् । पा०४।२।२५।

२३ शुक्रात् घन् । पा०४।२।२६।

२४ पैङ्गाक्षीपुत्रादिभ्यः छः । पा०४।२।२८ वा०१।

२५ शतरुद्रात् घश्च । पा०४।२।२८ वा०२।

२६ अपोनपात्-अपांनपातोः तृ चातः । पा०४।२।२७,२८।

२७ महेन्द्राद् वा । पा०४।२।२९।

२८ सोमात् ट्यण् । पा०४।२।३०।

२९ वायु-ऋतु-पितृ-उषसो यत् । पा०४।२।३१।

३० द्यावापृथिवी-शुनासीर-मरुत्वत्-अग्नीषोम-वास्तोष्पति-गृहमेधात् छश्च । पा०४।२।३२।

३१ कालेभ्यो भववत् । पा०४।२।३४।

३२ महाराज-प्रोष्ठपदात् ठञ् । पा०४।२।३५।

३३ आदेश्छन्दसः प्रगाथे । पा०४।२।५५।

३४ योद्धृप्रयोजनात् संग्रामे । पा०४।२।५६।

३५ प्रहरणात् अस्यां क्रीडायां णः । पा०४।२।५७।

३६ भावघञो ञः । पा०४।२।५८।

३७ तद् अधीते तद् वेद । पा०४।२।५९।

३८ क्रतु-उक्थादिभ्यः ठक् । पा०४।२।६०।

३९ शत-षष्टेः पथः ष्ठन् । पा०४।२।६०। भा० (कारिका[1])

४० क्रमादिभ्यो वुन् । पा०४।२।६१।

४१ प्रोक्तात् लुक् । पा०४।२।६४।

---

१ इयं च कारिका श्रीकिल्हॉर्नमहाशयसंपादिते व्याकरणमहाभाष्ये एवं पठ्यते— "अनुसूर्लक्ष्यलक्षणे सर्वसादेर्द्विगोश्च लः । इकन् पदोत्तरपदात् शत-षष्टेः षिकन् पथः" ॥ —द्वितीय भागे पृ० २८४ । काशिकायां तु ४।२।६० सूत्रे इदं वार्तिकम्— "शत-षष्टेः षिकन् पथो बहुलम्" ।

४२ सूत्रात् संख्याकात् । पा०४।२।६५+भा०।

४३ तस्य समूहः । पा०४।२।३७।

४४ भिक्षादिभ्यः अण् । पा०४।२।३८।

४५ गोत्र-उक्ष-उष्ट्र-उरभ्र-राज-राजपुत्र-वत्स-अज-वृद्धात् वुञ् । पा०४।२।३९+भा०।

४६ केदारात् यञ् च । पा०४।२।४०।

४७ कवचिनश्च ठक् । पा०४।२।४१।

४८ हस्ति-अचित्तात् । पा०४।२।४७।

४९ धेनोरनञः । पा०४।२।४५ भा० । काशिका ४।२।४७ वा०।

५० गणिका-ब्राह्मण-माणव-वाडवात् यञ् । पा०४।२।४० भा०। पा०४।२।४२।

५१ केशाद् वा । पा० ४।२।४८।

५२ अश्वात् छः । पा०४।२।४८।

५३ पार्श्व-पौरुषेये । पा०४।२।४३ वा०३। पा०५।१।१० भा०।

५४ पृष्ठ्य-अहीनौ क्रतौ । पा०४।२।४२ वा०१। पा०४।२।४३ वा०१,२।

५५ वातात् ऊलः । पा०५।२।१२२ वा०९।

५६ पाशादिभ्यः यः । पा०४।२।४९।

५७ खलादिभ्यः इनिः । पा०४।२।५१ वा०१।

५८ गोत्रा । पा०४।२।५१।

५९ ग्राम-जन-गज-बन्धु-सहायात् तल् । पा०४।२।४३+भा०।

६० पितृव्य-मातामह-पितामहाः । पा०४।२।३६।

६१ विषये देशे । पा०४।२।५२।

६२ राजन्यादिभ्यः वुञ् । पा०४।२।५३।

६३ भौरिकि-ऐषुकार्यादिभ्यः विधल्-भक्तलौ । पा०४।२।५४।

६४ निवासे तन्नाम्नि । पा०४।२।६९,६७।

६५ अदूरभवे । पा०४।२।७०।

६६ तेन निर्वृत्ते । पा०४।२।६८।

६७ तद् इह अस्ति च । पा०४।२।६७।

६८ वुञ्-छण्-क-ठच्-इल-स-इनि-र-ढञ्--ण्य-य-फक्-फिञ्-इञ्-ञ्य--कक्-ठक्-छ-कीय-ड्मतुप्-ड्वलचः । पा०४।२।८०,९०,९१,८७,८८।

[तृतीयस्य अध्यायस्य प्रथमः पादः समाप्तः]

[द्वितीयः पादः]

१ शेषे । पा०४।२।९२।

२ राष्ट्राद् घः । पा०४।२।९३।

३ परावार-अवारपारात् खः । पा०४।२।९३वा०१,२।

४ ग्रामात् य-खञौ । पा०४।२।९४।

५ कत्र्यादिभ्यश्च ढकञ् । पा०४।२।९५+भा०।

६ नद्यादिभ्यः ढक् । पा०४।२।९७।

७ दक्षिणा-पश्चात्-पुरसः त्यक् । पा०४।२।९८।

८ बह्लि-उर्दि-पर्दि-कापिशीभ्यः ष्फक् । पा०४।२।९९+भा०।

९ रङ्कोः प्राणिनि वा । पा०४।२।१००। काशिका ४।२।१००।

१० द्यु-प्राग्-अपाग्-उदक्-प्रतीचो यत् । पा०४।२।१०१

११ कन्थायाः ठक् । पा०४।२।१०२।

१२ वर्णौ वुक् । पा०४।२।१०३।

१३ क्व-अमा-इह-त्र-तसः त्यप् । पा०४।२।१०४ भा०।

१४ निसो गते । पा०४।२।१०४ भा०।

१५ ऐषमस्-ह्यस्-श्वसो वा । पा०४।२।१०५।

१६ दूरेत्य-औत्तराहौ । पा०४।२।१०४ भा०।

१७ णः अरण्यात् । पा०४।२।१०४ भा०।

१८ रूप्यान्तात् ञः । पा०४।२।१०६।

१९ दिगादेरनाम्नि अमद्रात् । पा०४।२।१०७,१०८।

२० बाहीकादिभ्यः अण् । पा०४।२।११०।

२१ शकलादिभ्यः गोत्रात् । पा०४।२।१११।

२२ इञः । पा०४।२।११२।

२३ न द्व्यचः प्राच्यात् । पा०४।२।११३।

२४ आदैजाद्यचश्छः । पा०४।२।११४।

२५ एङाद्यचः प्राग्देशात् । पा०१।१।७५।

२६ नृनाम्नो वा । पा०१।१।७३ वा०५।

२७ गोत्रान्तात् तद्वद् अजिह्वाकात्य-हरितकात्यात् । पा०१।१।७३ वा०७,८।

२८ त्यदादिभ्यः । पा०१।१।७४।

२९ भवतो दश्च । पा०४।२।११५। पा०१।४।१६।

३० ठञ् । पा०४।२।११५।

३१ ओः देशात् । पा०४।२।११९।

३२ प्राच्यात् छे । पा०४।२।१२०।

३३ काश्यादिभ्यः ञिकश्च । पा०४।२।११६।

३४ बाहीकग्रामात् । पा०४।२।११७।

३५ वा उशीनरेषु । पा०४।२।११८।

३६ प्रस्थ-वह-पुरान्त-योपान्त-धन्वार्थात् वुञ् । पा०४।२।१२२,१२१।

३७ रोपान्त-ईतः प्राच्यात् । पा०४।२।१२३।

३८ जनपदेभ्यः । पा०४।२।१२४।

३९ बहुत्वविषयेभ्यः । पा०४।२।१२५।

४० कच्छ-अग्नि-वक्त्र-वर्तान्तात्[1]। पा०४।२।१२६।

४१ धूमादिभ्यः । पा०४।२।१२७।

४२ नगरात् कुत्सा-प्रावीण्ययोः । पा०४।२।१२८।

४३ अरण्यात् पथि-न्याय-अध्याय-हस्ति-नर-विहारेषु । पा०४।२।१२९+भा०।

४४ वा गोमये । पा०४।२।१२९ भा०।

४५ कुरु-युगन्धरात् । पा०४।२।१३०।

४६ वृजि-मद्रात् कन् । पा०४।२।१३१।

४७ कोपान्ताद् अण् । पा०४।२।१३२।

४८ कच्छादिभ्यः । पा०४।२।१३३।

४९ नृ-तत्स्थयोर्वुञ् । पा०४।२।१३४।

५० शाल्वाद् गो-यवाग्वोः । पा०४।२।१३६।

५१ न पदातौ । पा०४।२।१३५।

५२ गर्तान्तात् छः । पा०४।२।१३७।

५३ कटादेः प्राच्यात् । पा०४।२।१३९।

५४ क-खोपान्त-कन्था-पलद-नगर-ग्राम-ह्रदान्तात् छे । पा०४।२।१४१,१४२।

५५ पर्वतात् । पा०४।२।१४३।

५६ अनरे वा । पा०४।२।१४४।

५७ कृकण-पर्णाद् भारद्वाजात् । पा०४।२।१४५।

५८ गहादिभ्यः । पा०४।२।१३८।

---

१ पाणिनीये तु–'वक्त्र-गर्तोत्तरपदात्' इति पाठः। उदाहरणमपि-चाक्रगर्तकः।

५९ पृथिवीमध्यस्य मध्यमश्च ।
पा०४।२।१३८ वा०१।

६० निवासस्य चरणे अण् च ।
पा०४।२।१३८ वा०२।

६१ वेणुकादिभ्यः छण् ।
काशिका ४।२।१३८[1]।

६२ युष्मद्-अस्मदोः खञ् युष्माक-अस्माकौ च । पा०४।३।१,२।

६३ अण् । पा०।४।३।१।

६४ तवक-ममकौ एकत्वे। पा०४।३।३।

६५ द्वीपादनुसमुद्रात् ञ्यः। पा०४।३।१०।

६६ अर्धात् यत् । पा०४।३।४।

६७ पर-अवर-अधम-उत्तमादेः ।
पा०४।३।५।

६८ दिगादेः ठञ् च । पा०४।३।६।

६९ ग्राम-जनपदांशात् अण् च ।
पा०४।३।७।

७० सपूर्वात् । पा०४।३।४। वा०१।

७१ कालेभ्यः । पा०४।३।११।

७२ शरदः श्राद्धे । पा०४।३।१२।

७३ रोग-आतपयोः वा । पा०४।३।१३।

७४ निशा-प्रदोषात् । पा०४।३।१४।

७५ श्वसः तुट् च । पा०४।३।१५।

७६ प्राह्णे-प्रगे-सायं-चिरम्-असंख्यात् टच्युः।
पा०४।३।२३।

७७ पूर्वाण्ह-अपराण्हात् वा ।
पा०४।३।२४।

७८ परुत्-परारि-चिरात् त्नः ।
पा०४।३।२३। भा०।

७९ सन्ध्यादि-ऋतु-नक्षत्रात् अण् ।
पा०४।३।१६।

८० हेमन्ताद् वा तलोपश्च ।
पा०४।३।२१,२२।

८१ वर्षा-प्रावृड्भ्यां ठक्-एण्यौ ।
पा०४।३।१८,१७।

८२ मध्य–आदिभ्यां मः ।पा०४।३।८।
काशिका ४।३।८ वा०।

८३ अग्र-अन्त-पश्चाद् इमच् ।
पा०४।३।२३ भा०।

[तृतीयस्य अध्यायस्य द्वितीयः पादः समाप्तः]

[तृतीयः पादः]

१ तत्र जाते प्रावृषः ठप् ।
पा०४।३।२५,२६।

२ पूर्वाह्ण-अवराह्ण-आर्द्रा-मूल-प्रदोष-अवस्करात् कन् नाम्नि ।
पा०४।३।२८,२७।

३ पन्थकः । पा०४।३।२९।

४ सिन्धु-अपकरात् वा ।
पा०४।३।३२,३३।

५ अमावस्यार्थात् अश्च ।
पा०४।३।३०,३१।
तथा काशिका ४।३।३०,३१।

६ स्थानान्त-गोशाल-खरशालात् लुक् ।
पा०४।३।३५।

---

१ काशिकायाम् अस्मिन् सूत्रे "वेणुकादिभ्यः छण् वक्तव्यः," इति वार्तिकनिर्देशे अस्य चान्द्रसूत्रस्य समावेशः ।

७ वत्स-शाल-नक्षत्रेभ्यः बहुलम् । पा०४।३।३६,३७।

८ डिदण् । पा०४।२,७ भा०।

९ श्रविष्ठा-आषाढात् छण् । पा०४।३।३४ वा०३।

१० फल्गुन्याः टः। पा०४।३।३४ वा०२।

११ आश्वयुज्याम् उप्ते वुञ् । पा०४।३।४५,४४।

१२ ग्रीष्म-वसन्ताद् वा । पा०४।३।४६।

१३ कालाद् देयम् ऋणम् । पा०४।३।४७,४३।

१४ कलापि-अश्वत्थ-यवबुसाद् वुन् । पा०४।३।४८।

१५ ग्रीष्म-अवरसमात् वुञ् । पा०४।३।४९।

१६ संवत्सर-आग्रहायण्याः ठञ् च । पा०४।३।५०।

१७ दिगादिभ्यः भवे यत् । पा०४।३।५४,५३।

१८ देहांशात् । पा०४।३।५५।

१९ दृति-कुक्षि-कलशि-वस्ति-अस्ति-अहेः ढञ् । पा०४।३।५६।

२० ग्रीवातः अण् च । पा०४।३।५७।

२१ गम्भीर-पञ्चजनात् ञ्यः । पा०४।३।५८,६० भा०।

२२ चातुर्मास्यं यज्ञे । पा०५।१।९४ वा०६।

२३ परिमुखादिभ्यः । पा०४।३।५८ वा०१।

२४ अन्तःपूर्वात् तदर्थात् ठञ् । पा०४।३।६०।

२५ परि-अनुभ्यां ग्रामात् । पा०४।३।६१।

२६ समानात् । पा०४।३।६० भा०।

२७ तदादेः । पा०४।३।६० भा०।

२८ लोकान्तात् । पा०४।३।६० भा०।

२९ अध्यात्मादिभ्यः। पा०४।३।६० भा०।

३० जिह्वामूल-अङ्गुलेः छः । पा०४।३।६२।

३१ वर्गान्तात् । पा०४।३।६३।

३२ अशब्दे यत्-खौ च । पा०४।३।६४।

३३ मध्यात् मण्-मीयौ च । पा०४।३।६० भा०।

३४ ललाटात् भूषणे कन् । पा०४।३।६५।

३५ कर्णात् । पा०४।३।६५।

३६ उपादेः ठक् । पा०४।३।४०।

३७ जानु-नीवीभ्याम् । पा०४।३।४०।

३८ तस्य व्याख्याने च व्याख्येयनाम्नः। पा०४।३।६६।

३९ बह्वचः अन्तोदात्तात् ठञ् । पा०४।३।६७।

४० यज्ञेभ्यः । पा०४।३।६८।

४१ अध्यायेषु एव ऋषेः। पा०४।३।६९।

४२ पौरोडाश-पुरोडाशात् ष्ठन् । पा।०४।३।७०।

४३ छन्दसो यत् । पा०४।३।७१।

४४ अण् । पा०४।३।७१।

४५ ऋगयनादिभ्यः । पा०४।३।७३।

४६ द्व्यच्-ऋत्-ऋग्-ब्राह्मण-प्रथम-अध्वर-पुरश्चरण-नाम-आख्यातात् ठक् । पा०४।३।७२।

४७ आयस्थानात् आगते । पा०४।३।७५,७४।

४८ शुण्डिकादिभ्यः अण् । पा०४।३।७६।

४९ विद्या-योनिसंबन्धात् वुञ् । पा०४।३।७७।

५० ऋतः कञ् । पा०४।३।७८।
५१ पित्र्यं वा । पा०४।३।७९।
५२ नृ-हेतुभ्यो रूप्यः । पा०४।३।८१।
५३ मयट् । पा०४।३।८२।
५४ गोत्रात् अङ्कवत् । पा०४।३।८०।
५५ वैदूर्यम् । पा०४।३।८४।
५६ शिशुक्रन्दादीन् अधिकृत्य कृते ग्रन्थे छः । पा०४।३।८८,८७।
५७ चार्थान् अदेवासुरादीन् । पा०४।३।८८+वा०१।
५८ सोऽस्य अभिजनः गिरिभ्यः शस्त्रजीविषु । पा०४।३।९०,९१।
५९ शालातुरीयः । पा०४।३।९४।
६० शण्डिकादिभ्यः ञ्यः । पा०४।३।९२।
६१ सिन्ध्वादिभ्यः अण् । पा०४।३।९३।
६२ तुदी-वर्मतीभ्यां ढञ् । पा०४।३।९४।
६३ तत्र भक्तिर्महाराजात् ठक् । पा०४।३।९५,९७।
६४ अचित्तात् अदेश-कालात् । पा०४।३।९६।
६५ वासुदेव-अर्जुनात् कन् । पा०४।३।९८।
६६ गोत्रात् बहुलं वुञ् । पा०४।३।९९।
६७ क्षत्रियात् । पा०४।३।९९।
६८ जनपदवत् सर्वं तत्सरूपात् बहुत्वे । पा०४।३।१००।
६९ तेन प्रोक्तं वेदं वेत्ति अधीते । पा०४।३।१०१। पा०४।२।६६।
७० तित्तिरि-वरतन्तु-खण्डिक-उखात् छण् । पा०४।३।१०२।
७१ काश्यप-कौशिकाभ्यामृषिभ्यां कल्पं च णिनिः । पा०४।३।१०३। पा०४।२।६६ वा० ६।
७२ शौनकादिभ्यः । पा०४।३।१०६।
७३ कलापि-वैशम्पायनशिष्येभ्यः । पा०४।३।१०४।
७४ कठ-चरकात् लुक् । पा०४।३।१०७।
७५ कलापिनः अण् । पा०४।३।१०८।
७६ छगलिनः ढिनुक् । पा०४।३।१०९।
७७ कर्मन्द-कृशाश्वाभ्यां भिक्षु-नटसूत्रम् इनिः । पा०४।३।१११।
७८ पाराशर्य-शिलालिभ्यां णिनिः । पा०४।३।११०।
७९ पुराणर्षेर्ब्राह्मणम् । पा०४।३।१०५।
८० कल्पे । पा०४।३।१०५।
८१ अथर्वणः अण् वेदे । पा०४।३।१३३वा०२।
८२ पुरुषात् कृते ढञ् । पा०५।१।१०भा०।
८३ संज्ञायां वातपात् अञ् । पा०४।३।११७,११९।
८४ कुलालादिभ्यः वुञ् । पा०४।३।११८।
८५ तस्य स्वं रथात् यत् । पा०४।३।१२०,१२१।
८६ यानादेः अञ् । पा०४।३।१२२।
८७ यानात् पा०४।३।१२३।
८८ हल-सीरात् ठक् । पा०४।३।१२४।
८९ चार्थाद् वैरे वुन् अदेवासुरादिभ्यः । पा०४।३।१२५+वा०१।
९० विवाहे । पा०४।३।१२५।
९१ नटात् ञ्यः नृत्ये । पा०४।३।१२९।
९२ छन्दोग-औक्थिक-याज्ञिक-बह्वृचात् धर्म-आम्नाय-संघेषु । पा०४।३।१२९,१२० वा०११।
९३ आथर्वणः । पा०४।३।१३३वा०२।
९४ चरणात् वुञ् । पा०४।३।१२६।

९५ गोत्रात् अदण्डमाणव-अन्तेवासिषु
पा०४।३।१२६,१३०।

९६ रैवतिकादिभ्यः छः । पा०४।३।१३१।

९७ कौपिञ्जल-हास्तिपदात् अण् ।
पा०४।३।१३१ वा०१।

९८ संघ-अङ्क-घोष-लक्षणेषु अञ् यञिञः।
पा०४।३।१२७+वा०१।

९९ शाकलात् वा । पा०४।३।१२८।

१०० वहेः तुः इट् च ।
पा०४।३।१२० वा०८।

१०१ आग्नीध्रं शरणे ।
पा०४।३।१२० वा०९।

१०२ समिधः आधाने षेण्यण् ।
पा०४।३।१२० वा०१०।

१०३ विकारे । पा०४।३।१३४।

१०४ वृक्ष-ओषधिभ्यः अंशे च ।
पा०४।३।१३५।

१०५ प्राणिभ्यः अञ् ।
पा०४।३।१५४,१३५ ।

१०६ तालादिभ्यःअण्। पा० ४।३।१५२।

१०७ हेमार्थात् परिमाणे ।
पा०४।३।१५३।

१०८ त्रपु-जतुनोः षुक् । पा०४।३।१३८।

१०९ मयट् अभक्ष-आच्छादने ।
पा०४।३।१४३।

११० एकाचः । काशिका ४।३।१४४[1]।

१११ छे । पा०४।३।१४४।

११२ व्रीहेः पुरोडाशे । पा०४।३।१४८।

११३ तिल-यव-पिष्टात् असंज्ञायाम् ।
पा०४।३।१४९,१४६।

११४ शरादिभ्यः । पा०४।३।१४४।

११५ क्रीतवत् परिमाणात् ।
पा०४।३।१५६।

११६ शम्याः ष्लञ् । पा०४।३।१४२।

११७ उष्ट्रात् वुञ् । पा०४।३।१५७।

११८ उमा-ऊर्णात् वा । पा०४।३।१५८।

११९ एणी-कोशात् ढञ् ।
पा०४।३।१५९। पा०४।३।४२ वा०१।

१२० पुरुषाद् वधे च । पा०५।१।१० वा०२।

१२१ हैयंगवीनं संज्ञायाम् ।
पा०५।२।२३+वा०१।

१२२ पयसः यत् । पा०४।३।१६० ।

१२३ आप्यं वा० । पा०४।३।१४४[2]।

१२४ द्रोः । पा०४।३।१६१।

१२५ माने वयः । पा०४।३।१६२।

१२६ कांस्य-पारशवौ । पा०४।३।१६८।

१२७ न द्विः । पा०४।३।१५५ भा० ।

[तृतीयस्य अध्यायस्य तृतीयः पादः समाप्तः]

---

१. इदं सूत्रं त्वेवम् "नित्यं वृद्ध-शरादिभ्यः" तथापि तद्वृत्तौ "एकाचो नित्यं मयटम् इच्छन्ति तद् अनेन क्रियते" इति निर्देशेन प्रस्तुतस्य चान्द्रस्य सूत्रस्य अस्मिन् सूत्रे समावेशः।

२. अस्य सूत्रस्य वृत्तौ सिद्धान्तकौमुद्याम् एवं निर्देशः—"कथं तर्हि आप्यम् अम्मयम्? इति। तस्येदम् पा०४।३।१२०। इति अणन्तात् स्वार्थे ष्यञ्" अत्र च निदशे अस्य सूत्रस्य समावेशः।

[चतुर्थः पादः]

१ प्राग् यतः ठक् । पा०४।४।१।

२ तेन जितं जयति दीव्यति खनति । पा०४।४।२।

३ संस्कृते । पा०४।४।३।

४ कुलत्थ-कोपान्तात् अण् । पा०४।४।४।

५ तरति । पा०४।४।५।

६ द्व्यच्-नौभ्यां ठन् । पा०४।४।७।

७ चरति । पा०४।४।८।

८ पर्पादिभ्यः ष्ठन् । पा०४।४।१०।

९ श्वगणाद् वा । पा०४।४।११।

१० वेतनादिभ्यो जीवति । पा०४।४।१२।

११ वस्न-क्रय-विक्रयात् ठन् । पा०४।४।१३।

१२ छश्च आयुधात् । पा०४।४।१४।

१३ व्रातात् खञ् । पा०५।२।२१।

१४ हरति उत्सङ्गादिभ्यः । पा०४।४।१५।

१५ भस्त्रादिभ्यः ष्ठन् । पा०४।४।१६।

१६ विवध-वीवधाद् वा । पा०४।४।१७+भा०।

१७ अण् कुटिलिकायाः । पा०४।४।१८।

१८ निर्वृत्ते अक्षद्यूतादिभ्यः । पा०४।४।१९।

१९ भावात् इमप् । पा०४।४।२०भा०।

२० त्रेः । पा०४।४।२०।

२१ अपमित्य कक् । पा०४।४।२१।

२२ संसृष्टे । पा०४।४।२२।

२३ चूर्णात् इनिः । पा०४।४।२३।

२४ लवणात् लुक् । पा०४।४।२४।

२५ मुद्गात् अण् । पा०४।४।२५।

२६ ओजस्-सहस्-अम्भसा वर्तते । पा०४।४।२७।

२७ तं प्रत्यनोः ईप-लोम-कूलात् । पा०४।४।२८।

२८ परेः मुख-पार्श्वात् । पा०४।४।२९। काशिका ४।४।२९।

२९ उञ्छति । पा०४।४।३२।

३० रक्षति । पा०४।४।३३।

३१ शब्द-दर्दरं करोति । पा०४।४।३४।

३२ पक्षि-मत्स्य-मृगान् हन्ति । पा०४।४।३५।

३३ परिपन्थं तिष्ठति च । पा०४।४।३६।

३४ माथान्त-पदवी-अनुपद-आक्रन्दं धावति । पा०४।४।३७,३८।

३५ पदान्त-प्रतिकण्ठ-अर्थ-ललामं गृह्णाति । पा०४।४।३९,४०

३६ गर्ह्ये । पा०४।४।३०भा०।

३७ वृद्धेर्वृधुषः । पा०४।४।३० वा०३।

३८ दश-एकादश-कुसीदात् ष्ठन् । पा०४।४।३१।

३९ धर्म-अधर्मं चरति । पा०४।४।४१+ वा०१ ।

४० प्रतिपथमेति ठंश्च । पा०४।४।४२।

४१ समाजार्थान् समवैति । पा०४।४।४३।

४२ परिषदः ण्यः । पा०४।४।४४।

४३ सेनाया वा । पा०४।४।४५।

४४ लालाटिक-कौक्कुटिकौ । पा०४।४।४६।

४५ परदारादीन् गच्छति । पा०४।४।१ वा०४।

४६ सुस्नातादीन् पृच्छति ।
पा०४।४।१ वा०३।

४७ प्रभूतादीन् आह। पा०४।४।१ वा०२।

४८ माशब्द इत्यादिभ्यः ।
पा०४।४।१ व्रा०१।

४९ तस्य धर्म्यम् । पा०४।४।४७।

५० ऋ-महिष्यादिभ्यः अण् ।
पा०४।४।४९,४८।

५१ वैशस्त्र-वैभाजित्रे ।
पा०४।४।४६, वा०२,३।

५२ अवक्रयः । पा०४।४।५०।

५३ तदस्य पण्यम् । पा०४।४।५१।

५४ लवणात् ठञ् । पा०४।४।५२।

५५ किशरादिभ्यः ष्ठन् । पा०४।४।५३।

५६ शलालुनो वा । पा०४।४।५४।

५७ शिल्पम् । पा०४।४।५५।

५८ मड्डुक-झर्झरात्-अण् वा ।
पा०४।४।५६।

५९ प्रहरणम् । पा०४।४।५७।

६० शक्ति-यष्टयोः टीकक्। पा०४।४।५९।

६१ अस्ति नास्ति दिष्टमिति मतिः।
पा०४।४।६०।

६२ शीलम् । पा०४।४।६१।

६३ छत्त्रादिभ्यः णः । पा० ४।४।६२।

६४ कर्म अध्ययने वृत्तम् । पा०४।४।६३।

६५ बह्वच्-पूर्वपदात् ठच्। पा०४।४।६४।

६६ हिता भक्षाः। पा०४।४।६५।

६७ दीयते नियुक्तम् । पा०४।४।६६।

६८ ओदनात् ठट् । पा०४।४।६७।

६९ भक्ताद् अण् वा । पा०४।४।६८।

७० तत्र नियुक्तम् । पा०४।४।६९।

७१ अगारान्तात् ठन् । पा०४।४।७०।

७२ अदेश-कालात् अधीते ।
पा०४।४।७१।

७३ कठिनान्त-प्रस्तार-संस्थानात् व्यवहरति।
पा०४।४।७२।

७४ निकटादिषु वसति । पा०४।४।७३।

७५ सतीर्थ्यः । पा०४।४।१०७।

७६ प्राग् हितात् यत् । पा०४।४।७५।

७७ तद् वहति युग-प्रासङ्गात् ।
पा०४।४।७६।

७८ धुरः ढक् च । पा०४।४।७७।

७९ सर्व-उत्तर-दक्षिणादेः खः ।
पा०४।४।७८। काशिका ४।४।७८।

८० एकादेर्लुक् च । पा०४।४।७९।

८१ नाम्नि जन्याः । पा०४।४।८२।

८२ विध्यति अकरणेन ।
पा०४।४।८३ वा०१।

८३ धन-गणं लब्धा । पा०४।४।८४।

८४ अन्नात् णः । पा०४।४।८५।

८५ वशं गतः । पा०४।४।८६।

८६ पदम् अस्मिन् दृश्यम् ।
पा०४।४।८७।

८७ मूलम् अस्य अदृढम् । पा०४।४।८८।

८८ धेनुष्या-गार्हपत्यौ नाम्नि ।
पा०४।४।८९,९०।

८९ मूलेन आनाम्ये । पा०४।४।९१।

९० वयसा च तुल्ये । पा०४।४।९१।

९१ नौ-तुला-विषैः तार्य-संमित-वध्येषु।
पा०४।४।९१।

९२ सीतया समिते । पा०४।४।९१।

९३ धर्मेण प्राप्ये । पा०४।४।९१।

९४ पथि-अर्थ-न्यायाच्च अनपेते ।
पा०।४।४।९२।

९५ छन्दसा निर्मिते । पा०४।४।९३।

९६ उरसा अण् च । पा०४।४।९४।

९७ हृदयस्य प्रिये । पा०४।४।९५।

९८ मत-जनयोः करण-जल्पयोः ।
पा०४।४।९७।

९९ हलस्य कर्षे । पा०४।४।९७।

१०० तत्र साधुः । पा०४।४।९८।

१०१ प्रतिजनादिभ्यः खञ् ।
पा०४।४।९९।

१०२ भक्तात् णः । पा०४।४।१००।

१०३ परिषदः ण्यश्च । पा०४।४।१०१।
काशिका ४।४।१०१।

१०४ कथादिभ्यः ठक् । पा०४।४।१०२।

१०५ पथि-अतिथि-वसति-स्वपतेः ढञ् ।
पा०४।४।१०४।

१०६ समानोदरे शयितः ।
पा०४।४।१०८।

[तृतीयस्य अध्यायस्य चतुर्थः पादः समाप्तः]

[चान्द्रे व्याकरणे तृतीयः अध्यायः समाप्तः]

[चतुर्थः अध्यायः, प्रथमः पादः]

१ प्राक् क्रीतात् छः । पा०५।१।१।
२ उ-गवादिभ्यः यत् । पा०५।१।२।
३ वा हविर्-यूपादिभ्यः । पा०५।१।४।
४ तस्मै हितम् । पा०५।१।५।
५ न राज-आचार्य-वृषन्-ब्राह्मणात् । काशिका ५।१।७[1]।
६ देहांशात् यत् । पा०५।१।६।
७ खल-यव-माष-तिल-वृष-ब्रह्म-रथात् । पा०५।१।७।
८ अज-अविभ्यां थ्यन् । पा०५।१।८।
९ भोगान्त-आत्मनः खः । पा०५।१।९।
१० पञ्च-विश्वात् जनान्तात् तदर्थात् । पा०५।१।९+वा०४। काशिका ५।१।९।
११ सर्वात् । पा०५।१।९ वा०५।
१२ महतश्च ठञ् । पा०५।१।९ वा०६।
१३ सर्वात् णः वा । पा०५।१।१०+वा०१।
१४ पुरुषात् ढञ् । पा०५।१।१०।
१५ माणव-चरकात् खञ् । पा०५।१।११।
१६ विकृतेः प्रकृतौ । पा०५।१।१२।
१७ ऋषभ-उपानहो ञ्यः । पा०५।१।१४।
१८ चर्मणि अञ् । पा०५।१।१५।
१९ छदिर्-बलिभ्यां ढञ् । पा०५।१।१३।
२० उपधेः । पा०५।१।१३।
२१ तद् अस्य अत्र स्यादिति । पा०५।१।१६।
२२ परिखाया ढञ् । पा०५।१।१७।
२३ प्राग् वतेः ठञ् । पा०५।१।१८।
२४ संख्यादेश्चालुकः । पा०५।१।२०वा०२।
२५ आर्हात् । पा०५।१।१९।
२६ कंस-अर्धात् ठट् । पा०५।१।२५+वा०१।
२७ कार्षापणात् । पा०५।१।२५ वा०२।
२८ प्रतिर्वास्य । पा०५।१।२५ वा०२।
२९ शूर्पात् अञ् । पा०५।१।२६।
३० सहस्र-वसन-विंशतिक-शतमानात् अण् । पा०५।१।२७।
३१ शतात् केवलात् ठन्-यतौ अतस्मिन् । पा०५।१।२१+वा०१।
३२ संख्याया अतिशतः कन् । पा०५।१।२२।
३३ कति-गणौ तद्वत् । पा०१।१।२३।
३४ वतोः । पा०१।१।२३।
३५ इड् वा । पा०५।१।२३ ।
३६ विंशति-त्रिंशद्भ्याम् । पा०५।१।२४+भा०।
३७ अनाम्नि ड्वुन् । पा०५।१।२४।
३८ संख्या-अध्यर्धादेः संख्येयात् लुक् अद्विः। पा०५।१।२८+भा०।
३९ कार्षापण-सहस्र-सुवर्ण-शतमानात् वा। पा०५।१।२९+वा०१।
४० द्वि-त्रि-बह्वादेर्निष्क-विस्तात् । पा०५।१।३०,३१+वा०२।
४१ विंशतिकात् खः । पा०५।१।३२।
४२ खारी-काकणीभ्यः ईकन् । पा०५।१।३३+वा०१-३।
४३ पण-पाद-माषात् यत् । पा०५।१।३४।

---

१ काशिकायाम् अस्मिन् सूत्रे वृत्तौ एतस्य चान्द्रस्य सूत्रस्य समावेशः ।

४४ शताद् वा ।
पा०५।१।३४+३५ वा०१।

४५ शाणात् । पा०५।१।३५।

४६ द्वि-त्र्यादेः अण् च । पा०५।१।३६।

४७ तेन क्रीतं मूल्यात् । पा०५।१।३७।
काशिका ५।१।३७।

४८ तस्य वापः । पा०५।१।४५।

४९ पात्रात् ष्ठन् । पा०५।१।४६।

५० वात-पित्त-श्लेष्म-संनिपातात् शमन-कोपने । पा०५।१।३८ वा०१,२।

५१ निमित्तं संयोग-उत्पाते ।
पा०५।१।३८।

५२ द्व्यचः असंख्यापरिमाण-अश्वादेर्यत् ।
पा०५।१।३९।

५३ ब्रह्मवर्चसात् । पा०५।१।३९ वा०१।

५४ पुत्रात् छश्च । पा०५।१।४०।

५५ पृथिवी-सर्वभूमेः अञ्-अणौ ।
पा०५।१।४१।

५६ ईश्वरे । पा०५।१।४२।

५७ तत्र विदिते । पा०५।१।४३।

५८ लोक-सर्वलोकात् । पा०५।१।४४।

५९ तद् अत्र अस्मै वृद्धि-आय-लाभ-शुल्क-उपदं दीयते । पा०५।१।४७+वा०१।

६० पूरण-अर्धात् ठन् । पा०५।१।४८।

६१ भागात् यच्च । पा०५।१।४९।

६२ तद् अस्य परिमाणम् । पा०५।१।५७।

६३ पञ्चत्-दशत् वर्गे वा । पा०५।१।६०।

६४ स्तोमे डट् । पा०५।१।५८ वा०८।

६५ त्रिंशत्-चत्वारिंशतः ब्राह्मणाख्यायां डण् । पा०५।१।६२।

६६ भृति-वस्न-अंशाः । पा०५।१।५६।

६७ तद् पचति द्रोणात् अण् च ।
पा०५।१।५२+वा०१।

६८ संभवति-अवहरति च । पा०५।१।५२।

६९ पात्र-आचित-आढकात् खो वा ।
पा० ५।१।५३।

७० संख्यादेः ष्ठंश्च । पा०५।१।५४।

७१ कुलिजात् वा । पा०५।१।५५।

७२ वंशादिभ्यः हरति वहति आवहति भारात् । पा०५।१।५०।

७३ द्रव्य-वस्नात् कन्-ठनौ ।
पा०५।१।५१।

७४ अर्हति । पा०५।१।६३।

७५ छेदादिभ्यः नित्यम् । पा०५।१।६४।

७६ शीर्षच्छेदात् यच्च । पा०५।१।६५।

७७ यज्ञात् घः । पा०५।१।७१।

७८ पात्रात् यश्च । पा०।५।१।६८।

७९ दण्डादिभ्यः । पा०५।१।६६।

८० दक्षिणा-कडङ्गर-स्थाली-बिलात् छश्च ।
पा०५।१।६९,७०।

८१ आर्त्विजीनः । पा०५।१।७१।

८२ अधृष्ट-अकार्ययोः शालीन-कौपीने ।
पा०५।२।२०।

८३ पारायण-तुरायण-चान्द्रायणं वर्तयति ।
पा०५।१।७२।

८४ संशयमापन्नः । पा०५।१।७३।

८५ योजनं गच्छति । पा०५।१।७४।

८६ क्रोश-योजनादेः शतात् अभिगमनार्हे च । पा०५।१।७४ वा०१,२।

८७ पथः ष्कन् । पा०५।१।७५।

८८ णः पन्थश्च नित्यम् । पा०५।१।७६।

८९ अज-शङ्कु-उत्तर-वारि-जङ्गल-कान्तारादिना आहृते च ।
पा०५।१।७७+वा०१,२।

९० स्थलादिना । पा०५।१।७७ वा०१।

९१ मधुक-मरीचयोः अण् ।
पा०५।१।७७ वा०३।
९२ कालात् । पा०५।१।७८।
९३ तेन निर्वृत्तः । पा०५।१।७९।
९४ तस्मै भृतः अधीष्टः ।
पा०५।१।८०+वा०२।
९५ तं भूतः भावी । पा०५।१।८०।
९६ मासाद् वयसि यत्-खञौ ।
पा०५।१।८१।
९७ संख्यादेर्यप् । पा०५।१।८२।
९८ षषो ण्यच्च वा । पा०५।१।८३।
९९ ठंश्चान्यत्र । पा०५।१।८४।
१०० समायाः खः । पा०५।१।८५।
१०१ संख्यादेर्वा । पा०५।१।८६।
१०२ रात्री-अहः–संवत्सरात् ।
पा०५।१।८७।
१०३ वर्षात् लुक् च । पा०५।१।८८।
१०४ प्राणिनि । पा०५।१।८९।
१०५ तेन सुकर-कार्य-लभ्य-परिजय्यम् ।
पा०५।१।९३।
१०६ तत् अस्य ब्रह्मचर्यं । पा०५।१।९४।
१०७ महानाम्न्यादीनाम् ।
पा०५।१।९४ वा०१।
१०८ तत् चरति । पा०५।१।९४ वा०२।
१०९ देवव्रतादिभ्यः डिनिः ।
पा०५।१।९४ वा०३।
११० अष्टाचत्वारिंशतो ड्वुंश्च ।
पा०५।१।९४ वा०४।
१११ चातुर्मास्यात् यलोपश्च ।
पा०५।१।९४ वा०५।
११२ तस्य दक्षिणा यज्ञेभ्यः ।
पा०५।१।९५।
११३ तत्र दीयते । पा०५।१।९६।
११४ कालात् कार्यं च भववत् ।
पा०५।१।९६+भा०।
११५ व्युष्टादिभ्यः अण् । पा०५।१।९७।
११६ यथाकथाचात् णः । पा०५।१।९८।
११७ तेन हस्तात् यत् । पा०५।१।९८।
११८ शोभते । पा०५।१।९९।
११९ कर्म-वेशात् यत् । पा०५।१।१००।
१२० तस्मै प्रभवति संतापादिभ्यः ।
पा०५।१।१०१।
१२१ योगात् यत् च । पा०५।१।१०२।
१२२ कर्मणः उकञ् । पा०५।१।१०३।
१२३ सोऽस्य प्राप्तः समयात् ।
पा०५।१।१०४।
१२४ ऋत्वादिभ्यः अण् ।
पा०५।१।१०५,९७ भा०।
१२५ कालात् यत् । पा०५।१।१०७।
१२६ प्रकृष्टः । पा०५।१।१०८।
१२७ प्रयोजनम् पा०५।१।१०९।
१२८ एकागारात् चौरे । पा०५।१।११३।
१२९ आकालात् ठंश्च ।
पा०५।१।११४ वा०२।
१३० चूडादिभ्यः अण् ।
पा०५।१।९७ भा०।
१३१ विशाखा-आषाढात् मन्थ-दण्डयोः ।
पा०५।१।११०।
१३२ उत्थापनादिभ्यः छः ।
पा०५।१।१११+वा०१।
१३३ स्वर्गादिभ्यः यत् ।
पा०५।१।१११ वा०२।
१३४ पुण्याहवाचनादिभ्यः लुक् ।
पा०५।१।१११ वा०३।
१३५ इवे वतिः । पा०५।१।११५,११६।

१३६ तस्य भावः त्व-तलौ । पा०५।१।११९।

१३७ नञः अनन्यार्थे । पा०५।१।१२१।

१३८ चतुर-संगत-लवण-वड-बुध-कतर-सलसात् वा । पा०५।१।१२१।

१३९ पृथ्वादिभ्यः इमनिच् । पा०५।१।१२२।

१४० वर्ण-दृढादिभ्यः ष्यञ् च । पा०५।१।१२३।

१४१ गुणवचन-ब्राह्मणादिभ्यः कर्मणि च । पा०५।१।१२४।

१४२ सखि-दूत-वणिग्भ्यः यः । पा०५।१।१२६। काशिका ५।१।१२६।

१४३ स्तेयम् । पा०५।१।१२५।

१४४ कपि-ज्ञात्योः ढक् । पा०५।१।१२७।

१४५ प्राणिजाति-वयोऽर्थ-उद्गात्रादिभ्यः अञ् । पा०५।१।१२९।

१४६ हायनान्त-युवादिभ्यः अण् । पा०५।१।१३०।

१४७ लघोः इकः अकवेः । पा०५।१।१३१। काशिका ५।१।१३१।

१४८ योपान्तात् गुरूपोत्तमात् असुप्रख्याद् वुञ् । पा०५।१।१३२। पा०२।४।५४ वा०४।

१४९ चार्थसमास-मनोज्ञादिभ्यः । पा०५।१।१३३।

१५० गोत्रचरणात् श्लाघा-अधिक्षेप-अवगतेषु । पा०५।१।१३४।

१५१ ऋत्विग्भ्यः छः । पा०५।१।१३५।

१५२ ब्रह्मणः त्वः । पा०५।१।१३६।

[चतुर्थस्य अध्यायस्य प्रथमः पादः समाप्तः]

[द्वितीयः पादः]

१ धान्येभ्यः क्षेत्रे खञ् । पा०५।२।१।

२ व्रीहि-शाल्लेः ढक् । पा०५।२।२।

३ यव-यवक-षष्टिकात् यत् । पा०५।२।३।

४ वा तिल-माष-उमा-भङ्गा-अणुभ्यः । पा०५।२।४।

५ अश्वात् एकाहगमे खञ् । पा०५।२।१९।

६ गोष्ठाद् भूते । पा०५।२।१८।

७ साप्तपदीनं सख्ये । पा०५।२।२२।

८ सर्वचर्मणा कृतः । पा०५।२।५।

९ खः । पा०५।२।५।

१० यथामुख-संमुखं दृश्यते अस्मिन् । पा०५।२।६।

११ सर्वादिपथि-अङ्ग-कर्म-पत्त्र-पात्रं व्याप्नोति । पा०५।२।७।

१२ आप्रपदं प्राप्नोति । पा०५।२।८।

१३ अनुपदं बद्धा । पा०५।२।९।

१४ अयानयं नेयः । पा०५।२।९।

१५ सर्वान्नम् अत्ति । पा०५।२।९।

१६ परोवर-परंपर-पुत्रपौत्रम् अनुभवति । पा०५।२।१०।

१७ पारावार-अवारपार-अत्यन्त-अनुकामं गामी । पा०५।२।११। काशिका ५।२।११।

१८ अनुग्वलम् । पा०५।२।१५।
१९ अध्वानं यत्त्व । पा०५।२।१६।
२० अभ्यमित्रं छश्च । पा०५।२।१७।
२१ समांसमीन-अद्यश्वीन-आगवीनाः । पा०५।२।१२–१४।
२२ अषडक्ष-आशितंगु-अलंकर्म-अलंपुरुष-अध्यन्तात् । पा०५।४।७।
२३ अदिशि अञ्चो वा । पा०५।४।८।
२४ पील्वादीनां पाके कुणप् । पा०५।२।२४।
२५ कर्णादीनां मूले जाहच् । पा०५।२।२४।
२६ पक्षस्य तिः । पा०५।२।२५।
२७ तेन वित्तः चुञ्चुप्-चणपौ । पा०५।२।२६।
२८ विना नाना । पा०५।२।२७।
२९ वेः शालच्-शङ्कटचौ । पा०५।२।२८।
३० सं-प्र-उत्-नेश्च कटच् । पा०५।२।२९।
३१ अवात् कुटारच्च । पा०५।२।३०।
३२ नासानतौ टीटच्-नाटच्-भ्रटचः । पा०५।२।३१।
३३ निबिड-निबिरीष-चिक्क-चिक्किन-चिपिटाः । पा०५।२।३२,३३+वा०१।
३४ क्लिन्नचक्षुषि चिल्ल-पिल्ल-चुल्लाः । पा०५।२।३३ वा०२+भा०।
३५ उपत्यका-अधित्यके । पा०५।२।३४।
३६ कर्मणि घटते अठच् । पा०५।२।३५।
३७ तत् अस्य संजातं तारकादिभ्यः इतच् । पा०५।२।३६।
३८ माने मात्रट् । पा०५।२।३७।
३९ ऊर्ध्वं दघ्नट्-द्वयसट् च । पा०५।२।३७+भा०।
४० हस्ति-पुरुषात् अण् च । पा०५।२।३८।
४१ संख्यादेः संख्येयात् लुक् । पा०५।२।३७ भा०।
४२ शन्-शत्-शतेः डिनिर्वा । पा०५।२।३७ भा०।
४३ यत्-तद्-एतदः वतुप् । पा०५।२।३९।
४४ इयत्-कियत् । पा०५।२।४०।
४५ कतिः संख्यायाम् । पा०५।२।४१।
४६ अंशे संख्यायाः तयट् । पा०५।२।४२।
४७ द्वि-त्रिभ्याम् अयट् वा । पा०५।२।४३।
४८ उभात् । पा०५।२।४४।
४९ निमान-निमेययोः मयट् । पा०५।२।४७+वा०५।
५० शति-शद्-दशान्ताद् अधिका अस्मिन् शतसहस्रे डः । पा०५।२।४५+भा०।
५१ तस्य पूरणे डट् । पा०५।२।४८।
५२ विंशत्यादिभ्यः तमट् वा । पा०५।२।५६।
५३ शतादिमास-अर्धमास-संवत्सरात् । पा०५।२।५७।
५४ षष्ट्यादेः असंख्यादेः । पा०५।२।५८।
५५ नो मट् । पा०५।२।४९।
५६ षट्-कति-कतिपयात् थट् । पा०५।२।५१।
५७ चतुरः । पा०५।२।५१।
५८ यत्-छौ चलोपश्च । पा०५।२।५१ वा०१।
५९ द्वितीय-तृतीयौ । पा०५।२।५४,५५।
६० बहु-पूग-गण-संघात् तिथट् । पा०५।२।५२।
६१ वतोः इथट् । पा०५।२।५३।

६२ भागे अष्टमात् ञो वा । पा०५।३।५०।
६३ षष्ठात् । पा०५।३।५०।
६४ माने कंश्च । पा०५।३।५१।
६५ तेन गृह्णातीति लुक् च । पा०५।२।७७ वा०२।
६६ ग्रहणे वा । पा०५।२।७७।
६७ एकाद् आकिनिच्च असहाये । पा०५।३।५२।
६८ आकर्षादिषु कुशलः । पा०५।२।६४।
६९ पथकः । पा०५।२।६३।
७० धन-हिरण्ये कामः । पा०५।२।६५।
७१ स्वाङ्गेषु सक्तः । पा०५।२।६६।
७२ औदरिकः अलसे । पा०५।२।६७।
७३ सस्येन परिजातः । पा०५।२।६८।
७४ अंशं हारी । पा०५।२।६९।
७५ तन्त्रात् नवोद्धृते । पा०५।२।७०।
७६ ब्राह्मणात् नाम्नि । पा०५।२।७१।
७७ उष्णात् । पा०५।२।७१।
७८ शीतात् च कारिणि । पा०५।२।७२।
७९ अधिकम् । पा०५।२।७३।
८० अनुक-अभिक-अभीकं कमिता । पा०५।२।७४।
८१ पार्श्वेन अन्विच्छति । पा०५।२।७५।
८२ अयःशूल-दण्डाजिनाभ्यां ठक् । पा०५।२।७६।
८३ सोऽस्य ग्रामणीः । पा०५।२।७८।
८४ शृङ्खलं वन्धनं करभे । पा०५।२।७९।
८५ उत्क उन्मनाः । पा०५।२।८०।
८६ काल-हेतु-फलात् नाम्नि । पा०५।२।८१। काशिका ५।२।८१।
८७ प्रायः अन्नमस्मिन् । पा०५।२।८२।
८८ कुल्माषात् अण् । पा०५।२।८३।
८९ वटकात् इनिः । पा०५।२।८२ वा०१।
९० साक्षात् द्रष्टा । पा०५।२।९१।
९१ श्राद्धमनेन अद्य भुक्तं ठंश्च । पा०५।२।८५+वा०१।
९२ पूर्वात् । पा०५।२।८६।
९३ सपूर्वात् । पा०५।२।८७।
९४ इष्टादिभ्यः । पा०५।२।८८।
९५ अनुपदी अन्वेष्टा । पा०५।२।९०।
९६ क्षेत्रियच् परक्षेत्रे चिकित्स्यः । पा०५।२।९२।
९७ इन्द्रियम् । पा०५।२।९३।
९८ तद् अस्य अस्ति अत्रेति मतुप् । पा०५।२।९४।
९९ प्राण्यङ्गात् आतो लच् वा । पा०५।२।९६+भा०।
१०० सिध्मादिभ्यः । पा०५।२।९७।
१०१ वत्स-अंसात् स्नेह-बलिनोः । पा०५।२।९८।
१०२ फेनात् । पा०५।२।९९।
१०३ पिच्छादिभ्यश्च इलच् । पा०५।२।१००, ९९।
१०४ लोमादि-पामादिभ्यः श-नौ । पा०५।२।१००।
१०५ प्रज्ञा-श्रद्धा-अर्चा-वृत्तिभ्यो णः । पा०५।२।१०१+वा०१।
१०६ तपः-सहस्राभ्याम् अण् । पा०५।२।१०३।
१०७ ज्योत्स्नादिभ्यः । पा०५।२।१०३ वा० २।
१०८ सिकता-शर्कराभ्याम् । पा०५।२।१०४।
१०९ इलच् देशे । पा०५।२।१०५।
११० दन्तुरः । पा०५।२।१०६।

१११ ऊषादिभ्यः रः। पा०५।२।१०७।
११२ द्यु-द्रुभ्यां मः। पा०५।२।१०८।
११३ केशादिभ्यो वः।
पा०५।२।१०९+वा० १+भा०।
११४ मेधा-रथात् इरः।
पा०५।२।१०९ वा० ३।
११५ काण्ड-अण्डात् ईरच्।
पा०५।२।१११।
११६ कृष्यादिभ्यो वलच्।
पा०५।२।११२।
११७ ज्योत्स्ना-तमिस्र-ऊर्जस्विन्-ऊर्जस्वल-मलीमसाः। पा०५।२।११४।
११८ नावादिभ्यः ठन्। पा०५।२।११६
भा०। काशिका ५।२।११६।
११९ व्रीह्यादि-अत इनिश्च।
पा०५।२।११६, ११५।
१२० नैकाचः। पा०५।२।११५ वा०१।
१२१ सप्तस्याम्। पा०५।२।११५ भा०।
१२२ एक-गोपूर्वात् ठञ्। पा०५।२।११८।
१२३ निष्कादेः शत-सहस्रात्।
पा०५।२।११९।
१२४ नवयज्ञादिभ्यः। पा०४।२।३५
वा० १।
१२५ चार्य-रोग-गर्हितात् प्राणिस्थात् अस्वाङ्गात् इनिः। पा०५।२।१२८।
काशिका ५।२।१२८।
१२६ वात-अतिसार-पिशाचानां कुक् च।
पा०५।२।१२९+भा०।
१२७ वयसि पूरणात्। पा०५।२।१३०।
१२८ सुखादिभ्यः। पा०५।२।१३१।
१२९ धर्म-शील-वर्णान्तात्।
पा०५।२।१३२।
१३० हस्त-दन्तात् जातौ। पा०५।२।१३३।
१३१ वर्णाद् ब्रह्मचारिणि।
पा०५।२।१३४।
१३२ पुष्करादिभ्यो देशे। पा०५।२।१३५।
१३३ मन्-मात् नाम्नि। पा०५।२।१३७।
१३४ शिखादिभ्यः वा। पा०५।२।११३६।
१३५ रूपात् आहत-प्रशस्ययोः यप्।
पा०५।२।१२०।
१३६ हिमादिभ्यः।
पा०५।२।१२० वा०१।
१३७ अस्-माया-मेधा-स्रजो विनिः।
पा०५।२।१२१।
१३८ आमयावी।
पा०५।२।१२२ वा०२।
१३९ वृन्दात् आरकन्।
पा०५।२।१२२ वा०३।
१४० शृङ्गात्। पा०५।२।१२२ वा०३।
१४१ फल-बर्ह-मलाच्च इनच्।
पा०५।२।१२२ वा०४।
पा०५।२।११४।
१४२ पर्व-मरुद्भ्यां तप्।
पा०५।२।१२२ वा०१०।
१४३ स्वामिन् ईशे। पा०५।२।१२६।
१४४ गोमिन् पूज्ये। पा०५।२।११४।
१४५ वाचो ग्मिनिः। पा०५।२।१२४।
१४६ आलच्-आटचौ कुत्सायाम्।
पा०५।२।१२५+भा०।
१४७ अर्शआदिभ्यः अच्।
पा०५।२।१२७।
१४८ तुण्डि-वलि-वटेर्भः।
पा०५।२।१३९।
१४९ कं-शंभ्याम्। पा०५।२।१३८।

१५० ति-तु-व-यस्-ताः । पा०५।२।१३८।

१५१ युस् । पा०५।२।१३८।

१५२ ऊर्णा-अहं-शुभंभ्यः । पा०५।२।१२३,१४०।

१५३ सूक्त-साम्नोः छः । पा०५।२।५९।

१५४ अध्याय-अनुवाकयोः लुग् वा । पा०५।२।६०+वा०१।

१५५ विमुक्तादिभ्यः अण् । पा०५।२।६१।

१५६ गोसदादिभ्यः वुन् । पा०५।२।६२।

१५७ निद्रा-तन्द्रा-श्रद्धा-दया-हृदयात् वा आलुच् । पा०३।२।१५८। पा०५।२।१२२ वा०५।

१५८ शीत-उष्ण-तृप्रं न सहते । पा०५।२।१२२ वा०६।

१५९ हिमं सहते चेलुः । पा०५।१।१२२ वा०७।

१६० बल-वातं चूलः । पा०५।२।१२२ वा०८,९।

[चतुर्थस्य अध्यायस्य द्वितीयः पादः समाप्तः]

[तृतीयः पादः]

१ षष्ठ्याः व्याश्रये तस् । पा०५।४।४८।

२ रोगात् प्रतीकारे । पा०५।४।४९।

३ क्षेप-अतिग्रह-अव्यथनेषु अकर्तरि तृतीयायाः । पा०५।४।४६।

४ हीयमान-पापयुक्तात् । पा०५।४।४७।

५ प्रतिना पञ्चम्याः । पा०५।४।४४।

६ अवधौ अहाक्-रुहोः । पा०५।४।४५।

७ सर्वादि-बहुभ्यः अद्व्यादिभ्यः । पा०३।२।७।

८ कुतः अतः इतः । पा०३।३।५। पा०७।२।१०४।

९ आद्यादिभ्यः । पा०५।४।४४ वा०१।

१० सप्तम्याः त्रल् । पा०५।३।१०।

११ क्व कुत्र इह-अत्र । पा०५।३।१२,११,५,३।

१२ भवद्-दीर्घायुष्-आयुष्मत्-देवानांप्रियैः ते अन्यास्यश्च । पा०५।३।१४ भा०।

१३ सर्व-एक-अन्य-किं-यत्-तदः काले दा । पा०५।३।१५।

१४ सदा अधुना इदानीं तदानीम् । पा०५।३।६,१७,१८,१९।

१५ किं-यद्-अन्याद् अनद्यतने हिल् वा । पा०५।३।२१।

१६ तर्हि एतर्हि सद्यः परेद्यवि । पा०५।३।२१,१६,२२।

१७ पूर्व-अन्य-अन्यतर-इतर-अपर-अधर-उत्तराद् एद्युस् । पा०५।३।२२ (वा०६)।

१८ उभयाद् द्युश्च । पा०५।३।२२ वा०६,७।

१९ प्रकारे थाल् । पा०५।३।२३।

२० धा संख्यायाः । पा०५।३।४२।

२१ षोढा वा । पा०६।३।१०९ वा०४।

२२ ऐकध्यम् । पा०५।३।४४।

२३ द्वि-त्रेर्धमुञ् । पा०५।३।४५।

२४ एधा । पा०५।३।४६।

२५ तद्वति धण् । पा०५।३।४५ वा०१।
२६ जातीयर् । पा०५।३।६६।
२७ स्थूलादिभ्यः कन् । पा०५।४।३।
२८ दिक्शब्दाद् दिग्-देश-कालार्थात् सप्तमी-पञ्चमी-प्रथमाभ्यः अस्तातिः । पा०५।३।२७।
२९ अञ्चो लुक् । पा०५।३।३०।
३० उपरि-उपरिष्टात् । पा०५।३।३१।
३१ पूर्व-अधरयोः पुर्-अधौ च । पा०५।३।४०।
३२ अस् । पा०५।३।३९।
३३ अवरस्य अव् । पा०५।३।३९।
३४ वा अस्ताति । पा०५।३।४१।
३५ पश्चात् । पा०५।३।३२।
३६ पश्चार्धम् । पा०५।३।३२ वा०४।
३७ पर-अवरात् तस् वा । पा०५।३।२९।
३८ दक्षिण-उत्तरात् आच । पा०५।३।३६,२८,३८।
३९ आहि च दूरे । पा०५।३।३७,३८।
४० अधरात् चात् । पा०५।३।३४।
४१ एनप् अदूरे वा । पा०५।३।३५।
४२ निन्द्ये पाशप् । पा०५।३।४७।
४३ भूतपूर्वे चरट् । पा०५।३।५३।
४४ षष्ठ्याः रूप्य च । पा०५।३।५४।
४५ द्वि-बहुषु प्रकर्षे तरप्-तमपौ । पा०५।३।५७,५५।
४६ किम्-ए-तिङ-असंख्यात् आमन्तौ अद्रव्ये । पा०५।४।११।
४७ गुणात् ईयसुन्-इष्ठनौ च । पा०५।३।५८।
४८ विन्-मतोर्लुक् । पा०५।३।६५।
४९ प्रशस्यस्य श्रः । पा०५।३।६०।
५० वृद्धस्य च ज्यः । पा०५।३।६१,६२।
५१ बाढ-अन्तिकयोः साध-नेदौ । पा०५।३।६३।
५२ युव-अल्पयोः कन् वा । पा०५।३।६४।
५३ तिङश्च रूपप् । पा०५।३।६६+वा०१।
५४ किञ्चिदूने कल्पप्-देश्य-देशीयरः । पा०५।३।६७।
५५ प्राग् ढञः कः । पा०५।३।७०।
५६ तिङ-असंख्यानाम् अचः अन्त्यात् पूर्वः अकच् । पा०५।३।७१। काशिका ५।३।७१।
५७ कश्च दः । पा०५।३।७२।
५८ तूष्णीकाम् । पा०५।३।७२ वा०१।
५९ शीले तूष्णीकः । पा०५।३।७२ वा०२।
६० सर्वादीनाम् । पा०५।३।७१।
६१ सुपः । पा०५।३।७२ भा०।
६२ अज्ञात-कुत्सयोः । पा०५।३।७३,७४।
६३ दयायाम् । पा०५।३।७६।
६४ नृनाम्नि ठच्-घन्-इलचो वा । पा०५।३।७८,७९।
६५ डश्च उपात् । पा०५।३।८०।
६६ षषः । काशिका ५।३।८३[1]।
६७ ऋतः ल-यौ । काशिका ५।३।८३[2]।
६८ उदन्तात् । काशिका ५।३।८३[3]।

---

१ "कथं षडङ्गुलिदत्तः षडिकः ? इति"। "षषः ठाजादिवचनात् सिद्धम्" । इत्येवमस्य सूत्रस्य वृत्तौ अस्य चान्द्रस्य सूत्रस्य नामग्राहं समावेशः ।

२ अस्मिन् सूत्रे पितृदत्तः पितृकः इत्यादिके उदाहरणे अस्य चान्द्रस्य समावेशः ।

३ काशिकायाम् अस्मिन् सूत्रे "उवर्णात् ल इलस्य च" इति वार्तिके अस्य चान्द्रस्य अन्तर्भावः तथा च तद्विषया कारिकाऽपि अत्रैव सूत्रे —
"चतुर्थादनजादौ च लोपः पूर्वपदस्य च । अप्रत्यये तथैवेष्टः उवर्णात् ल इलस्य च ॥"

६९ अल्पे । पा०५।३।८५।

७० ह्रस्वे । पा०५।३।८६।

७१ कुटी-शमी-शुण्डाभ्यः रः ।
पा०५।३।८८।

७२ कुतुपः । पा०५।३।८९।

७३ कासू-गोणीभ्यां ष्टरच् ।
पा०५।३।९०।

७४ वत्स-उक्ष-अश्व-ऋषभाणां तनुत्वे ।
पा०५।३।९१।

७५ यत्-तद्-एकात् द्वाभ्यां निर्धारणे
डतरच् पा०५।३।९२,९४ ।

७६ जातौ डतमच् बहुभ्यः ।
पा०५।३।९३,९४।

७७ तौ किमः । पा०५।३।९२,९३।

७८ इवे संज्ञा-प्रतिकृत्योः ।
पा०५।३।९६,९७।

७९ वस्तेः ढञ् । पा०५।३।१०१।

८० शिलायाः ढश्च । पा०५।३।१०२।
काशिका ५।३।१०२।

८१ शाखादिभ्यः यः । पा०५।३।१०३।

८२ कुशाग्रात् छः । पा०५।३।१०५।

८३ आकस्मिके । पा०५।३।१०६।

८४ शर्करादिभ्यः अण् । पा०५।३।१०७।

८५ अङ्गुल्यादिभ्यः ठक् । पा०५।३।१०८।

८६ एकशालायाः ठच्च । पा०५।३।१०९।

८७ कर्क-लोहितात् ईकक् ।
पा०५।३।११०।

८८ पूगात् ञ्यः । पा०५।३।११२।

८९ व्रातात् अस्त्रियाम् । पा०५।३।११३।

९० [१]वाहीकेषु अब्राह्मण-राजन्यात्
शस्त्रजीविसंघात् ञ्यट् ।
पा०५।३।११४।

९१ वृकात् ण्यट् । पा०५।३।११५।

९२ दामन्यादिभ्यः छः । पा०५।३।११६।

९३ पर्श्वादिभ्यः अण् अस्त्रियाम् ।
पा०५।३।११७।

९४ ञ्यादीनां बहुषु लुक् ।
पा०५।३।११९। पा०२।४।६२।

९५ अभिजित्-विदभृत्-शालावत्-
शिखावत्-शमीवत्-ऊर्णावत्-श्रुमद्भ्यः
अपत्याणः यञ् । पा०५।३।११८।

[चतुर्थस्य अध्यायस्य तृतीयः पादः समाप्तः]

[चतुर्थः पादः]

१ बहु-अल्पार्थात् कारकात् मङ्गले शस्
वा । पा०५।४।४२+वा०१।

२ संख्या-एकार्थात् वीप्सायाम् ।
पा०५।४।४३।

३ संख्यादेः वुन् । पा०५।४।१।

४ दण्ड-दानयोः । पा०५।४।२।

५ वारसंख्यायाः कृत्वसुच् ।
पा०५।४।१७।

६ बहोः धा च अविप्रकर्षे ।
पा०५।४।२०।

---

[१] काशिकायाम् अत्र सूत्रे (५।३।११४) 'वाहीकेषु' इति ।

७ द्वि-त्रि-चतुरः सुच् । पा०५।४।१८।
८ सकृत् । पा०५।४।१९।
९ प्रकृते मयट् । पा०५।४।२१।
१० अनन्त-आवसथ-इतिह-भेषजात् ञ्यः । पा०५।४।२३।
११ तीयात् ईकग् न विद्या चेत् । पा०४।२।७[1]। भा०।
१२ यावादिभ्यः कन् । पा०५।४।२९।
१३ लोहितात् मणौ । पा०५।४।३०।
१४ रक्त-अनित्ययोः। पा०५।४।३१,३२।
१५ कालात् । पा०५।४।३३।
१६ क्तात् अनात्यन्तिके । पा०५।४।४।
१७ विनयादिभ्यः ठक् । पा०५।४।३४।
१८ वाचः संदेशे । पा०५।४।३५। काशिका ५।४।३५ ("वाचो व्याहृतार्थायाम्")
१९ तथा कर्मणः अण् । पा०५।४।३६।
२० ओषधेः अजातौ । पा०५।४।३७।
२१ णच्-इनुणः । पा०५।४।१४,१५।
२२ प्रज्ञादिभ्यः वा । पा०५।४।३८।
२३ मृदः तिकन् । पा०५।४।३९।
२४ स-स्नौ स्तुतौ । पा०५।४।४०।
२५ नाम-रूपात् धेयः । पा०५।४३६[2] वा०२।
२६ भागात् यत् च । पा०५।४।३६[2] वा०२।
२७ सूर-मर्त-क्षेम-यविष्ठात् । पा०५।४।३६[3] वा०७,८।
२८ नवात् । पा०५।४।३६[4] वा०७।
२९ त्नप्-तन-खा नू च । पा०५।४।३०[4] वा०६।
३० प्रात् पुराणे नश्च । पा०५।४।३०[5] वा०७।
३१ देवतान्तात् तदर्थे यत् । पा०५।४।२४।
३२ अर्घात् । पा०५।४।२५।
३३ पाद्यम् । पा०५।४।२५।
३४ अतिथेः ण्यः । पा०५।४।२६।
३५ अभूततद्भावे कृ-भू-अस्तियोगे विकारात् च्विः। पा०५।४।५०+ वा० १।
३६ अरुस्-मनस्-चक्षुष्-चेतस्-रहस्-रजसां लोपश्च पा०५।४।५१।
३७ अभिविधौ संपदा च सातिर्वा । पा०५।४।५३,५२।
३८ तदधीने । पा०५।४।५४।
३९ देये त्रा च । पा०५।४।५५।

---

१ काशिकायाम् ४।२।८। सूत्रे "तीयात् ईकक् स्वार्थे वा वक्तव्यः" "न विद्यायाः" इत्येवं वार्तिकद्वयम् । तथा च तत्रैव कारिका —
"दृष्टे सामनि जाते च द्विरण् डिद् वा विधीयते । तीयात् ईकक् न विद्यायाः गोत्रादङ्कवदिष्यते" ।।

२ काशिकायाम् ५।४।२५। सूत्रे "भाग-रूप-नामभ्यो धेयः प्रत्ययो वक्तव्यः" इति वार्तिकम् ।

३ अत्रापि ५।४।२५। काशिकायां वार्तिकम्।

४ अत्रापि काशिकायाम् ५।४।२५। सूत्रे वार्तिकम् :— "नवस्य नू आदेशः त्नप्-तनप्-खाश्च प्रत्ययाः" ।

५ अत्रापि काशिकायाम् ५।४।२५ सूत्रे वार्तिकम् :— "नश्च पुराणे प्रात्" ।

४० देवादिभ्यः द्वितीया-सप्तम्योः बहुलम्। पा०५।४।५६।

४१ अव्यक्तानुकरणात् अनेकाचः अनितौ डाच्। पा०५।४।५७।

४२ कृञा द्वितीय-तृतीय-शम्ब-बीजात् कृषौ। पा०५।४।५८।

४३ संख्यादेर्गुणात्। पा०५।४।५९।

४४ समयात् यापनायाम्। पा०५।४।६०।

४५ सपत्त्र-निष्पत्त्रात् अतिव्यथने। पा०५।४।६१।

४६ निष्कुलात् निष्कोषणे। पा०५।४।६२।

४७ प्रिय-सुखात् आनुकूल्ये। पा०५।४।६३।

४८ दुःखात् प्रातिकूल्ये। पा०५।४।६४।

४९ शूलात् पाके। पा०५।४।६५।

५० सत्यात् अशपथे। पा०५।४।६६।

५१ मद्र-भद्रात् वपने। पा०५।४।६७।+भा०।

५२ समासान्तः। पा०५।४।६८।

५३ न किमः क्षेपे। पा०५।४।७०।

५४ पूजायां सु-अतेः प्राग् अन्यार्थात्। पा०५।४।६९ वा० १,२।

५५ नञः अनर्थार्थे। पा०५।४।७१।

५६ पथः वा। पा०५।४।७२।

५७ पुर्-अप्-धुरश्च अनक्षस्य अच्। पा०५।४।७४।

५८ ऋचः। पा०५।४।७४।

५९ नञ्-बह्वोः माणव-चरणयोः। काशिका ५।४।७४। वा० ("अनृचो माणवको ज्ञेयः, बह्वृचः चरणाख्यायाम्")।

६० प्रति-अनु-अवात् साम-लोम्नः। पा०५।४।७५।

६१ अक्ष्णः अचक्षुषः। पा०५।४।७६।

६२ धेन्वनडुह-ऋग्यजुष-अक्षिभ्रुव-दारगव-ऊर्वष्ठीव-पदष्ठीव-नक्तंदिव-रात्रिंदिव-अहर्दिव-सरजस-पुरुषायुष-द्व्यायुष-त्र्यायुष-जातोक्ष-महोक्ष-वृद्धोक्ष-उपशुन-गोष्ठश्वाः। पा०५।४।७७।

६३ ब्रह्म-हस्ति-राज-पल्यात् वर्चसः। पा०५।४।७८+भा०।

६४ सम्-अव-अन्धात् तमसः। पा०५।४।७९।

६५ श्वसो वसीयसः। पा०५।४।८०।

६६ निसश्च श्रेयसः। पा०५।४।८०,७७।

६७ तप्त-अनु-अवात् रहसः। पा०५।४।८१।

६८ प्रतेः उरसः आधारात्। पा०५।४।८२।

६९ अनुगवम् आयामे। पा०५।४।८३।

७० द्विस्तावा त्रिस्तावा वेदिः। पा०५।४।८४।

७१ प्रादिभ्यः अध्वनः। पा०५।४।८५।

७२ पाण्डु-उदक्-कृष्णाद् भूमेः। काशिका ५।४।७५[1]।

७३ संख्याया नदी-गोदावर्योश्च। काशिका ५।४।७५[1]।

७४ असंख्याच्च अङ्गुलेः अनन्यासंख्यार्थे। पा०५।४।८६।

७५ अहः-सर्व-एकदेश-संख्यात-पुण्य-वर्षा-दीर्घाच्च रात्रेः। पा०५।४।८७।

---

१. अत्र च कारिका—
"कृष्ण-उदक्-पाण्डुपूर्वायाः भूमेः अच् प्रत्ययः स्मृतः। गोदावर्याश्च नद्याश्च संख्याया उत्तरे यदि॥"

७६ सखि-अहर्-राज्ञां टच् । पा०५।४।९१।
७७ गोः अलुकि अचार्थे । पा०५।४।९२।
७८ उरसः अग्रे । पा०५।४।९३।
७९ अनस्-अश्म-अयः-सरसां जाति-नाम्नोः । पा०५।४।९४।
८० ग्राम-कौटात् तक्ष्णः । पा०५।४।९५।
८१ अतेः शुनः । पा०५।४।९६।
८२ उपमानात् अप्राणिनि । पा०५।४।९७।
८३ मृग-पूर्व-उत्तराच्च सक्थ्नः । पा०५।४।९८।
८४ संख्या-अर्धात् नावः एकार्थात् । पा०५।४।९९,१००।
८५ खार्या वा । पा०५।४।१०१।
८६ द्वि-त्रिभ्याम् अञ्जलेः । पा०५।४।१०२।
८७ कु-महद्भ्यां ब्रह्मणः । पा०५।४।१०५।
८८ जनपदात् । पा०५।४।१०४।
८९ चार्थे चु-द-ष-हः समाहारे । पा०५।४।१०६।
९० शरदादिभ्यः असंख्यार्थे । पा०५।४।१०७।
९१ अनः । पा०५।४।१०८।
९२ नपुंसकात् वा । पा०५।४।१०९।
९३ गिरि-नदी-पौर्णमासी-आग्रहायणी-झयः । पा०५।४।११०-११२।
९४ निसः शतो डच् । पा०५।४।७३ वा०१।
९५ संख्याया अबहोः अन्यार्थे । पा०५।४।७३।
९६ सक्थि-अक्ष्णः स्वाङ्गात् षच् । पा०५।४।११३।
९७ अङ्गुलेर्दारुणि । पा०५।४।११४।
९८ द्वि-त्रिभ्यां मूर्ध्नः । पा०५।४।११५।
९९ अप् पूरण्याः तासु । पा०५।४।११६+वा०१।
१०० प्रमाण्याः । पा०५।४।११६।
१०१ अन्तर्-बहिर्भ्यां लोम्नः । पा०५।४।११७।
१०२ नक्षत्रात् नेतुः । पा०५।४।११६ वा०२।
१०३ नञ्-सु-वि-उप-त्रेः चतुरः अच् । पा०५।४।७७+वा०१।
१०४ नाभेः । पा०५।४।७५[1]।
१०५ सुप्रात-सुश्व-सुदिव-शारिकुक्ष-चतुरश्राः । पा०५।४।१२०।
१०६ नञ्-सु-दुर्भ्यः सक्थ्नो वा । पा०५।४।१२१।
१०७ प्रजाया असिच् । पा०५।४।१२२।
१०८ मन्द-अल्पाच्च मेधायाः । पा०५।४।१२२।
१०९ नाम्नि नासाया नसः अस्थूलात् । पा०५।४।११८।
११० प्रादिभ्यः । पा०५।४।११९।
१११ वे ग्रः । पा०५।४।११९ भा०।
११२ खुर-खरात् नस् वा । पा०५।४।११८ भा०।
११३ धर्मात् अनिच् केवलात् । पा०५।४।१२४।
११४ सु-हरित-तृण-सोमात् जम्भात् । पा०५।४।१२५।

---

१ अत्र सूत्रे काशिकायाम् "अन्यत्रापि च दृश्यते । पद्मनाभः ऊर्णनाभः दीर्घपात्रः समरात्रः अरात्रः । तदेतत् सर्वमिह योगविभागं कृत्वा साधयन्ति" इत्येवं निर्देशे अस्य चान्द्रस्य समावेशः ।

११५ दक्षिणेर्मा लुब्धयोगे । पा०५।४।१२६।

११६ इच् व्यतिहारे । पा०५।४।१२७।

११७ द्विदण्डयादीनि । पा०५।४।१२८।

११८ भृति-मासात् ठच् । पा०५।४।११६ वा०४।

११९ सं-प्रात् जानुनो ज्ञः । पा०५।४।१२९।

१२० ऊर्ध्वात् वा । पा०५।४।१३०।

१२१ धनुर्नाम्नि । पा०५।४।१३३।

१२२ जायाया निङ् । पा०५।४।१३४।

१२३ सु-उत्-पूति-सुरभेः गन्धस्य इत् । पा०५।४।१३५।

१२४ आगन्तोर्वा । पा०५।४।१३५ वा०१।

१२५ अल्पे । पा०५।४।१३६।

१२६ उपमानात् । पा०५।४।१३७।

१२७ पादस्य पात् अहस्त्यादिभ्यः । पा०५।४।१३८।

१२८ कुम्भपद्यादयः । पा०५।४।१३९।

१२९ सु-संख्यादेः । पा०५।४।१४०।

१३० वयसि दन्तस्य दतृ । पा०५।४।१४१।

१३१ षोडन् । पा०६।३।१०९ वा०३।

१३२ स्त्रीनाम्नि । पा०५।४।१४३।

१३३ अग्रान्त-शुद्ध-शुभ्र-वृष-वराह-अहि-मूषिक-श्याव-शिखर-अरोकात् वा । पा०५।४।१४५,१४४। काशिका ५।४।१४५,१४४।

१३४ ककुत् ककुदस्य अवस्थायाम् पा०५।४।१४६।

१३५ त्रिककुत् पर्वते । पा०५।४।१४७।

१३६ वि-उदः काकुत् काकुदस्य । पा०५।४।१४८।

१३७ पूर्णात् वा । पा०५।४।१४९।

१३८ सुहृद्-दुर्हृदौ मित्र-अमित्रयोः । पा०५।४।१५०।

१३९ उरोभ्यः कप् । पा०५।४।१५१।

१४० इनः स्त्रियाम् । पा०५।४।१५२।

१४१ ङी-ऊङ-ऋतः अभ्रुवः । पा०५।४।१५३।

१४२ शेषात् वा । पा०५।४।१५४।

१४३ न नाम्नि । पा०५।४।१५५।

१४४ ईयसः । पा०५।४।१५६।

१४५ ङ्यः ईत् । पा०५।४।१५६ वा०१।

१४६ स्तुतौ भ्रातुः । पा०५।४।१५७।

१४७ नाडी-तन्त्र्योः स्वाङ्गे । पा०५।४।१५९।

१४८ निष्प्रवाणिः । पा०५।४।१६०।

[चतुर्थस्य अध्यायस्य चतुर्थः पादः समाप्तः]

[चान्द्रे व्याकरणे चतुर्थः अध्यायः समाप्तः]

[पञ्चमः अध्यायः, प्रथमः पादः]

१ सन्-यङोः आद्यम् एकाच् द्विः ।
पा० ६।१।९,१।

२ चङ-लिटोः । पा० ६।१।११,८।

३ आद्यात् अचः । पा० ६।१।२।

४ न न्द्रो हलि । पा० ६।१।३।
काशिका ६।१।३।

५ अयि रः । पा० ६।१।३[1]।

६ पुनः ।

७ ईर्ष्यः यिः सन् वा ।
पा० ६।१।३ वा० २+भा०।

८ सुपो यथेष्टम् । पा० ६।१।३ भा०।

९ दाश्वान् साह्वान् मीढ्वान् चिक्लिदं चक्नसम् । पा० ६।१।१२+वा० ५+भा०।

१० चराचर-चलाचल-पतापत-वदावद-घनाघन-पाटूपटा वा ।
पा० ६।१।१२ वा० ६-८।

११ ष्यङः प्रधानस्य पुत्र-पत्योः स्वयोः इक् यणः । पा० ६।१।१३।

१२ बन्धौ अन्यार्थे । पा० ६।१।१४।

१३ मात-मातृक-मातृषु वा ।
पा० ६।१।१४ भा०।

१४ वचि-स्वपि-यजादीनां लिटि अपिति ।
पा० ६।१।१५। पा० १।२।५।

१५ ग्रहि-व्यधोः । पा० ६।१।१६।

१६ शिन्ङितोः । पा० ६।१।१६।
पा० १।२।४।

१७ ज्या-व्रश्च-प्रछ-भ्रस्जाम् ।
पा० ६।१।१६।

१८ वशः तिङशिति अपिति ।
पा० ६।१।१६।

१९ व्यचः अञ्णिति अनसि ।
पा० ६।१।१६,१७ वा० ४।

२० किति तेषाम् । पा० ६।१।१५।

२१ लिटि अभ्वेर्ह्विरुक्ते । पा० ६।१।१७।

२२ ग्रहि-प्रछोः सनि । पा० १।२।८।

२३ स्वपः । पा० १।२।८।

२४ चङि । पा० ६।१।१८।

२५ यङि । पा० ६।१।१९।

२६ व्ये-स्यमोः । पा० ६।१।१९।

२७ चायः कीः । पा० ६।१।२१।

२८ प्रे स्त्यः त-तवतोः । पा० ६।१।२३।

२९ स्पर्श-द्रवमूर्त्योः श्यः । पा० ६।१।२४।

३० प्रतेः । पा० ६।१।२५।

३१ वा अभि-अवात् । पा० ६।१।२६।

३२ स्फायः स्फीः । पा० ६।१।२२।

३३ शृतं क्षीर-हविषोः ।
पा० ६।१।२७+भा०।

३४ प्यायः पीः । पा० ६।१।२८।

३५ आङः अन्धु-ऊधसोः ।
पा० ६।१।२८ वा० १।

३६ लिट्-यङोः । पा० ६।१।२९।

३७ वा श्वेः । पा० ६।१।३०।

३८ णौ सन्-चङोः । पा० ६।१।३१।

३९ ह्वः । पा० ६।१।३२।

४० द्वित्वे । पा० ६।१।३३।

४१ न तस्मिन् । पा० ६।१।३७।

४२ लिटि । पा० ६।१।३८।

---

१. काशिकायाम् अस्मिन् सूत्रे "यकारपरस्य रेफस्य प्रतिषेधो न भवतीति वक्तव्यम्" इत्येवं निर्देशे अस्य चान्द्रस्य समावेशः ।

४३ वयो यः । पा०६।१।३८।
४४ वेः अपिति वा । पा०६।१।३९,४०।
४५ ल्यपि च । पा०६।१।४१।
४६ ज्यः । पा०६।१।४२।
४७ व्यः । पा०६।१।४३।
४८ परेर्वा । पा०६।१।४४।
४९ एचः अशिति आत् । पा०६।१।४५।
५० अलिटि व्यः । पा०६।१।४६।
५१ स्फुरि-स्फुलोर्घञि । पा०६।१।४७।
५२ दीङः अक्ङित्सनि ल्यपि । पा०६।१।५०।
५३ मि-म्योः अखल्-अचि । पा०६।१।५०+वा०२।
५४ लियो वा । पा०६।१।५१।
५५ अपगुरो णमुलि । पा०६।१।५३।
५६ चि-स्फुरोः णौ । पा०६।१।५४।
५७ प्रजने वियः । पा०६।१।५५।
५८ भियः प्रयोजकात् । पा०६।१।५६।
५९ स्मेश्च । पा०६।१।५७।
६० क्री-इङ-जीनाम् । पा०६।१।४८।
६१ अष्ठिवु-ष्वक्कादेः षः सः । पा०६।१।६४+वा०१।
६२ णः नः । पा०६।१।६५।
६३ यः वलि लोपः । पा०६।१।६६।
६४ वेः अनचः । पा०६।१।६७।
६५ हलः ति-सिपः । पा०६।१।६८।
६६ सोः । पा०६।१।६८।
६७ ङी-आपो दीर्घात् । पा०६।१।६८।
६८ एङ-ह्रस्वात् संबुद्धौ अतः । पा०६।१।६९+वा०१।
६९ ह्रस्वस्य अतिङि पिति तुक् । पा०६।६।७१।
७० छे । पा०६।१।७३।
७१ आङ-माङः । पा०६।१।७४।
७२ दीर्घस्य । पा०६।१।७५।
७३ पदान्तस्य वा । पा०६।१।७६।
७४ इकः यण् अचि । पा०६।१।७७।
७५ एचः अय्-अव्-आय्-आवः । पा०६।१।७८।
७६ यि परे अव्-आवौ । पा०६।१।७९।
७७ धातोस्तन्नैव । पा०६।१।८०।
७८ गव्यूतिः अध्वमाने । पा०६।१।७९ वा०३।
७९ शक्ये क्षि-ज्योः अय् । पा०६।१।८१।
८० क्रियः क्रयार्थे । पा०६।१।८२।
८१ द्वयोः एकः । पा०६।१।८४।
८२ आत् अदेङ । पा०६।१।८७।
८३ आदैजेचाद्यटः । पा०६।१।९०।
८४ एचि । पा०६।१।८८।
८५ इण्-एधोः । पा०६।१।८९।
८६ ऊठि । पा०६।१।८९।
८७ अक्षात् ऊहिन्याम् । पा०६।१।८९वा०३।
८८ स्वात् ईर-ईरिणोः । पा०६।१।८९ वा०५।
८९ प्रात् ऊढ-ऊढि-एष-एष्येषु । पा०६।१।८९ वा०४।
९० ऋते तृतीयासमासे । पा०६।१।८९ वा०६।
९१ प्र-दश-ऋण-वसन-कम्बल-वत्सरात् ऋणे । पा०६।१।८९ वा०७,८।
९२ ओतः अम्-शसोः आत् । पा०६।१।९३।
९३ प्रादीनाम् ऋति धातौ । पा०६।१।९१।
९४ वा सुपि लृति च । पा०६।१।९२। काशिका ६।१।९२।
९५ एङि पररूपम् । पा०६।१।९४।
९६ अनियोगे एवे । पा०६।१।९४ वा०३।

९७ ओष्ठ-ओत्वोः समासे वा ।
पा०६।१।९४ वा०५।
९८ शकन्ध्वादयः । पा०६।१।९४ वा०४।
९९ ओम्-आङोः । पा०६।१।९५।
१०० ङसि अनादौ । पा०६।१।९६।
१०१ अतः अदेङि । पा०६।१।९७।
१०२ अव्यक्तानुकरणस्य अनेकाचः अतः
इतौ । पा०६।१।९८+वा०१।
१०३ न द्वित्वे । पा०६।१।९९।
१०४ तः वा । पा०६।१।९९।
१०५ डाचि पूर्वस्य । पा०६।१।९९ वा०१।
१०६ अकः अकि दीर्घः । पा०६।१।१०१।
१०७ ऋति ऋतः ऋर्वा ।
पा०६।१।१०१ वा०१।
१०८ लृति लृः । पा०६।१।१०१ वा०२।
१०९ प्रथमयोः अचि । पा०६।१।१०२।
११० ततः शसो नः पुंसि ।
पा०६।१।१०३।
१११ न आत् इचि । पा०६।१।१०४।
११२ दीर्घात् जसि च । पा०६।१।१०५।
११३ अमि पूर्वः । पा०६।१।१०७।
११४ यण् इकः । पा०६।१।१०८।
११५ एङः अति पदादौ । पा०६।१।१०९।
११६ ङसि-ङसोः । पा०६।१।११०।
११७ ऋतः उत् । पा०६।१।१११।
११८ सख्युः पत्युः । पा०६।१।११२।
११९ हशि च अतः रोः ।
पा०६।१।११३,११४।
१२० गोः ओ वा । पा०६।१।१२२।
१२१ अचि अवङः । पा०६।१।१२३।
१२२ अक्ष-इन्द्रे । पा०६।१।१२४।
काशिका ६।१।१२४,१२३।
१२३ न प्लुतः अनितौ ।
पा०६।१।१२५,१२९।
१२४ क्वचिद् वा । पा०६।१।१३०।
१२५ ईत्-ऊत्-एत् द्विवचनम् ।
पा०६।१।१२५। पा०१।१।११।
१२६ अमू अमी । पा०१।१।१२।
१२७ अच् अनाङः । पा०१।१।१४।
१२८ ओत् । पा०१।१।१५।
१२९ सौ वा इतौ । पा०१।१।१६।
१३० उञ् । पा०१।१।१७।
१३१ ॐ । पा०१।१।१८।
१३२ इकः असस्थाने ह्रस्वश्च असमासे ।
पा०६।१।१२७+वा०१।
१३३ ऋत्लृति अकः । पा०६।१।१२८।
१३४ एतत्-तदोः सुलोपः अकोः
अनञ्समासे हलि । पा०६।१।१३२।
१३५ दिवः अन्ते च उत् ।
पा०६।१।१३१।
काशिका ६।१।१३१।
१३६ सं-परेः कृञः सुट् ।
पा०६।१।१३७,१३५।
१३७ उपात् भूषण-समवाय-यत्न-वैकृत्य-
अध्याहारेषु । पा०६।१।१३७,१३९।
१३८ किरः लवने । पा०६।१।१४०।
१३९ हिंसायां प्रतेश्च । पा०६।१।१४१।
१४० अपात् चतुष्पात्-शकुनिषु हृष्ट-
अन्न-कुलायार्थिषु । पा०६।१।१४२+
वा०१।
१४१ अपरस्पराः सातत्ये ।
पा०६।१।१४४।
१४२ पारस्करादीनि नाम्नि ।
पा०६।१।१५७।

[पञ्चमस्य अध्यायस्य प्रथमः पादः समाप्तः]

[द्वितीयः पादः]

१ अलुग् उत्तरपदे । पा०६।३।१।
२ पञ्चम्याः स्तोकादिभ्यः । पा०६।३।२।
३ ब्राह्मणाच्छंसी । पा०६।३।२ वा०१।
४ खिति इच एकाचः अमः ।
पा०६।३।६८।
५ ओजस्-सहस्-अम्भस्-तपस्-अञ्जसः तृतीयायाः । पा०६।३।३+वा०१।
६ मनसो नाम्नि । पा०६।३।४।
७ आज्ञायिनि । पा०६।३।५।
८ पुस्-जतुर्भ्याम् अनुज-अन्धयोः ।
पा०६।३।३ वा०२।
९ आत्मनः पूरणे । पा०६।३।५ वा०१।
१० नाम्नि पराच्च चतुर्थ्याः ।
पा०६।३।७,८।
११ सप्तम्या बहुलम् । पा०६।३।१४।
१२ षष्ठ्या आक्रोशे । पा०६।३।२१।
१३ पुत्रे वा । पा०६।३।२२।
१४ वाग्-दिक्-पश्यद्भ्यः युक्ति-दण्ड-हरेषु । पा०६।३।२१ वा०१।
१५ अदसः फग्-वुञोः ।
पा०६।३।२१ वा०२+भा०।
१६ शुनः शेफ-पुच्छ-लाङ्गूलेषु नाम्नि ।
पा०६।३।२१ वा०४।
१७ दिवो दासे । पा०६।३।२१ वा०५।
१८ ऋतः विद्या-योनिसंबन्धात् तत्र ।
पा०६।३।२३+वा०१।
१९ स्वसृ-पत्योर्वा । पा०६।३।२४।
२० मातर-पितरौ चार्थे । पा०६।३।३२।
२१ ऋतः तत्र-आनङ् । पा०६।३।२५।
२२ पुत्रे । पा०६।३।२५ वा०१।
२३ देवतानाम् अवायूनां वेदे सह श्रुतानाम् । पा०६।३।२६+ वा०१+ भा०।
२४ न आदैचि अग्नेरविष्णौ ।
पा०६।३।२८+वा०१।
२५ सोम-वरुणयोः ईत् । पा०६।३।२७।
२६ दिवः द्यावा । पा०६।३।२९।
२७ दिवस्पृथिव्यां वा । पा०६।३।३०।
काशिका ६।३।३०।
२८ उषासा उषसः । पा०६।३।३१।
२९ स्त्रियां पुंवत् उक्तपुंस्कम् अनूङ् एकार्थे स्त्रियाम् अप्रधानपूरणी-प्रियादौ ।
पा०६।३।३४+वा०८।
३० प्रसूता-प्रजाता-गर्भिण्यः ।
पा०६।३।३४ भा०।
३१ त्र-तस्-तर-तम-चरट्-कल्पप्-देश्य-रूपप्-पाशप्-शस्-थ्यन्-क्यङ्-मानिषु ।
पा०६।३।३५ वा०१-५,८,९।
पा०६।३।३६।
३२ यचि अणादौ । पा०६।३।३५ वा०११।
३३ ढे अग्नायी ।
पा०६।३।३५ वा०११+भा०।
३४ न त्यादि-वु-कोपान्तम् ।
पा०६।३।३७+वा०१।
३५ संज्ञा-पूरण्योः । पा०६।३।३८।
३६ अच आदैज्झेतुः[1] अरक्त-विकारे ।
पा०६।३।३९।
३७ स्वाङ्गात् ईत् अमानिनि ।
पा०६।३।४०+वा०१।

---

१ आदैचः हेतुः आदैच्-हेतुः इति पदविभागः ।

३८ जातिः अष्कादौ च । पा०६।३।४१।
३९ पुंवत् स्वपदार्थ-जातीय-देशीयेषु ।
पा०६।३।४२।
४० त्व-तलोर्गुणः। पा०६।३।३५ वा०१०।
४१ सर्वादयः वृत्तिमात्रे । पा०६।३।३५।
४२ तर-तम-रूप-कल्प-चेलट्-ब्रुव-गोत्र-
मत-हते ङ्यो ह्रस्वः। पा०६।३।४३।
४३ वा एकाचः । पा०६।३।४४।
४४ उगितः । पा०६।३।४५।
४५ ऊङः । पा०६।३।४४।
४६ आत् महतः जातीय-एकार्थयोः
अस्व्यर्थे । पा०६।३।४६+भा०।
४७ घास-कर-विशिष्टे पुंवच्च ।
पा०६।३।४६ वा०१।
४८ इचि । पा०६।३।१३७।
४९ नाम्नि अष्टनः । पा०६।३।१२५।
५० कपाले हविषि। पा०६।३।४६ वा०२।
५१ गवि युक्ते । पा०६।३।४६ वा०३।
५२ द्वेश्च संख्यायां प्राक् शतात् अनन्यार्थ-
अशीत्योः। पा०६।३।४७+भा०।
५३ त्रेः त्रयस् । पा०६।३।४८।
५४ चत्वारिंशदादौ वा । पा०६।३।४९।
५५ हृदयस्य अणि हृत् । पा०६।३।५०।
५६ लेखे । पा०६।३।५०।
५७ लास-यतोः । पा०६।३।५०।
५८ पादस्य आजि-आति-ग-उप-हते पदः।
पा०६।३।५२।
५९ हिम-हति-काषि-ष्ठन्-यति पद् ।
पा०६।३।५३,५४,५३ वा०१।
६० ऋचः शि । पा०६।३।५५।
६१ नस् नासिकायाः तस्-क्षुद्रे ।
पा०६।१।६३ वा०२।
६२ यति अवर्णे । पा०६।२।६३
वा०२+भा०।
६३ शिरसः शीर्षन् वा ।
पा०६।१।६१+वा०२।
६४ शीर्षः अचि । पा०६।१।६१ वा०३।
६५ नाम्नि उदकस्य उदः ।
पा०६।३।५७।
६६ उत्तरस्य । पा०६।३।५७ वा०१।
६७ वास-वाहने । पा०६।३।५८।
६८ पेषे पिषौ । पा०६।३।५८।
६९ एकहलादौ भाण्डे वा। पा०६।३।५९।
७० मन्थ-ओदन-सक्तु-बिन्दु-वज्र-भार-
हार-वीवध-गाहेषु । पा०६।३।६०।
७१ इको ह्रस्वः । पा०६।३।६१।
७२ न च्विङीयण्-इयुवाम् अभ्रूकुं-
सादीनाम् । पा०६।३।६१ वा०३।
पा०६।३।६१+भा०।
७३ ङी-आपोस्तु अनाम्नोर्बहुलम् ।
पा०६।३।६३,६४।
७४ इष्टका-इषीका-मालानां चित-तूल-
भारिषु । पा०६।३।६५।
७५ खिति ससंख्यस्य मुम् च ।
पा०६।३।६६,६७।
७६ अरुषः । पा०६।३।६७।
७७ कारे अस्तु-सत्य-अगदस्य ।
पा०६।३।७०+वा०१।
७८ लोकस्य पृणे । पा०६।३।७० वा०४।
७९ इत्ये अनभ्याशस्य ।
पा०६।३।७० वा०५।
८० भ्राष्ट्र-अग्न्योः इन्धे ।
पा०६।३।७० वा०६।
८१ अगिलस्य गिले ।
पा०६।३।७० वा०७।

८२ भद्र-उष्णयोः करणे ।
पा०६।३।७० वा०८।

८३ मध्यस्य दिने ।

८४ श्येन-तिलयोः पाते ञे ।
पा०६।३।७१।

८५ रात्रेर्वृतौ वा । पा०६।३।७२।

८६ धेनोर्भव्यायाम् ।
पा०६।३।७० वा०३।

८७ मांसस्य पचि घञ्-ल्युटोर्लोपः ।
काशिका[1] ६।१।१४४।

८८ समः तते । पा०६।१।१४४[1] वा०१।

८९ तुमश्च काम-मनसोः ।
पा०६।१।१४४[1] वा०२+भा०।

९० तव्यादिवद्के अवश्यमः ।
पा०६।१।१४४[1] वा०३।

९१ नञः नः । पा०६।३।७३।

९२ तिङि अवक्षेपे । पा०६।३।७३ वा०१।

९३ ततः अचि नुट् । पा०६।३।७४।

९४ एकात् अन्न-अद्नौ संख्यायाम् ।
पा०६।३।७६+भा०।

९५ नखादयः । पा०६।३।७५।

९६ नगः अप्राणिनि वा । पा०६।३।७७।

९७ सहस्य सः अन्यार्थे । पा०६।३।८२।

९८ नाम्नि । पा०६।३।७८।

९९ अनुपाख्ये । पा०६।३।८०।

१०० अकाले स्वार्थे । पा०६।३।८१।

१०१ ग्रन्थान्ताधिक्ये । पा०६।३।७९।

१०२ न आशिषि अगो-वत्स-हले ।
पा०६।३।८३ + वा०१ + भा०।

१०३ समानस्य पक्षादिषु । पा०६।३।८५,
८६ । काशिका ६।३।८४।

१०४ नाम-गोत्र-रूप-स्थान-वर्ण-वयस्-
वचन-धर्म-जातीये वा ।
पा०६।३।८५। काशिका ६।३।८४।

१०५ उदरे ये । पा०६।३।८८।

१०६ दृग्-दृश-दृक्षे ।
पा०६।३।८९+वा०१।

१०७ वतौ च इदम्-किमोः ईश्-की ।
पा०६।३।८९,९०।

१०८ आः सर्वादीनाम् । पा०६।३।९१।

१०९ विष्वग्-देवयोश्च डद्रिगाञ्च वौ ।
पा०६।३।९२।

११० समः समिः । पा०६।३।९३।

१११ सहस्य सध्रिः । पा०६।३।९५।

११२ तिरसः तिरि अति । पा०६।३।९४।

११३ द्वि-अन्तर्-प्रादेः अनात् अपः ईत् ।
पा०६।३।९७+भा०।

११४ देशे अनूपः । पा०६।३।९८।

११५ समापः नाम्नि ।
पा०६।३।९७ वा०१।

११६ छ-कारके अन्यस्य दुक् ।
पा०६।३।९९।

११७ अषष्ठी-तृतीयस्य आशीर्-आशा-
आस्था-आस्थित-उत्सुक-ऊति-
रागेषु । पा०६।३।९९।

११८ अर्थे वा । पा०६।३।१००।

११९ कोः कत् अचि उत्तरार्धे ।
पा०६।३।१०१।

१२० त्रि-रथ-वदेषु ।
पा०६।३।१०२,१०१ वा०१।

१२१ तृणे जातौ । पा०६।३।१०३।

---

१ अत्र काशिकायाम् इयं कारिका —
"लुम्पते अवश्यमः कृत्ये तुम्-काम-मनसोरपि। समो वा हित-ततयोः मांसस्य पचि-युट्-घञोः"॥

१२२ का अक्ष-पथोः । पा०६।३।१०४।
१२३ ईषदर्थे । पा०६।३।१०५।
१२४ पुरुषे वा । पा०६।३।१०६।
१२५ कवङ्क च उष्णे । पा०६।३।१०७।
१२६ दिक्शब्दात् तीरस्य तारः ।
पा०६।३।१०९ वा०१।
१२७ पृषोदरादीनि । पा०६।३।१०९।
१२८ संख्या-वि-सायादेः अह्नस्य अहन् ङौ वा । पा०६।३।११०।
१२९ विश्वस्य वसु-राटोः दीर्घः ।
पा०६।३।१२८ ।
१३० नरे नाम्नि । पा०६।३।१२९।
१३१ ऋषौ मित्रे । पा०६।३।१३०।
१३२ वन-गिर्योः कोटर-अञ्जनादीनाम् ।
पा०६।३।११७।
१३३ मतौ बह्वचः अनजिरादीनाम् ।
पा०६।३।११९।
१३४ शरादीनाम् । पा०६।३।१२०।
१३५ वले । पा०६।३।११८।
१३६ चितेः कपि । पा०६।३।१२७।
१३७ ढ्लोपे अणः । पा०६।३।१११।
१३८ सहि-वहोः ओत् । पा०६।३।११२।
१३९ कर्णे चिह्नस्य अविष्ट-अष्ट-पञ्च-भिन्न-च्छिन्न-च्छिद्र-स्रुव-स्वस्तिकस्य ।
पा०६।३।११५।
१४० नहि-वृति-वृषि-व्यधि-रुचि-सहि-तनिषु क्वौ । पा०६।३।११६।
१४१ प्रादीनां घञि बहुलम् ।
पा०६।३।१२२।
१४२ इकः काशे । पा०६।३।१२३।
१४३ दः ति । पा०६।३।१२४।
१४४ वहे । पा०६।३।१२१।
१४५ अन्येषामपि । पा०६।३।१३७।
१४६ चौ । पा०६।३।१३८।
१४७ यण इकः । पा०६।३।१३९।

[पञ्चमस्य अध्यायस्य द्वितीयः पादः समाप्तः]

[तृतीयः पादः]

१ प्रकृतेः । पा०६।४।१।
२ हलः । पा०६।४।२।
३ अलुकि ।
४ नामि अतिसृ-चतस्रोः ।
पा०६।४।३,४।
५ नुर्वा । पा०६।४।६।
६ नः । पा०६।४।७।
७ शि-सुटि । पा०६।४।८।
८ स्-महतोर्नुमि । पा०६।४।१०।
९ अप्-तृ-स्वसृ-नप्तृ-नेष्टृ-त्वष्टृ-क्षत्तृ-होतृ-पोतृ-प्रशास्तॄणाम् ।
पा०६।४।११।
१० सौ असंबुद्धौ । पा०६।४।८।
११ अतु-असोः । पा०६।४।१४।
१२ इन्-हन्-पूष-अर्यम्णां शौ च ।
पा०६।४।१२,१३।
१३ अच्-हनोः सनि झलि ।
पा०६।४।१६,१५।

११२ दरिद्रः क्ङिति । पा०६।४।११४ वा०१।

११३ अचि अयुवौ । पा०६।४।११४भा०।

११४ लुङि वा । पा०६।४।११४ वा०३।

११५ अस्-दा-धां हौ एत् अद्विश्च। पा०६।४।११६।

११६ लिटि अनादेशादेः एकहल्मध्ये अतः । पा०६।४।१२०।

११७ थलि इटि । पा०६।४।१२१।

११८ तॄ-फल-भज-त्रपः । पा०६।४।१२२।

११९ राधः हिंसायाम् । पा०६।४।१२३।

१२० वा जॄ-भ्रम-त्रसाम् । पा०६।४।१२४।

१२१ फणादीनां सप्तानाम् । पा०६।४।१२५।

१२२ दम्भ-श्रन्थ-ग्रन्थाम् । पा०६।४।१२० वा०५। काशिका १।२।६।

१२३ मनि-पचि-मचां नास्नि ।

१२४ नशः अङि । पा०६।४।१२० भा०।

१२५ न शस-दद-वादि-अदेङाम् । पा०६।४।१२६।

१२६ यचि अशि-सुटि । पा०६।४।१२९।

१२७ पादः पत् । पा०६।४।१३०।

१२८ वसोर्व उत् । पा०६।४।१३१।

१२९ श्व-युवन्-मघोनाम् अनणादौ । पा०६।४।१३३+वा०१।

१३० अल्लोपः अनः । पा०६।४।१३४।

१३१ षपूर्व-हन्-धृतराज्ञाम् अणि । पा०६।४।१३५।

१३२ ङि-श्योर्वा । पा०६।४।१३६।

१३३ न संयोगात् व-मः। पा०६।४।१३७।

१३४ अचः । पा०६।४।१३८।

१३५ उदः ईत् । पा०६।४।१३९।

१३६ आतः । पा०६।४।१४०।

१३७ विंशतेर्डिति तेः । पा०६।४।१४२।

१३८ अन्त्याऽज्जादेः । पा०६।४।१४३।

१३९ नः अणादौ । पा०६।४।१४४।

१४० कलाप्यादीनाम् । पा०६।४।१४४ वा०१-५।

१४१ अह्नः खे । पा०६।४।१४५।

१४२ असर्व-असंख्य-एकदेशात् टे । पा०५।४।८६,८८।

१४३ समाहारे । पा०५।४।८९।

१४४ एकात् । पा०५।४।९०।

१४५ अन्तिकस्य तमे तादेः । पा०६।४।१४९ वा०६।

१४६ कादेर्बहुलम् । पा०६।४।१४९ वा०८।

१४७ ओः ओत् । पा०६।४।१४६।

१४८ ढे । पा०६।४।१४७।

१४९ यस्य । पा०६।४।१४८।

१५० ङ्याम् । पा०६।४।१४८।

१५१ मत्स्यस्य यः । पा०६।४।१४९ वा०५।

१५२ हलः यञादेः । पा०६।४।१५०।

१५३ सूर्य-अगस्त्ययोः छे च । पा०६।४।१४९ वा०६।

१५४ तिष्य-पुष्ययोर्नक्षत्रे अणि । पा०६।४।१४९ वा०७।

१५५ आपत्यस्य अनाति अणादौ । पा०६।४।१५१।

१५६ क्य-च्व्योः । पा०६।४।१५२।

१५७ बिल्वकीयादीनाम् ईयः । पा०६।४।१५३।

१५८ इष्ठ-इम-ईयस्सु अन्त्याऽजादेः । पा०६।४।१५४,१५५।

१५९ स्थूल-दूर-युव-क्षिप्र-क्षुद्राणां यणादेर्व्वो: एङ च । पा०६।४।१५६।

१६० बहोः एः भू च । पा०६।४।१५८।

१६१ इष्ठे यिक् च । पा०६।४।१५९।

१६२ ज्यायान् । पा०६।४।१६०।

१६३ प्रिय-स्थिर-स्फिर-उरु-गुरु-बहुल-तृप्र-दीर्घ-ह्रस्व-वृद्ध-वृन्दारकाणां प्र-स्थ-स्फ-वर-गर-बंह-त्रप-द्राघ-ह्रस्-वर्ष-वृन्दाः । पा०६।४।१५७,१५६।

१६४ रः ऋतः पृथु-मृदु-कृश-भृश-दृढ-परिवृढानाम् । पा०६।४।१६१+भा०।

१६५ नैकाचः । पा०६।४।१६३।

१६६ अके राजन्य-मनुष्य-यूनाम् । पा०६।४।१६३ वा०३।

१६७ आत्म-अध्वनोः खे । पा०६।४।१६९।

१६८ अभाव-कर्मणोः अनो ये । पा०६।४।१६८।

१६९ अणि । पा०६।४।१६७।

१७० कर्मणः अशीले । पा०६।४।१७२।

१७१ मात् वर्मणः अपत्ये । पा०६।४।१७०।

१७२ हितनाम्नो वा । पा०६।४।१७० वा०१।

१७३ ब्रह्मणो जातौ । पा०६।४।१७१।

१७४ उक्ष्णः । पा०६।४।१७३।

१७५ संयोगात् इनः असमूहे । पा०६।४।१६६। काशिका ६।४।१६६।

१७६ गाथि-विदथि-केशि-गणि-पणिनाम् । पा०६।४।१६५।

१७७ अनपत्ये च । पा०६।४।१६४।

१७८ दाण्डिनायन-हास्तिनायन-जैह्माशिनेय-वासिनायनि-भ्रौण-हत्य-धैवत्य-सारव-ऐक्ष्वाक-हिरण्मयानि । पा०६।४।१७४।

[पञ्चमस्य अध्यायस्य तृतीयः पादः समाप्तः]

[चतुर्थः पादः]

१ युवोः अन-अकौ असः । पा०७।१।१।

२ आयन्-एय्-ईन्-ईय्-इयः फ-ढ-ख-छ-घां ष्फाद्यादीनाम् । पा०७।१।२।

३ ठस्य इकः । पा०७।३।५०।

४ इस्-उस्-उग्-दोर्भ्यः कः । पा०७।३।५१+भा०।

५ तः अशश्वतः । पा०७।३।५१।

६ अनञ्समासे क्त्वः ल्यप् । पा०७।१।३७।

७ ऋत इत् धातोः । पा०७।१।१००।

८ उपान्तस्य । पा०७।१।१०१।

९ उत् ओष्ठ्यात् । पा०७।१।१०२।

१० इदितः नुम् । पा०७।१।५८।

११ शे मुचादीनाम् । पा०७।१।५९।

१२ नशः झलि । पा०७।१।६०।

१३ मस्जः अन्त्यात् पूर्वः । पा०७।१।६०। काशिका ७।१।६०।

१४ जभः अचि । पा०७।१।६१।

१४ इङो गमः । पा०६।४।१६+वा०१।
१५ तनो वा । पा०६।४।१७।
१६ क्रमः त्वि । पा०६।४।१८।
१७ नमः क्विति वौ च । पा०६।४।१५।
१८ ञ्मि च च्छ्-वोः शूठ् । पा०६।४।१९।
१९ ज्वर-त्वर-अव-श्रिवु-मवां सोपान्तस्य । पा०६।४।२०।
२० रात् लोपः । पा०६।४।२१।
२१ प्राग्युवोः अवुग्युग् असिद्धं समानाश्रये । पा०६।४।२२+वा०१२,१४।
२२ श्नान्नः । पा०६।४।२३।
२३ हलः अनिदितः ङ्किति उपान्तस्य । पा०६।४।२४।
२४ शिति अपिति । पा०१।२।४।
२५ लिटि इन्धि-श्रन्थ-ग्रन्थाम् । पा०१।२।६। काशिका १।२।६।
२६ दम्भः स्सनि च । काशिका १।२।११[1]।
२७ स्वञ्जः । पा०१।२।६। काशिका १।२।६।
२८ शपि दंश-सञ्जेश्च । पा०६।४।२५।
२९ रञ्जः । पा०६।४।२६।
३० णौ मृगरमणे । पा०६।४।२४ वा०३।
३१ घञि भाव-करणयोः । पा०६।४।२७।
३२ स्यदो जवे । पा०६।४।२८।
३३ अवोद-एध-ओद्म-प्रश्रय-हिमश्रथाः। पा०६।४।२९।
३४ लङ्गि-कम्प्योः उपताप-शरीर-विकारयोः । पा०६।४।२४ वा०१।
३५ तनादिअनिट्-वनां ल्यपि नमः । पा०६।४।३७,३८।
३६ मो वा । पा०६।४।३७ वा०२।
३७ झलि तिङि अपिति । पा०६।४।३७। पा०१।२।४।
३८ क्ङिति । पा०६।४।३७।
३९ जन-सन-खनाम् आत् । पा०६।४।४२।
४० सनि । पा०६।४।४२।
४१ ये वा । पा०६।४।४३।
४२ तनो यकि । पा०६।४।४४।
४३ सनः क्तिचि लोपश्च । पा०६।४।४५।
४४ लिङि तङि गमः । पा०१।२।१३,११।
४५ सिचि । पा०१।२।१३।
४६ हनः । पा०१।२।१४।
४७ यमः सूचने । पा०१।२।१५।
४८ वा उद्वाहे । पा०१।२।१६।
४९ गमादीनां क्वौ । पा०६।४।४०+भा०।
५० न अञ्चः पूजायाम् । पा०६।४।३०।
५१ क्तिचि दीर्घश्च । पा०६।४।३९।
५२ क्त्वि स्कन्द-स्यन्दोः । पा०६।४।३१।
५३ सेटि । पा०१।२।१८।
५४ वञ्चि-लुञ्चि-थ-फो वा । पा०१।२।२४,२३।
५५ ज-नशः । पा०६।४।३२।
५६ भञ्जेः चिणि । पा०६।४।३३।
५७ शासः क्ङिति शिस् । पा०६।४।३४।
५८ तिङि हलि अपिति । पा०१।२।४।
५९ शा हौ । पा०६।४।३५।
६० हनो जः । पा०६।४।३६।
६१ लिट्-आशीर्लिङ-अतिङशिति । पा०६।४।४६।
६२ भ्रस्जो भर्ज् वा । पा०६।४।४७।
६३ लोपः अतः । पा०६।४।४८।

---

१ अत्र काशिकायाम् सूत्रवृत्तौ "दम्भेर्हल्ग्रहणस्य जातिवाचकत्वात् सिद्धम्—धीप्सति, धिप्सति" इति निर्देशः ।

६४ यकि ।
६५ यस्य हलः । पा०६।४।४९।
६६ क्यस्य वा । पा०६।४।५०।
६७ णेः अनिटि । पा०६।४।५१।
६८ त-तवति इटि । पा०६।४।५२।
६९ अय् आम्-अन्त-आलु-आय्य-इत्नुषु । पा०६।४।५५।
७० ल्यपि लघोः । पा०६।४।५६।
७१ आपः वा । पा०६।४।५७।
७२ क्षेः क्षीः । पा०६।४।५९।
७३ उपदेशे अच्-हन-ग्रह-दृग्भ्यः स्य-सिच्-सीयुट्-तासां भाव-आप्ययोः चिण्वत् इट् वा । पा०६।४।६२।
७४ दीङः लिटि युक् । पा०६।४।६३।
७५ लोपः अचि क्ङिति च आतः । पा०६।४।६४।
७६ ईद् यति । पा०६।४।६५।
७७ मा-स्था-सा-गा-पिब-हाग्-दा-धां हलि। पा०६।४।६६।
७८ लिङि एत् । पा०६।४।६७।
७९ वा संयोगादेः अस्थः । पा०६।४।६८।
८० न ल्यपि । पा०६।४।६९।
८१ मेङः इद् वा । पा०६।४।७०।
८२ लुङ-लङ-लृङक्षु अट् अमाङयोगे । पा०६।४।७१,७४।
८३ अचि श्नु-धातु-भ्रुवां य्-वोः इय्-उवौ। पा०६।४।७७।
८४ द्वित्वे पूर्वस्य असमे । पा०६।४।७८।
८५ स्त्रियाः । पा०६।४।७९।
८६ वा अम्-शसोः । पा०६।४।८०।
८७ इणः यण् । पा०६।४।८१।
८८ एः असंयोगात् अनेकाचः । पा०६।४।८२।
८९ कारक-असंख्यात् ओश्च सुपि असुधियः । पा०६।४।८३,८५। काशिका ६।४।८३।
९० वर्षा-हन्-पुनः-कारात् भुवः । पा०६।४।८४।+भा०।
९१ हु-श्नुवोः अलिटि । पा०६।४।८७।
९२ भुवः वुग् लुङ-लिटोः । पा०६।४।८८।
९३ ऊद् गोहः अचः । पा०६।४।८९।
९४ दुषः णौ । पा०६।४।९०।
९५ वा चित्ते । पा०६।४।९१।
९६ गम-जन-खन-घसां ले लोपः अपिति । पा०६।४।९८।
९७ किति च हनः । पा०६।४।९८।
९८ हु-झलः अनिटः हेः धिः । पा०६।४।१०१+वा०१।
९९ अतः लुक् । पा०६।४।१०५।
१०० उतः असंयोगात् अधातोः । पा०६।४।१०६।
१०१ वाऽस्य व्-मोः । पा०६।४।१०७।
१०२ कृञः ये च । पा०६।४।१०८,१०९।
१०३ अत उत् तत्रापिति । पा०६।४।११०।
१०४ श्न-सोर्लोपः । पा०६।४।१११।
१०५ श्ना-द्विरुक्तयोः आतः । पा०६।४।११२।
१०६ ई हलि तिङि अदा-धः । पा०६।४।११३।
१०७ इद् दरिद्रः । पा०६।४।११४।
१०८ भियो वा । पा०६।४।११५।
१०९ हाकः । पा०६।४।११६।
११० हौ वा । पा०६।४।११७।
१११ यि लोपः । पा०६।४।११८।

१५ रधः । पा०७।१।६१।
१६ इटि लिटि । पा०७।१।६२।
१७ रभः अशप्-लिटोः । पा७।१।६३।
१८ लभः । पा०७।१।६४।
१९ आङो यि । पा०७।१।६५।
२० उपात् स्तुतौ । पा०७।१।६६।
२१ प्रादिभ्यः खल्-घञोः । पा०७।१।६७।
२२ न सु-दुरः केवलात् । पा०७।१।६८।
२३ चिण्-णमोः अप्रादेर्वा । पा०७।१।६९+वा०१।
२४ पुंसुटि उगितः । पा०७।१।७०।
२५ अञ्चः । पा०७।१।७०।
२६ युजेः असमासे । पा०७।१।७१।
२७ शौ अयमः । पा०७।१।७२।
२८ बहूर्जि वहूर्ञ्जि । पा०७।१।७२ वा०४,५।
२९ इकः अचि सुपि । पा०७।१।७३।
३० उक्तपुंस्कस्य रादौ वा । पा०७।१।७४।
३१ अस्थि-दधि-सक्थि-अक्ष्णाम् अनङ् । पा०७।१।७५।
३२ न अञ्ज्ञेः शतुः । पा०७।१।७८।
३३ शौ वा । पा०७।१।७९।
३४ आत् शी-ङ्योः । पा०७।१।८०।
३५ शप्-श्यनः । पा०७।१।८१।
३६ सौ अनडुहः । पा०७।१।८२।
३७ दिवः औत् । पा०७।१।८४।
३८ पथि-मथि-ऋभुक्षाम् आत् । पा०७।१।८५।
३९ शि-सुटि एः । पा०७।१।८६।
४० थः न्थः । पा०७।१।८७।
४१ इनः अचि लोपः । पा०७।१।८८।
४२ पुंसः असुङ् । पा०७।१।८९।
४३ गोः औः स्वार्थे । पा०७।१।९०।
४४ सख्युः अशौ ऐत् । पा०७।१।९२।
४५ ऋत्-उशनस्-पुरुदंशस्-अनेहसां चानङ् सौ । पा०७।१।९३,९४।
४६ न संबुद्धौ । पा०७।१।९२।
४७ वा उशनसः । काशिका ७।१।९४[1]।
४८ क्रुशस्तुनः तृच् । पा०७।१।९५।
४९ स्त्रियाम् । पा०७।१।९६।
५० चतुर्-अनडुहोः आम् । पा०७।१।९८।
५१ अम् सौ संबुद्धौ । पा०७।१।९९।
५२ अष्टनः वा सुपि आत् । पा०७।२।८४। काशिका ७।२।८४।
५३ रायः हलि । पा०७।२।८५।
५४ युष्मद्-अस्मदोः अनादेशे । पा०७।२।८६।
५५ औ-शस्-अम्सु । पा०७।२।८७,८८।
५६ यः अचि । पा०७।२।८९।
५७ शेषे लोपः अदः । पा०७।२।९०।
५८ मान्तस्य युव-आवौ द्विवचने । पा०७।२।९१,९२।
५९ यूय-वयौ जसि । पा०७।२।९३।
६० त्व-अहौ सौ । पा०७।२।९४।
६१ तुभ्य-मह्यौ ङयि । पा०७।२।९५।
६२ तव-ममौ ङसि । पा०७।२।९६।
६३ त्व-मौ एकस्मिन् । पा०७।२।९७।
६४ त्रि-चतुरोः स्त्रियां तिसृ-चतसृ । पा०७।२।९९।

१ "संबोधने तूशनसस्त्रिरूपं सान्तं तथा नान्तमथाप्यदन्तम्"। इत्येवं कारिका वर्तते काशिकायाम् ।

६५ तिसृका । पा०७।२।९९ वा०१।
६६ ऋतः रः अचि । पा०७।२।१००।
६७ जराया जरस् वा । पा०७।२।१०१।
६८ त्यदां तसादिषु च आ द्वेः अः ।
पा०७।२।१०२+वा०१।
६९ किमः कः । पा०७।२।१०३।
७० तः सः सौ । पा०७।२।१०६।
७१ असौ असुकः असकौ ।
पा०७।२।१०६,१०७+वा०१।
७२ इदम् अयम् इयम् ।
पा०७।२।१०८,१११,११०।
७३ दः मः । पा०७।२।१०९।
७४ टा-ओसि अकः अनः ।
पा०७।२।११२।
७५ हलि अश् । पा०७।२।११३।
७६ एतस्य चान्वादेशे द्वितीयायां चैनः ।
पा०२।४।३२,३४।
७७ पत्-निश्-मास्-हृद्-यूषन्-दोषन्
शसादौ वा । पा०६।१।६३।
काशिका ६।१।६३।
७८ लिट्-आशीर्लिङ-अतिङशिति ।
पा०२।४।३५।
७९ अस्तेः भूः । पा०२।४।५२।
८० ब्रुवः वच् । पा०२।४।५३।
८१ चक्षः ख्याञ् । पा०२।४।५४।
८२ वा लिटि । पा०२।४।५५।
८३ न अस्-अन-वर्जनेषु ।
पा०२।४।५४ वा०१०,९।
८४ अजेः वी अयु-घञ्-अप्-क्येषु ।
पा०२।४।५६ वा०१। पा०२।४।५७।
८५ ति किति अदः जग्धः ।
पा०२।४।३६।
८६ ल्यपि । पा०२।४।३६।
८७ लुङ-सन्-अच्-घञ्-अप्सु घस्लृः ।
पा०२।४।३७+वा०१। पा०२।४।३८।
८८ वेञः लिटि वय् वा ।
पा०२।४।४०,४१।
८९ हनः वध लिङि । पा०२।४।४२।
९० लुङि । पा०२।४।४३।
९१ तङि वा । पा०२।४।४४।
९२ एतेः गाः । पा०२।४।४५।
९३ णौ गम् अबोधे । पा०२।४।४६।
९४ सनि । पा०२।४।४७।
९५ इङः । पा०२।४।४८।
९६ गाङ लिटि । पा०२।४।४९।
९७ वा लुङ-लृङोः । पा०२।४।५०।
९८ णौ संश्चङोः । पा०२।४।५१।
९९ वलादेः इट् । पा०७।२।३५।
१०० ग्रहः अस्य अलिटि ईत्
पा०७।२।३७+वा०३।
१०१ वृ-ऋतो वा । पा०७।२।३८।
१०२ न लिङि । पा०७।२।३९।
१०३ सिचि अतङि । पा०७।२।४०।
१०४ इट् सनो वा । पा०७।२।४१।
१०५ लिङ-सिचोः तङि । पा०७।२।४२।
१०६ ऋतः संयोगादेः । पा०७।२।४३।
१०७ स्वृ-सूङ-ऊदितः । पा०७।२।४४।
१०८ रधादिभ्यः । पा०७।२।४५।
१०९ निष्कुषः । पा०७।२।४६।
११० त-तवतोः । पा०७।२।४७।
१११ पू-क्लिशः त्वश्च ।
पा०७।२।५१,५०।
११२ वस-क्षुध इट् । पा०७।२।५२।
११३ अञ्चः ने । पा०७।२।५३।
११४ लुभ आकुले । पा०७।२।५४।

११५ जॄव्रः क्त्वः । पा० ७।२।५५।
११६ व्रश्चिक्त्वा । पा० ७।२।५५।
११७ उदितो वा । पा० ७।२।५६।
११८ ति-इषु-सह-लुभ-रुष-रिषः । पा० ७।२।४८। काशिका ७।२।४८।
११९ सनि इवन्त-ऋध-भ्रस्ज-दम्भु-श्रि-स्वृ-यु-ऊर्णु-भर-ज्ञपि-सनि-तनि-पति-दरिद्रः । पा० ७।२।४९। काशिका ७।२।४९।
१२० स्य-सिचि कृत-चृत-च्छृद-तृद-नृतः । पा० ७।२।५७।
१२१ अनिङ्गमेः इट् । पा० ७।२।५८+वा० १।
१२२ न तङानैः । पा० ७।२।५८।
१२३ वृद्भ्य इट् । पा० ७।२।५९।
१२४ तासश्च क्लृपः । पा० ७।२।६०।
१२५ न स्नोः । पा० ७।२।३६।
१२६ क्रमः । पा० ७।२।३६।
१२७ तङ्विषयात् कर्तरि अतिङः । पा० ७।२।३६ वा० ५।
१२८ वशि । पा० ७।२।८।
१२९ नेः क्षुभ्नादिभ्यः । पा० ७।२।९ वा० १।
१३० एकाचः अश्वि-श्रि-डी-शीङ्-ऊ-स्वा-दिवद्वृतात् । पा० ७।२।१०+भा०।
१३१ निधि-क्षुधि-स्विदि-मनि-पुष-श्लिषः श्यना । पा० ७।२।१० भा०। काशिका ७।२।१०।
१३२ भिदेः अक्लुपः । पा० ७।२।१० भा०।
१३३ य-र-लात् भः । पा० ७।२।१० भा०।
१३४ य-र-ण-गात् मः । पा० ७।२।१० भा०
१३५ शकादिभ्यः । पा० ७।२।१० भा०।
१३६ श्रि-उग्-ऊर्णोः कितः । पा० ७।२।११। काशिका ७।२।११।
१३७ सनः ग्रह-गुहश्च । पा० ७।२।१२।
१३८ स्वार्थे ।
१३९ श्वि-ईदितः त-तवतोः । पा० ७।२।१४।
१४० यतः अपतेर्वा । पा० ७।२।१५। काशिका ७।२।१५।
१४१ आदितः । पा० ७।२।१६।
१४२ भाव-आरम्भयोर्वा । पा० ७।२।१७।
१४३ जपि-वमः । काशिका ७।२।१६[१]।
१४४ वि-आङः श्वसः । काशिका ७।२।१६[१]
१४५ क्षुब्ध-स्वान्त-ध्वान्तं मन्थ-मनस्-तमः । पा० ७।२।१८।
१४६ विरिब्ध-फाण्ट-बाढ-म्लिष्टानि स्वर-अनायास-भृश-अस्पष्टेषु । पा० ७।२।१८।
१४७ धृष-शसः प्रागल्भ्ये । पा० ७।२।१९।
१४८ दृढः स्थूल-बलिनोः । पा० ७।२।२०।
१४९ प्रभौ परिवृढः । पा० ७।२।२१।
१५० कृच्छ्र-गहनयोः कषः । पा० ७।२।२२।
१५१ घुषेः अविशब्दने । पा० ७।२।२३।
१५२ सम्-नि-वेः अर्दः । पा० ७।२।२४।
१५३ अभेः अविदूरे । पा० ७।२।२५।

१ अत्र सूत्रे "[illegible]" इति निर्देशः अतः न पृथक् चान्द्रसूत्रस्य [illegible] ।

१५४ णेः वृत्तं ग्रन्थे । पा०७।२।२६।
१५५ वा दान्त-शान्त-पूर्ण-दस्त-स्पष्ट-
छन्न-ज्ञप्ताः । पा०७।२।२७।
१५६ रुष-हृष-अम-त्वर-संघुष-आस्वनः ।
पा०७।२।२८,२९।
१५७ अर्पितिः । पा०७।२।३० भा०।
१५८ सृ-भृ-वृ-स्तु-द्रु-स्रु-श्रुवः लिटः ।
पा०७।२।१३।
१५९ कृञः असुटः । पा०७।२।१३ वा०१।
१६० ऋतः तासि नित्यानिटस्थलः ।
पा०७।२।६३,६१।
१६१ अचो वा । पा०७।२।६३।
काशिका ७।२।६३।[1]
१६२ पाठे अत्वतः । पा०७।२।६२।
१६३ सृ-जि-दृशः । पा०७।२।६५।
१६४ ऋ-वृ व्येञ्-अदः । पा०७।२।६६,
६४ भा०।
१६५ क्वसोः एकाच्-आत्-घसः ।
पा०७।२।६७।
१६६ वा हन-गम-विद-विश-दृशः ।
पा०७।२।६८+भा०।
१६७ ऋ-हनः स्ये । पा०७।२।७०।
१६८ अञ्जेः सिचः । पा०७।२।७१।
१६९ स्तु-सुञः अतङि । पा०७।२।७२।
१७० यम-रम-नम-आतां सक् च ।
पा०७।२।७३।
१७१ ऋ-स्मि-पूङ-अञ्ज्-अशः सनः ।
पा०७।२।७४।
१७२ कृभ्यः पञ्चभ्यः । पा०७।२।७५।
१७३ रुद्भ्यः तिङः । पा०७।२।७६।
१७४ जनि-ईशि-ईडः स्-ध्वे ।
पा०७।२।७७,७८+भा०
१७५ आने मुग् अतः । पा०७।२।८२।
१७६ आसीनः । पा०७।२।८३ ।

[पञ्चमस्य अध्यायस्य चतुर्थः पादः समाप्तः]

[चान्द्रे व्याकरणे पञ्चमः अध्यायः समाप्तः]

---

१ अत्र सूत्रे "ऋत एव भारद्वाजस्य नान्येषां धातूनाम्"। इति निर्देशे अस्य चान्द्रसूत्रस्य समावेशः ।

[षष्ठः अध्यायः, प्रथमः पादः]

१ मृजेः आत् । पा०७।२।११४।

२ ऋतः अचि वा । पा०७।२।११४।

३ अजागृ-णि-श्वीनां लिचि अतङि आदैच् । पा०७।२।५,१।

४ हलः अचः । पा०७।२।३।

५ न इटि । पा०७।२।४।

६ वा ऊर्णोः । पा०७।२।६।

७ हलादेः उपान्तस्य अश्वस-क्षण-ह्-म्-य्-एदितः अतः । पा०७।२।७,५।

८ वद-व्रज-ल्-रः । पा०७।२।३,२।

९ ञ्णिति । पा०७।२।११५,११६।

१० अचः । पा०७।२।११५।

११ किति च अपत्यादौ अचाम् आदेः । पा०७।२।११८,११७।

१२ देविका-शिंशपा-दीर्घसत्र-श्रेयसामात् । पा०७।३।१।

१३ केकय-मित्रयु-प्रलयानां यादेरियः । पा०७।३।२।

१४ ऐज्भाविनः य्-वः पदान्तात् प्राग् ऐच् । पा०७।३।३।

१५ द्वारादीनाम् । पा०७।३।४।

१६ न्यग्रोधस्य केवलस्य । पा०७।३।५।

१७ न व्यतिहारे । पा०७।३।६।

१८ स्वागतादीनाम् । पा०७।३।७।

१९ श्वादेरिति । पा०७।३।८।

२० पदस्य वा । पा०७।३।९।

२१ उत्तरस्य । पा०७।३।१०।

२२ अंशात् ऋतोः । पा०७।३।११।

२३ सु-सर्व-अर्धात् जनपदस्य । पा०७।३।१२।

२४ अमद्राणां दिशः । पा०७।३।१३।

२५ प्राचां ग्रामाणाम् । पा०७।३।१४।

२६ संख्यायाः संवत्सर-परिमाणस्य असंज्ञा-शाण-कुलिजस्य । पा०७।३।१५,१७। काशिका ७।३।१५,१७।

२७ वर्षस्याभाविनि । पा०७।३।१६।

२८ जाते प्रोष्ठ-भद्रात् पदस्य । पा०७।३।१८। काशिका ७।३।१८।

२९ हृद्-भग-सिन्धोः पूर्वस्य च । पा०७।३।१९।

३० अनुशतिकादीनाम् । पा० ७।३।२०।

३१ देवतानां चार्थे सूक्त-हविषोः । पा०७।३।२१। काशिका ७।३।२१।

३२ नेन्द्रस्य परस्य । पा०७।३।२२।

३३ दीर्घात् वरुणस्य । पा०७।३।२३।

३४ प्राचां नगरस्य । पा०७।३।२४।

३५ जङ्गल-धेनु-वलजस्य वा । पा०७।३।२५।

३६ अर्धात् परिमाणस्य पूर्वस्य तु वा । पा०७।३।२६।

३७ नातः । पा०७।३।२७।

३८ प्रात् वाहनस्य ढे । पा०७।३।२८।

३९ नञः शुचि-ईश्वर-क्षेत्रज्ञ-कुशल-निपुणानाम् । पा०७।३।३०।

४० हनः तः अचिण्-णलोः। पा०७।३।३२।

४१ आतो युग् अणलि । पा०७।३।३३+भा०।

४२ मः सेटः न अवमि-अमि-कम-आचम-विश्रमः । पा०७।३।३४।+भा०।

४३ जनि-वधोः । पा०७।३।३५।

४४ मेर्णलि वा । पा०७।१।६१।
४५ ऋ-री-व्ली-ह्री-क्नूयी-क्ष्मायि-आतां पुग् णौ । पा०७।३।३६।
४६ शा-छा-सा-ह्वा-व्या-वे-पां युक् । पा०७।३।३७।
४७ वः विधूनने जुक् । पा०७।३।३८।
४८ धूञ्-प्रीञोर्नुक् । पा०७।३।३७ वा०१।
४९ लियः स्नेह-विलापने वा । पा०७।३।३९।
५० लो लुक् । पा०७।३।३९।
५१ पातेः । पा०७।३।३७ वा०२।
५२ प्रयोक्तुर्भियः षुक् । पा०७।३।४०।
५३ स्फायो वः । पा०७।३।४१।
५४ शदेः अगतौ तः । पा०७।३।४२।
५५ सत्य-अर्थ-वेदानाम् आयुक् । पा०३।१।२५ वा०२।
५६ मितां ह्रस्वः । पा०६।४।९२।
५७ चिण्-णमोः दीर्घश्च । पा०६।४।९३।
५८ छादेः घे । पा०६।४।९६।
५९ प्रादौ एकस्मिन् । पा०६।४।९६।
६० इस्-मन्-त्रन्-क्विषु । पा०६।४।९७।
६१ चङि उपान्तस्य । पा०७।४।१।
६२ न अग्लोपि-शासृ-ऋदिताम् । पा०७।४।२।
६३ भ्राज-भास-भाष-दीप-जीव-मील-पीडां वा । पा०७।४।३।
६४ कणादीनाम् । पा०७।४।३ भा०।
६५ उः ऋत् । पा०७।४।७।
६६ घ्रः इत् । पा०७।४।६।
६७ स्थः । पा०७।४।५।
६८ पिबः पीप्यः । पा०७।४।४।
६९ देङः दिगि लिटि । पा०७।४।९।
७० अधातोः कीदतोऽसुप आपि । पा०७।३।४४।
७१ य-काभ्यामापः अत्यक्-त्यपो वा । पा०७।३।४६,४४ वा० ५।
७२ भस्त्रा-एषा-अजा-ज्ञा-द्वा-स्वानाम् । पा०७।३।४७+वा०२।
७३ अनुक्तपुंस्कात् आच्च । पा०७।३।४८,४९।
७४ वर्तका शकुनौ । पा०७।३।४५ वा०८।
७५ सूतका-पुत्रका-वृन्दारकाः । पा०७।३।४५ वा०१०।
७६ नरिका । पा०७।३।४४ वा०४।
७७ न यत्-तदोः । पा०७।३।४५।
७८ आशिषि । पा०७।३।४५ वा०३।
७९ क्षिपकादीनाम् । पा०७।३।४५ वा०५।
८० तारका ज्योतिषि । पा०७।३।४५ वा०६।
८१ वर्णका तान्तवे । पा०७।३।४५ वा०७।
८२ अष्टका पितृणाम् । पा०७।३।४५ वा०९।
८३ च-जोः कुः घित्-ण्यतोः । पा०७।३।५२।
८४ न्यङ्क्वादयः । पा०७।३।५३।
८५ ञ्णित्-नि हनो हः । पा०७।३।५४।
८६ द्वित्वहेतौ । पा०७।३।५५।
८७ हेः अचङि । पा०७।३।५६।
८८ सन्-लिटोः जेः । पा०७।३।५७।
८९ चेर्वा । पा०७।३।५८।
९० न क्वादेः । पा०७।३।५९।
९१ अजि-व्रजोः । पा०७।३।६०।
९२ वञ्चेर्गतौ । पा०७।३।६३।

९३ ण्ये आवश्यके । पा०७।३।६५।

९४ ऋच-रुच-याच-त्यजाम् । पा०७।३।६६+वा०३।

९५ वचः अशब्दाख्यायाम् । पा०७।३।६७।

९६ प्रयोज्य-नियोज्यौ शक्ये । पा०७।३।६८।

९७ भोज्यम् अन्ने । पा०७।३।६९।

९८ यजः बहुलम् । पा०७।३।६६,६२।

९९ ओलोपः श्ये । पा०७।३।७१।

१०० वसस्य अचि । पा०७।३।७२।

१०१ लुग् वा दुह-दिह-लिह-गुहां तङि दन्त्ये । पा०७।३।७३।

१०२ शमामष्टानां श्ये दीर्घः । पा०७।३।७४।

१०३ ष्ठिवु-क्लमु-आचमां शिति । पा०७।३।७५+वा०१।

१०४ क्रमः अतङाने । पा०७।३।७६।

१०५ इषु-गमि-यमां छः । पा०७।३।७७। काशिका ७।३।७७।

१०६ पा-घ्रा-ध्मा-स्था-म्ना-दाण्-दृश-शद-सदां पिब-जिघ्र-धम-तिष्ठ-मन-यच्छ-पश्य-शीय-सीदाः । पा०७।३।७८।

१०७ ज्ञा-जनोः जाः । पा०७।३।७९।

१०८ प्वादीनां ह्रस्वः । पा०७।३।८०।

१०९ मिदेः एत् । पा०७।३।८२।

[षष्ठस्य अध्यायस्य प्रथमः पादः समाप्तः]

[द्वितीयः पादः]

१ इकः अदेङ क्रियार्थायाः । पा०७।३।८४।

२ उ-श्नोः । पा०७।३।८४।

३ जुस्-पुकोः । पा०७।३।८३,८६।

४ लघोः उपान्तस्य । पा०७।३।८६।

५ सृजि-दृशोः झलि अम् । पा०६।१।५८।

६ स्पृश-मृश-कृष-तृप-दृप-सृपां वा । पा०६।१।५९।

७ द्विरुक्तस्य न अचि अलिटि । पा०७।३।८७।

८ तिङशिति अपिदाशीर्लिङि । पा०१।२।४,५।

९ जागुः अलिटि । पा०७।३।८५।

१० चिण्णल्ङित्सु । पा०७।३।८५।

११ पिङति । पा०१।१।५।

१२ अतिङि आच तल्लोपे । पा०१।१।४+वा०७।

१३ कुटादीनाम् अञ्णिति । पा०१।२।१।

१४ विजः इटि । पा०१।२।२।

१५ वा ऊर्णोः पा०१।२।३।

१६ त-तवतोः अपू-शी-स्विदि-मिदि-क्ष्विदि-धृषः । पा०१।२।१९,२२।

१७ मृषः अक्षान्तौ । पा०१।२।२०।

१८ उत्उपान्तस्य शब्वतः भाव-आरम्भयोर्वा । पा०१।२।२१+वा०१।

१९ मृड-मृद-गुध-कुष-क्लिश-वद-वस-लुच-ग्रहां क्त्वि । पा०१।२।७,२४,८।

२० ऋत-तृष-मृष-कृशां वा । पा०१।२।२४,२५।

२१ रलः हलादेः इदुतोः सनि च । पा०१।२।२६।

२२ रुद-विद-मुष-ग्रहाम् । पा०१।२।८।
२३ इकः अनिटि । पा०१।२।९।
२४ उपान्तस्य । पा०१।२।१०।
२५ लिङ्-सिचोः तङि । पा०१।२।११।
२६ उः । पा०१।२।१२।
२७ सिचि दा-धा-स्थाम् इच । पा०१।२।१७।
२८ गाङ ईत् स्ये च । पा०१।२।१।
२९ भू-सुवः अद्वेः तिङि । पा०७।३।८८+वा०१।
३० हलि पिति उतः औत् । पा०७।३।८९।
३१ वा ऊर्णोः । पा०७।३।९०।
३२ न अलि । पा०७।३।९१।
३३ तृणहः इम् । पा०७।३।९२।
३४ ब्रुव ईट् । पा०७।३।९३।
३५ यङो वा । पा०७।३।९४।
३६ अस्ति-सिचः अलः । पा०७।३।९६।
३७ रुद्भ्यः पञ्चभ्यः अट् च । पा०७।३।९८।९९।
३८ अदः । पा०७।३।१००।
३९ अतः आत् यञि । पा०७।३।१०१।
४० सुपि । पा०७।३।१०२।
४१ बहुषु झलि एत् । पा०७।३।१०३।
४२ ओसि । पा०७।३।१०४।
४३ टि च आपः । पा०७।३।१०५।
४४ संबोधने सौ । पा०७।३।१०६।
४५ अम्बार्थानाम् अडलेकानां ह्रस्वः पा०७।३।१०७+भा०।
४६ ङी-ऊङः । पा०७।३।१०७।
४७ मातुः मातच् पुत्रे श्लाघ्ये । पा०७।३।१०७ भा०।
४८ इत्-उतोः एङ । पा०७।३।१०८।
४९ जसि । पा०७।३।१०९।
५० ङिति असख्युः । पा०७।३।१११। पा०१।४।७।
५१ पत्युः समासे । पा०१।४।८।
५२ स्त्रियां वा । पा०१।४।९।
५३ ई-ऊभ्यां च आट् । पा०७।३।११२।
५४ सेयुवो वा । पा०१।४।४,६।
५५ स्त्रियाः । पा०१।४।४।
५६ याड् आपः । पा०७।३।११३।
५७ स्मैवतः स्याड् अत् च । पा०७।३।११४।
५८ द्वितीया-तृतीयात् वा । पा०७।३।११५।
५९ ङेः आम् तत्र । पा०७।३।११६,११७।
६० नियः । पा०७।३।११६।
६१ इत्-उद्भ्याम् औत् । पा०७।३।११८।
६२ एङः अत् च । पा०७।३।११९।
६३ टः अस्त्रियां ना । पा०७।३।१२०।
६४ ऋतः ङि-सुटि अत् । पा०७।३।११०।
६५ संयोगादेः लिटि । पा०७।४।१०+ वा०२।
६६ स्कृञः । पा०७।४।१० वा०१।
६७ ऋत्-ऋछ्-ऋणाम् । पा०७।४।११।
६८ ऋ-श्वि-दृशः अङि । पा०७।४।१६,१८।
६९ असु-पत-वचां थुक्-पुम्-उमः पा०७।४।१७,१९,२०।
७० के अणो ह्रस्वः । पा०७।४।१३।
७१ न कपि । पा०७।४।१४।
७२ आपः वा । पा०७।४।१५।
७३ शीङः एत् अलिटि । पा०७।४।२१।
७४ यि क्ङिति अयङः । पा०७।४।२२।
७५ प्रादिभ्य ऊहः ह्रस्वः । पा०७।४।२३।

७६ लिङि इणः । पा०७।४।२४।
७७ आशिषि दीर्घः । पा०७।४।२५।
७८ च्वि-यङ-यक्-क्येषु ।
पा०७।४।२६,२५।
७९ रीङ ऋतः ये च । पा०७।४।२७।
८० रिङ श-यग्-आशीर्लिङि ।
पा०७।४।२८।
८१ ऋ-संयोगाद्योः अत् । पा०७।४।२९।
८२ यङि । पा०७।४।३०।
८३ हनः घ्नी हिंसायाम् ।
पा०७।४।३० वा०१।
८४ ई घ्रा-ध्मोः । पा०७।४।३१।
८५ अस्य च्वौ । पा०७।४।३२।
८६ क्यचि । पा०७।४।३३।
८७ न क्षुधि अशनस्य । पा०७।४।३४।
८८ धनस्य तृष्णायाम् । पा०७।४।३४।
८९ उदन्यः । पा०७।४।३४।
९० वृष-अश्वयोः मैथुने सुक् ।
पा०७।१।५१ वा०१।
९१ असुक् च अत्तुम् ।
पा०७।१।५१ भा०।
९२ दो-सो-मा-स्याम् इत् ति किति ।
पा०७।४।४०।
९३ छो वा । पा०७।४।४१।
९४ धाञः हिः । पा०७।४।४२।
९५ हाकः त्वि । पा०७।४।४३।
९६ दो दत् । पा०७।४।४६।
९७ प्रादेः अचः तः । पा०७।४।४७।
९८ अपो भि । पा०७।४।४८।
९९ सि सः लिङतिङि । पा०७।४।४९।
१०० तास्-असोः रि च लोपः
पा०७।४।५०,५१।
१०१ ह एति । पा०७।४।५२।
१०२ क्यङि वा । पा०३।१।११ वा०१।
१०३ ओजस्-अप्सरसोः ।
पा०३।१।११ वा०२।
१०४ य्-इवर्णयोः दीधी-वेव्योः ।
पा०७।४।५३।
१०५ यण् अचि । पा०६।१।७६।
१०६ मि-मी-मा-रभ-लभ-शक-पत-पद-दा-
धाम् अचः सि सनि इस् ।
पा०७।४।५४। काशिका ७।४।५४।
१०७ राधः हिंसायाम् । पा०७।४।५४
वा०१।
१०८ ज्ञपि-आप्-ऋधाम् ईत् ।
पा०७।४।५५।
१०९ दम्भः इत् च । पा०७।४।५६।
११० अव्याप्यस्य मुचेः ओत् वा ।
पा० ७।४।५७।
१११ द्वित्वे पूर्वस्यात्र लोपः ।
पा०७।४।५८।
११२ हलः अनादेः । पा०७।४।६०।
११३ खयि खरः । पा०७।४।६१+वा०१।
११४ चर् । पा०८।४।५४।
११५ झषः जश् पा०८।४।५४,५३।
११६ कु-होः चुः । पा०७।४।६२।
११७ न कुङः यङि । पा०७।४।६३।
११८ उः अत् । पा०७।४।६६।
११९ ह्रस्वः । पा०७।४।५९।
१२० द्युति-स्वाप्योः यणः इक् ।
पा०७।४।६७।
१२१ व्ययः लिटि । पा०७।४।६८।
१२२ दीर्घः अपिति इणः । पा०७।४।६९।
१२३ अतः आदेः । पा०७।४।७०।

१२४ नुक् च अनेकहलः। पा०७।४।७१।
१२५ अश्नोतेः । पा०७।४।७२।
१२६ भुवः अत् । पा०७।४।७३।
१२७ निजां लुकि एत् । पा०७।४।७५।
१२८ ऋ-पृ-भृ-मा-हाङाम् इत् । पा०७।४।७७,७६।
१२९ सनि अतः । पा०७।४।७९।
१३० ओः पु-यण्-जि अपरे। पा०७।४।८०।
१३१ स्रु-श्रु-द्रु-प्रु-प्लु-च्यूनां वा । पा०७।४।८१।
१३२ आ-अदेङ यङि। पा०७।४।८२,८३।
१३३ नीग् वञ्च-स्रंसु-ध्वंसु-भ्रंशु-कस-पत-पद-स्कन्दाम् । पा०७।४।८४।
१३४ नमः अतः नुक् । पा०७।४।८५।
१३५ जप-जभ-दह-दश-भञ्ज-पशाम् । पा०७।४।८६।
१३६ चर-फलोः । पा०७।४।८७।
१३७ ति च उत् अतः। पा०७।४।८८,८९।
१३८ रीग् ऋत्वतः । पा०७।४।९०+ वा०१।
१३९ रुग्-रिकौ च लुकि । पा०७।४।९१।
१४० सन्वत् लघुनि णौ चङि अनग्लोपे । पा०७।४।९३।
१४१ दीर्घः लघोः । पा०७।४।९४।
१४२ स्मृ-दृ-त्वर-प्रथ-म्रद-स्तृ-स्पशाम् अत् । पा०७।४।९५।
१४३ वा वेष्टि-चेष्टयोः । पा०७।४।९६।
१४४ ईत् च गणः । पा०७।४।९७।

[षष्ठस्य अध्यायस्य द्वितीयः पादः समाप्तः]

[तृतीयः पादः]

१ वीप्सा-आभीक्ष्ण्ययोः द्वे ।पा०८।१।४। पा०८।१।१।
२ परेः वर्जने वाक्ये वा । पा०८।१।५+ वा०१,२।
३ अधि-उपरि-अधसां सामीप्ये । पा०८।१।७।
४ वाक्यादेः आमन्त्रितस्य असूया-संमत्योः । पा०८।१।८।
५ एकस्य सुप्लुक्। पा०८।१।९+वा०३।
६ आबाधे पुंवच्च ।पा०८।१।१०+९ वा०३।
७ प्रकारे गुणस्य । पा०८।१।१२।
८ अकृच्छ्रे प्रिय-सुखयोर्वा । पा०८।१।१३।
९ व्यतिहारे सर्वादीनां सुर्बहुलम् । पा०८।१।१२ वा०११।
१० परस्य अपुंसि आम् । पा०८।१।१२ वा०१२।
११ यथास्वे यथायथम् । पा०८।१।१४।
१२ द्वन्द्वं रहस्य-मर्यादा-व्युत्क्रान्ति-यज्ञ-पात्रप्रयोगेषु । पा०८।१।१५।
१३ अत्यन्तसहचरिते लोकविज्ञाते । पा०८।१।१५ वा०१।
१४ संभ्रमे यावद्बोधम् । पा०८।१।१२ वा०५+भा०।
१५ अपादादौ पदादेकवाक्ये । पा०८।१।१६,१७,१८ वा०५।

१६ युष्मद्-अस्मदोः षष्ठी-चतुर्थी-द्वितीयान्तयोः वाम्-नौ वा । पा०८।१।२०,२६ भा०।

१७ बहुवचनस्य वस्-नसौ। पा०८।१।२१।

१८ एकवचनस्य ते-मे । पा०८।१।२२।

१९ त्वा-मौ द्वितीयायाः । पा०८।१।२३।

२० अन्वादेशे ।पा०८।१।२६ वा०१।

२१ सपूर्वात् प्रथमान्तात् वा । पा०८।१।२६।

२२ न च-वा-ह-अह-एवयोगे । पा०८।१।२४।

२३ दृश्यर्थे अनालोचने । पा०८।१।२५।

२४ आमन्त्रितं पूर्वम् असद्वत् । पा०८।१।७२।

२५ न सामान्यवचनमेकार्थे । पा०८।१।७४ भा०।

२६ बहुत्वे वा । पा०८।१।७४।

२७ पूर्वत्र असिद्धम् । पा०८।२।१।

२८ सुपि न लोपः । पा०८।२।२।

२९ न नि मुः । पा०८।२।३।

३० सिज्लोपः एकादेशे । पा०८।२।६ वा० ५।

३१ ष-ठनि क्तादेशः। पा०८।२।६ वा०७।

३२ प्लुतस्तुकि । पा०८।२।६ वा०११।

३३ श्चुटि श्चुः। पा०८।२।६ वा०१२।

३४ द्वित्वे परसवर्णः । पा०८।२।६ वा०१४।

३५ मात् उपान्ताच्च मतोर्वः। पा०८।२।९।

३६ झयः । पा०८।२।१०।

३७ नाम्नि । पा०८।२।११।

३८ न यवादिभ्यः । पा०८।२।९।

३९ अष्ठीवत्-चक्रीवत्-कक्षीवत्-उदन्वत्-रुमण्वत्-चर्मण्वती । पा०८।२।१२,१३।

४० राजन्वान् सौराज्ये । पा०८।२।१४।

४१ कृपो रो लोऽकृपणादीनाम् । पा०८।२।१८+भा०।

४२ प्रादीनाम् अयतौ । पा०८।२।१९।

४३ ग्रो यङि । पा०८।२।२०।

४४ अचि वा । पा०८।२।२१।

४५ परेः घ-अङ्क-योगेषु । पा०८।२।२२+भा०।

४६ कपिरिकादीनाम् । पा०८।२।१८ भा०।

४७ डः ।

४८ सुपः प्रकृतेर्नो लोपः । पा०८।२।७।

४९ न संबुद्धौ । पा०८।२।८।

५० नपुंसके वा । पा०८।२।८ वा०२।

५१ लुपि बलि तद्वत् । पा०१।४।१७,१८।

५२ संयोगस्य पदस्य । पा०८।२।२३।

५३ रात् सः । पा०८।२।२४।

५४ धि सङि । पा०८।२।२५,२२ वा०१।

५५ झलः झलि । पा०८।२।२६।

५६ ह्रस्वात् । पा०८।२।२७।

५७ इटः ईटि । पा०८।२।२८।

५८ स्-कोः संयोगाद्योः अन्ते च । पा०८।२।२९।

५९ चोः कुः । पा०८।२।३०।

६० क्विनः । पा०८।२।६२।

६१ नग् वा । पा०८।२।६३।

६२ हः ढः । पा०८।२।३१।

६३ दादेर्धातोः घः । पा०८।२।३२।

६४ वा द्रुह-मुह-ष्णुह-ष्णिहाम् । पा०८।२।३३।

६५ नह-आहो धः । पा०८।२।३४,३५।
६६ व्रश्च-भ्रस्ज-सृज-मृज-यज-राज-भ्राज-शां षः । पा०८।२।३६।
६७ झलः जश् । पा०८।२।३९।
६८ त-सोस्त-सौ मत्वर्थे । पा०१।४।१९।
६९ झषः एकाचः स्-ध्वोः बशो भष् । पा०८।२।३७।
७० धस्त-थोश्च । पा०८।२।३८।
७१ त-थोः धः अधः । पा०८।२।४०।
७२ सि ष-ढोः कः । पा०८।२।४१।
७३ मो नो म्वोश्च । पा०८।२।६४,६५।
७४ र-दात् त-त्वत्तोर्दश्च । पा०८।२।४२।
७५ यण्संयोगात् आतः । पा०८।२।४३।
७६ ॠ-ल्वादिभ्यः क्तिनश्च । पा०८।२।४४+वा०१।
७७ पूर्वः नाशे । पा०८।२।४४ वा०३।
७८ दु-ग्वोः ऊ च । पा०८।२।४४ वा०२।
७९ सेः ग्रासे । पा०८।२।४४ वा०४।
८० ओदितः । पा०८।२।४५।
८१ क्षेः क्षी च । पा०८।२।४६।
८२ वा भाव-आक्रोश-दैन्येषु । पा०६।४।६०,६१।
८३ श्यः अस्पर्शे । पा०८।२।४७।
८४ अञ्चः अनवधौ । पा०८।२।४८।
८५ अद्यूते दिवः । पा०८।२।४९।
८६ अवाते निर्वाणः । पा०८।२।५०।
८७ घ्रा-त्रा-अर्ति-ह्री-नुद-उन्द-विदो वा । पा०८।२।५६,६०।
८८ प्रस्त्यः मः । पा०८।२।५४।
८९ क्षः । पा०८।२।५३।
९० शुषः कः । पा०८।२।५१।
९१ पचो वः । पा०८।२।५२।
९२ ह्लादः ह्लद् । पा०६।४।९५।
९३ क्तिनि । काशिका ६।४।९५।
९४ फुल्ल-क्षीव-कृश-उल्लाघाः । पा०८।२।५५।
९५ न ध्या-ख्या-प-मूर्छि-मदाम् । पा०८।२।५७।
९६ वित्तः प्रतीत-भोगयोः । पा०८।२।५८।
९७ भित्तं शकले । पा०८।२।५९।
९८ ससजुषः रः । पा०८।२।६६।
९९ अह्नः । पा०८।२।६८।
१०० लुकि अरि रः । पा०८।२।६९।
१०१ प्रचेतसः राजनि वा । पा०८।२।७०वा०१।
१०२ पत्यादिषु अहरादीनाम् । पा०८।२।७० भा०।
१०३ दः अनडुहः । पा०८।२।७२।
१०४ वसु-स्रंसु-ध्वंसां सः । पा०८।२।७२।
१०५ तिपि । पा०८।२।७३।
१०६ सिपि रुर्वा । पा०८।२।७४।
१०७ दः । पा०८।२।७५।
१०८ धातोः र्-वोः अनचि इकः दीर्घः । पा०८।२।७६,७७।
१०९ न सुपि, यचि । पा०८।२।७९।
११० द्वित्वे । पा०८।२।७८ वा०१।
१११ कुरु-च्छुरोः । पा०८।२।७९।
११२ अदसः अत्वे दात् उ दः मः । पा०८।२।८०।
११३ अद्रौ वा । पा०८।२।८० भा०।
११४ एत ईत् । पा०८।२।८१।
११५ वाक्याचां प्लुतः अन्त्यः । पा०८।२।८२।
११६ दूराह्वाने । पा०८।२।८४।

११७ अनन्त्येऽपि हे-हैं। पा० ८।२।८५।

११८ गुरु एकैकम् अनृत् वा। पा० ८।२।८६।

११९ अस्त्री-शूद्रप्रत्यभिवादे। पा० ८।२।८३+वा० १।

१२० प्रत्युक्तौ हिः। पा० ८।२।९३।

१२१ उपालम्भे। पा० ८।२।९४।

१२२ अङ्गयुक्तं तिङ आकाङ्क्षम्। पा० ८।२।९६।

१२३ भर्त्सने द्विरुक्तं पर्यायेण। पा० ८।२।९५+वा० १।

१२४ असूया-संमत्योः पूर्वम्। पा० ८।२।१०३।

१२५ विचारे। पा० ८।२।९७,९८।

१२६ प्रतिश्रुतौ।। पा० ८।२।९९।

१२७ पूजिते। पा० ८।२।१००।

१२८ चिति उपमार्थे। पा० ८।२।१०१।

१२९ निन्दा-आशीः-प्रैष्येषु तिङ आकाङ्क्षम्। पा० ८।२।१०४।

१३० अनन्त्यस्यापि प्रश्न-आख्यानयोः। पा० ८।२।१०५।

१३१ एचः प्रश्नान्त-पूजा-विचार-प्रत्यभिवादेषु आत् इत्-उत्परः पा० ८।२।१०७+वा० २+भा०।

१३२ न एतो द्वित्वे। पा० ८।२।१०७।

१३३ तयोः य्-वौ अचि। पा० ८।२।१०८।

[षष्ठस्य अध्यायस्य तृतीयः पादः समाप्तः]

[चतुर्थः पादः]

१ समः सुटि सः। पा० ८।३।५,१।

२ पुमः खयि अमि। पा० ८।३।६।

३ नः छवि अप्रशानः[1]। पा० ८।३।७।

४ कान् कानि। पा० ८।३।१२।

५ नॄन् पे रः वा। पा० ८।३।१०। काशिका ८।३।१०।

६ अत्र अनुनासिकः पूर्वस्य। पा० ८।३।२।

७ अनुस्वारः। पा० ८।३।४।

८ हलि मः। पा० ८।३।२३,२२।

९ नश्च अनन्त्यस्य झलि। पा० ८।३।२४।

१० सम्राट्। पा० ८।३।२५।

११ हे म-न-य-व-लपरे ते वा। पा० ८।३।२६,२७,२६ वा० १।

१२ ङ-णोः कुक्-टुकौ शरि। पा० ८।३।२८।

१३ डः सः धुट्। पा० ८।३।२९।

१४ नः। पा० ८।३।३०।

१५ शि तुक्। पा० ८।३।३१।

१६ मयः उञः अचि वः। पा० ८।३।३३,३२।

१७ ङमो ह्रस्वात् द्वे। पा० ८।३।३२।

१८ ढे अनादौ ढलोपः। पा० ८।३।१३+वा० १।

१९ रः रि। पा० ८।३।१४।

२० विरामे विसर्जनीयः। पा० ८।३।१५।

२१ खरि। पा० ८।३।१५।

---

१ मूलसूत्रपाठपुस्तके 'अप्रशान्' इति।

२२ शर्परे । पा०८।३।३५।
२३ रोः सुपि । पा०८।३।१६।
२४ भो-भगो-अघोऽभ्यः अशि लोपः । पा०८।३।१७,२०।
२५ आत् । पा०८।३।१७।
२६ यः अचि वा अनुञि । पा०८।३।१७,२१,२२।
२७ व्-योः ईषत्स्पृष्टौ च । पा०८।३।१८।
२८ छवि रः सः । पा० ८।३।३४।
२९ वा शरि । पा०८।३।३६।
३० खरि लोपः । पा०८।३।३६ वा०१।
३१ कु-प्वोः)(क ⁐पौ । पा०८।३।३७।
३२ ससंख्यस्य अनादौ सः । पा०८।३।३८+वा०१।
३३ रोः काम्ये । पा०८।३।३८ वा०२।
३४ इणः षः । पा०८।३।३९।
३५ निर्-दुर्-बहिर्-आविर्-चतुर्-प्रादुर्-पुरसाम् । पा०८।३।४१,४०।
३६ सुचो वा । पा०८।३।४३।
३७ इस्-उसोः संबन्धे । पा०८।३।४४।
३८ प्लुतात् ति च । पा०८।३।४१ वा०२।
३९ समासे अनुत्तरस्य । पा०८।३।४५।
४० अतः कृ-कमि-कंस-कुम्भ-पात्र-कुशा-कर्णीषु ससंख्यस्य । पा०८।३।४६।
४१ अधः–शिरसोः पदे । पा०८।३।४७।
४२ नमसः । पा०८।३।४०।
४३ कृञि वा । पा०१।४।७४।
४४ तिरसः । पा०१।४।७२।
४५ कस्कादयः । पा०८।३।४८।
४६ कोश्च आदेश-सनादि-शासि-वसि-घसां सः । पा०८।३।५७,५९,६०,५६।
४७ नुम्-विसर्जनीय-शर्व्यवाये । पा०८।३।५८।
४८ स्तोः षणि: । पा०८।३।६१।
४९ णेः अस्विदि-स्वदि-सहः । पा०८।३।६१,६२।
५० प्रादीनां सु-सू-सो-स्तु-स्तुभ-स्था-सेनि-सेध-सिच-सञ्ज-स्वञ्जाम् पा०८।३।६५।
५१ सदः अप्रतेः । पा०८।३।६६।
५२ स्तम्भेः । पा०८।३।६७।
५३ अवात् औजित्य-आलम्बन-अविदूर्येषु । पा०८।३।६८।
५४ वेश्च स्वनः भोजने । पा०८।३।६९।
५५ नि-परेश्च सेव-सिवु-सह-सुटाम् पा०८।३।७०।
५६ स्तु-स्वञ्ज-सिवादीनां वा अड्व्यवाये । पा०८।३।७०,७१।
५७ स्वादीनाम् । पा०८।३।६३।
५८ स्थादीनां द्विरुक्तेन तस्य च । पा०८।३।६४।
५९ नेः सय-सितयोः । पा०८।३।७०।
६० वि-परेः पा०८।३।७०।
६१ निर्-अभि-अनोश्च स्यन्दः अप्राणिनि वा । पा०८।३।७२।
६२ वेः स्कन्दः अत-तवतोः । पा०८।३।७३।
६३ परेः । पा०८।३।७४।
६४ स्फुरि-स्फुलोः निर्-नि-विभ्यः । पा०८।३।७६।
६५ वेः स्कभ्नः षः । पा०८।३।७७।
६६ समासे अङ्गुलेः सङ्गः । पा०८।३।८०।
६७ भीरोः स्थानम् । पा०८।३।८१।
६८ अग्नेः स्तुत् । पा०८।३।८२।
६९ ईतः सोमः । पा०८।३।८२+वा०१।
७० ज्योतिर्-आयुषश्च स्तोमः । पा०८।३।८३,८२।

७१ मातृ-पितृभ्यां स्वसा। पा०८।३।८४।
७२ अलुकि वा। पा०८।३।८५।
७३ अभिनिष्टानो वर्णे। पा०८।३।८६।
७४ प्रादुः-प्रादिभ्यः यचि अस्तेः। पा०८।३।८७।
७५ सु-वि-निर्-दुर्भ्यः सम-सूति-सुपाम्। पा०८।३।८८।
७६ नदीष्णः कुशले। पा०८।३।८९।
७७ नेः स्नातः पा०८।३।८९।
७८ प्रतेः सूत्रे। पा०८।३।९०।
७९ प्रष्ठः अग्रगामी। पा०८।३।९२।
८० वेः स्त्रः नाम्नि। पा०८।३।९३,९४।
८१ गवि-युधेः स्थिरः। पा०८।३।९५।
८२ कपेः स्थलस्य। पा०८।३।९१।
८३ वि-कु-शमि-परिभ्यः। पा०८।३।९६।
८४ अम्ब-आम्ब-गो-भूमि-द्वि-त्रि-कु-शेकु-शङ्कु-अङ्गु-मञ्जि-पुञ्जि-बर्हिस्-दिवि-अग्निभ्यः स्थः। पा०८।३।९७।
८५ एति संज्ञायाम् अकोः। पा०८।३।९९।
८६ नक्षत्रात् इतो वा। पा०८।३।१००।
८७ ह्रस्वात् सुपः ति। पा०८।३।१०१।
८८ निसः तपि सकृत्। पा०८।२।१०२।
८९ सुषामादयः। पा०८।३।९८।
९० न आदि-अन्तयोः। पा०८।३।१११।
९१ सात्। पा०८।३।१११।
९२ सिचः यङि। पा०८।३।११२।
९३ सिधः गतौ। पा०८।३।११३।
९४ नि-प्रतेः स्तब्धः। पा०८।३।११४।
९५ सोढः। पा०८।३।११५।
९६ प्रादिभ्यः स्तम्भु-सिवु-सहां चङि। पा०८।३।११६+वा०१।
९७ सोः स्य-सनोः। पा०८।३।११७।
९८ सदि-स्वञ्जेः लिटि। पा०८।३।११८+भा०१।
९९ धातोः सीलृङ्लोश्च धः ढः। पा०८।३।७८।
१०० वेटः। पा०८।३।७९।
१०१ र-पात् नः णः एकपदे। पा०८।४।१।
१०२ पूर्वपदात् नाम्नि। पा०८।४।३।
१०३ वनं पुरगा-मिश्रका-सिध्रका-शारिका-अग्रे-कोटरात्। पा०८।४।४।
१०४ प्र-निर्-अन्तः-शर-इक्षु-प्लक्ष-आम्र-कार्ष्य-पीयूक्षा-खदिरात्। पा०८।४।५।
१०५ वा औषधिवृक्षात् द्वि-त्र्यचः अनिरिकादेः पा०८।४।६+भा०।
१०६ अह्नः अतः। पा०८।४।७।
१०७ त्रि-चतुर्भ्यां हायनो वयसि। पा०४।१।२७ भा०। काशिका ४।१।२७।
१०८ वाहनं वाह्यात्। पा०८।४।८।
१०९ पानं देशे। पा०८।४।९।
११० वा भाव-करणयोः। पा०८।४।१०।
१११ गिरिनद्यादीनाम्। पा०८।४।१० वा०१।
११२ समस्तान्त-समीपयोः अयुवादीनाम्। पा०८।४।११ वा०१,३।
११३ कुमत्-एकाचः। पा०८।४।१२,१३।
११४ प्रादि-अन्तरः अदुरः णः। पा०८।४।१४। पा०१।४।६५ वा०१। पा०१।४।६० वा०७।
११५ हिनु-मीना-आनि। पा०८।४।१५,१६।

११६ नेः गद-नद-पत-पद-दा-धा-मा-वा-दिह्-वह्-शम-हन-या-सा-द्रा-प्सा-चि-वपिषु । पा०८।४।१७।

११७ अक-खादौ अषान्ते पाठे वा । पा०८।४।१८।

११८ अनः अन्ते च । पा०८।४।१९,२० ।

११९ हनः । पा०८।४।२२।

१२० व्-मोः वा । पा०८।४।२३।

१२१ अन्तरः अयनस्य च अदेशे । पा०८।४।२४,२५।

१२२ सुपि अचः । पा०८।४।२६।

१२३ निर्विण्णः । पा०८।४।२९ वा०१।

१२४ णेर्वा । पा०८।४।३०।

१२५ हलादेः इक्उपान्तात् । पा०८।४।३१।

१२६ नुमि इच्-आदेर्हलः । पा०८।४।३२।

१२७ वा निक्ष-निंस-निन्दाम् । पा०८।४।३३।

१२८ न भा-भू-पूञ्-कमि-गमि-प्यायी-वेपाम् । पा०८।४।३४+वा०१।

१२९ षः पदे । पा०८।४।३५।

१३० नशेः ष्-कः । पा०८।४।३६+वा०१।

१३१ अन्ते । पा०८।४।३७।

१३२ चु-टु-तु-ल-शर्व्यवाये । पा०८।४।२।

१३३ सुपा अनाङ्-मयेन । पा०८।४।३८। पा०८।४।२। पा०८।४।३८ भा०।

१३४ घा हः । पा०८।४।२२। पा०८।४।२। वा०४,५।

१३५ क्षुभ्नादीनाम् । पा०८।४।३९।

१३६ स्-तोः श्-चु-ष्-टुभ्यां तौ । पा०८।४।४०,४१।

१३७ न टोः अनवति-नगर्योः आदेः । पा०८।४।४२+भा०।

१३८ तोः षि । पा०८।४।४३।

१३९ शात् । पा०८।४।४४।

१४० यरः ञमि ञम् वा । पा०८।४।४५।

१४१ अचः र-हात् द्वे । पा०८।४।४६।

१४२ अनचि । पा०८।४।४७।

१४३ यणः मयः । पा०८।४।४७ वा०१।

१४४ शरः खयः । पा०८।४।४७ वा०२।

१४५ न आक्रोशे पुत्रस्य आदिनि तत्परे च । पा०८।४।४८+वा०१।

१४६ शरः अचि रात् । पा०८।४।४९।

१४७ दीर्घात् । पा०८।४।५२।

१४८ खरि चर् झलः । पा०८।४।५५।

१४९ वा विरामे । पा०८।४।५६।

१५० अणः अनुनासिकः । पा०८।४।५७।

१५१ अनुस्वारस्य ययि यम् । पा०८।४।५८।

१५२ पदादौ वा । पा०८।४।५९।

१५३ तोः लि । पा०८।४।६०।

१५४ उदः स्था-स्तम्भोः तः । पा०८।४।६१।

१५५ हलः झरां झरि सस्थाने लोपो वा । पा०८।४।६५।

१५६ झयः हो झय् । पा०८।४।६२।

१५७ शः छः अमि । पा०८।४।६३।

१५८ चयः शरि द्वितीयः । पा०८।४।४८। वा०३।

[षष्ठस्य अध्यायस्य चतुर्थः पादः समाप्तः]

॥ चान्द्रे व्याकरणे सूत्रस्य षष्ठः अध्यायः समाप्तः ॥

[आचार्यचन्द्रगोमिकृतं चान्द्रं व्याकरणं मूलसूत्रपाठतः समाप्तम्]

अकारादिक्रमेण चान्द्रव्याकरणसूत्रनिर्दिष्टगणानां तत्तत्सूत्रनिर्देशपूर्वकं सूचिः ।

५६ क्रीआदि (धातुगण) १।१।१०१।
५७ क्रोडादि २।३।६७।
५८ क्रौडिआदि २।३।८४।
५९ क्षिपकादि ६।१।७९।
६० क्षुभ्नादि ६।४।१३५।
६१ खलादि ३।१।५७।
६२ गमादि (धातुगण) ५।३।४९।
६३ गर्गादि २।४।२४।
६४ गवाश्वादि २।२।५७।
६५ गहादि ३।२।५८।
६६ गिरिनद्यादि ६।४।१११।
६७ गृष्टयादि २।४।७७।
६८ गोआदि ४।१।२।
६९ गोणीआदि २।२।८७।
७० गोपवनादि २।४।११६।
७१ गोसदादि ४।२।१५६।
७२ गौरादि २।३।३७।
७३ ग्रहादि (धातुगण) १।१।१४०।
५।४।१२९।
७४ चत्वारिंशत्आदि ५।२।५४।
७५ चुरादि (धातुगण) १।१।४५।
७६ चूडादि ४।१।१३०।
७७ छत्रादि ३।४।६३।
७८ छेदादि ४।१।७५।
७९ जक्षादि (धातुगण) १।४।५।
८० ज्योत्स्नादि ४।२।१०७।
८१ ज्वलादि (धातुगण) १।१।१४६।
८२ डतरादि (प्रत्यय) २।१।२५।
८३ तनादि (धातुगण) १।१।६४।
१।१।९४।
५।३।३५।
८४ तारकादि ४।२।३७।
८५ तालादि ३।३।१०६।
८६ तिकादि २।४।८६।
८७ तिककितवादि २।४।११५।
८८ तिष्ठद्गुआदि २।२।१०।
८९ तुदादि (धातुगण) १।१।९२।
९० तौल्वल्यादि २।४।१२२।
९१ त्यदादि १।२।५१।
२।४।८९।
३।२।२८।
५।४।६८।
९२ दण्डादि ४।१।७९।
९३ दधिपयस्आदि २।२।६६।
९४ दामनि-आदि ४।३।९२।
९५ दिवादि (धातुगण) १।१।८७।
९६ दिश्आदि ३।३।१७।
९७ दृढादि ४।१।१४०।
९८ देवादि ४।४।४०।
९९ देवव्रतादि ४।१।१०९।
१०० देवासुरादि ३।३।५७।
३।३।८९।
१०१ द्युतादि १।१।७३।
१।४।१४३।
१०२ द्वारादि ६।१।१५।
१०३ द्विदण्डिआदि ४।४।११७।
१०४ धूमादि ३।२।४१।
१०५ नखादि ५।२।९५।
१०६ नडादि २।४।३५।
१०७ नद्यादि ३।२।६।
१०८ नन्दादि (धातुगण) १।१।१४०।
१०९ नवयज्ञादि ४।२।१२४।
११० निकटादि ३।४।७४।
१११ निजादि (धातुगण) ६।२।१२७।

११२ नौ-आदि २।१।८०।
४।२।११८।
११३ न्यङ्कुआदि ६।१।८४।
११४ पक्षादि ५।२।१०३।
११५ पत्यादि ६।३।१०२।
११६ परदारादि ३।४।४५।
११७ परिमुखादि ३।३।२३।
११८ पर्पादि ३।४।८।
११९ पर्शुआदि ४।३।९३।
१२० पाण्यादि १।२।१४।
१२१ पात्रादि २।२।८०।
१२२ पामन्-आदि ४।२।१०४।
१२३ पारस्करादि ५।१।१४२।
१२४ पाशादि ३।१।५६।
१२५ पिच्छादि ४।२।१०३।
१२६ पील्वादि ४।२।२४।
१२७ पुण्याहवाचनादि ४।१।१३४।
१२८ पुष्आदि (धातुगण) १।१।७३।
१२९ पुष्करादि ४।२।१३२।
१३० पूआदि (धातुगण) ६।१।१०८।
१३१ पूर्वादि २।१।१५।
१३२ पृथु ४।१।१३९।
१३३ पृषोदरादि ५।२।१२७।
१३४ पिङ्गाक्षिपुत्रादि ३।१।२४।
१३५ पैलादि २।४।१२१।
१३६ प्रादि १।१।१०९।
१।१।१४२।
१।१।१४४।
१।१।१५०।
१।२।२।
१।३।११।
१।३।१४।
१।३।४९।
१।३।५१।
१।३।५८।
१।३।७१।
१।३।८७।
१।४।७२।
१।४।८९।
१।४।११७।
१।४।१२९।
२।२।२४।
४।४।७१।
४।४।११०।
५।१।९३।
५।२।११३।
५।२।१४१।
५।४।२१।
५।४।२३।
६।१।५९।
६।२।७५।
६।२।९७।
६।३।४२।
६।४।५०।
६।४।७४।
६।४।९६।
६।४।११४।
१३७ प्रज्ञादि ४।४।२२।
१३८ प्रतिजनादि ३।४।१०१।
१३९ प्रभूतादि ३।४।४७।
१४० प्रियाआदि ५।२।२९।
१४१ फण् आदि (धातुगण) ५।३।१२१।
१४२ बाहीकादि ३।२।२०।
१४३ बाहुआदि २।४।२०।

१४४ बिदादि २।४।२२।
१४५ बिल्वकीयादि ५।३।१५७।
१४६ ब्राह्मणादि ४।१।१४१।
१४७ भर्गादि २।४।१०६।
१४८ भस्त्रादि ३।४।१५।
१४९ भिक्षादि ३।१।४४।
१५० भिदादि (धातुगण) १।३।८६।
१५१ भृशादि १।१। ३०।
१५२ भौरिकिआदि ३।१।६३।
१५३ भ्रूकुंसादि ५।२।७२।
१५४ मनोज्ञादि ४।१।१४९।
१५५ महानाम्नीआदि ४।१।१०७।
१५६ महिषीआदि ३।४।५०।
१५७ 'मा' शब्दादि ३।४।४८।
१५८ मुचादि (धातुगण) ५।४।११।
१५९ यजादि (धातुगण) ५।१।१४।
१६० यवादि ६।३।३८।
१६१ यस्कादि २।४।११०।
१६२ यावादि ४।४।१२।
१६३ युवन्आदि ४।१।१४६।
६।४।११२।
१६४ यूपादि ४।१।३।
१६५ रज्जुआदि २।३।७६।
१६६ रधादि (धातुगण) ५।४।१०८।
१६७ राजन्यादि ३।१।६२।
१६८ रुदादि (धातुगण) ५।४।१७३।
६।२।३७।
१६९ रुधादि (धातुगण) १।१।९३।
१७० रेवत्यादि २।४।७८।
१७१ रैवतिक ३।३।९६।
१७२ लू आदि (धातुगण) ६।३।७६।
१७३ लोमन् आदि ४।२।१०४।
१७४ लोहितादि १।१।३१।
१७५ लोहितादि २।३।२०।
१७६ वंशादि ४।१।७२।
१७७ वाकिनादि २।४।९१।
१७८ विंशत्यादि ४।२।५२।
१७९ विनयादि ४।४।१७।
१८० विमुक्तादि ४।२।१५५।
१८१ वृत्आदि (धातुगण) १।४।१४४।
५।४।१२३।
१८२ वेणुकादि ३।२।६१।
१८३ वेतनादि ३।४।४०।
१८४ व्यासादि २।४।२१।
१८५ व्युष्टादि ४।१।११५।
१८६ व्रीहिआदि ४।२।११९।
१८७ शकादि (धातुगण) ५।४।१३५।
१८८ शकन्धुआदि ५।१।९८।
१८९ शकलादि ३।२।२१।
१९० शण्डिकादि ३।३।६०।
१९१ शतादि ४।२।५३।
१९२ शब्दादि १।१।३६।
१९३ शमादि (धातुगण) ६।१।१०२।
१९४ शरादि ३।३।११४।
५।२।१३४।
१९५ शरद्आदि ४।४।९०।
१९६ शर्करादि ४।३।८४।
१९७ शाखादि ४।३।८१।
१९८ शिखादि ४।२।१३४।
१९९ शिवादि २।४।४१।
२०० शिशुक्रन्दादि ३।३।५६।
२०१ शुण्डिकादि ३।३।४८।
२०२ शुभ्रादि २।४।५३।

[इति चान्दसूत्रोक्तगणसूचिः समाप्ता]

[स्वर-व्यञ्जनानां स्थान-करण-प्रयत्नपरिचयः[1]]

स्थान-करण-प्रयत्नेभ्यो वर्णा जायन्ते।

(१) तत्र स्थानम् —

कण्ठः अ-कु-ह-विसर्जनीयानाम् ।
कण्ठ-तालुकम् इत्-एत्-ऐताम् ।
कण्ठ-ओष्ठम् उत्-ओत्-औताम् ।
मूर्धा ऋ-टु-र-षाणाम् ।
दन्ता लृ-तु-ल-सानाम् ।
नासिका अनुस्वारस्य ।
स्वस्थान-अनुनासिका ङ-ञ-ण-न-माः ।
तालु इ-चु-य-शानाम् ।
ओष्ठौ उ-पु-उपध्मानीयानाम् ।
दन्त-ओष्ठम् वकारस्य ।
जिह्वामूलम् जिह्वामूलीयस्य ॥

(२) करणम् —

जिह्वाग्रम् दन्त्यानाम् ।
जिह्वोपाग्रम् शिरस्यानाम् ।
जिह्वामध्यम् तालव्यानाम् ।
शेषाः स्वस्थानकरणाः ॥

(३) प्रयत्नः द्विविधः-आभ्यन्तरः बाह्यश्च । तत्र आभ्यन्तरः —

संवृतत्वम् विवृतत्वम् स्पृष्टत्वम् । ईषत्स्पृष्टत्वं च ।
संवृतत्वम् अकारस्य ।
विवृतत्वम् स्वराणाम् ऊष्मणां च ।
तेभ्यः विवृततरत्वम् एत्-ओतोः ।
ताभ्याम् ऐत्-औतोः । ताभ्यामपि आकारस्य ।
स्पृष्टत्वम् स्पर्शानाम् ।
ईषत्स्पृष्टत्वम् अन्तःस्थानाम् ।

बाह्यः —

वर्गाणां प्रथम-द्वितीयाः श-ष-स-विसर्जनीय - जिह्वामूलीय - उपध्मानीयाश्च विवृतकण्ठाः श्वासानुप्रदानाः अघोषाश्च ।

प्रथम - तृतीय - पञ्चमाः अन्तःस्थाश्च अल्पप्राणाः ।

इतरे महाप्राणाः ।

तृतीय - चतुर्थ - पञ्चमाः सानुस्वार-अन्तःस्थ-हकाराः संवृतकण्ठाः नादानुप्रदानाः घोषवन्तः ।

द्वितीय - चतुर्थाः श - ष - स - हाश्च ऊष्माणः ।

कादयः मावसानाः स्पर्शाः ।

अन्तःस्था य-र-ल-वा इति एष बाह्यप्रयत्नः ।

अत्र च अवर्णः ह्रस्वः दीर्घः प्लुत इति त्रिधा भिन्नः ।

प्रत्येकम् उदात्त-अनुदात्त-स्वरितभेदेन सानुनासिक-निरनुनासिकभेदेन च अष्टादशधा भवति ।

एवम् इवर्ण-उवर्णौ ऋवर्णश्च ।

लृवर्णस्य दीर्घा न सन्ति तेन स द्वादशधा भवति ।

सन्ध्यक्षराणां ह्रस्वाभावात् तानि अपि द्वादशधा ।

एकमात्रिकः ह्रस्वः ।
द्विमात्रिकः दीर्घः ।
त्रिमात्रिकः प्लुतः ।
उच्चैः उदात्तः ।
नीचैः अनुदात्तः ।
समाहारः स्वरितः ।
स्वस्थानानुनासिकः निरनुनासिकश्च ।

अन्तःस्थाः द्विप्रभेदा रेफवर्जिताः सानुनासिका निरनुनासिकाश्च ।

[इति चन्द्रगोमिकृतं वर्णसूत्रं समाप्तम्]

---

१ एतद्विषयः "इकः असस्थाने ह्रस्वश्च असमासे" ५।२।१३२। इत्यस्मिन् सूत्रे प्रयुक्ते 'सस्थान' शब्दे ।

॥ नमो मञ्जुघोषाय ॥

आचार्यश्रीचन्द्रगोमिविरचितम् उणादिप्रकरणम्

उणादयः । १।३।१।

१ कृ-वा-पा-जि-मि-स्वदि-साधि-अशूभ्यः उण् ।

कारुः शिल्पी ।

वायुः समीरणः ।

पायुः अपानम् ।

जायुः औषधम् ।

मायुः पित्तम् ।

गोमायुः सृगालः ।

स्वादुः मधुरम् ।

साधुः परोपकारी ।

आशु शीघ्रम् धान्यनाम च ।

२ दृ-सनि-जनि-चरि-चटि-तलिभ्यः ञुण् ।

दारु काष्ठम् ।

सानुः गिरिप्रदेशः ।

जानु जङ्घास्थानम् ।

चारु शोभनम् ।

चाटुः स्फुटवादी ।

तालुः वदनैकदेशः ।

३ किम्-जराभ्याम् शृ-इणः ।

किशारुः शारः ।

जरायुः गर्भवेष्टनम् ।

४ कृकात् वचः कश्च ।

कृकवाकुः कुक्कुटः कृकलासश्च ।

५ भृ-मृ-तृ-चरि-तनि-मस्जि-शीभ्यः उः ।

भरुः भर्ता ।

मरुः निर्जलो देशः ।

तरुः पादपः ।

चरुः हविष्यान्नम् ।

तनुः शरीरम् ।

मद्गुः पक्षिविशेषः ।

शयुः अजगरः ।

६ अणः ।

अणु सूक्ष्मम् ।

७ धान्ये नित् ।

अणुः व्रीहिः ।

८ पटि-असि-वसि-त्रपि-हनि-मनि-इन्दि-कन्दि-बन्धिभ्यः ।

पटुः स्फुटवादी ।

असुः प्राणः ।

वसु द्रव्यम् ।

त्रपु सीसम् ।

हनुः वदनैकदेशः ।

मनुः प्रजापतिः ।

इन्दुः चन्द्रमाः ।

कन्दुः पाकस्थानम् ।

बन्धुः स्वजनः ।

९ बहि-पंसेः दीर्घश्च ।

बाहुः भुजः ।

पांसुः रेणुः ।

१० नमि-मनि-जनां नाकि-ध-तश्च ।

नाकुः वल्मीकम् ।

मधु क्षौद्रम् ।

जतु लाक्षा ।

११ वलि-फलेः गुक् च ।

वल्गुः मनोज्ञः ।

फल्गुः असारः ।

१२ **नेः अञ्चेः ।**

न्यङ्कुः मृगः ।

१३ **इषि-भिदि-व्यधि-गृधि-धृषि-पॄ-पृथि-मृदेः कुः ।**

इषुः शरः ।

भिदुः वज्रम् ।

विधुः अग्निः ।

गृधुः कामः ।

धृषुः प्रगल्भः ।

पुरुः समुद्रः ।

पृथुः विस्तीर्णः

मृदुः मर्दितः ।

१४ **शशि-रपयोः अतः इत् च ।**

शिशुः बालः

रिपुः शत्रुः ।

१५ **कॄ-ग्रोः उत् च ।**

कुरुः राजा ।

गुरुः आचार्यः ।

१६ **अर्तेः ऊत् च ।**

ऊरुः सक्थि ।

उरुः महान् ।

१७ **स्यन्देः यणः इक् धश्च ।**

सिन्धुः नदी ।

१८ **भ्रस्जि-स्पशेः सलोपश्च ।**

भृगुः प्रपातः ।

पशुः चतुष्पादः ।

१९ **सृजेः असुम् च ।**

रज्जुः द्वित्रिवृत्ता ।

२० **आखनि-बंहेः नलोपश्च ।**

आखुः मूषिकः ।

बहु भूरि ।

२१ **शङ्कुआदयः ।**

शङ्कुः चिह्नम्

तर्कुः कर्तनद्रव्यम् ।

शरुः आयुधम् ।

त्सरुः दर्पणदण्डः ।

धनुः शस्त्रम् ।

मयुः किन्नरः ।

अपष्ठुः बालः ।

सुष्ठु शोभनम् ।

दुष्ठुः दुर्विनीतः ।

हरिद्रुः वृक्षजातिः ।

मितद्रुः समुद्रः ।

मित्रयुः मित्रवत्सलः ।

शतद्रुः नदी ।

देवयुः धार्मिकः ।

कुमारयुः कुमारघाती ।

मृगयुः व्याधः ।

जटायुः पक्षी ।

पटायुः वस्त्रम् ।

२२ **सि-तनि-गमि-मसि-सचि-अवि-धाञ्-क्रुशिभ्यः तुन् ।**

सेतुः जलबन्धः ।

तन्तुः सूत्रम् ।

गन्तुः पथिकः ।

आगन्तुः अभ्यागतः ।

मस्तु दध्यवयवः ।

सक्तुः यवविकारः ।

ओतुः विडालः ।

धातुः लोहादिः ।

क्रोष्टुः सृगालः ।

२३ **वसेः णित् वा ।**

वास्तुः गृहभूमिः ।

वस्तु पदार्थः ।

२४ कसि-मनि-जनि-हिभ्यः तुः ।
कन्तुः कन्दर्पः ।
मन्तुः प्रजापतिः ।
जन्तुः प्राणी ।
हेतुः कारणम् ।

२५ ऋतुआदयः ।
ऋतुः हेमन्तादिः ।
क्रतुः ससोमको यज्ञः ।
केतुः ध्वजः ।
पीतुः सूर्यः ।
गातुः उद्गाता ।
भातुः भास्करः ।
यातुः कामुकः ।
एधतुः पुरुषः ।
वहतुः अनड्वान् ।
जीवातुः औषधम् ।
अप्तुः याज्ञिकः ।

२६ स्तनि-हृषि-पुषि-गदि-मदिभ्यः णेः इत्नुच् ।
स्तनयित्नुः मेघः ।
हर्षयित्नुः सुवर्णम् ।
पोषयित्नुः कोकिलः ।
गदयित्नुः वावदूकः ।
मदयित्नुः सुरा ।

२७ हृ-कोः एणुः ।
हरेणुः गन्धद्रव्यम् ।
करेणुः हस्ती ।

२८ दा-भाभ्यां नुः ।
दानुः दाता ।
भानुः भास्करः ।

२९ री-वृञोः नित् ।
रेणुः धूलिः ।
वर्णुः नदः ।

३० सू-विषिभ्यां कित् ।
सूनुः पुत्रः ।
विष्णुः नारायणः ।

३१ धेनुआदयः ।
धेनुः नवप्रसूता गौः ।
जह्नुः ऋषिः ।
स्थाणुः महादेवः ।
वेणुः वंशः ।
वग्नुः वावदूकः ।

३२ क्षिपि-नदिभ्यां चनुङ् ।
क्षिपणुः वायुः ।
नदनुः मेघः ।

३३ सर्तेः अयुः ।
सरयुः नदी ।

३४ जनि-मनि-दसि-भुजेः क्युस् ।
जन्युः प्राणी ।
मन्युः क्रोधः ।
दस्युः चौरः ।
भुज्युः ओदनः ।

३५ ह्री-इषि-कृशिभ्यः कुक् सुग् आनुक् ।
ह्रीकुः अधृष्टः ।
ह्लीकुः स एव ।
इक्षुः खाद्यविशेषः ।
कृशानुः वह्निः ।

३६ मृङः त्युक् ।
मृत्युः प्राणवियोगः ।

३७ शीङः धुक् ।
शीधुः सुराविशेषः ।

३८ शृन्-अशुचौ पुरः ।
पर्शुः पार्श्वास्थि ।
परशुः कुठारः ।

३९ **पी-म्योः रुः ।**
पेरुः भास्करः ।
मेरुः पर्वतराजः ।
सुमेरुः स एव ।

४० **जत्रुआदयः ।**
जत्रु ग्रीवाप्रदेशः ।
शत्रुः अमित्रः ।
रुरुः मृगः ।
श्मश्रु मुखरोम ।
खरुः दर्पः ।
शिग्रुः शोभाञ्जनकः ।

४१ **योः आगूच् ।**
यवागूः पेया ।

४२ **भ्रमेः डूः ।**
भ्रूः नेत्रोपरिस्थानम् ।

४३ **चमि-तनि-बधिभ्यः ऊः ।**
चमूः सेना ।
तनूः शरीरम् ।
वधूः पुत्रभार्या ।

४४ **कषेः छश्च ।**
कच्छूः पामा ।

४५ **तिरः दुट् च ।**
तर्दुः परिवेषणभाण्डम् ।

४६ **यालोपः दरिद्रः ।**
दर्द्रूः कुष्ठविकारः ।

४७ **जम्बूआदयः ।**
जम्बूः वृक्षजातिः ।
दृन्भूः सर्पजातिः ।
दिधिषुः रण्डिका ।
पुनर्भूः पुनरूढिका ।
कर्कन्धूः वदरीफलम् ।
आडूः जलतरणी ।
अलाबूः तुम्बीफलम् ।
कषेरूः भक्षणद्रव्यम् ।
कासूः विकलवाक् ।
पादूः पादधारणी ।
सर्जूः विद्युत् ।
खर्जूः वृक्षजातिः ।
मर्जूः मलविशुद्धभाण्डम् ।
नृतूः दीर्घकृमिः ।
शृधूः यज्ञः ।
कर्षूः शुष्कगोमयाग्निः ।
कम्बूः परद्रव्यापहारी ।
रतूः नदी ।
अन्दूः भूषणजातिः ।
कफेलूः श्लेष्मातकः ।

४८ **दिवेः ऋन् ।**
देवा पतिभ्राता ।

४९ **नियो डित् ।**
ना पुरुषः ।

५० **पितृआदयः ।**
पिता जनकः ।
माता जननी ।
दुहिता आत्मजा ।
ननान्दा पतिभगिनी ।
भ्राता सोदर्यः ।
जामाता दुहितृपतिः ।
स्वसा भगिनी ।
नप्ता पौत्रः ।
नेष्टा ऋत्विक् ।
त्वष्टा आदित्यः ।
क्षत्ता प्रतीहारः ।
होता विष्णुः ।
पोता बालः ।

प्रशास्ता उपाध्यायः ।

५१ रवि-कवि-दरि-शरि-वलि-वल्लि-ध्वनि-अवि-हरि-ग्रन्थिभ्यः इः ।

रविः सूर्यः ।
कविः काव्यकर्ता ।
दरिः प्रपातः ।
शरिः शारः ।
बलिः असुरेन्द्रः ।
वल्लिः शाखा ।
ध्वनिः शब्दः ।
अविः मेषः ।
हरिः विष्णुः ।
ग्रन्थिः पर्वसन्धिः ।

५२ इगुपान्तात् किः ।

क्षिपिः योद्धा ।
शुचिः विविक्तः ।
रुचिः अभिलाषः ।
कृषिः कर्षणम् ।

५३ क्रमः अतः इत् च ।

क्रिमिः क्षुद्रजन्तुः ।

५४ मनेः उत् च ।

मुनिः ऋषिः ।

५५ अंहि-कम्पोः नलोपश्च ।

अहिः सर्पः ।
कपिः वानरः ।

५६ शृ-वसि-वपि-राजि-वृ-हनि-नभेः इञ् ।

शारिः शारिका ।
वासिः तक्षकभाण्डम् ।
वापिः पुष्करिणी ।
राजिः पङ्क्तिः ।
वारि सलिलम् ।
घातिः प्रहरणम् ।
नाभिः शरीरावयवः ।

५७ अजि-जनि-अति-घसि-रशि-पणेः इण् ।

आजिः युद्धम् ।
जनिः माता ।
आतिः गमनम् ।
घासिः अग्निः ।
राशिः समूहः ।
पाणिः करः ।

५८ वेञः डिः ।

विः पक्षी ।

५९ नेः ईत् च ।

नीविः मेखला ।

६० सखीआदयः ।

सखा मित्रम् ।
अश्रिः कोटिः ।
प्रहिः कूपः ।
भ्रमिः वायुः ।
कारिः शिल्पी ।

६१ सञ्ज्-असिभ्यां क्थिन् ।

सक्थि ऊरुप्रदेशः ।
अस्थि शरीरावयवः ।

६२ सारेः अथिन् ।

सारथिः रथवाहः ।

६३ अङ्गि-अतिभ्याम् उरि-इथिनौ ।

अङ्गुरिः करावयवः ।
अङ्गुलिः स एव ।
अतिथिः अभ्यागतः ।

६४ **नी-दलिभ्यां मिः।**
नेमिः शकटम् ।
दल्मिः शक्रः ।

६५ **ऊर्मि-रश्मि-भूमयः ।**
ऊर्मिः तरङ्गः ।
रश्मिः प्रभा ।
भूमिः पृथ्वी ।

६६ **कुषेः सिक् ।**
कुक्षिः उदरम् ।

६७ **अशेः नित् ।**
अक्षि नेत्रम् ।

६८ **मृ-कणिभ्याम् ईचिः ।**
मरीचिः मयूखः
कणीचिः लता ।

६९ **रा-शदिभ्यां त्रिप् ।**
रात्रिः क्षपा ।
शत्त्रिः कुञ्जरः ।

७० **भू-सूङ्-अदिभ्यः क्रिन् ।**
भूरि प्रभूतम् ।
सूरिः आदित्यः ।
अद्रिः पर्वतः ।

७१ **शकि-भूभ्याम् उन्ति-अन्तिचौ ।**
शकुन्तिः पक्षी ।
भवन्तिः कालः ।

७२ **अर्तेः अत्तिच् ।**
अरत्तिः करः ।

७३ **अञ्जेः अलिच् ।**
अञ्जलिः करसम्पुटः ।

७४ **ऋ-तॄ-सृ-धृ-धमि-अशि-अवि-वृति-ग्रहेः अनिः ।**
अरणिः अग्निकाष्ठम् ।
तरणिः समुद्रः ।
सरणिः पन्थाः ।
धरणिः पृथ्वी ।
धमनिः गलसिरा ।
अशनिः वज्रः ।
अवनिः पृथ्वी ।
वर्तनिः कर्तनद्रव्यम् ।
ग्रहणिः वह्निस्थानम् ।

७५ **क्षिपः कित् ।**
क्षिपणिः वायुः ।

७६ **शकेः उनिः ।**
शकुनिः पक्षी ।

७७ **अगेः निः ।**
अग्निः पावकः ।

७८ **वेणिः ।**
वेणिः केशबन्धः ।

७९ **श्रु-श्रि-यु-वहः नित् ।**
श्रोणिः कटिप्रदेशः ।
श्रेणिः पङ्क्तिः ।
योनिः मार्गः ।
वह्निः अग्निः ।

८० **पार्ष्णिआदयः ।**
पार्ष्णिः पादप्रहारः ।
वृष्णिः शक्रः ।
घृणिः रश्मिः ।
शृणिः अङ्कुशः ।
भूमिः पृथिवी ।
भूर्णिः वारणः ।
चूर्णिः ग्रन्थविशेषः ।
तूर्णिः त्वरितः ।
जूर्णिः मुसलः ।

८१ **वृ-दृभ्यां विन् ।**
वर्विः शकटम् ।

दर्विः तर्दूः ।

८२ **जागुः क्विन् ।**

जागृवी राजा ।

८३ **छविआदयः ।**

छविः त्वक् ।

स्थविः तन्तुवायः ।

किकिः पक्षी ।

दिविः आदित्यः ।

दीदिविः स्वर्गः ।

कृविः धूपः ।

पृष्विः रजः ।

जीविः औषधिः ।

८४ **दृ-वसिभ्यां क्तिन् ।**

दृतिः चर्म ।

वस्तिः मुद्राश्रयः ।

८५ **पातेः डतिः ।**

पतिः स्वामी ।

पशुपतिः महादेवः ।

८६ **अमेः अतिः ।**

अमतिः कालः ।

८७ **वहि-वसिभ्याम् चतिः ।**

वहतिः गौः ।

वसतिः ग्रामसन्निवेशः ।

८८ **तन्द्रेः ईः ।**

तन्द्रीः मूर्छा ।

८९ **लक्षेः मुट् च ।**

लक्ष्मीः श्रीः ।

९० **अवीआदयः ।**

अवीः प्रकाशः ।

तरीः वैश्वानरः ।

स्तरीः धूमः ।

ययीः अश्वः ।

पपीः आदित्यः ।

वातप्रमीः वातमृगः ।

९१ **रातेः डैः ।**

राः सुवर्णम् ।

९२ **गमेः डोः ।**

गौः पृथिवी ।

९३ **ग्ला-नुदिभ्यां डौः ।**

ग्लौः चन्द्रमाः ।

नौः जलतरणी ।

९४ **तारेः अन् ।**

तारा भगवती ।

९५ **जेः नुक् च ।**

जिनः भगवान् बुद्धः ।

॥ उणादौ प्रथमः पादः समाप्तः ॥

१ **इण्-भी-का-पा-शलि-मर्चिभ्यः कन् ।**

एकः एकाकी ।

भेकः मण्डूकः ।

काकः वायसः ।

पाकः बालः ।

शल्कः वल्कलः ।

मर्कः वायुः ।

२ **यूकाआदयः ।**

यूका ओकणी ।

अर्भकः शिशुः ।

पृथुकः बालः ।

भीकः भीरुः ।

उदकम् जलम् ।

घूकः कालः ।

स्यमीकः वल्मीकः ।

वीका अन्तर्गलवर्तिका ।

ह्लीकः अधृष्टः ।

ह्लीकः स एव ।

एवम् अन्येऽपि द्रष्टव्याः ।

३ **कृ-दा-धा-रा-अर्चिभ्यः कः ।**
कर्कः वर्णविशेषः ।
कल्कम् पिष्टद्रव्यम् ।
दाकः यज्ञः ।
धाकः ओदनः ।
राका पौर्णमासी ।
अर्कः आदित्यः ।

४ **उल्कादयः ।**
उल्का ज्वाला ।
उल्मुकम् अर्धदग्धकाष्ठम् ।
सृकः उत्पलम् ।
वृकः पशुजातिः ।
भूकम् छिद्रम् ।
मुष्कः वृषणम् ।
वल्कम् वल्कलम् ।
शुकः पक्षी ।

५ **क्षिपि-लङ्घि-लिखि-धमिभ्यः क्वुन् ।**
क्षिपकः योद्धा ।
लङ्घकः मालाकारः ।
लिखकः चित्रकरः ।
धमकः कर्मकरः ।

६ **हो द्वे च ।**
जहकः कालः ।

७ **कृषेः अचश्चाद् वा ।**
कार्षकः कुटुम्बी ।
कृष्को वा ।

८ **व्रश्चि-मूषेश्च किकन् ।**
वृश्चिकः कीटः ।
मूषिकः आखुः ।
कृषिकः कुटुम्बी ।

९ **पणि-पतेः आङः ।**
आपणिकः वणिक् ।
आपतिकः बालः ।

१० **स्यमः यः ईत् च ।**
सीमिकः वृक्षः ।

११ **भी-शीभ्याम् आनकः ।**
भयानकम् गहनम् ।
शयानकः अजगरः ।

१२ **शिङ्घेः आणकः ।**
शिङ्घाणकः नासास्रवः ।

१३ **कृति-भिदि-लतेः क्तिकन् ।**
कृत्तिका नक्षत्रम् ।
भित्तिका कुड्यम् ।
लत्तिका गोधा ।

१४ **इषेः क्तकन् ।**
इष्टका पक्वमृत्तिका ।

१५ **वलि-पतेः आकः ।**
वलाका पक्षिजातिः ।
पताका ध्वजः ।

१६ **पिनाकआदयः ।**
पिनाकः त्रिशूलः ।
खजाकः पक्षी ।
मनाकः स्तोकः ।
गुवाकः पूगफलम् ।
तडाकः सरः ।
शलाका विद्योपकरणद्रव्यम् ।
नशाकः ताडयिता ।
श्यामाकः तृणजातिः ।
विदाकः ज्ञानम् ।
नमाकः पिच्छिलः ।
भण्डाकम् शुभम् ।
खुराकः मर्मच्छेदनद्रव्यम् ।

१७ **क्रियः इकन् ।**
क्रयिकः क्रेता ।

१८ **अलि-इषः कीकन्** ।

अलीकम् मृषा ।
इषीका तूलाश्रयः ।

१९ **किङ्किणीकाआदय** ।

किङ्किणीका क्षुद्रघण्टिका ।
तिन्तिडीका वृक्षजातिः ।
मृद्वीका द्राक्षा ।
मृडीकः उरगः ।
पतत्रीका पक्षी ।
वर्वरीका तरुणी ।
जर्जरीका छिद्रम् ।
वलीका उदरवर्तिः ।
ऋजीकः ऋजुकः ।
वाह्लीकः जनपदः ।
शर्शरीकः इन्द्रः ।
पर्परीका अश्वशाला ।
दर्दरीकः मर्दलकः ।
शृणीका लाला ।
मणीका मेखला ।
कणीका सूक्ष्मजातिः ।

२० **कृञादिभ्यः वुन्** ।

करका सुराभाण्डम्
सरकः सुरापानम् ।
नरकः दुःखस्थानम्
भरकः स्वामी ।
वरकः चरणम् ।
कनकम् सुवर्णम् ।
जनकः पिता ।

२१ **शलि-मण्डेः ऊकञ्** ।

शालूकम् उत्पलादिमूलम् ।
मण्डूकः भेकः ।

२२ **उलूक आदयः** ।

उलूकः पेचकः ।
मधूकः वृक्षजातिः ।
वलूकः हिंस्रः ।
जलूका प्राणकविशेषः ।
मरूकः मयूरः ।
काणूकः काकः ।
मलूकः कृमिजातिः ।
भालूकः अच्छभल्लः ।
पिचूकः कर्पासः ।
कचूकः शाकजातिः ।

२३ **शमेः खः** ।

शङ्खः उदकसंभवः ।

२४ **मुहेः मूर् च** ।

मूर्खः वालः ।

२५ **शिखा** ।

शिखा दीप्तिः ।

२६ **मुदि-ग्रोः गक्-गौ** ।

मुद्गः व्रीहिजातिः ।
गर्गः शास्त्रविशेषः ।

२७ **पतेः अङ्गच्** ।

पतङ्गः शलभः ।

२८ **गमेः गन्** ।

गङ्गा जाह्नवी ।

२९ **शृङ्ग-अङ्ग-भृङ्गाः** ।

शृङ्गम् विषाणम् ।
अङ्गम् शरीरम् ।
भृङ्गः भ्रमरः ।

३० **जनेः घः** ।

जङ्घा प्राण्यङ्गम् ।

३१ **कचेः छः** ।

कच्छः पार्श्वः ।

३२ **शकादिभ्यः अटन् ।**
शकटम् वाहनम् ।
अकटम् हिरणम् ।
कुलटा बन्धकी ।
देवटः ऋषिः ।
मर्कटः वानरः ।
कमटः रुद्रः ।

३३ **जटा-लोष्टम् ।**
जटा केशबन्धः ।
लोष्टम् मृद्वलिः ।

३४ **कॄ-तॄ-कृपेः कीटन् ।**
किरीटम् मुकुटम् ।
तिरीटम् वेष्टनम् ।
कृपीटम् जलम् ।

३५ **शमेः ण्ठः ।**
शण्ठः महिषचौरः ।

३६ **कमः अठत् च ।**
कमठः वामनः ।
कण्ठः ग्रीवा ।

३७ **कॄ-वृञः अण्डन् ।**
करण्डः गुह्यस्थानम् ।
वरण्डः मुखरोगः ।

३८ **ऊर्णोः डः ।**
ऊर्णा मेषरोम ।

३९ **ञमन्तात् डः ।**
चण्डः दुर्जनः ।
दण्डः लगुडः ।
अण्डः पक्षिप्रसवः ।
रण्डा अप्रसवा ।
वण्डः दुश्चर्मा ।
गण्डः कपोलः ।
खण्डः गुडविकारः ।

४० **कुण्ड आदयः ।**
कुण्डम् भाजनम् ।
मुण्डम् शिरः ।
जुण्डम् वनम् ।
तुण्डम् मुखम् ।
एवम् अन्येऽपि द्रष्टव्याः ।

४१ **शमेः ढः ।**
शण्ढः अप्रसवः ।

४२ **शकेः उन्तः ।**
शकुन्तः पक्षी ।

४३ **जॄ-विशः अन्तच् ।**
जरन्तः महिषः ।
वेशन्तः वल्लभः ।

४४ **रुहि-नन्दि-जीवेः षित् ।**
रोहन्तः वृक्षः ।
रोहन्ती ओषधी ।
नन्दन्ती सखी ।
जीवन्ती ओषधी ।

४५ **भू-जि-वसि-वहि-साधि-भासि-गडि-मण्डि-हेमिभ्यः ।**
भवन्तः कालः ।
जयन्तः वृक्षविशेषः ।
वसन्तः ऋतुविशेषः ।
वहन्तः रथः ।
साधन्तः भिक्षुः ।
भासन्तः सूर्यः ।
गडयन्तः मेघः ।
मण्डयन्तः ओदनः ।
हेमन्तः ऋतुः ।

४६ **अतः भुवः डुतच् ।**
अद्भुतम् आश्चर्यम् ।

४७ **रुहि-हृ-श्याभ्यः इतच् ।**
रोहितः मत्स्यः ।
लोहितम् रक्तम् ।
हरितः वर्णविशेषः ।
श्येतः स एव ।

४८ **भृत्रादिभ्यः अतच् ।**
भरतः नटः ।
जयतः वह्निः ।
पर्वतः गिरिः ।
पचतः सूपकारः ।
यमतः व्याधिः ।
दर्शतः सोमः ।
नमतः नम्रः ।
हर्यतः यज्ञः ।
खलतः दुर्जनः ।

४९ **पृषि-रञ्जेः कित् ।**
पृषतः मृगः ।
रजतम् रूप्यम् ।

५० **मृ-गॄ-वा-हसि-इण्-अमि-दमि-लू-पू-धूर्विभ्यः तन् ।**
मर्तः लोकः ।
गर्तः श्वभ्रम् ।
वातः वायुः ।
हस्तः करः ।
एतः वर्णः ।
अन्तः अवसानम् ।
दन्तः दशनम् ।
लोतः अश्रुपातः ।
पोतः बालः ।
धूर्तः शठः ।

५१ **घृ-सि-दूभ्यः क्तः ।**
घृतम् आज्यम् ।
सितम् शुक्लम् ।
दूतः प्रेष्यः ।

५२ **तात-पलित-जर्त-सूरताः ।**
तातः पिता ।
पलितः केशविकारः ।
जर्तः दीर्घरोमा ।
सूरतः सुखसंवासः ।

५३ **शमादिभ्यः अथः ।**
शमथः समाधिः ।
शपथः प्रत्ययकारः ।
आवसथः गृहम् ।
वदथः कोकिलः ।
रवथः स एव ।
गमथः कालः ।
जीवथः धर्मः ।
प्राणथः प्रजापतिः ।
भरथः अग्निः ।
वेदथः मार्गः ।

५४ **रमि-कुषि-काशिभ्यः क्थन् ।**
रथः स्यन्दनम् ।
कुष्ठः व्याधिः ।
काष्ठम् इन्धनम् ।

५५ **अवात् भृञः ।**
अवभृथः यज्ञावसानम् ।

५६ **उषि-कुषि-गा-अर्तिभ्यः थन् ।**
ओष्ठः अधरः ।
कोष्ठः उदरः ।
गाथा ग्रन्थविशेषः । (छन्दोविशेषः)
अर्थः धनम् ।

५७ **[६]-वृञः ऊथन् ।**
जरूथम् अग्रमांसम् ।
वरूथः बलसमूहः ।

५८ **पा-तॄ-तुदि-वचि-रिचि-सिचि-विशेः थक् ।**

पीथम् जलम् ।
तीर्थम् पुण्यस्थानम् ।
तुत्थः अग्निः ।
उक्थः सामवेदः ।
रिक्थम् द्रव्यम् ।
सिक्थम् मधूच्छिष्टम् ।
विष्ठा पुरीषम् ।

५९ **यूथ-आदयः ।**

यूथः प्राणिसमूहः ।
गूथः विष्ठा ।
पृष्ठम् प्राण्यङ्गम् ।
समिथः ऋत्विग्विशेषः ।
निशीथः प्रदोषान्तः ।
निर्ऋथः यज्ञावसानम् ।
निभृथः भर्ता ।
गोपीथः प्रत्यूषः ।
उद्गीथः साम ।
प्रोथम् घ्राणाश्रयः ।
तिथः अग्निः ।

६० **शवि-कमिभ्यां दन् ।**

शब्दः ध्वनिः ।
कन्दः मूलम् ।

६१ **अब्द-आदयः ।**

अब्दः संवत्सरः ।
वृन्दम् समूहः ।
कुन्दः पुष्पविशेषः ।
मन्दः जडः ।
तुन्दः उदरवृद्धिः ।
स्यान्दः सुवर्णम् ।

६२ **श्या-स्त्या-हृञ्-अविभ्यः इनच् ।**

श्येनः पक्षी ।
स्त्येनः चौरः ।
हरिणः मृगः ।
अविनः दृश्यः ।

६३ **वृजिन-अजिनम् ।**

वृजिनः कुटिलः ।
अजिनम् चर्म ।

६४ **वी-पतिभ्यां तनन् ।**

वेतना भृतिः ।
पत्तनं नगरम् ।

६५ **द्रु-दक्षिभ्यां इनन् ।**

द्रविणम् द्रव्यम् ।
दक्षिणा लोकयात्रा ।

६६ **विपिन-इरिण-तुहिन-महिनानि ।**

विपिनम् गहनम् ।
इरिणम् ऊषरम् ।
तुहिनम् तुषारः ।
महिनम् महत्त्वम् ।

६७ **रसि-रुचि-रु-वृञ्भ्यः युच् ।**

रसना मेखला ।
रोचना गोपित्तम् ।
रवणः आदित्यः ।
वरणा नदी ।

६८ **उन्देः नलोपश्च ।**

ओदनः अन्नम् ।

६९ **रञ्जेः क्युन् ।**

रजनम् रङ्गः ।
रजनी रात्रिः ।

७० **कॄ-पॄ-वृजि-मण्डि-निधाञ्भ्यः क्युः ।**

किरणः प्रभा ।
पूरणः समुद्रः ।

वृजनम् अन्तरीक्षम् ।
मण्डनम् भूषणम् ।
निधानम् निधिः ।

७१ **धृषेः धिष च ।**
धिषणा बुद्धिः ।

७२ **हन्तः जघ च ।**
जघनम् कटिप्रदेशः ।

७३ **ब्रधि-वसि-धा-पृभ्यः नः ।**
ब्रध्नः आदित्यः ।
वस्नः मूल्यम् ।
धाना यवविकारः ।
पर्णम् पत्त्रम् ।

७४ **कृ-वृ-तृ-स्वपि-सि-द्रुभ्यः नन् ।**
कर्णः श्रोत्रम् ।
वर्णः नीलादिः ।
तर्णः समुद्रः ।
स्वप्नः निद्रा ।
सेना बलसमूहः ।
द्रोणः परिमाणम् ।

७५ **उषि-इण्-अवि-कृषि-तृषि-वुधि-रति-धा-पृभ्यः नक् ।**
उष्णः अग्निः ।
इनः स्वामी ।
ऊनः विकलः ।
कृष्णः वर्णः ।
तृष्णः अभिलाषः ।
बुध्नः पृष्ठान्तः ।
रत्नम् जातौ जातौ यद् उत्कृष्टम् ।
धीनः समुद्रः ।
पूर्णः स एव ।

७६ **कृतेः सुक् च ।**
कृत्स्नम् निरवशेषम् ।

७७ **श्लिषेः इतः अत् च ।**
श्लक्ष्णः मृदुः ।

७८ **तिजेः ईत् च ।**
तीक्ष्णम् निशितम् ।

७९ **रास्ना-आदयः ।**
रास्ना ओषधिः ।
सास्ना गोग्रीवा ।
स्थूणा गृहधरणी ।
वीणा वाद्यविशेषः ।
तृणम् वीरणादि ।
अर्णः विटपः ।
जीर्णः वृद्धः ।

८० **कृ-वृ-तृ-यमि-दारि-अर्जेः उनन् ।**
करुणा कृपा ।
वरुणः जलराजः ।
तरुणः युवा ।
तलुनः स एव ।
यमुना नदी ।
दारुणः रौद्रः ।
अर्जुनः वृक्षविशेषः ।

८१ **शकेः उनः ।**
शकुनः पक्षी ।

८२ **पृ-पा-तलेः पः ।**
पर्पः गृहम् ।
पापम् जिह्मम् ।
तल्पम् शयनम् ।

८३ **स्तोः ऊ च ।**
स्तूपम् चैत्यम् ।

८४ **यु-कु-सूनां कित् च ।**
यूपः यज्ञयष्टिः ।
कूपः प्रहिः ।
सूपः व्यञ्जनम् ।

८५ **बाष्प-आदयः ।**

बाष्पः ऊष्मागमः

शष्पम् बालतृणम् ।

शिल्पम् विज्ञानम् ।

रूपम् नीलादि ।

शूर्पम् कुलवः ।

खष्पः बलात्कारः ।

८६ **सर्तेः अपः सुक् च ।**

सर्षपः व्रीहिजातिः ।

८७ **विटप-आदयः ।**

विटपम् गहनम् ।

विशपः गृहम् ।

उलपः संतापः ।

कुणपः मृतकः ।

उषपः अग्निः ।

कुतपः प्रस्थचतुर्थभागः ।

दलपः प्रहरणम् ।

कचपः शाकविशेषः ।

विष्टपः स्वर्गः ।

मण्डपः देवगृहम् ।

विशिपः प्रवेशः ।

८८ **रातेः इफः ।**

रेफः अक्षरम् ।

८९ **गुरेः फक् ।**

गुल्फः प्रपदम् ।

९० **गृ-शृभ्यां वः ।**

गर्वः मानः ।

शर्वः महादेवः ।

९१ **अशि-लटि-कणि-खटि-विशेः क्वन् ।**

अश्वः तुरङ्गः ।

लट्वा पक्षी ।

कण्वम् पापम् ।

खट्वा शयनीयम् ।

विश्वम् निरवशेषम् ।

९२ **शिव-आदयः ।**

शिवम् शान्तम् ।

सर्वम् अशेषम् ।

उल्बम् जरायुः ।

शुल्बम् ताम्रम् ।

निम्बम् अरिष्टम् ।

बिम्बम् शरीरम् ।

शम्बः लोहविकारः ।

स्तम्बः विटपम् ।

जिह्वा रसना ।

ग्रीवा गलप्रदेशः ।

९३ **कृ-शृ-गर्दः अभच् ।**

करभः उष्ट्रः ।

कलभः हस्तिपोतः ।

शरभः पशुजातिः ।

शलभः पतङ्गः ।

गर्दभः खरः ।

९४ **ऋषि-वृषि-रासि-वल्लेः कित् ।**

ऋषभः बलीबर्दः ।

वृषभः स एव ।

रासभः गर्दभः ।

वल्लभः प्रियः ।

९५ **दृङः भः ।**

दर्भः कुशः ।

९६ **गिरः भन् ।**

गर्भः अन्तःप्रदेशः ।

९७ **इणः कित् ।**

इभः कुञ्जरः ।

९८ **गुधेः ऊमः ।**

गोधूमः व्रीहिजातिः ।

[illegible]

[illegible]

११६ **हः हिर् च ।**
हिरण्यम् सुवर्णम् ।
११७ **पर्जन्यः ।**
पर्जन्यः शक्रः ।
११८ **पुणेः क्यन् ।**
पुण्यम् कुशलस्थानम् ।
११९ **शिक्यम् धिष्ण्यम् ।**
शिक्यम् उद्ग्राह्यम् ।
धिष्ण्यम् गृहम् ।

॥ उणादौ द्वितीयः पादः समाप्तः ॥

१ **मदि-अङ्गि-वाशि-मथि-चतिभ्यः उरच् ।**
मन्दुरा वाजिशाला ।
अङ्गुरः बीजप्रसवः ।
वाशुरा रात्रिः ।
मथुरा नगरी ।
चतुरः दक्षः ।
२ **मकुर-दर्दुर-विधुराः ।**
मकुरः दर्पणः ।
दर्दुरः भेकः ।
विधुरः विगुणः ।
३ **असेः उरन् ।**
असुरः आदित्यः ।
४ **श्वशुरः ।**
श्वशुरः भार्यापिता ।
५ **तिमि-रुधि-मदि-मन्दि-चन्दि-बन्धिभ्यः किरच् ।**
तिमिरम् अन्धकारः ।
रुधिरम् क्षतजम् ।
मदिरा सुरा ।
मन्दिरम् गृहम् ।
चन्दिरः हस्ती ।
वधिरः श्रोत्रविकलः ।
६ **स्थिर-आदयः ।**
स्थिरम् अचलम् ।
अजिरम् गृहम् ।
शिशिरम् ऋतुविशेषः ।
खदिरः वृक्षजातिः ।
स्थविरः वृद्धः ।
इषिरः शरः ।
छिदिरः छिद्रम् ।
भिदिरः वज्रः ।
मुहिरः मूर्खः ।
मुचिरः दाता ।
रुचिरः शोभनः ।
श्रथिरम् शिथिलम् ।
स्फिरम् स्फीतम् ।
७ **तञ्च-वञ्च-शकि-क्षिपि-क्षुदि-रुदि-मदि-मन्दि-चन्दिभ्यः रक् ।**
तक्रम् मथितम् ।
वक्रम् कुटिलम् ।
शक्रः देवराजः ।
क्षिप्रम् त्वरितम् ।
क्षुद्रः अदानी ।
रुद्रः महादेवः ।
मद्रः देशः ।
मन्द्रः धीरः ।
चन्द्रः चन्द्रमाः ।
८ **श्विति-वृति-नी-वी-छिदि-मुदि-दहि-तृपि-शुभिभ्यश्च ।**
श्वित्रम् कुष्ठम् ।
वृत्रः दैत्यः ।
नीरम् जलम् ।
वीरः विक्रान्तः ।
छिद्रम् विवरः ।

मुद्रा प्रत्ययकरणी ।
दह्रम् तरुणम् ।
तृप्रः पुरोडाशः ।
शुभ्रम् शुक्लम् ।

९ **तमि-अमि-जीनां दीर्घश्च ।**
ताम्रम् शुल्वम् ।
आम्रः वृक्षजातिः ।
जीरः वह्निः ।

१० **दूर-आदयः**
दूरम् विप्रकृष्टम्
उद्रः जलचरः ।
कृच्छ्रम् कष्टम् ।
चुक्रम् आम्लम् ।
दभ्रः कुशः ।
उस्रः केदारः ।
उस्रा गोग्रीवा ।
वाश्रम् पुरीषम् ।
शीरः अजगरः ।
हस्रः हासः ।
सिध्रः साधुजनः ।
रन्ध्रम् विवरः ।
विकुस्रः चन्द्रमाः ।
वन्द्रः पूजकः ।
खिद्रः दैन्यः ।

११ **सु-सू-धाव्-गृधेः क्रन् ।**
सुरा मद्यम् ।
सूरः रविः ।
धीरः मत्स्यघाती ।
गृध्रः पक्षिजातिः ।

१२ **सि-मि-चीनाम् ईत् च ।**
सीरः लाङ्गलम् ।
मीरः जलम् ।
चीरम् वल्कलम् ।

१३ **वपि-वजि-वृधि-इन्दिभ्यः रन् ।**
वप्रः केदारः ।
वज्रः कुलिशः ।
वर्ध्रः चन्द्रः ।
इन्द्रः शक्रः ।

१४ **भद्र-आदयः ।**
भद्रम् कल्याणम् ।
उग्रः उत्कृष्टः ।
भेरः दुन्दुभिः ।
भेरी स एव ।
अग्रम् श्रेष्ठम् ।
गौरः अवदातः ।
गौरी शिवा ।
शुक्रम् रेतः ।
वृध्रः वयोधिकः ।
ऋज्रः नायकः ।
विप्रः ब्राह्मणः ।
कुप्रः शङ्करः ।
चुम्रः प्रीतिकरः ।
क्षुरः रोमायुधम् ।
खुरः मर्मच्छेदनः ।
इरा मही ।

१५ **चति-कटि-शॄ-वृञः ट्वरच् ।**
चत्वरम् अङ्गनम् ।
कट्वरम् दधिविकारः ।
शर्वरः महादेवः ।
शर्वरी निशा ।
वर्वरी कुटिलकेशा ।
वर्वरम् केशविकारः ।

१६ **पीवर-आदयः ।**
पीवरः स्थूलः

चीवरम् भिक्षुप्रावरणम् ।
तीवरः म्लेच्छः ।
नीवरम् गृहम् ।
गह्वरम् गहनम् ।
चित्वरः धूर्तः ।
चत्वरः उपस्थः ।
धीवरः मत्स्यघाती ।
मीवरः पूज्यः
संयद्वरः बाष्पः ।

१७ **कुवः क्वन् ।**
कुरवः पक्षी ।

१८ **मदि-अशि-वसेः सरन् ।**
मत्सरः कृपणः ।
अक्षरम् वर्णः ।
वत्सरः वर्षः ।
संवत्सरः स एव ।

१९ **कृ-धू-तनेः कित् ।**
कृसरा तिलयवागूः ।
धूसरः रूक्षः ।
तसरः कुन्दद्रव्यम् ।

२० **भ्रमि-वठि-देवि-वासेः अरन् ।**
भ्रमरः षट्पदः ।
वठरः मूर्खः ।
देवरः पतिभ्राता ।
वासरः दिवसः ।

२१ **अङ्गि-मदि-मन्दि-कडेः आरन् ।**
अङ्गारः दग्धकाष्ठम् ।
मदारः मणिविशेषः ।
मन्दारः वृक्षजातिः ।
कडारः पिङ्गलः ।

२२ **शृङ्गि-भृङ्गि-मृजि-कञ्जेः चित् ।**
शृङ्गारम् दर्शनीयम् ।
भृङ्गारः सुवर्णभाजनम् ।
मार्जारः बिडालः ।
कञ्जारः मयूरः ।

२३ **कमः अतः उत् च ।**
कुमारः बालजनः ।

२४ **शिरः करन् ।**
शर्करा गुडविकारः ।

२५ **पुषः कित् ।**
पुष्करम् पद्मम्

२६ **क्षणः डीरच् ।**
क्षीरम् पयः ।

२७ **कृ-शॄ-शौटिभ्यः ईरच् ।**
करीरः वंशाङ्कुरः ।
शरीरम् देहः ।
शौटीरः दाता

२८ **वशेः कित् ।**
उशीरम् वीरणमूलम् ।

२९ **गम्भीर-आदयः ।**
गम्भीरम् भयानकम् ।
गभीरः दुरवगाहः ।
कुम्भीरः जलचरः ।
कुटीरः जनवासः
परीरः समुद्रः ।
पटीरः कन्दर्पः ।
कुरीरम् मैथुनम् ।

३० **मसेः ऊरन् ।**
मसूरः व्रीहिजातिः ।

३१ **जनेः अरः ठश्च ।**
जठरः मूर्खः ।

३२ **वदेर्वा ।**
वठरः जडः ।
बदरम् कर्कन्धूफलम् ।

बदरी तद् एव ।

३३ **पचेः अतः इत् च ।**

पिठरः स्थालीपाकः ।

३४ **कठि-चकिभ्याम् ओरः ।**

कठोरः निबिडः ।

चकोरः पक्षी ।

३५ **घृणेः डोरः ।**

घोरम् अन्तकरम् ।

३६ **धा-दा-नी-पति-पा-शसिभ्यः ष्ट्रन् ।**

धात्री धरणी ।

दात्रम् लवनद्रव्यम् ।

नेत्रम् चक्षुः ।

पत्त्रम् पर्णम् ।

पात्रम् भाजनम् ।

शस्त्रम् प्रहरणम् ।

३७ **उषि-सू-मूभ्यः कित् ।**

उष्ट्रः करभः ।

सूत्रम् कल्याणम् (?) ।

मूत्रम् प्रस्रावः ।

३८ **अमि-नक्षि-कडिभ्यः अत्रच् ।**

अमत्रम् भाजनम् ।

नक्षत्रम् तारकादि ।

कडत्रम् भार्या ।

कलत्रम् सा एव ।

३९ **वृञश्च ।**

वरत्रा चर्ममयी ।

४० **अमि-चि-मिदेः त्रक् ।**

अन्त्रम् कुक्षनाडी ।

चित्रम् अद्भुतम् ।

मित्रम् सुहृत् ।

४१ **पूङः ह्रस्वश्च ।**

पुत्रः तनयः ।

४२ **वह-लादिभ्यः इत्र-उत्रौ ।**

वहित्रम् वहनम्

पवित्रम् यज्ञसूत्रम् ।

कडित्रम् चर्ममयम् ।

लोत्रम् अपहृतद्रव्यम् ।

पोत्रम् सूकरनासाग्रम् ।

श्रोत्रम् श्रुतिः ।

४३ **खर्जि-पिञ्जादिभ्यः ऊर-ऊलचौ ।**

खर्जूरः वृक्षजातिः ।

कर्पूरः मुखसुगन्धिद्रव्यम् ।

वल्लूरम् शुष्कमांसमयम् ।

पिञ्जूलः पक्षिजातिः ।

लाङ्गूलम् पुच्छम् ।

४४ **तमेः वुक् च ।**

ताम्बूलम् मुखभूषणम् ।

४५ **शवि-कमः कलन् ।**

शवलम् व्यामिश्रम् ।

कमलम् पद्मम् ।

४६ **वृषादिभ्यः चित् ।**

वृषलः शूद्रः ।

उत्पलम् इन्दीवरम् ।

वटलः अक्षिरोगः ।

कला कालविशेषः ।

गलः कण्ठप्रदेशः ।

चपलः दुर्विनीतः ।

केवलम् असहायम् ।

४७ **शकि-शमेः नित् ।**

शकलम् अस्थि ।

शमलम् अशुचि ।

४८ **कुटेः क्मलच् ।**

कुट्मलम् अविकसितम् ।

४९ **पति-चण्डिभ्याम् आलच् ।**

पातालम् रसातलम् ।

चण्डाल: मातङ्गः ।

५० **कुणि-पीभ्याम् कालन् ।**

कुणाल: पक्षी ।

पियाल: वृक्षजातिः ।

५१ **पालन्-वलञौ शीङः ।**

शेपालम् जलतृणम् ।

शैवल: स एव ।

५२ **मङ्गेः अलच् ।**

मङ्गल: प्रशस्तः ।

५३ **माला-इल्वल-पल्वल-चषाल-शिथिल-शुक्ल-तण्डुलाः ।**

माला स्रग्दाम ।

इल्वला: तारकाः ।

पल्वलम् शाखापत्रम् ।

चषाल: यज्ञोपकरणद्रव्यम् ।

शिथिलम् अदृढम्

शुक्लम् श्वेतम् ।

तण्डुल: धान्यसंभवः ।

५४ **अर्तेः पिशन् ।**

अर्पिश: अग्रमांसम् ।

५५ **वृ-भृ-वमि-कुभ्यः शक् ।**

वृश: गौः

भृश: गत्यर्थः ।

वंश: वेणुः ।

कुश: दर्भः ।

५६ **कीनाश-दाश-अङ्कुशाः ।**

कीनाश: कृपणः ।

दाश: कैवर्तः ।

अङ्कुश: गजप्रबोधकः ।

५७ **ऋ-मञ्जि-पीयि-हनि-अगिभ्यः ऊषन् ।**

अरूष: चन्द्रमाः ।

मञ्जूषा काष्ठमयम् ।

पीयूष: अमृतकम् ।

हनूष: व्याघ्रः ।

अङ्गूष: देवगमः (?) ।

५८ **पुरः कुषन् ।**

पुरुष: नरः ।

५९ **कृ-तृभ्याम् ईषन् ।**

करीष: गोमयम् ।

तरीष: समुद्रः ।

६० **शिरीष-आदयः ।**

शिरीष: वृक्षजातिः ।

पुरीषम् विष्ठा ।

अम्बरीष: भ्राष्ट्रम् ।

ऋजीष: नायकः ।

६१ **अवेः टिषच् ।**

अविष: समुद्रः ।

अविषी नदी ।

६२ **किल्बिष-आदयः ।**

किल्बिषम् पापम् ।

रोहिष: मृगः ।

लोहिष: स एव ।

ताविष: सूर्यः ।

ताविषी नदी ।

व्यथिष: व्याधिः ।

अव्यथिष: स्वर्गः ।

६३ **वृ-त-वदि-हनि-मानि-कमि-अशि-कशेः सः ।**

वर्ष: संवत्सरः ।

तर्ष: समुद्रः ।

वत्स: बालः ।

हंसः पक्षी ।

मांसम् पिशितम् ।

कंसः असुरराजः ।

अक्षम् इन्द्रियम् ।

कक्षः वनप्रदेशः ।

६४ **ऋषि-वृषि-स्नुभ्यः सक् ।**

ऋक्षम् नक्षत्रम् ।

वृक्षः तरुः ।

स्नुषा पुत्रवधूः ।

६५ **पनि-मनि-रभि-चमि-अति-वेति-युवः असच् ।**

पनसः कण्टकफलम्[1] ।

मनसम् हृदयम् ।

रभसः उत्साहः ।

चमसः पिष्टकः ।

अतसः पुष्पजातिः ।

वेतसः वृक्षः ।

यवसः घासः ।

६६ **कृञः पासप् ।**

कर्पासः कर्तनद्रव्यम् ।

६७ **सिचेः कन् उम्-हौ च ।**

सिंहः केसरी ।

६८ **श्रि-स्रु-द्रु-प्रु-ज्वां क्विप् दीर्घश्च ।**

श्रीः लक्ष्मीः ।

स्रूः स्रुक् ।

द्रूः सुवर्णम् ।

प्रूः कामचारः ।

जूः पिशाचः ।

६९ **प्रछि-वचोः तौ च ।**

प्राट् शिष्यः ।

वाग् वाणी ।

७० **गमः द्वे च ।**

जगत् त्रैलोक्यम् ।

७१ **परिव्रजेः षश्च पदान्ते ।**

परिव्राट् परिव्राजौ परिव्राजः ।

७२ **स्रुवः चिक् ।**

स्रुग् यज्ञभाण्डम् ।

७३ **वशि-वणिभ्याम् इजिक् ।**

उषिक् तन्त्रवायः ।

वणिग् वाणिजः ।

७४ **मृङः उतिः ।**

मरुत् वायुः ।

७५ **ग्रो वा मुट् च ।**

गरुत् पक्षः ।

गर्मुत् सुवर्णम् ।

७६ **हृ-सृ-तडि-रुहि-युषिभ्यः इतिः ।**

हरित् शाद्वलः ।

सरित् नदी ।

तडित् विद्युत् ।

रोहित् मत्स्यः ।

लोहित् रक्तः ।

योषित् अङ्गना ।

७७ **पृषि-वृषि-महेः शतृः ।**

पृषत् मृगः ।

वृषत् विपुलः

महत् महायानम् ।

महान् उत्तमः ।

७८ **शरद्-दरद् दृषदः ।**

शरत् ऋतुः ।

दरत् द्रव्यम् ।

दृषत् शिला ।

---

१ कण्टकयुक्तं फलं कण्टकफलम् (फणस) ।

७९ **वृषि-तक्षि-राजि-धन्वि-प्रतिदिव-युवः कनिन् ।**
वृषा गौः ।
तक्षा वर्धकिः ।
राजा नृपः ।
धन्वा धनुः ।
प्रतिदिवा दिवसः ।
युवा तरुणः ।

८० **श्वन् आदयः ।**
श्वा कुक्कुरः ।
उक्षा वलीवर्दः ।
पूषा रविः ।
प्लीहा व्याधिः ।
मूर्धा शिरः ।
मज्जा अस्थिसारः
मातरिश्वा वातः ।
मघवा इन्द्रः ।

८१ **भसि-जनि-वृतेः मनिन् ।**
भस्म छारः ।
जन्म उत्पत्तिः ।
वर्त्म पन्थाः ।

८२ **व्योमन् आदयः**
व्योम आकाशः ।
वेम कौलिकानां भाण्डम् ।
साम वेदः ।
रोम अङ्गजः ।
लोम स एव ।
नाम संज्ञा ।

८३ **इमनिच् ।**
हरिमा विष्णुः ।
धरिमा पृथ्वी माता वा ।
भरिमा स्वामी भाजनं वा ।

८४ **पथि-मथिभ्याम् इनिः ।**
पन्था मार्गः ।
मन्था बृहस्पतिः मन्थनदण्डो वा ।

८५ **गमः ।**
गमी गमिष्यति ।

८६ **आङः णित् च ।**
आगामी आगमिष्यति ।

८७ **भुवः ।**
भविष्यति इति भावी ।

८८ **परमेष्ठी ।**
परमेष्ठी ब्रह्मा ।

८९ **अर्चि-हु-सृपि-च्छदि-च्छर्दिभ्यः इसिः ।**
अर्चिः ज्वाला ।
हविः यज्ञः ।
सर्पिः घृतम् ।
छदिः आतपत्रम् ।
छर्दिः उद्गारः ।

९० **ज्योतिर् आदयः ।**
ज्योतिः दीप्तिः नक्षत्रं वा ।
शोचिः पिङ्गलम् ।
भुविः पृथिवी ।
निपथिः विमार्गः ।

९१ **जनेः उसिः ।**
जनुः जन्म ।

९२ **ऋ-पृ-वपि-यजि-धनि-त्रपेः नित् ।**
अरुः व्रणः ।
परुः चिरकालः ।
वपुः शरीरम् ।
यजुः वेदः ।
धनुः शस्त्रम् ।
त्रपुः सीसम् ।

९३ **इणः कित् ।**
आयुः जीवनपरिमाणम् ।
९४ **चक्षेः उसिन् ।**
चक्षुः नेत्रम् ।
९५ **वशेः कनसिः ।**
उशना शुक्रः ।
९६ **विधि-इणः कसिः ।**
वेधाः प्रजापतिः ।
अयः लोहम् ।
९७ **पयः-पुरसः धाञः ।**
पयोधाः पर्जन्यः ।
पुरोधाः पुरोहितः ।
९८ **चन्द्रात् माङः ङित् ।**
चन्द्रमाः चन्द्रः ।
९९ **अनेहस्-अङ्गिरस्-अप्सरसः ।**
अनेहाः कालः ।
अङ्गिराः नाम ऋषिः ।
अप्सराः देवयोषित् ।
१०० **असुन् ।**
वयः शरीरम् ।
पयः क्षीरम् ।
तेजः दीप्तिः ।
अंहः पापम् ।
तपः पुण्यम् ।
१०१ **उषि-रञ्जि-शॄभ्यः कित् ।**
उषाः रविः ।
रजः रेणुः ।
शिरः मूर्धा ।
१०२ **वसि-अगिभ्यां णित् ।**
वासः वस्त्रम् ।
आगः पापम् ।
१०३ **यजेः शश्च ।**
यशः कीर्तिः ।
१०४ **उषेः जश्च ।**
ओजः दीप्तिः ।
१०५ **वशेः सुट् च ।**
वक्षः क्रोडः ।
१०६ **स्रु-रीङ्भ्याम् तुट् च ।**
स्रोतः नदी ।
रेतः शुक्रम् ।
१०७ **इणः नुट् च ।**
एनः पापम् ।
१०८ **शीङः फुट् च ।**
शेफः लिङ्गम् ।
१०९ **छदेः नुम् च ।**
छन्दः वेदः ।
११० **अमेः भुक् च ।**
अम्भः सलिलम् ।
१११ **अर्तेः उत् च ।**
उरः क्रोडः ।
११२ **शुट् च ।**
अर्शः व्याधिः ।
११३ **नुट् च ।**
अर्णः जलम् ।
११४ **युट् च ।**
अर्यः वैश्यः ।

॥ उणादौ तृतीयः पादः समाप्तः ॥

॥ आचार्यचन्द्रगोमिकृतम् उणादिसूत्रम् समाप्तम् ॥

॥ शुभमस्तु सर्वजगताम् ॥

॥ नमो बुद्धाय ॥

[आचार्यचन्द्रगोमिरचितः धातुपाठः]

१ भू सत्तायाम् । (१)[१]

२ चिती संज्ञाने । (३९)

३ अत सातत्यगमने । (३८)

४ च्युतिर् आसेचने । (४०)

५ श्च्युतिर् क्षरणे । (४१)

६ कुथि पुथि लुथि हिंसायाम् । (४४-४६)

७ मन्थ विलोडने । (४३)

८ षिधु गत्याम् । (४८)

९ षिधू शिष्टौ । (४९)

१० खादृ भक्षणे । (५०)

११ खद स्थितौ । (५१)

१२ बद स्थैर्ये । (५२)

१३ गद वचने । (५३)

१४ रद विलेखने । (५४)

१५ णद नर्द गर्द शब्दे । ५५,५७,५८

१६ कर्द कुत्सिते शब्दे । (६०)

१७ तर्द हिंसायाम् । (५९)

१८ अर्द गतौ । (५६)

१९ खर्द दशने । (६१)

२० अति अदि बन्धने (६२, ६३)

२१ इदि परमैश्वर्ये । (६४)

२२ विदि अवयवे । (६५)

२३ णिदि कुत्सायाम् ।(६६)

२४ टुनदि समृद्धौ (६७)

२५ चदि आह्लादने (६८)

२६ त्रदि चेष्टायाम् । (६९)

२७ कदि क्रदि क्लदि आह्वाने । (७०-७२)

२८ क्लिदि परिदेवने । (७३)

२९ शुन्ध शुद्धौ । (७४)

३० फक्क नीचैर्गतौ । (११९)

३१ तक हसने । (१२०)

३२ तकि कृच्छ्रजीवने । (१२१)

३३ शुक गतौ । (१२३)

३४ बुक्क भषणे । (१२२)

३५ कक्ख हसने । (१२४)

३६ ओखृ राखृ लाखृ द्राखृ ध्राखृ शोषणे । (१२५-१२९)

३७ शाखृ श्लाखृ व्याप्तौ । (१३०, १३१)

३८ उख णख वख मख रख लख रखि लखि इखि ईखि वल्ग ल्वगि रगि लगि अगि वगि मगि तगि त्वगि त्रगि श्रगि श्लगि इगि रिगि लिगि गत्यर्थाः ।

(१३२, १३८, १३४, १३६, १४०, १४२, १४१, १४३, १४५, १४६, १५२, १५३-१६०, १६२-१६५)

---

१ पाणिनीयधातुपाठस्थितधातुभिः सह अस्य धातुपाठस्थितस्य धातोः सादृश्यप्रदर्शनाय एते अङ्का निर्दिष्टाः । यथा चिती धातुः अत्र धातुपाठे द्वितीयः स एव च पाणिनीये धातुपाठे एकोनचत्वारिंशत्तमः ।

३९ युगि जुगि वुगि वर्जने । (१६७-१६९)
४० दघि पालने । (१७१)
४१ लघि शोषणे । (१७२)
४२ घग्घ हसने । (१७०)
४३ शिघि आघ्राणे । (१७४)
४४ शुच शोके । (१९८)
४५ कुच शब्दे । (१९९)
४६ क्रुन्च गतौ । (२०१)
४७ कुन्चु कौटिल्ये । (२००)
४८ लुन्चु अपनयने । (२०२)
४९ अन्चु वन्चु मन्चु चन्चु तन्चु त्वन्चु म्रुन्चु म्लुन्चु म्रुचु म्लुचु गत्यर्थाः । (२०३, २०४, २०५–२११)
५० ग्रुचु ग्लुचु कुजु खुजु स्तेये । (२१२-२१५)
५१ ग्लुन्चु षस्ज गतौ । (२१६-२१७)
५२ अर्च पूजायाम् । (२१९)
५३ म्लेछ अव्यक्ते वचने (२२०)
५४ लछ लाछि लक्षणे । (२२१,२२२)
५५ वाछि इच्छायाम् । (२२३)
५६ आछि आयामे । (२२४)
५७ ह्रीछ लज्जायाम् । (२२५)
५८ हुर्छा कौटिल्ये । (२२६)
५९ मुर्छा मोहे । (२२७)
६० स्फुर्छा विस्मृतौ । (२२८)
६१ युछ प्रमादे । (२२९)
६२ उछि उञ्छे । (२३०)
६३ उछी विवासे । (२३१)
६४ धृजि ध्रजि ध्वजि गतौ । (२३७, २३३, २३९)
६५ अर्ज सर्ज अर्जने । (२४२, २४३)
६६ गर्ज शब्दे । (२४४)
६७ तर्ज भर्त्सने । (२४५)
६८ खर्ज मार्जने । (२४७)
६९ तेज पालने । (२४९)
७० गज मदे । (२६५)
७१ खज मन्थे । (२५०)
७२ खजि गतिवैकल्ये । (२५२)
७३ एजृ कम्पने । (२५३)
७४ टुओस्फूर्जा वज्रनिष्पेषे । (२५४)
७५ क्षि क्षये । (२५५)
७६ क्षीज कूज गुजि अव्यक्ते शब्दे । (२५६)
७७ लज लाजि लाज लजि भर्त्सने । (२५७, २६०, २५९, २५८)
७८ जज जजि युद्धे । (२६१, २६२)
७९ तुज तुजि हिंसायाम् । (२६३, २६४)
८० गज गजि गृज गृजि मुज मुजि शब्दार्थाः । (२६५-२७०)
८१ अज वज व्रज गतौ । (२४८, २७१, २७२)
८२ शौटृ गर्वे । (३१०)
८३ यौटृ सम्बन्धे । (३११)
८४ मेटृ म्लेटृ उन्मादने । (३१४, ३१२)
८५ कटे वरणे । (३१५)
८६ रट परिभाषणे । (३१९)
८७ लट बाल्ये । (३२०)
८८ शट विशरणे । (३२१)
८९ वट वेष्टने । (३२२)
९० खिट उत्त्रासने (३२४)
९१ शिट षिट अनादरे । (३२५,३२६)

९२ जट झट पिट संघाते । (३२७, ३२८, ३३३)

९३ भट भृतौ । (३२९)

९४ तट उच्छ्राये । (३३०)

९५ खट काङ्क्ष्ये । (३३१)

९६ नट नृतौ । (३३२)

९७ हट दीप्तौ । (३३४)

९८ षट अवयवे । (३३५)

९९ लुट विलोटने । (३३६)

१०० चिट प्रैष्ये । (३३७)

१०१ विट शब्दे । (३३८)

१०२ बिट आक्रोशे । (३३९)

१०३ एठ हेठ विबाधायाम् । (३४३, २८६)

१०४ अट इट पट किट कटी इ गतौ। (३१७, ३४०, ३१८, ३४१,३४२)

१०५ मडि भूषायाम् । (३४४)

१०६ कुटि वैकल्ये । (३४५)

१०७ मुटि प्रमर्दने । (३४६)

१०८ चुटि अल्पीभावे । (३४७)

१०९ मुडि खण्डने । (३४८)

११० वटि विभाजने । (३५१)

१११ रुटि लुटि स्तेये । (३४९, ३५०)

११२ स्फ़ट स्फुटिर् विशरणे । (३५२)

११३ पठ उच्चारणे । (३५३)

११४ वठ स्थौल्ये । (३५४)

११५ मठ निवासे । (३५५)

११६ कठ कृच्छ्रजीवने (३५६)

११७ हठ बलात्कारे । (३५८)

११८ रुठ लुठ उपघाते । (३५९, ३६०)

११९ पिठ हिंसायाम् । (३६२)

१२० शठ कैतवे च । (३६३)

१२१ शुठि कुठि गुठि शोषणे । (३६७, ३६५)

१२२ लुठि आलस्ये । (३६६)

१२३ रुठि लुठि गतौ । (३६८, ३६९)

१२४ चुड्ड हावकरणे । (३७०)

१२५ अड्ड अभियोगे । (३७१)

१२६ क्रीडृ विहारे । (३७३)

१२७ तुडृ तोडने । (३७४)

१२८ हूडृ होडृ गतौ । (३७५, ३७६)

१२९ रौडृ अनादरे । (३७७)

१३० लौडृ उन्मादे । (३७९)

१३१ अड उद्यमे । (३८०)

१३२ लड विलासे । (३८१)

१३३ कड मदे । (३८३)

१३४ कड्ड कार्कश्ये । (३७२)

१३५ गडि वदनैकदेशे । (३८४)

१३६ गुपू रक्षणे । (४२२)

१३७ धूप संतापे । (४२३)

१३८ रप लप जप जल्प वचने । (४२८, ४२९, ४२४, ४२५)

१३९ चप सान्त्वने । (४२६)

१४० षच समवाये । (१०४६)

१४१ चुप मन्दायां गतौ । (४३०)

१४२ तुप तुन्प त्रुप त्रुन्प तुफ तुन्फ त्रुफ त्रुन्फ सृभु सृन्भु हिंसार्थाः । (४३१-४३८, ४५७, ४५८)

१४३ वर्फ रफ रफि अर्ब पर्ब खर्ब गर्ब शर्ब षर्ब चर्ब गतौ । (४४० -४४३, ४४८-४५२)

१४४ कुवि छादने । (४५३)

१४५ चुवि वक्त्रसंयोगे । (४५६)

१४६ शुन्भ भाषणे । (४६०)

१४७ अण रण वण भण मण कण क्वण
व्रण भ्रण ध्रण ध्वन शब्दार्थाः।
(४७१-४७६, ४८७, ८८१)
१४८ ओणृ अपनयने। (४८२)
१४९ शोणृ वर्णे। (४८३)
१५० श्रोणृ संघाते। (४८४)
१५१ पेणृ गतौ।
१५२ कनी दीप्तौ। (४८८)
१५३ ष्टन वन कल शब्दे।
(४८९, ४९०, ५२६)
१५४ षण संभक्तौ। (४९२)
१५५ अम द्रम हम्म मीमृ गतौ।
(४९३, ४९४, ४९६)
१५६ चमु छमु जमु झमु अदने।
(४९७-४९९, ५०१)
१५७ क्रमु पादविहरणे। (५०२)
१५८ मव्य बन्धने। (५४१)
१५९ पूक्ष्म ईक्ष्य ईर्ष्य ईर्ष्यार्थाः।
(५४३, ५४४)
१६० हय हर्य गतौ। (५४५, ५४७)
१६१ शुच्यी अभिषवे। (५४६)
१६२ फला विशरणे। (५४९)
१६३ मील स्मील क्ष्मील निमेषणे।
(५५०, ५५२, ५५३)
१६४ पील प्रतिष्टम्भे (५५४)
१६५ नील वर्णे। (५५५)
१६६ शील समाधौ। (५५६)
१६७ कील बन्धे। (५५७)
१६८ कूल वरणे। (५५८)
१६९ शूल रुजायाम्। (५५९)
१७० तूल निष्कर्षे। (५६०)
१७१ पूल संघाते। (५६१)
१७२ मूल प्रतिष्ठायाम्। (५६२)
१७३ फल निष्पत्तौ। (५६३)
१७४ चुल्ल हावकरणे। (५६४)
१७५ फुल्ल विकसने। (५६५)
१७६ चिल्ल शैथिल्ये। (५६६)
१७७ शिल्ल गतौ।
१७८ वेलृ चेलृ केलृ खेलृ क्ष्वेलृ पेलृ
चलने। (५६८-५७१, ५७६)
१७९ पेलृ फेलृ गतौ। (५७४, ५७५)
१८० स्खल चलने। (५७७)
१८१ खल संचये च। (५७८)
१८२ गल अदने। (५७९)
१८३ षल गतौ। (८९२)
१८४ दल विशरणे। (५८१)
१८५ शल श्वल्ल आशुगमने।
(५८२, ५८३)
१८६ खोरृ गतिप्रतिघाते। (५८४)
१८७ धोरृ गतिचातुर्ये। (५८५)
१८८ त्सर छद्मगतौ। (५८६)
१८९ क्मर हूर्छने। (५८७)
१९० अभ्र वभ्र मभ्र चर गत्यर्थाः।
(५८८-५९१)
१९१ ष्ठिवु क्षिवु निरसने।
(५९२, ५९९)
१९२ जि जये। (५९३)
१९३ जीव प्राणधारणे। (५९४)
१९४ पीव मीव नीव तीव स्थौल्ये।
(५९५, ५९६, ५९८, ५९७)
१९५ उर्वी तुर्वी थुर्वी दुर्वी धुर्वी
हिंसार्थाः। (६००, ६०४)
१९६ मुर्वी बन्धने। (६०६)
१९७ गुर्वी उद्यमे। (६०५)

१९८ पूर्व पर्व मर्व पूरणे । (६०७,६०९)
१९९ चर्व अदने । (६१०)
२०० कर्व खर्व गर्व दर्पे । (६१२-६१४)
२०१ अर्व शर्व भर्व हिंसायाम् । (६१५, ६१६, ६११)
२०२ इवि व्याप्तौ । (६१८)
२०३ पिवि मिवि निवि सेचने । (६१९-६२१)
२०४ हिवि दिवि धिवि प्रीणनार्थाः । (६२२-६२४)
२०५ रिवि रवि धवि गत्यर्थाः । (६२६-६२८)
२०६ कृवि हिंसायाम् । (६२९)
२०७ मव वन्धने । (६३०)
२०८ अव रक्षणे । (६३१)
२०९ धुषिर् शब्दे । (६८३)
२१० अक्षू व्याप्तौ (६८४)
२११ तक्षू त्वक्षू तनूकरणे । (६८५, ६८६)
२१२ उक्ष सेचने । (६८७)
२१३ रक्ष पालने । (६८८)
२१४ णिक्ष चुम्बने । (६८९)
२१५ तृक्ष स्तृक्ष णक्ष गतौ । (६९०-६९२)
२१६ वक्ष रोषे । (६९३)
२१७ म्रक्ष संघाते (६९४)
२१८ त्वक्ष त्वचने ।
२१९ मूर्क्ष अनादरे । (६९७)
२२० काक्षि वाक्षि माक्षि काङ्क्षायाम् । (६९८-७००)
२२१ द्राक्षि ध्राक्षि ध्वाक्षि घोरवाशिते च । (७०१-७०३)
२२२ चूष पाने । (७०४)
२२३ तूष तुष्टौ । (७०५)
२२४ पूष वृद्धौ । (७०६)
२२५ मूष स्तेये । (७०७)
२२६ षूष प्रसवे । (७१०)
२२७ भूष अलंकारे (७१२)
२२८ ऊष रुजायाम् (७१४)
२२९ ईष उञ्छे । (७१५)
२३० कष शिष जष झष वष मष रुष रिष यूष जूष हिंसायाम् । (७१६, ७१८-७२०, ७२२-७२५, ७११)
२३१ भष भर्त्सने । (७२६)
२३२ उष दाहे । (७२७)
२३३ जिषु विषु मिषु सेचने । (७२८-७३०)
२३४ पुष पुष्टौ । (७३२)
२३५ श्रिषु श्लिषु प्रुषु प्लुषु दाहे । (७३३-७३६)
२३६ पृषु वृषु सेचने (७३७, ७३८)
२३७ मृषु सहने । (७३९)
२३८ घृषु संहर्षे । (७४०)
२३९ हृषु अलीके । (७४१)
२४० तुष हृष ल्हष रस शब्दे । (७४५)
२४१ जर्त्स चर्च झर्झ परिभाषणे । (७४८-७५०)
२४२ लस क्रीडायाम् । (७४६)
२४३ पिसृ पेसृ गतौ । (७५१, ७५२)
२४४ घस्लृ अदने । (७४७)
२४५ हसे हसने (७५७)
२४६ णिश समाधौ । (७५८)
२४७ मश मिश शब्दे । (७६०, ७५९)
२४८ वश गतौ ।

२४९ शश प्लुतगतौ । (७६२)
२५० शसु हिंसायाम् । (७६३)
२५१ शन्सु स्तुतौ । (७६४)
२५२ चह परिकल्कने । (७६५)
२५३ रह परित्यागे । (७६७)
२५४ रहि गतौ । (७६८)
२५५ दृह दृहि वृह वृहि वृद्धौ । (७६९-७७२)
२५६ वृहिर् शब्दे । (७७२)
२५७ तुहिर् दुहिर् अर्दने । (७७३,७७४)
२५८ अर्ह मह पूजायाम् । (७७६,७६६)
२५९ धेट् पाने । (९५१)
२६० ग्लै हर्षक्षये (९५२)
२६१ म्लै गात्रविनामे । (९५३)
२६२ द्यै न्यक्करणे । (९५४)
२६३ द्रै स्वप्ने । (९५५)
२६४ ध्रै दीप्तौ । (९५६)
२६५ ध्यै स्मृ चिन्तायाम् । (९५७,९८०)
२६६ कै गै रै शब्दे । (९६४, ९६५, ९५८)
२६७ ष्टयै स्त्यै संघाते च । (९५९)
२६८ खै खदने । (९६०)
२६९ क्षै जै षै क्षये । (९६१-९६३)
२७० श्रै स्रै पाके । (९६६, ९६७)
२७१ पै ओवै शोषणे । (९६८, ९६९)
२७२ ष्टै वेष्टने । (९७०)
२७३ दैप् शोधने । (९७१)
२७४ पा पाने । (९७२)
२७५ घ्रा गन्धोपादाने । (९७३)
२७६ ध्मा शब्दे । (९७४)
२७७ ष्ठा गतिनिवृत्तौ । (९७५)
२७८ म्ना अभ्यासे । (९७६)
२७९ दाण् दाने । (९७७)
२८० ह्वृ कौटिल्ये । (९७८)
२८१ स्वृ शब्दे । (९७९)
२८२ ह्वृ वरणे । (९८१)
२८३ सृ गतौ । (९८२)
२८४ ऋ प्रापणे । (९८३)
२८५ गृ घृ सेचने । (९८४, ९८५)
२८६ ध्वृ हूर्छने । (९८६)
२८७ शु स्रु दु द्रु गतौ । (९८७, ९९१, ९९२)
२८८ षु प्रसवे । (९८८)
२८९ जि ज्रि अभिभवे । (९९३, ९९४)
२९० तृ प्लवने । (१०१८)
२९१ क्ष्विदा अव्यक्ते शब्दे । (१०२७)
२९२ स्कन्दिर् गतौ । (१०२८)
२९३ यभ मैथुने । (१०२९)
२९४ णम प्रह्वत्वे शब्दे च । (१०३०)
२९५ गम्लृ सृप्लृ गतौ । (१०३१, १०३२)
२९६ यमु उपरमे । (१०३३)
२९७ तप संतापे । (१०३४)
२९८ त्यज हानौ । (१०३५)
२९९ षन्ज गतौ । (१०३६)
३०० दृशिर् प्रेक्षणे । (१०३७)
३०१ दन्श दशने । (१०३८)
३०२ कृष विलेखने । (१०३९)
३०३ दह भस्मीकरणे । (१०४०)
३०४ मिह सेचने (१०४१)
३०५ कित निवासे (१०४२)

। अतङानाः ।

३०६ एध वृद्धौ । (२)
३०७ स्पर्ध संहर्षे । (३)

३०८ गाधृ प्रतिष्ठायाम् । (४)
३०९ बाधृ विलोडने । (५)
३१० दध धारणे । (८)
३११ स्कुदि आप्रवणे । (९)
३१२ श्विदि श्वैत्ये । (१०)
३१३ वदि अभिवादने । (११)
३१४ भदि कल्याणे । (१२)
३१५ मदि जाड्ये । (१३)
३१६ स्पदि किञ्चिच्चलने । (१४)
३१७ क्लिदि परिदेवने । (१५)
३१८ मुद हर्षे । (१६)
३१९ दद दाने । (१७)
३२० ष्वद स्वाद स्वर्द आस्वादने । (१८, २८, १९)
३२१ उर्द माने । (२०)
३२२ कुर्द खुर्द गुर्द क्रीडायाम् । (२१, २३)
३२३ षूद क्षरणे । (२५)
३२४ ह्राद शब्दे । (२६)
३२५ ल्हादी सुखे च । (२७)
३२६ पर्द कुत्सिते शब्दे । (२९)
३२७ यती प्रयत्ने । (३०)
३२८ युतृ जुतृ भाषणे । (३१, ३२)
३२९ नाधृ नाथृ विथृ वेथृ याचने । (६, ७, ३३, ३४)
३३० श्रथि शैथिल्ये । (३५)
३३१ ग्रथ कौटिल्ये । (३६)
३३२ कत्थ श्लाघायाम् । (३७)
३३३ शीकृ सेचने । (७५)
३३४ लोकृ दर्शने । (७६)
३३५ श्लोकृ संघाते । (७७)
३३६ द्रेकृ ध्रेकृ वृद्धौ । (७८, ७९)
३३७ रेकृ शङ्कायाम् । (८०)
३३८ सेकृ स्रेकृ श्रकृ श्लकृ गत्यर्थाः (८१, ८२)
३३९ शकि शङ्कायाम् । (८६)
३४० अकि लक्षणे । (८७)
३४१ वकि कौटिल्ये । (८८)
३४२ मकि मण्डने । (८९)
३४३ कक लौल्ये । (९०)
३४४ कुक वृक आदाने । (९१, ९२)
३४५ चक तृप्तौ । (९३)
३४६ ककि श्वकि त्रकि ढौकृ त्रौकृ ष्वस्क वस्क मस्क टिकृ टीकृ रघि लघि गत्यर्थाः । (९४, ९६-१०४, १०७, १०८)
३४७ अघि वघि गत्याक्षेपे । (१०९, ११०)
३४८ मघि कैतवे च । (११२)
३४९ राघृ लाघृ सामर्थ्ये । (११३, ११४)
३५० द्राघृ आयासे च । (११७)
३५१ श्लाघृ कत्थने । (११८)
३५२ वर्च दीप्तौ । (१७५)
३५३ लोचृ दर्शने । (१७७)
३५४ षच सेचने । (१७६)
३५५ शच श्वचि गतौ । (१८०)
३५६ कच बन्धने । (१८१)
३५७ कचि दीप्तौ । (१८२)
३५८ मचि धारणे । (१८६)
३५९ मच मुचि कल्कने । (१८४, १८५)
३६० पचि व्यक्तीकरणे । (१८७)
३६१ ष्टुच प्रसादे । (१८८)
३६२ ईज ऋज गतौ । (१९६, १८९)
३६३ ऋजि भृजी भर्जने । (१९०, १९१)

३६४ एजृ रेजृ भ्रेजृ भ्राजृ दीप्तौ । (१६२, १६५, १६३, १६४)

३६५ अट्ट अतिक्रमे । (२७३)

३६६ वेष्ट वेष्टने । (२७४)

३६७ चेष्ट चेष्टायाम् । (२७५)

३६८ गोष्ट लोष्ट संघाते । (२७६, २७७)

३६९ घट्ट चलने । (२७८)

३७० स्फुट विकसने । (२७९)

३७१ अठि गतौ । (२८०)

३७२ वठि एकचर्यायाम् । (२८१)

३७३ मठि कठि शोके । (२८२, २८३)

३७४ मुठि पलायने । (२८४)

३७५ एठ हेठ विबाधायाम् । (२८६, २८५)

३७६ हिडि गतौ । (२८७)

३७७ हुडि पिडि संघाते । (२८८, २९३)

३७८ कुडि दाहे । (२८९)

३७९ वडि मडि वेष्टने । (२९०, २९१)

३८० भडि परिभाषणे । (२९२)

३८१ मुडि मार्जने । (२९४)

३८२ तुडि तोडने । (२९५)

३८३ भुडि भरणे (२९६)

३८४ स्फुडि विकसने । (२९७)

३८५ चडि कोपे । (२९८)

३८६ शडि रुजायाम् । (२९९)

३८७ तडि ताडने । (३००)

३८८ पडि गतौ । (३०१)

३८९ कडि मदे । (३०२)

३९० खडि मन्थे । (३०३)

३९१ होडृ अनादरे । (३०५)

३९२ वाडृ आप्लाव्ये । (३०६)

३९३ द्राडृ ध्राडृ विशरणे । (३०७, ३०८)

३९४ शाडृ श्लाघायाम् । (३०९)

३९५ तिपृ तेपृ ष्टेपृ क्षरणार्थाः । (३८५, ३८६, ३८८)

३९६ ग्लेपृ दैन्ये । (३९०)

३९७ टुवेपृ कम्पने । (३९१)

३९८ केपृ गेपृ ग्लेपृ च । (३९२-३९४)

३९९ मेवृ पेवृ मेवृ रेवृ गतौ ।

४०० त्रपूष् लज्जायाम् । (३९९)

४०१ कपि चलने । (४००)

४०२ अबि शब्दे । (४०३)

४०३ रबि लबि अवस्रंसने । (४०१, ४०४)

४०४ कबृ वर्णे । (४०५)

४०५ क्लीबृ आधार्ष्ट्ये । (४०६)

४०६ क्षीबृ मदे । (४०७)

४०७ शीभृ कत्थने । (४०८)

४०८ चीभृ च । (४०९)

४०९ रेभृ शब्दे । (४१०)

४१० ष्टभि स्तभि स्कभि प्रतिबन्धे । (४१३, ४१४)

४११ जभि जृभि गात्रविनामे । (४१६)

४१२ शल्भ कत्थने । (४१७)

४१३ वल्भ भोजने । (४१८)

४१४ गल्भ धार्ष्ट्ये । (४१९)

४१५ श्रम्भु प्रमादे । (४२०)

४१६ ष्टुभु स्तम्भे । (४२१)

४१७ घिणि घुणि घृणि ग्रहणे । (४६१, ४६२)

४१८ घुण घूर्ण भ्रमणे । (४६४, ४६५)
४१९ पन स्तुतौ । (४६७)
४२० पण व्यवहारे । (४६६)
४२१ भाम क्रोधे । (४६८)
४२२ क्षमूष् सहने । (४६९)
४२३ कमु कान्तौ । (४७०)
४२४ अय वय मय चय तय णय रय गतौ । (५०३, ५०४, ५०६–५०९, ५११)
४२५ दय रक्षणे । (५१०)
४२६ ऊयी तन्तुसंताने । (५१२)
४२७ पूयी विशरणे । (५१३)
४२८ क्नूयी शब्दे । (५१४)
४२९ क्ष्मायी विधूनने । (५१५)
४३० स्फायी ओप्यायी वृद्धौ । (५१६, ५१७)
४३१ तायृ संताने । (५१८)
४३२ शल चलने । (५१९)
४३३ वल संवरणे । (५२०)
४३४ मल मल्ल धारणे । (५२२, ५२३)
४३५ भल भल्ल परिभाषणे । (५२४, ५२५)
४३६ कल संख्याने । (५२६)
४३७ कल्ल अव्यक्ते शब्दे । (५२७)
४३८ तेवृ देवृ देवने । (५२८, ५२९)
४३९ षेवृ शेवृ केवृ गेवृ ग्लेवृ पेवृ मेवृ म्लेवृ सेवने । (५३०, ५३६, ५३९, ५३१–५३५)
४४० रेवृ प्लवगतौ । (५४०)
४४१ धुक्ष धिक्ष संदीपने । (६३३, ६३४)
४४२ वृक्ष वरणे । (६३५)
४४३ शिक्ष विद्योपादाने । (६३६)
४४४ भिक्ष याञ्चायाम् । (६३७)
४४५ क्लेश बाधने । (६३८)
४४६ दक्ष वृद्धौ । (६३९)
४४७ दीक्ष मौण्ड्ये । (६४०)
४४८ ईक्ष दर्शने । (६४१)
४४९ ईष गतौ । (६४२)
४५० भाष वचने । (६४३)
४५१ स्पर्श स्नेहने ।
४५२ ग्लेषृ अन्विच्छायाम् । (६४५)
४५३ येषृ प्रयत्ने ।
४५४ जेषृ णेषृ एषृ ह्लेषृ गतौ । (६४७-६५०)
४५५ रेषृ अव्यक्ते शब्दे । (६५१)
४५६ काशृ भासृ दीप्तौ । (६७८, ६५५)
४५७ कासृ णासृ रासृ हेसृ शब्दे । (६५४, ६५६, ६५७, ६५२)
४५८ णस कौटिल्ये । (६५८)
४५९ भ्यस भये । (६५९)
४६० आङः शन्सु इच्छायाम् (६६०)
४६१ ग्रसु ग्लसु अदने । (६६१, ६६२)
४६२ ईह चेष्टायाम् । (६६३)
४६३ बहि महि वृद्धौ । (६६४, ६६५)
४६४ अहि गतौ । (६६६)
४६५ गर्ह गल्ह कुत्सने । (६६७, ६६८)
४६६ वर्ह वल्ह प्राधान्ये । (६६९, ६७०)
४६७ प्लीह गतौ ।
४६८ वेहृ जेहृ वाहृ प्रयत्ने । (६७४-६७६)
४६९ द्राहृ निद्राक्षये । (६७७)
४७० ऊह वितर्के । (६७९)
४७१ गाहू विलोडने । (६८०)
४७२ गृहू ग्रहणे (६८१)
४७३ घुषिर् करणे ।

४७४ स्मिङ् विहसने । (९९६)
४७५ गुङ् अव्यक्ते शब्दे । (९९७)
४७६ गाङ् गतौ । (९९८)
४७७ घुङ् कुङ् ङुङ् उङ् शब्दे ।
(१०००, ९९९, १००२, १००१)
४७८ च्युङ् क्युङ् ज्युङ् क्ष्युङ् प्रुङ्
प्लुङ् रुङ् गतौ । (१००४–१००८)
४७९ धृङ् अवध्वंसने । (१००९)
४८० मेङ् प्रतिदाने । (१०१०)
४८१ देङ् रक्षणे । (१०११)
४८२ श्यैङ् गतौ । (१०१२)
४८३ प्यैङ् वृद्धौ । (१०१३)
४८४ त्रैङ् पालने (१०१४)
४८५ पूङ् पवने (१०१५)
४८६ मूङ् बन्धने । (१०१६)
४८७ डीङ् आकाशगमने (१०१७)
४८८ गुप् गोपने । (१०१९)
४८९ तिज निशाने । (१०२०)
४९० मान पूजायाम् । (१०२१)
४९१ बध बन्धने । (१०२२)
४९२ रभ आरम्भे । (१०२३)
४९३ डुलभष् प्राप्तौ (१०२४)
४९४ ष्वन्ज परिष्वङ्गे । (१०२५)
४९५ हद पुरीषोत्सर्गे । (१०२६)
४९६ द्युता दीप्तौ । (७७७)
४९७ श्विता वर्णे । (७७८)
४९८ मिदा ष्विदा क्ष्विदा स्नेहने
(७७९, ७८०)
४९९ रुच दीप्तौ । (७८१)
५०० घुट परिवर्तने । (७८२)
५०१ रुट लुट प्रतीघाते । (७८३, ७८४)
५०२ शुभ दीप्तौ । (७८६)
५०३ क्षुभ संचलने (७८७)
५०४ णभ तुभ हिंसायाम् । (७८८,
७८९)
५०५ स्रन्सु भ्रन्सु अवस्रंसने । (७९०, ७९२)
५०६ ध्वन्सु गतौ । (७९३)
५०७ स्रम्भु विश्वासे । (७९४)
५०८ वृतु वर्तने । (७९५)
५०९ वृधु वृद्धौ । (७९६)
५१० शृधु शब्दकुत्सायाम् । (७९७)
५११ स्यन्दू स्रवणे । (७९८)
५१२ कृपू सामर्थ्ये । कृप् । (७९९)
५१३ घट चेष्टायाम् । (८००)
५१४ व्यथ दुःखे । (८०१)
५१५ प्रथ पृथु विस्तारे । (८०२)
५१६ म्रद मृदु मर्दने । (८०४)
५१७ स्खद स्खदने । (८०५)
५१८ क्षजि दक्ष गतौ । (८०६, ८०७)
५१९ क्रप कृपायाम् । (८०८)
५२० कदि क्रदि क्लदि वैक्लव्ये ।
(८०९–८११)
५२१ त्वरा संभ्रमे । (८१२)
५२२ घटादयः षितः तङानिनः ।
५२३ ज्वर रोगे (८१३)
५२४ गड सेचने । (८१४)
५२५ हेड वेष्टने । (८१५)
५२६ वट भट परिभाषणे । (८१६, ८१७)
५२७ नट नृत्तौ । (८१८)
५२८ चक तृप्तौ । (८२०)
५२९ ष्टक प्रतीघाते । (८१९)
५३० कखे हसने (८२१)
५३१ रगे शङ्कायाम् (८२२)
५३२ लगे सङ्गे । (८२३)

५३३ ह्लगे ह्लगे षगे ष्ठगे संवरणे। (८२४–८२७)
५३४ अक अग कुटिलायां गतौ । (८२९, ८३०)
५३५ कण रण गतौ (८३१, ८३२)
५३६ श्नथ क्रथ क्लथ हिंसायाम् । (८३६, ८३८, ८३९)
५३७ ज्वल दीप्तौ । (८४२)
५३८ ज्वल ह्वल ह्मल चलने। (८४३ ८४४)
५३९ स्मृ अध्ययने । (८४५)
५४० दृ भये। (८४६)
५४१ नृ नये। (८४७)
५४२ श्रा पाके । (८४८)
५४३ मारण-तोषण-निशानेषु ज्ञा। (८४९)
५४४ कम्पने चलिः । (८५०)
५४५ ऊर्जने छदिः । (८५१)
५४६ जिह्वोन्मन्थने लडिः । (८५२)
५४७ हर्ष–ग्लेपनयोः मदिः । (८५३)
५४८ घटादयो मितः ।
५४९ जनी-जृ-क्नसु-रञ्जः अमन्ताश्च । (८६२-८६६)
५५० ज्वल-ह्वल-ह्मल-नमाम् अप्रादीनां च। (८६७)
५५१ ग्ला-स्ना-वनु-वमां च । (८६८)
५५२ न कमि-अमि-चमाम् (८६९)
५५३ शमो दर्शने । (८७०)
५५४ यमोऽपरिवेषणे । (८७१)
५५५ स्खदेः अप-परिभ्यां च। (८७२)
५५६ फण गतौ । वृत् (८७३)

अतङानाः ।

५५७ राजृ दीप्तौ। (८७४)

विभाषितः ।

५५८ भ्राजृ टुभ्राशृ टुभ्लाशृ दीप्तौ । (८७५–८७७)

तङानिनः ।

५५९ स्यमु स्वन ध्वन शब्दे (८७८ ८७९, ८८१)
५६० षम ष्टम वैक्लव्ये। (८८२,८८३)
५६१ ज्वल दीप्तौ । (८८४)
५६२ चल कम्पने । (८८५)
५६३ जल धान्ये । (८८६)
५६४ टल ट्वल वैक्लव्ये (८८७, ८८८)
५६५ ष्ठल स्थाने। (८८९)
५६६ हल विलेखने । (८९०)
५६७ णल गन्धे । (८९१)
५६८ पल गतौ । (८९२)
५६९ बल प्राणने । (८९३)
५७० पुल महत्त्वे । (८९४)
५७१ कुल संस्त्याने । (८९५)
५७२ शल हुल पत्लृ पथे गतौ । (८९६-८९८, ९००)
५७३ क्वथे निष्पाके। (८९९)
५७४ मथे विलोडने । (९०१)
५७५ टुवम उद्गिरणे । (९०२)
५७६ भ्रमु चलने । (९०३)
५७७ क्षर संचलने । (९०४)

अतङानाः ।

५७८ षह मर्षणे । (९०५)
५७९ रमु क्रीडायाम्। (९०६)

तङानिनौ ।

५८० षद्लृ विशरणे । (९०७)
५८१ शद्लृ शातने । (९०८)
५८२ क्रुश आह्वाने (९०९)
५८३ कुच कौटिल्ये । (९१०)
५८४ बुध बोधने । (९११)

५८५ युध संप्रहारे ।
५८६ रुह प्रादुर्भावे । (९१२)
५८७ कस गतौ । वृत् (९१३)
अतङानाः ।
५८८ हिक्क शब्दे । (९१४)
५८९ धावु गति-शुद्धयोः । (९२२)
५९० अन्चु गतौ । (९१५)
५९१ टुयाचृ याच्ञायाम् । (९१६)
५९२ रेटृ परिभाषणे । (९१७)
५९३ चते चदे च याचने । (९१८)
५९४ प्रोथृ पर्याप्तौ । (९१९)
५९५ मेधृ संगमे । (९२०)
५९६ णिदृ णेदृ संनिकर्षे । (९२१)
५९७ मिदृ मेदृ मेधा-हिंसयोः । (९२०)
५९८ शृधु मृधु उन्दे । (९२२, ९२३)
५९९ वुध बोधने । (९२४)
६०० [1]उचुन्दिर् निशाने (९२५)
६०१ [2]वेणृ गतौ । (९२६)
६०२ खनु अवदारणे (९२७)
६०३ चीवृ आदाने (९२८)
६०४ चायृ पूजायाम् । (९२९)
६०५ व्यय गतौ । (९३०)
६०६ दाशृ दाने । (९३१)
६०७ भेषृ भये । (९३२)
६०८ अस गतौ । (९३४)
६०९ स्पश बाधने । (९३६)
६१० लष कान्तौ । (९३७)
६११ चष भक्षणे । (९३८)
६१२ कष हिंसायाम् । (९३९)
६१३ लप आदाने । (९४०)
६१४ भक्ष भक्षणे । (९४१)
६१५ दाशृ दाने । (९४२)
६१६ माहृ माने । (९४३)
६१७ गुहू संवरणे । (९४४)
६१८ श्रि सेवायाम् (९४५)
६१९ हृञ् हरणे । (९४७)
६२० भृञ् भरणे । (९४६)
६२१ धृञ् धारणे । (९४८)
६२२ णी प्रापणे । (९५०)
६२३ दान अवखण्डने । (१०४३)
६२४ शान तेजने । (१०४४)
६२५ डुपचष् पाके । (१०४५)
६२६ भज सेवायाम् (१०४७)
६२७ रञ्ज रागे । (१०४८)
६२८ शप आक्रोशे । (१०४९)
६२९ त्विष दीप्तौ (१०५०)
६३० यज देवपूजायाम् । (१०५१)
६३१ डुवप बीजनिक्षेपे । (१०५२)
६३२ वह प्रापणे । (१०५३)
६३३ वेञ् तन्तुसंताने (१०५५)
६३४ व्येञ् संवरणे । (१०५६)
६३५ ह्वेञ् स्पर्धायाम् । (१०५७)
विभापिताः ।
६३६ वस निवासे । (१०५४)
६३७ वद वचने । (१०५८)
६३८ टुओश्वि गतिवृद्धौ । वृत् । (१०५९)
अतङानाः ।

भूवादयः समाप्ताः ॥१॥

१. हेमचन्द्रसंगृहीते धातुपाठे माधवीयधातुवृत्तौ च अनुक्रमेण "ओचुन्दृग् निशामने" "उचुन्दिर् निशामने" इति धातुः ।

२. एवं तयोरेव ग्रन्थयोः "व्रेणृ गति-ज्ञान-चिन्ता-निशामन-वादित्रग्रहणेषु" इति ।

१ अद प्सा भक्षणे । (१, ४६)
२ षस स्वप्ने । (६९)
३ वश कान्तौ (७०)
४ हन हिंसायाम् । (२)
५ द्यु अभिगमने । (३१)
६ यु मिश्रणे । (२३)
७ णु स्तुतौ । (२६)
८ क्ष्णु तेजने (२८)
९ ष्णु प्रस्रवणे । (२९)
१० टुक्षु रु कु शब्दे । (२७,२४,३३)
११ इक् स्मरणें । (३८)
१२ इण् वी वा गतौ । (३६,३९,४१)
१३ या प्रापणे (४०)
१४ भा दीप्तौ । (४२)
१५ ष्णा शौचे । (४३)
१६ श्रा पाके । (४४)
१७ द्रा पलायने । (४५)
१८ पा रक्षणे (४७)
१९ रा ला आदाने । (४८, ४९)
२० दाप् लवने (५०)
२१ ख्या प्रकथने (५१)
२२ प्रा पूरणे (५२)
२३ मा माने । (५३)
२४ विद ज्ञाने । (५५)
२५ अस भुवि । (५६)
२६ मृजू शुद्धौ (५७)
२७ वच भाषणे । (५४)
२८ रुदिर् अश्रुविमोक्षणे । (५८)
२९ ष्वप शये । (५९)
३० अन श्वस प्राणने । (६१,६०)
३१ जक्ष भक्षणे । (६२)
३२ जागृ निद्राक्षये । (६३)
३३ दरिद्रा दुर्गतौ (६४)
३४ चकासृ दीप्तौ । (६५)
३५ शासृ अनुशिष्टौ । (६६)
३६ यङ्लुक् च । (७१)

अतङानाः ।

३७ चक्ष वचने । (७)
३८ ईर गतौ । (८)
३९ ईड स्तुतौ । (९)
४० ईश ऐश्वर्ये । (१०)
४१ आस उपवेशने । (११)
४२ आङः शासु इच्छायाम् । (१२)
४३ वस आच्छादने । (१३)
४४ कसि गतौ । (१४)
४५ णिसि चुम्बने । (१५)
४६ णिजि शुद्धौ । (१६)
४७ शिजि शब्दे । (१७)
४८ वृजी वर्जने । (१९)
४९ पृची संपर्के । (२०)
५० षूङ प्रसवे । (२१)
५१ शीङ स्वप्ने । (२२)
५२ इङ अध्ययने । (३७)
५३ दीधीङ दीप्तौ । (६७)
५४ वेवीङ गतौ । (६८)
५५ ह्नुङ अपनयने । (७२)

तङानिनः ।

५६ द्विष अप्रीतौ । (३)
५७ दुह प्रपूरणे । (४)
५८ दिह उपचये । (५)
५९ लिह आस्वादने । (६)
६० ऊर्णुञ् आच्छादने । (३०)
६१ ष्टु स्तुतौ । (३४)
६२ ब्रू वचने । (३५)

विभाषिताः ।

अदादयः समाप्ताः ॥ २ ॥

१ हु हवने । (१)
२ भी भये । (२)
३ ह्री लज्जायाम् । (३)
४ पॄ पालने । (४)
५ ओहाक् त्यागे । (८)
६ घृ क्षरणे । (१४)
७ ऋ सृ गतौ । (१६, १७)
८ भस भर्त्सने । (१८)
९ कि कित ज्ञाने । (१९, २०)
१० तुर त्वरणे । (२१)
११ धिष शब्दे । (२२)
१२ धन धान्ये । (२३)
१३ जन जनने । (२४)
१४ गा स्तुतौ । (२५)

अनङानाः ।

१५ णिजिर् शुद्धौ । (११)
१६ विजिर् पृथग्भावे । (१२)
१७ विष्लृ व्याप्तौ । वृत् । (१३)
१८ डुदाञ् दाने । (९)
१९ डुधाञ् डुभृञ् धारणे । (१०,५)

विभाषिताः ।

२० माङ माने । (६)
२१ ओहाङ गतौ । (७)

तङानिनौ ।

जुहोत्यादयः समाप्ताः ॥ ३ ॥

१ दिवु क्रीडायाम् । (१)
२ षिवु तन्तुसंताने (२)
३ श्रिवु सिवु गतौ ।
४ ष्ठिवु क्षिवु निरसने । (४)
५ क्नसु ह्वरणे । (६)
६ नृती नाट्ये । (९)
७ त्रसी भये । (१०)
८ कुथ पूतिभावे । (११)
९ पुथ हिंसायाम् । (१२)
१० गुध वेष्टने । (१३)
११ क्षिप प्रेरणे । (१४)
१२ पुष्प विकसने । (१५)
१३ तिम ष्टिम ष्टीम आर्द्रभावे (१६, १७)
१४ व्रीड चोदने । (१८)
१५ इष गतौ । (१९)
१६ पुह शक्तौ । (२१)
१७ जॄष् झॄष् जरायाम् (२२, २३)
१८ शो तनूकरणे । (३७)
१९ छो छेदने । (३८)
२० षो अवसाने । (३९)
२१ दो अवखण्डने । (४०)
२२ राध साध संसिद्धौ । (७१)
२३ व्यध ताडने । (७२)
२४ पुष पुष्टौ । (७३)
२५ शुष शोषणे । (७४)
२६ तुष प्रीतौ । (७५)
२७ दुष वैकृत्ये । (७६)
२८ श्लिष आलिङ्गने । (७७)
२९ ष्विदा पाके ।(७९)
३० कुप कोपे । (८०)
३१ क्षुध बुभुक्षायाम् । (८१)
३२ शुध शौचे । (८२)
३३ षिधु संराद्धौ । (८३)
३४ रध हिंसायाम् । (८४)
३५ णश अदर्शने । (८५)

३६ तृप तृप्तौ । (८६)
३७ दृप हर्षे । (८७)
३८ द्रुह द्रोहे । (८८)
३९ मुह वैचित्त्ये । (८९)
४० ष्णुह उद्गिरणे । (९०)
४१ ष्णिह प्रीतौ । वृत् । (९१)
४२ शमु दमु उपशमे । (९२, ९४)
४३ तमु काङ्क्षायाम् । (९३)
४४ श्रमु खेदे । (९५)
४५ भ्रमु अनवस्थाने । (९६)
४६ क्षमूष् सहने । (९७)
४७ क्लमु ग्लानौ । (९८)
४८ मदी हर्षे । (९९)
४९ असु क्षेपणे । (१००)
५० यसु प्रयत्ने । (१०१)
५१ जसु मोक्षणे । (१०२)
५२ तसु दसु उपक्षेपे। (१०३, १०४)
५३ वसु स्तम्भे । (१०५)
५४ प्युष विभागे । (१०६)
५५ प्लुष दाहे । (१०७)
५६ बिस प्रेरणे । (१०८)
५७ कुस श्लेषणे । (१०९)
५८ बुस उत्सर्गे । (११०)
५९ मुष खण्डने । (१११)
६० पसी मसी परिमाणे । (११२)
६१ लुट विलोटने । (११३)
६२ उच समवाये । (११४)
६३ भृशु भ्रन्शु अवःपतने । (११५)
६४ वृश वरणे । (११६)
६५ कृश तनूकरणे । (११७)
६६ तृष पिपासायाम् । (११८)
६७ हृष तुष्टौ । (११९)
६८ रुष रोषे । (१२०)
६९ डिप क्षेपे । (१२१)
७० स्तूप समुच्छ्राये । (१२७)
७१ कुप क्रोधे । (१२२)
७२ गुप व्याकुलत्वे । (१२३)
७३ युप रुप लुप विमोहने (१२४-१२६)
७४ लुभ गार्ध्ये । (१२८)
७५ क्षुभ संचलने । (१२९)
७६ णभ तुभ हिंसायाम्। (१३०,१३१)
७७ क्लिदू आर्द्रभावे । (१३२)
७८ मिदा स्नेहने (१३३)
७९ क्ष्विदा मोचने । (१३४)
८० ऋधु वृद्धौ । (१३५)
८१ गृधु अभिकाङ्क्षायाम् (१३६)

अतङानाः ।

८२ षूङ प्राणिप्रसवे (२४)
८३ दूङ परितापे । (२५)
८४ दीङ क्षये । (२६)
८५ डीङ गतौ । (२७)
८६ धीङ अनादरे । (२८)
८७ मीङ हिंसायाम् (२९)
८८ रीङ स्रवणे । (३०)
८९ लीङ श्लेषणे (३१)
९० व्रीङ वरणे । (३२)
९१ स्वादय ओदितः ।
९२ पीङ पाने । (३३)
९३ ईङ गतौ । (३५)
९४ प्रीङ प्रीतौ । (३६)
९५ जनी प्रादुर्भावे (४१)
९६ दीपी दीप्तौ । (४२)
९७ पूरी आप्यायने । (४३)
९८ तूरी त्वरायाम् । (४४)

९९ जूरी जरायाम् (४८)
१०० गूरी घूरी धूरी शूरी हिंसायाम् । (४६,४७,४५,४९)
१०१ चूरी दाहे । (५०)
१०२ तप ऐश्वर्ये । (५१)
१०३ [1]वावृतु वर्तने । (५२)
१०४ [2]क्लिश उपतापे । (५२ अ)
१०५ काशृ दीप्तौ । (५३)
१०६ वाशृ शब्दे । (५४)
१०७ पद गतौ । (६०)
१०८ खिद असहने । (६१)
१०९ विद सत्तायाम् । (६२)
११० बुध अवगमने । (६३)
१११ युध संप्रहारे । (६४)
११२ अनो: रुध कामे । (६५)
११३ मन ज्ञाने । (६७)
११४ युज समाधौ । (६८)
११५ सृज विसर्गे । (६९)
११६ लुजो विनाशे ।
११७ लिश अल्पीभावे । (७०)

तङानिनः ।

११८ शक मृष क्षान्तौ । (७८,५५)
११९ ईशुचिर् पूतिभावे (५६)
१२० णह बन्धने । (५७)
१२१ रञ्ज रागे । (५८)
१२२ शप आक्रोशे । (५९)

विभाषिताः ।

दिवादयः समाप्ताः ॥४॥

१ षुञ् अभिषवे । (१)
२ षि बन्धने । (२)
३ शि निशाने । (३)
४ डुमिञ् प्रक्षेपणे । (४)
५ चि चये । (५)
६ स्तृ आच्छादने । (६)
७ कृ हिंसायाम् (७)
८ वृञ् वरणे । (८)
९ धूञ् कम्पने । (९)

विभाषिताः ।

१० टुदु उपतापे । (१०)
११ हि गतौ । (११)
१२ क्षि क्षये । (३०)
१३ पृ स्पृ प्रीतौ । (१२, १३)
१४ आप्लृ व्याप्तौ । (१४)
१५ शक्लृ शक्तौ । (१५)
१६ श्रु श्रवणे ।
१७ राध साध संसिद्धौ । (१६,१७)
१८ षघ तिक ष्टिक हिंसायाम् । (२१, २०)
१९ धृषा प्रागल्भ्ये । (२२)
२० दम्भु दम्भे । (२३)
२१ ऋधु वृद्धौ । (२४)

---

१. हैमे धातुपाठे माधवीये च "वृतूचि वरणे" "वृतु वरणे" इति धातुः । "तप ऐश्वर्ये वा" इत्यत्र धातोः माधवीयवृत्तौ एवं निर्दिष्टम्–"केचिदिह वाग्रहणं वक्ष्यमाणस्य "वृतु वरणे" इत्यस्य आद्यांशमिच्छन्ति 'वावृतु वरणे' इति । तथा च भट्टिः "ततो वावृत्यमाना सा रामशालां न्यविक्षत" इति । (माध० वृ०पृ० २९३)

२. माधवीयायां धातुवृत्तौ अयं धातुः ५३–त्रिपञ्चाशत्तमः ।

२२ ऋक्ष चिरि जिरि हिंसायाम् । (२९–३२)
२३ तृप प्रीणने । (२५)
अतङानाः ।
२४ अशू व्याप्तौ । । (१८)
२५ ष्टिघ स्कन्दने । (१९)
तङानिनौ ।

स्वादयः समाप्ताः ॥ ५ ॥

१ तुद व्यथने । (१)
२ णुद प्रेरणे । (२)
३ दिश अतिसर्जने । (३)
४ भ्रस्ज पाके । (४)
५ क्षिप प्रेरणे । (५)
६ कृष विलेखने (६)
७ मिल संगमे । (१३५)
८ मुच्लृ मोक्षणे । (१३६)
९ लुप्लृ छेदने । (१३७)
१० विद्लृ लाभे । (१३८)
११ लिप उपदेहे । (१३९)
१२ षिच क्षरणे । (१४०)
विभाषिताः ।
१३ कृती छेदने । (१४१)
१४ खिद परिघाते । (१४२)
१५ पिश अवयवे । वृत् । (१४३)
१६ ऋषी गतौ । (७)
१७ ओव्रश्चु छेदने । (११)
१८ व्यच व्याजीकरणे । (१२)
१९ उछि उञ्छे । (१३)
२० उछी विवासे । (१४)
२१ ऋछ गतौ । (१५)
२२ मिछ उत्क्लेशे । (१६)
२३ जर्त्स चर्च झर्झ परिभाषणे। (१७)
२४ त्वच संवरणे । (१८)
२५ ऋच स्तुतौ । (१९)
२६ उब्ज आर्जवे । (२०)
२७ उद्झ उत्सर्गे । (२१)
२८ लुभ विमोहने । (२२)
२९ ऋफ कत्थने ।
३० ऋफ ऋम्फ हिंसायाम् । (३०)
३१ तृप तृम्प तृप्तौ । (२४)
३२ दृप दृम्प उत्क्लेशे (२८)
३३ गुफ गुम्फ ग्रन्थे । (३१)
३४ उभ उम्भ पूरणे । (३२)
३५ शुभ शुम्भ शोभार्थे । (३३)
३६ दृभी ग्रन्थे । (३४)
३७ चृती हिंसायाम् । (३५)
३८ विध विधाने । (३६)
३९ जुन शुन गतौ । (३७, ४६)
४० पृड मृड सुखने । (३९, ३८)
४१ पृण प्रीणने । (४०)
४२ मृण हिंसायाम् । (४१)
४३ तुण कौटिल्ये । (४२)
४४ पुण शुभे । (४३)
४५ मुण प्रतिज्ञाने । (४४)
४६ कुण शब्दे । (४५)
४७ द्रुण हिंसायात् । (४७)
४८ घुण घूर्ण भ्रमणे। (४८, ४९)
४९ पुर ऐश्वर्ये (५०)
५० कुर शब्दे । (५१)
५१ खुर छुर छेदने । (५२, ७९)

५२ मुर संवेष्टने (५३)
५३ क्षुर विलेखने । (५४)
५४ घुर भीमे । (५५)
५५ पुर अग्रगमने । (५६)
५६ वृहू उद्यमे । (५७)
५७ तृहू स्तृहू तृन्हू हिंसायाम् (५८)
५८ इषु इच्छायाम् । (५९)
५९ मिष स्पर्धायाम् । (६०)
६० किल क्रीडायाम् (६१)
६१ तिल स्नेहने (६२)
६२ चिल वसने । (६३)
६३ चल विलसने (६४)
६४ इल गतौ । (६५)
६५ विल भेदे । (६७)
६६ णिल गहने । (६८)
६७ हिल हावे । (६९)
६८ शिल पिल उञ्छे । (७०)
६९ लिख लेखने । (७२)
७० कुट कौटिल्ये । (७३)
७१ पुट संश्लेषणे । (७४)
७२ कुच संकोचने (७५)
७३ गुज शब्दे । (७६)
७४ गुड रक्षायाम् । (७७)
७५ डिप क्षेपे । (७८)
७६ हुड संघाते । (१०२)
७७ स्फुट भेदे । (८०)
७८ मुट प्रमर्दने (८१)
७९ त्रुट चुट छेदने । (८२,८४)
८० तुट कलहे । (८३)
८१ जुड बन्धे । (८५)
८२ लुट संश्लेषणे ।
८३ कृड घसने (८८)
८४ कुड बाल्ये । (८६)
८५ चुड विलसने ।
८६ घुट प्रतीघाते । (९१)
८७ तुड थुड स्थुड खुड छुड संवरणे ।
(९२, ९३, ९७, ९९)
८८ स्फुर चलने । (९४)
८९ स्फुल संचये च । (९६)
९० णू स्तुतौ । (१०४)
९१ धू विधूनने । (१०५)
९२ गुव पुरीषोत्सर्गे ।
९३ ध्रुव स्थैर्ये । (१०७)

अतङानाः ।

९४ गुरी उद्यमे । (१०३)
९५ कुङ शब्दे । वृत् । (१०८)
९६ पृङ व्यायामे । (१०९)
९७ मृङ प्राणत्यागे । (११०)
९८ जुषी सेवायाम् । (८)
९९ ओविजी उद्वेगे । (९)
१०० ओलजी ओलस्जी व्रीडे । (१०)

तङानिनः ।

१०१ रि पि गतौ । (१११, ११२)
१०२ धि धारणे । (११३)
१०३ क्षि निवासे । (११४)
१०४ पू प्रेरणे (११५)
१०५ कृ विक्षेपे । (११६)
१०६ ग निगरणे । (११७)

अतङानाः ।

१०७ दृङ आदरे । (११८)
१०८ धृङ अवस्थाने । (११९)

तङानिनौ ।

१०९ प्रछ प्रश्ने । (१२०)
११० सृज विसर्गे । (१२१)

१११ टुमस्जो शुद्धौ । (१२२)
११२ रुजो भङ्गे । (१२३)
११३ भुजो कौटिल्ये । (१२४)
११४ छुप स्पर्शे । (१२५)
११५ रुश रिश हिंसायाम् । (१२६)
११६ लिश विछ गतौ । (१२७, १२९)
११७ स्पृश संस्पर्शे । (१२८)
११८ विश प्रवेशने । (१३०)
११९ मृश आमर्शे । (१३१)
१२० षद्लृ अवसादे । (१३३)
१२१ शद्लृ शातने । (१३४)
अतङानाः ।

तुदादयः समाप्ताः ॥ ६ ॥

१ रुधिर् आवरणे । (१)
२ भिदिर् विदारणे । (२)
३ छिदिर् द्वैधीकरणे । (३)
४ रिचिर् विरेचने । (४)
५ विचिर् पृथग्भावे । (५)
६ क्षुदिर् संपेषणे (६)
७ युजिर् योगे । (७)
८ उछृदिर् दीप्तौ । (८)
९ उतृदिर् हिंसायाम् । (९)
विभाषिताः ।
१० कृती वेष्टने । (१०)
११ शिष्लृ विशेषणे । (१४)
१२ पिष्लृ संचूर्णने । (१५)
१३ भञ्जो आमर्दने । (१६)
१४ भुज पालने । (१७)
१५ तृह हिसि हिंसायाम् (१८, १९)
१६ उन्दी क्लेदने । (२०)
१७ अञ्जू व्यक्तौ । (२१)
१८ तञ्चू संकोचने । (२२)
१९ वृजी वर्जने । (२४)
२० पृची संपर्के । (२५)
अतङानाः ।
२१ इन्धी दीप्तौ । (११)
२२ खिद दैन्ये । (१२)
२३ विद विचारे । (१३)
तङानिनः ।

रुधादयः समाप्ताः ॥ ७ ॥

१ तनु विस्तारे । (१)
२ षणु दाने । (२)
३ क्षणु हिंसायाम् । (३)
४ ऋणु गतौ । (५)
५ तृणु अदने । (६)
६ घृणु दीप्तौ । (७)
७ डुकृञ् करणे । (१०)
विभाषिताः ।
८ वनु याचने । (८)
९ मनु वोधने । (९)
तङानिनौ ।

तनादयः समाप्ताः ॥ ८ ॥

१ डुक्रीञ् द्रव्यविनिमये । (१)
२ प्रीञ् तर्पणे । (२)
३ श्री पाके । (३)
४ मी हिंसायाम् । (४)
५ षि यु वन्धने । (५, ६)
६ स्कु आप्रवणे । (६)

७ क्नूयी शब्दे ।
८ पूञ् पवने । (१२)
९ लू छेदने । (१३)
१० स्तृ छादने (१४)
११ कॄ हिंसायाम् (१५)
१२ वॄ वरणे । (१६)
१३ धूञ् कम्पने । (१७)
१४ ग्रह उपादाने । (६१)

विभाषिताः ।

१५ गॄ मॄ हिंसायाम् । (१८, २२)
१६ पॄ पूरणे । (१९)
१७ भॄ भर्त्सने । (२१)
१८ दॄ विदारणे । (२३)
१९ जॄ जरायाम् । (२४)
२० नॄ नये । (२५)
२१ गॄ शब्दे । (२८)
२२ ज्या हानौ । (२९)
२३ व्ली री ॠ गतौ । (३२,३०,२७)
२४ ली द्रवीकरणे । वृत् । (३१)
२५ व्री वरणे । (३३)
२६ भी भये ।
२७ क्षिष् हिंसायाम् । (३५)
२८ ज्ञा अवबोधने । (३६)
२९ वन्ध बन्धने । (३७)
३० श्रन्थ ग्रन्थ संदर्भे । (३९, ४१)
३१ मन्थ विलोडने । (४०)
३२ कुन्थ संश्लेषणे । (४२)
३३ मृद क्षोदे । (४३)
३४ पृड मृड सुखने । (४४)
३५ गुध रोषे । (४५)
३६ कुष निष्कर्षे । (४६)
३७ क्षुभ संचलने । (४७)
३८ णभ तुभ हिंसायाम् । (४८,४९)
३९ क्लिश बाधने । (५०)
४० अश भोजने । (५१)
४१ [1]उध्रस् उञ्छे । (५२)
४२ इष आभीक्ष्ण्ये । (५३)
४३ विष विप्रयोगे । (५४)
४४ पुष पुष्टौ । (५७)
४५ प्रुष प्लुष स्नेहने । (५५, ५६)
४६ मुष स्तेये । (५८)
४७ खव प्रादुर्भावे । (५९)

अतङानाः ।

४८ वृङ संभक्तौ । (३८)

तङानी ।

क्र्यादयः समाप्ताः ॥ ९ ॥

१ चुर स्तेये । (१)
२ चिति स्मृत्याम् । (२)
३ यत्रि संकोचने । (३)
४ स्फुडि परिहासे । (४)
५ लक्ष लोकृ दर्शने । (५, २३६)
६ कुद्रि अनृतभाषणे । (६)
७ लड उपसेवायाम् । (७)
८ मिद स्नेहने । (८)
९ ओलडि उत्क्षेपे । (९)
१० पीड बाधायाम् । (११)

---

१. हैमे तथा माधवीये धातुपाठे 'ध्रपुश् उञ्छे" "ध्रस् उञ्छे" इति धातुः । एतद्विषये माधवः एवं निर्दिशति–"अत्र क्षीरस्वामी उकारं धात्ववयवमाह । तन्मते उध्रस्नाति, उध्रसांचकार" इत्यादि । (माध० वृ० पृ० ३७४)

११ ऊर्ज बले । (१६)
१२ कुट्ट छेदने । (२३)
१३ पुट्ट अल्पीभावे । (२४)
१४ अट्ट अनादरे । (२५)
१५ घट्ट चलने । (८७)
१६ खट्ट संवरणे । (८६)
१७ षट्ट हिंसायाम् । (६०)
१८ लुण्ट स्तेये । (२७)
१६ श्वंठ गतौ । (२६)
२० तुजि पिजि हिंसायाम् । (३०,३१)
२१ तिज निशाने । (११०)
२२ व्यप कूट दाहे । (६६, ३४४)
२३ नट नाट्ये । (१२)
२४ श्वल्क वल्क भाषणे । (३४, ३५)
२५ स्फिट अनादरे ।
२६ पथि गतौ । (३६)
२७ पिच्च कुट्टने । (४०)
२८ छदि संवरणे । (४१)
२६ श्रणु दाने । (४२)
३० तड आघाते । (४३)
३१ खड खडि भेदे । (४४)
३२ कडि खण्डने । (४४)
३३ वडि विभाजने । (४८)
३४ भडि कल्याणे । (५०)
३५ वुस्त वञ्चने । (५२)
३६ चुद संचोदने । (५३)
३७ वदि अभिवादने ।
३८ विद वेदनायाम् । (१६८)
३६ श्रा पाके ।
४० ज्ञा तोषणे ।
४१ नक्क धक्क नाशने । (५४, ५५)
४२ चक्क चुक्क व्यथने । (५६)
४३ क्षल शौचे । (५७)
४४ तल प्रतिष्ठायाम् । (५८)
४५ तुल उन्माने । (५६)
४६ दुल उत्क्षेपे । (६०)
४७ वृजी वर्जने । (२७०)
४८ पुल महत्त्वे । (६१)
४६ चुल निमज्जने । (६२)
५० पाल रक्षणे । (६६)
५१ लूष हिंसायाम् (७०)
५२ चुट छेदने । (७२)
५३ मुट संचूर्णने । (७३)
५४ पसि नाशने । (७४)
५५ छबि गतौ ।
५६ क्षपि क्षान्तौ । (७८)
५७ क्षजि कृच्छ्रजीवने । (७६)
५८ पूज पूजायाम् । (१०१)
५६ जुड प्रेरणे । (१०५)
६० पचि विस्तारे । (१०६)
६१ सूच पैशुन्ये । (३२७)
६२ कृत संशब्दने । (१११)
६३ लप वचने ।
६४ मन्त्रि गुप्तिभाषणे । (१४०)
६५ तन्त्रि कुटुम्बधारणे । (१३६)
६६ लल ईप्सायाम् । (१४८)
६७ चर्च अध्ययने । (१७२)
६८ मान पूजायाम् । (२६६)
६६ घुषिर् विशब्दने । (१८७)
७० ऊन परिहाणौ । (३४२)
७१ संग्राम युद्धे । (३७६)
७२ छद अपवारणे । (२६०)
७३ मार्ग अन्वेषणे । (३०२)
७४ कठि शोके । (३०३)

७५ मृजू शौचे । (३०४)
७६ मृष क्षान्तौ । (३०५)
७७ घृष प्रसहने । (३०६)
७८ कथ वाक्यप्रबन्धे । (३०७)
७९ वर ईप्सायाम् । (३०८)
८० गण संख्याने । (३०९)
८१ शठ श्वठ सम्यगाभाषणे । (३१०)
८२ रह त्यागे । (३१२)
८३ ष्टन गद देवशब्दे । (३१३,३१४)
८४ रत्न प्रतियत्ने । (३१८)
८५ कल संख्याने । (३१९)
८६ मह पूजायाम् । (३२१)
८७ स्पृह ईप्सायाम् । (३२५)
८८ शील उपधारणे । (३३२)
८९ साम सान्त्वने । (३३३)
९० गवेष मार्गणे । (३३७)
९१ वास उपसेवायाम् । (३३८)
९२ निवास आच्छादने । (३३९)
९३ भाज पृथक्क्रियायाम् । (३४०)
९४ ध्वन शब्दे । (३४३)
९५ स्तेन चौर्ये । (३४९)
९६ गृह प्रग्रहणे । (३५१)
९७ मृग अन्वेषणे । (३५२)
९८ कुह विस्मापने । (३५३)
९९ स्थूल परिवृंहणे । (३५६)
१०० अर्थ याञ्चायाम् । (३५७)
१०१ गर्व माने । (३५९)
१०२ मिश्र संपर्के । (३७५)
१०३ सुपो धात्वर्थे बहुलम् इष्ठवच्च । (३८६)
१०४ णिङ अङ्गनिरसने । (३९३)
१०५ श्वेताश्व–अश्वतर–गालोडित–आह्वर-काणाम् अश्व – तर – इत – कलोपश्च (३९४)

नित्यण्यन्ताश्चुरादयः समाप्ताः ॥ १० ॥

क्रियावाचित्वमाख्यातुमेकैकोऽर्थः प्रदर्शितः ।
प्रयोगतोऽनुगन्तव्या अनेकार्था हि धातवः ॥

॥ धातुपाठः समाप्तः ॥

[illegible] ।

[illegible]

* 'उणा०' इत्यनेन 'उणादि' सूच्यते ।

+ मूलसूत्रपुस्तकपाठः ।

---

१ रोमनाक्षरैर्मुद्रिते अकाराद्यनुक्रमे 'गर्तान्तात्' इति पाठः ।

* सूत्रपाठे तत्र तत्र एतादृशानि सूत्राणि सन्धिं खण्डयित्वा निर्दिष्टानि, यथा — 'वा उद्वाहे'।

चान्द्र-उणादिसाधितशब्दानाम् अकारादिक्रमेण संकलनम्।

शब्दः	पादः सूत्रम्
अंहस्	३।१००।
अकट	२।३२।
अक्ष	३।६३।
अक्षर	३।१८।
अक्षि	१।६७।
अग्नि	१।७७।
अग्र	३।१४।
अङ्कुश	३।५६।
अङ्ग	२।२९।
अङ्गार	३।२१।
अङ्गिरस्	३।९९।
अङ्गुर	३।१।
अङ्गुरि	१।६३।
अङ्गुलि	१।६३।
अङ्गुष	३।५७।
अजिन	२।६३।
अजिर	३।६।
अञ्जलि	१।७३।
अणु	१।६,७।
अण्ड	२।३९।
अतस	३।६५।
अतिथि	१।६३।
अद्भुत	२।४६।
अद्रि	१।७०।
अधम	२।१०६।
अनेहस्	३।९९।
अन्त	२।५०।
अन्त्र	३।४०।
अन्दु	१।४७।
अपष्ठु	१।२१।
अप्तु	१।२५।
अप्सरस्	३।९९।
अब्द	२।६१।
अमति	१।८६।
अमत्र	३।३८।
अम्बरीष	३।६०।
अम्भस्	३।११०।
अयस्	३।९६।
अरणि	१।७४।
अरण्य	२।११५।
अरत्नि	१।७२।
अरुस्	३।९२।
अरूष	३।५७।
अर्क	२।३।
अर्चिस्	३।८९।
अर्जुन	२।८०।
अर्ण	२।७९।
अर्णस्	३।११३।
अर्थ	२।५६।
अर्पिश	३।५४।
अर्भक	२।२।
अर्म	२।१००।
अर्य	३।११४।
अर्शस्	३।११२।
अलाबू	१।४७।
अलीक	२।१८।

इति उणादिसाधितशब्दानाम् अकारादिक्रमेण संकलनं समाप्तम् ॥

चान्द्रव्याकरणस्थितधातुपाठागतधातूनाम् अकारादिक्रमेण संकलनम् ।

धातुः	गणः संख्याङ्कः
अंह	१।४६४।
अक	१।५३४।
अक्ष	१।२१०।
अग	१।५३४।
अङ्क	१।३४०।
अङ्ग	१।३८।
अङ्घ	१।३४७।
अज	१।८१।
अञ्च	१।४६,५६०।
अञ्ज	७।१७।
अट	१।१०४।
अट्ट	१।३६५।
	१०।१४।
अड	१।१३१।
अड्ड	१।१२५।
अण	१।१४७।
अण्ठ	१।३७१।
अत	१।३।
अद	२।१।
अन	२।३०।
अन्त	१।२०।
अन्द	१।२०।
अभ्र	१।१६०।
अम	१।१५५,५५२।
अम्ब	१।४०२।
अय	१।४२४।
अर्च	१।५२।
अर्ज	१।६५।

धातुः	गणः संख्याङ्कः
अर्थ	१०।१००।
अर्द	१।१८।
अर्व	१।१४३।
अर्व	१।२०१।
अर्ह	१।२५८।
अव	१।२०८।
अश	५।२४।
	९।४०।
अश्व	१०।१०५।
अस्	१।६०८।
	२।२५।
	४।४६।
आञ्छ	१।५६।
आप	५।१४।
आस	२।४१।
आह्वर	१०।१०५।
इ	१।१०४।
	२।११,१२,५२।
इङ्ख	१।३८।
इङ्ग	१।३८।
इट	१।१०४।
इन्द	१।२१।
इन्ध	७।२१।
इन्व	१।२०२।
इल	६।६४।
इष	४।१५।
	६।५८।
	९।४२।

इति[1] धातुपाठस्य अकारादिकः अनुक्रमः समाप्तः

टिप्पण–१. अत्र चान्द्रव्याकरणे १०५ पृष्ठतः १२६ पृष्ठपर्यन्तमाचार्यचन्द्रगोमिरचितो-धातुपाठः समायातः। तत्र दश गणा दर्शिताः, तथा प्रत्येकधातुभिः सह आदा वङ्का निर्दिष्टाः। अत्र तेषां धातूनामकारादिकोऽनुक्रमः प्रकाशितः। तत्र सर्वत्रा-

शुद्धिसूची

पृष्ठाङ्क	अशुद्धम्	शुद्धम्
१७। सूत्र १२।	वश्येन	वंश्येन
२८। सूत्र ६१।	खञ्	कञ्
३१। सूत्र १२३।	वा०	वा
३१। प्रथमे टिप्पणे	तद्वत्तौ	तद्वृत्तौ
३१। द्वितीये टिप्पणे	निदशे	निर्देशे
३७। सूत्र १०२	रात्री-	रात्रि-
४७। सूत्र ११२	नस्	णस्
७१। सूत्र ६८	ससजुषः रः	स-सजुषः रुः
१०१। सूत्र ६३	वृ-त-	वृ-तॄ-
१०४। सूत्र ६३	कित्	णित्
१०४। सूत्र ६६	कसिः	असिः
१२६। सूत्र १०३	इष्ठवच्च	इष्टवच्च

*मुद्रणदोषाद् दृष्टिदोषान्मतिमान्द्याच्च अन्या अपि काश्चनाशुद्धयोऽत्र संजातास्ताः सर्वाः क्षमन्तां विचक्षणाः संशोधयन्तु च करुणां कृत्वेति संपादकप्रार्थनम् ।

॥ इति समाप्तं सर्वाङ्गं चान्द्रव्याकरणसंशोधन-संपादनम् ॥

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक—पद्मश्री मुनि जिनविजय, पुरातत्त्वाचार्य

प्रकाशित-ग्रन्थ

(क) संस्कृत-प्राकृत

१. प्रमाणमञ्जरी (ग्रन्थाङ्क ४), तार्किक चूडामणि सर्वदेवाचार्यकृत; अद्वयारण्य, बलभद्र, वामनभट्ट कृत टीकात्रयोपेत; सम्पादक – मीमांसान्यायकेसरी पं० पट्टाभिराम शास्त्री, विद्यासागर (७+१०६), १९५३ ई० । मू. ६.००

२. यन्त्रराज-रचना (ग्रन्थाङ्क ५), महाराजा सवाई जयसिंह कारित; संपादक – स्व० पं० केदारनाथ ज्योतिर्विद् (८+२८), १९५३ ई० । मू. १.७५

३. महर्षिकुलवैभवम्, भाग १ (ग्रन्थाङ्क ६) स्व० पं० मधुसूदन ओझा प्रणीत, म.म. पं० गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी द्वारा सम्पादित एवं हिन्दी व्याख्या सहित (५६+२९१), १९५६ ई० । मू. १०.७५

४. महर्षिकुलवैभवम् (मूलमात्र) (ग्रन्थाङ्क ५९), स्व० पं० मधुसूदन ओझा-प्रणीत, संपादक – पं० प्रद्युम्न ओझा (१६+१३३+१०), १९६१ ई० । मू. ४.००

५. तर्कसंग्रह, अन्नंभट्टकृत (ग्रं० ९) टीकाकार – क्षमाकल्याणगणि; संपादक – डा० जितेंद्र जेटली, (१७+७४), १९५६ ई० । मू. ३.००

६. कारकसंबंधोद्योत, (ग्र० १८) पं० रभसनन्दीकृत; कातन्त्रव्याकरणपरक रचना; संपादक – डा० हरिप्रसाद शास्त्री (२२+३४), १९५६ ई० । मू. १.७५

७. वृत्तिदीपिका (ग्र० ७) मौनिकृष्णभट्टकृत; संपादक – स्व० पं० पुरुषोत्तमशर्मा चतुर्वेदी, साहित्याचार्य (६+४४+१२), १९५६ ई० । मू. २.००

८. कृष्णगीति (ग्र० १६) कवि सोमनाथ विरचित, राधाकृष्ण सम्बन्धी प्रेमकाव्य; संपादिका – डॉ० कु० प्रियबाला शाह (२७+३२), १९५६ । मू. १.७५

९. शब्दरत्नप्रदीप (ग्र० १९), अज्ञातकर्तृक, बह्वर्थक-शब्दकोश; संपादक डॉ० हरिप्रसाद शास्त्री (१२+४४), १९५६ ई० । मू. २.००

१०. नृत्तसंग्रह (ग्र० १७), अज्ञातकर्तृक; संपादिका – डॉ० कु० प्रियबाला शाह (६+४५) १९५६ ई० । मू. १.७५

११. शृङ्गारहारावली (ग्र० १५), श्री हर्षकवि विरचित संस्कृत-गीतकाव्य; संपादिका –

१२. राजविनोद महाकाव्य (ग्र० ८), महाकवि उदयराज प्रणीत, अहमदाबाद के सुलतान महमूद वेगड़ा का चरित्र-वर्णन; संपादक – श्री गोपालनारायण बहुरा (२८+४४) १९५६ ई० । मू. २.२५

१३. चक्रपाणिविजय महाकाव्य (ग्र० २०), भट्ट लक्ष्मीधर विरचित; उषापरिणय संबंधी अद्यावधि अज्ञात काव्य; संपादक – के. का. शास्त्री (७+११२), १९५६ ई० । मू. ३.५०

१४. नृत्यरत्नकोश (प्रथम भाग) (ग्र० २५), महाराणा कुम्भकर्णकृत, संगीतराजरत्न-कोषान्तर्गत; संपादक – प्रो० रसिकलाल छो० परीख एवं डॉ० कु० प्रियबाला शाह (७+१४४), १९५७ ई० । मू. ३.७५

१५. उक्तिरत्नाकर (ग्र० १२), साधुसुन्दर गणि विरचित, संस्कृत एवं देशी शब्दकोष; संपादक – पद्मश्री मुनि जिनविजय पुरातत्त्वाचार्य (१०+११८), १९५७ । मू. ४.७५

१६. दुर्गापुष्पाञ्जलि, (ग्र० २२), म. म. पं० दुर्गाप्रसाद द्विवेदी प्रणीत; संपादक पं० श्री गङ्गाधर द्विवेदी (३९+१४७), १९५६ ई० । मू. ४.२५

१७. कर्णकुतूहल एवं कृष्णलीलामृत, (ग्र० २६), महाकवि भोलानाथ, जयपुर नरेश सवाई प्रतापसिंह समाश्रित विरचित; संपादक – श्री गोपालनारायण बहुरा (२५+३०), १९५७ ई० । मू. १.५०

१८. ईश्वरविलास-महाकाव्यम्. (ग्र० २९), कविकलानिधि श्रीकृष्णभट्ट विरचित, जयपुर निर्माता सवाई जयसिंह द्वारा अनुष्ठित अश्वमेध यज्ञ का प्रत्यक्ष वर्णन एवं जयपुर राज्येतिहास सम्बन्धी अनेक संस्मरण संवलित महाकाव्य; संपादक – स्व० कवि-शिरोमणि भट्ट श्री मथुरानाथ शास्त्री (७६+२९३), १९५८ ई० । मू. ११.५०

१९. रसदीर्घिका, (ग्र० ४१), कवि विद्याराम प्रणीत, संस्कृत रसालङ्कारपरक सरल एवं लघु कृति; संपादक – श्री गोपालनारायण बहुरा (१२+८०) १९५९ ई० । मू. २.००

२०. पद्यमुक्तावली, (ग्र० ३०), कविकलानिधि श्रीकृष्णभट्ट विरचित, अनेक साहित्यिक एवं ऐतिहासिक पद्य संग्रह; संपादक – स्व० कविशिरोमणि भट्ट श्री मथुरानाथ शास्त्री (२०+१४६), १९५९ । मू. ४.००

२१. काव्यप्रकाश, भाग १, (ग्र० ४६), मूल ग्रन्थकार मम्मटाचार्य के समकालीन भट्ट सोमेश्वर कृत 'काव्यादर्श संकेत' सहित, जैसलमेर के जैन ग्रन्थभंडारों से प्राप्त प्राचीन प्रति के आधार पर संपादित; संपादक – श्री रसिकलाल छो० परीख (४+३५२), १९५९ ई० । मू. १२.००

२२. काव्यप्रकाश भाग २, (ग्र० ४७), संपादक – श्री रसिकलाल छो० परीख (२२+११०+९४), १९५९ ई० । मू. ८.२५

२३. वस्तुरत्नकोश, (ग्र० ४५), अज्ञातकर्तृक, संस्कृत का सामान्यज्ञान-कोश; संपादक – डॉ० कु० प्रियबाला शाह (९+६४), १९५९ । मू. ४.००

२४. दशकण्ठवधम्, (ग्र० २३), म. म. पं० दुर्गाप्रसाद द्विवेदी कृत, रामचरित्रात्मक संस्कृत-चम्पू; संपादक – श्री गङ्गाधर द्विवेदी (४+१५६), १९६० ई० । मू. ४.००

२५. श्री भुवनेश्वरीमहास्तोत्रम्, (ग्र० ५४), पृथ्वीधराचार्य विरचित, कवि पद्मनाभ प्रणीत भाष्यान्वित, पूजा-पञ्चाङ्गादि संवलित; संपादक – श्री गोपालनारायण बहुरा (१+१६६), १६६० ई०। मू. ३.७५

२६. रत्नपरीक्षादि सप्तग्रन्थ संग्रह, (६०) दिल्ली-सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी के मुद्राधीक्षक ठक्कुर फेरू विरचित, मध्यकालीन भारत की आर्थिक दशा एवं रत्नपरीक्षादि वस्तुजात-संग्रहादिक विषयों पर विस्तृत विवेचनात्मक ग्रन्थ; संपादक – पद्मश्री मुनि जिनविजय पुरातत्त्वाचार्य। मू. ६.२५

२७. स्वयम्भूछन्द, (ग्र० ३७) कवि स्वयम्भू कृत, दसवीं शताब्दी में रचित प्राकृत एवं अपभ्रंश छन्दःशास्त्र पर अलभ्य कृति; सम्पा० प्रो. एच०डी० वेलणकर (२५+२४४) १६६२ ई०। मू. ७.७५

२८. वृत्तजातिसमुच्चय, (ग्र० ६१), कवि विरहाङ्क कृत, ७वीं शताब्दी में प्रणीत संस्कृत एवं प्राकृत छन्दःशास्त्र पर अलभ्य कृति; संपादक प्रो० एच. डी. वेलणकर (३२+१४४), १६६२ ई०। मू. ५.२५

२६. कविदर्पण, (ग्र० ६२), अज्ञातकर्तृक, १३वीं शताब्दी में रचित प्राकृत-संस्कृत छन्दःशास्त्र पर अनुपम कृति; संपादक – प्रो० एच. डी. वेलणकर (५२+३५६), १६६२ ई०। मू. ६.००

३०. वृत्तमुक्तावली, (ग्र० ६६), कविकलानिधि श्रीकृष्णभट्ट प्रणीत, वैदिक एवं संस्कृत छन्दःशास्त्र पर दुर्लभ कृति; संपादक – स्व० पं० श्री मथुरानाथ भट्ट (१७+७६) १६६३ ई०। मू. ३.७५

३१. कर्णामृतप्रपा, (ग्र० २) सोमेश्वर भट्ट कृत (१३वीं शताब्दी) मध्यकालीन संस्कृत-काव्य-संग्रह, जैसलमेर के जैन-भंडारों से प्राप्त अलभ्य प्रति के आधार पर; संपादक – पद्मश्री मुनि जिनविजय, पुरातत्त्वाचार्य; (१०+५६), १६६३ ई०। मू. २.२५

३२. पदार्थरत्नमञ्जूषा, (ग्र. ३८), श्रीकृष्णमिश्र प्रणीत दर्शनशास्त्र की वैशेषिक शाखा पर आधारित, जैसलमेर के जैन-भंडारों से प्राप्त प्राचीन प्रति के आधार पर संपादित; संपादक – पद्मश्री मुनि जिनविजय, पुरातत्त्वाचार्य; प्रस्तावना – श्री दलसुख मालवणिया। (७+४५) १६६३, ई०। मू. ३.७५

३३. त्रिपुराभारती-लघु-स्तव, (ग्र० १), लघ्वाचार्य प्रणीत वागीश्वरी स्तोत्र, सोमतिलक सूरि (१३४० ई०) कृत टीका सहित; संपादक–पद्मश्री मुनि जिनविजय, पुरातत्त्वाचार्य (१०+५६) ई० १६५२ ई०। मू. ३.२५

३४. प्राकृतानन्द, (ग्र० १०), रघुनाथ कवि कृत प्राकृत भाषा व्याकरण संबंधी महत्त्वपूर्ण रचना; संपादक – पद्मश्री मुनि जिनविजय, पुरातत्त्वाचार्य (१७+५२+५३+७६) १६६२ ई०। मू. ४.२५

३५. इन्द्रप्रस्थ-प्रबन्ध, (ग्र. ७०), अज्ञात कर्तृक, दिल्ली के प्रारम्भिक शासकों के विषय में ऐतिहासिक काव्य; संपादक – डा० दशरथ शर्मा (८+४६) १६६३ ई०। मू. २.२५

(ख) राजस्थानी - हिन्दी

१. कान्हड़दे प्रबन्ध, (ग्र० ११), महाकवि पद्मनाभ विरचित, सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी के द्वारा जालोर दुर्ग के प्रसिद्ध घेरे आदि का वर्णन; संपादक – प्रो० के. बी. व्यास (३३+२७५) १९५३ ई० । मू. १२.२५

२. क्यामखां रासा, (ग्र० १३), कवि जानकृत, फतेहपुर के नवाब अलफखांन तथा राजपूताने के क्यामखानी मुस्लिम राजपूतों के उद्गम और इतिहास का रोचक वर्णन; संपादक – डा० दशरथ शर्मा और अगरचन्द भँवरलाल नाहटा (५०+१२८) १९५३ ई० । मू. ४.७५

३. लावा रासा, (ग्र० १४) अपर नाम कूर्मवंशयशप्रकाश, गोपालदान कविया कृत, नरूका (कछवाहा) राजपूतों और पिंडारी पठानों के बीच हुए पांच युद्धों का समकालीन ओजस्वी वर्णन, संपादक–श्री महताबचन्द खारेड़, (१९+८६) १९५३ ई० । मू. ३.७५

४. बांकीदास री ख्यात, (२१) बांकीदास कृत, राजस्थान के प्राचीन ऐतिहासिक विवरणों का प्रमुख ग्रन्थ; संपादक – श्री नरोत्तमदास स्वामी (९+२१८) १९५६ ई० । मू. ५.५०

५. राजस्थानी साहित्य-संग्रह, भाग १, (ग्र० २७) राजस्थानी भाषा में रचित प्रतिनिधि गद्य कथा-संग्रह; संपादक – श्री नरोत्तमदास स्वामी (१४+५२) १९५७ ई० । मू. २.२५

६. राजस्थानी साहित्य-संग्रह, भाग २, (ग्र० ५२) तीन ऐतिहासिक वार्ताएं–बगड़ावत, प्रतापसिंह महोकमसिंह और वीरमदे सोनगिरा; संपादक – डा० पुरुषोत्तमलाल मेनारिया, (२४+१०८) १९६० ई० । मू. २.७५

७. कवीन्द्र-कल्पलता, (ग्र० ३४), मुगल बादशाह शाहजहां के समकाकीन कवीन्द्राचार्य सरस्वती कृत; संपादक – रानी लक्ष्मीकुमारी चूण्डावत (७+५५+५) १९५८ ई० । मू० २.००

८. जुगलविलास, (ग्र० ३२), कुशलगढ़ के महाराजा पृथ्वीसिंहजी अपरनाम कवि पीथल कृत; संपादिका – रानी लक्ष्मीकुमारी चूण्डावत (५+५०) १९१० ई० । मू. १.७५

९. भगतमाल, (४३) चारण ब्रह्मदास दादूपंथी कृत; संपादक – श्री उदयराज उज्ज्वल (८+६४) १९५९ ई० । मू. १.७५

१०. राजस्थान पुरातत्व मंदिर के हस्तलिखित ग्रन्थों की सूची, भाग १, (ग्र० ४२) ई० स० १९५६ तक संग्रहीत ४००० ग्रन्थों का वर्गीकृत सूचीपत्र; संपादक – पद्मश्री मुनि जिनविजय, पुरातत्त्वाचार्य, (२+३०२+२०) १९५९ ई० । मू. ७.५०

११. राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान के हस्तलिखित ग्रन्थों की सूची, भाग २, (ग्र० ५१) ७८५५ तक के ग्रंथों का सूची-पत्र; (२+३९१) १९६० ई० । संपादक – श्री गोपालनारायण बहुरा । मू. १२.००

१२. राजस्थानी हस्तलिखित-ग्रन्थ-सूची, भाग १ (ग्र ४४) मार्च १६५८ तक के ग्रन्थों का विवरण; संपादक – पद्मश्री मुनि जिनविजय, पुरातत्त्वाचार्य, (१६६० ई०)। मू. ४.५०

१३. राजस्थानी हस्तलिखित-ग्रन्थ-सूची, भाग २ (ग्र० ५८) १६५८-५६ के संग्रहीत ग्रंथों का विवरण; संपादक – डॉ० पुरुषोत्तमलाल मेनारिया (२+६१) १६६१ ई०। मू. २.७५

१४. स्व० पुरोहित हरिनारायणजी विद्याभूषण ग्रन्थ-संग्रह सूची, (ग्र० ५५), संपादक – श्री गोपालनारायण बहुरा और श्री लक्ष्मीनारायण गोस्वामी (८+१६३+३८), १६६१ ई०। मू. ६.२५

१५. मुंहता नैणसी री ख्यात, भाग १. (ग्र० ४८), मुंहता नैणसी कृत साधारणतः राजस्थान देशीय एवं मुख्यतः मारवाड़ राज्य का प्रथम प्रामाणिक ऐतिहासिक ग्रन्थ; संपादक – आ० श्री बदरीप्रसाद साकरिया (११+३६५), १६६० ई०। मू. ८.५०

१६. मुं० नैं० री ख्यात भाग २, (ग्र० ४६), सं० आ० बदरीप्रसाद साकरिया (११+३४३) १६६२ ई०। मू. ६.५०

१७. मुं० नैं० री ख्यात भाग ३, (ग्र० ७२)(२+२६४) १६६४ ई० ,, मू. ८.००

१८. सूरजप्रकास भाग १, (ग्र० ५६), चारण करणीदान कविया कृत, सामान्य रूप से मारवाड़ का ऐतिहासिक विवरण व विशेषतः जोधपुर के महाराजा अभयसिंहजी व सरबुलन्दखान के बीच हुए अहमदाबाद के युद्ध का समकालीन वर्णन; संपादक – श्री सीताराम लाळस (२०+३१०+३७), १६६१ ई०। मू. ८.००

१९. सूरजप्रकाश भाग २, (ग्र० ५७), संपादक – श्री सीताराम लाळस (६+३६३+६१) १६६२ ई०। मू. ६.५०

२०. ,, भाग ३, (ग्र० ५८), ,, (६७+२७५+८४) १६६३ ई०। मू. ६.७५

२१. नेहतरंग, (ग्र० ६३), बूंदी नरेश राव बुधसिंह हाड़ा कृत, काव्य शास्त्रीय ग्रन्थ संपादक – श्री रामप्रसाद दाधीच (३२+१२०), १६६१ ई०। मू. ४.००

२२. मत्स्य-प्रदेश की हिन्दी-साहित्य को देन, (ग्र० ६६), लेखक डा० मोतीलाल गुप्त, पूर्वी राजस्थान में हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज विषयक शोध-प्रबन्ध; (६+२६६), १६६० ई०। मू. ७.००

२३. राजस्थान में संस्कृत साहित्य की खोज, (ग्र० ३१), श्री ब्रह्मदत्त त्रिवेदी द्वारा प्रोफेसर एस. आर. भाण्डारकर लिखित हस्तलिखित संस्कृत ग्रन्थों की खोज में मध्यप्रदेश व राजस्थान में १६०५-६ ई० में की गई खोज-रिपोर्ट का हिन्दी अनुवाद (२+७७+१६), १६६३ ई०। मू. ३.००

२४. समदर्शी आचार्य हरिभद्र, (ग्र० ६८), लेखक पं० सुखलालजी, हिन्दी अनुवादक– शान्तिलाल म. जैन, राजस्थान के गण्यमान्य साहित्यकार एवं विचारक आचार्य हरिभद्र का जीवन-चरित्र और दर्शन, (८+१२२), १६६३ ई०। मू. ३.००

२५. वीरवांण, (ग्र० ३३), ढाढी बादर कृत, जोधपुर के वीर-शिरोमणि वीरमजी राठौड़ संबंधी रचना; संपादिका – रानी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत (१६+६२+११२), १९६० ई० । मू. ४.५०

२६. वसन्त-विलास फागु, (ग्र० ३६), अज्ञातकर्तृक, १३वीं शताब्दी का एक प्राचीन राजस्थानी भाषा निबद्ध शृंगारिक काव्य; संपादक – एम. सी. मोदी, (१४+११६), १९६० ई० । मू. ५.५०

२७. रुक्मणीहरण, (ग्र० ७४), महाकवि सांयाजी झूला कृत; राजस्थानी भक्तिकाव्य; संपादक – डॉ० पुरुषोत्तमलाल मेनारिया (५२+११३) १९६४ ई० । मू. ३.५०

२८. बुद्धि-विलास, (ग्र० ७३), बखतराम साह कृत, जयपुर के संस्थापक सवाई जयसिंहजी का समकालीन ऐतिहासिक वर्णन; संपादक – श्री पद्मधर पाठक (२४+१७९), १९६४ ई० । मू. ३.७५

२९. रघुवरजसप्रकास, (ग्र० ५०), चारण कवि किसनाजी आढ़ा कृत, राजस्थानी भाषा का काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ; संपादक – श्री सीतारामजी लाळस (२०+३७६) १९६० ई० । मू. ८.२५

३०. सन्त कवि रज्जब : सम्प्रदाय और साहित्य (ग्र. ७६) : लेखक - डा० ब्रजलाल वर्मा (८४ ३१५+३१६+३१४), १९६५ ई० । मू. ७.२५

३१. प्रतापरासो-जाचिक जीवण कृत, (ग्र. ७५): अलवर राज्य के संस्थापक रावराजा प्रतापसिंहजी के शौर्य का ऐतिहासिक वर्णन, भाषा-शास्त्रीय विशिष्ट अध्ययन सहित, सम्पादक - डा० मोतीलाल गुप्त (१६६+११८), १९६५ ई० । मू. ६.७५

३२. भक्तमाल, (ग्र. ७८) राघोदास कृत, चतुरदास कृत टीका; दादूपन्थीय भक्त नामावली और विवरण, सम्पादक–श्री अगरचन्द नाहटा (३८+२८+२८६) १९६५ ई० । मू. ६.७५

(ग) अंग्रेजी

१. संस्कृत व प्राकृत ग्रन्थों का सूचीपत्र भाग १ (ग्र० ७१), राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर-संग्रह का स्वरित रोमन-लिपि में ४००० ग्रन्थों का सूचीपत्र, अंत में विशिष्ट ग्रन्थों के उद्धरण; संपादक – पद्मश्री मुनि जिनविजय, पुरातत्त्वाचार्य (१६+८६+ २७३+१५९), १९६३ ई० । मू. ३७.५०

२. ,, भाग २ अ (ग्र० ७७), संपादक – पद्मश्री मुनि जिनविजय, पुरातत्त्वाचार्य, (१६+७०+३२९+९९), १९६४ ई० । मू. ३४.५०

सूचना– पुस्तक विक्रेताओं को २५% कमीशन दिया जाता है ।